THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक–४८

जैन शिलालेख संग्रह

[भाग चार]

BIBA CHAND BAID

संग्राहक-संपादक
डॉ० विद्याधर जोहरापुरकर,
एम० ए०, पीएच० डी०

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ काशी

प्रथमावृत्ति] वीर निर्वाण संवत् २४९१ [मूल्य ७ रुपये

ग्रन्थमाला सम्पादक

डॉ० हीरालाल जैन, एम० ए०, डी० लिट्०

डॉ० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, एम० ए०, डी० लिट्०

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

प्रथम आवृत्ति १००० प्रति

मूल्य सात रुपये

मुद्रक

सन्मति मुद्रणालय

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

अनुक्रमणिका

प्रधान सम्पादकीय ५–८

प्राक्कथन ९–१०

संकेत-सूची ११

प्रस्तावना १-३२

१ लेखोंका साधारण परिचय १-२

२ जैन संघका परिचय २-१६

(अ) यापनीय संघ २-४

(आ) मूलसंघ ४-१४

(इ) गौड संघ १४

(ई) द्राविड संघ १५

(उ) माथुर संघ १५

(ऊ) पंचस्तूप निकाय १५

(ऋ) जम्बूखण्डगण १५

(ॠ) सिंहवूरगण १५

(ऌ) जैनसंघके विषयमें साधारण विचार १५-१६

३ राजवंशोंका आश्रय १६-२२

(अ) उत्तर भारतके राजवंश १६-१९

(आ) दक्षिण भारतके राजवंश १९-३२
(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार ३२
४ जैन संघकी दुरवस्था ३२-३३
५ उपसंहार ३३

मूल लेख (तिथिक्रमसे) १-३८४

परिशिष्ट

१ श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना ३८५-३८८
२ जैनेतर लेखोंमें जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख ३८९-३९२
३ नागपुर प्रतिमा लेख संग्रह ३९३-४२९

मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण ४३०-४५४

नामसूची— ४५५

प्रथम संपादकीय

प्राचीन कालकी मानवीय प्रवृत्तियोंका विधिवत् वर्णन व विश्लेषण ही इतिहास है। ऐसे इतिहासके लिए आधारभूत सामग्री प्राप्त होती है मानवको निर्मितियोंके भग्नावशेषों अर्थात् गुफाओं, चैत्यों, स्तूपों, समाधियों, गृहों, मन्दिरादि धर्मायतनों व मूर्तियों जैसे स्थापत्यके भग्नावशेषोंसे, चित्रोंसे व साहित्यिक रचनाओंसे। किन्तु इनसे भी अधिक प्रामाणिक और यथावत् वृत्तान्त उन लेखोंसे मिलता है जो राजाओं व अन्य धनिकोंके दानकी तथा उनके द्वारा निर्माण कराये गये मन्दिरादिकी स्मृति-रक्षणार्थ पाषाणखण्डों व ताम्रपटों आदि पर उत्कीर्ण कराये गये पाये जाते हैं। ऐसे प्राचीनतम लेखोंकी लिपि बहुधा वही ब्राह्मी है जिससे आजकी नागरी लिपि विकसित हुई है, तथापि उसका प्राचीनतम रूप इतना भिन्न था कि उसे पढ़ना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। बड़े परिश्रमके पश्चात् उस लिपिकी कुंजी हाथ लगी, जिससे लगभग गत अढाई सहस्र वर्षोंके शिलालेख पढ़े और समझे जा सके। किन्तु चालीस-पचास वर्ष पूर्व सिन्धु घाटीसे ऐसे भी मुद्रालेख प्राप्त हुए हैं, जिन्हें पढ़ने और समझनेका अभी प्रयास हो चल रहा है, कोई सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

जो प्राचीन शिलालेख पढ़े गये और प्रकाशित हुए वे पुरातत्त्व विभागके बहुमूल्य व दुर्लभ ग्रन्थमालाओं व पत्रिकाओंमें समाविष्ट पाये जाते हैं। इनमें जैन धर्म सम्बन्धी शिलालेखोंका विवरण भी यत्र-तत्र बिखरा पाया जाता है। इन लेखोंका ऐतिहासिक महत्त्व तब प्रकट हुआ जब सन् १८८९ में मैसूरके पुरातत्त्व विभागकी ओरसे श्रवणबेलगोलके १४४ शिलालेखोंका अलगसे संग्रह एक विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना सहित प्रकाशित हुआ। सन् १९२२में इसका संशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशमें आया

जिसमें शिलालेखोंकी संख्या ५०० हो गयी। इसी बीच सन् १९०८ में फ्रांसीसी विद्वान गैरीनोकी एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने तब तक प्रकाशित हुए आठ सौ पचास जैन शिलालेखोंका परिचय कराया। इस सब सामग्रीके सम्मुख आनेपर कुछ जैन विद्वानोंकी आँखें खुलीं, और उन्हें अनुभव हुआ कि जब तक इस सामग्रीका उपयोग करते हुए धर्म व साहित्य सम्बन्धी लेख नहीं लिखे जायेंगे तबतक जैनधर्मका प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। स्वभावतः उस समय जो विद्वान् जैन साहित्य और इतिहासके संशोधनमें तल्लीन थे उन्हें इस आवश्यकताका विशेष रूपसे बोध हुआ। इनमें माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके संस्थापक व प्रधान सम्पादक स्वर्गीय पं० नाथूरामजी प्रेमीकी याद आती है। उन्होंने ही अपनी प्रेरणा-द्वारा जैनशिलालेख संग्रहका प्रथम भाग तैयार कराकर प्रस्तुत ग्रन्थमालाके २८वें पुष्पके रूपमें प्रकाशित किया, जिसमें श्रवणबेलगोलके उपर्युक्त पाँच सौ शिलालेख नागरी लिपिमें हिन्दी सारानुवाद तथा विस्तृत भूमिका व अनुक्रमणिकाओं सहित जिज्ञासुओं व लेखकोंको अति सुलभ हो गये। इसका तुरन्त ही हमारे साहित्य व इतिहास संशोधन कार्यपर महत्त्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। तद्विषयक लेखोंमें इनके उपयोग द्वारा बड़ी वाञ्छनीय प्रामाणिकता आने लगी जिसके लिए प्रेमीजी-जैसे विद्वान् बहुत आतुर थे। अब उन्हें अन्य शिलालेखों को भी इसी रूपमें सुलभ पानेकी अभिलाषा तीव्र हुई जिसके फलस्वरूप उक्त गैरीनो महोदयकी रिपोर्टके आधार शिलालेख संग्रह भाग २ और ३ में (ग्रं० ४५-४६ सन् १९५२, १९५७) आठ सौ पचास लेखोंका पाठ व परिचय हमारे सम्मुख आ गया।

आगेका लेख-संग्रह कार्य बड़ा कठिन प्रतीत हुआ, क्योंकि इसके लिए कोई व्यवस्थित सूचियाँ उपलब्ध नहीं थीं। किन्तु इस कार्यको पूरा कराना हमने अपना विशेष कर्तव्य समझा। सौभाग्यसे डॉक्टर विद्याधर जोहरापुरकरने यह कार्य-भार अपने ऊपर लेकर विशेष प्रयासों द्वारा यह छह सौ

चौवन लेखोका परिचय करानेवाला चौथा सग्रह प्रस्तुत कर दिया। प्रस्तावनामें उन्होंने लेखोका काल, प्रदेश, भाषा, प्रयोजन, मुनिसंघ, राजवंश आदि दृष्टियोंसे जो विश्लेषण व अध्ययन किया है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है इसके लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ है। हमें दुःख है कि पण्डित नाथूरामजी प्रेमी आज हमारे बीच नही रहे ! कितना हर्ष होता उन्हे इस नये लेख सग्रहको देखकर !

शिलालेख-सग्रहके इन भागोंमें संकलित सामग्रीका जैन साहित्य और इतिहासके संशोधन कार्यमें विशेष उपयोग हो रहा है, और होगा इसमें सन्देह नही। किन्तु इस विषयमें अब तकके अनुभवके आधारसे कुछ सूचनाएँ कर देना हम अपना कर्तव्य समझते है—

१. लेखोका जो मूल पाठ यहाँ प्रस्तुत किया गया है, वह सावधानी पूर्वक तो अवश्य लिया गया था, तथापि उसे अन्त-प्रमाण होनेका दावा नही किया जा सकता। कन्नड लेखोको यहाँ जो देवनागरीमें लिखा गया है उसमें भी लिपिभेदसे अशुद्धियाँ हो जाना सम्भव है। आगे-पीछे विशिष्ट विद्वानो-द्वारा पाठ व अर्थ-सशोधन सम्बन्धी लेख लिखे ही गये होंगे। अतएव विशेष महत्त्वपूर्ण मौलिक स्थापनाओंके लिए संशोधकोको मूलस्रोतो का भी अवलोकन कर लेना चाहिए।

२ इधर कुछ कालसे ऐसी प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जहाँ दो आचार्योमे नाम-साम्य दिखाई दिया वहाँ उन्हें एक ही मान लिया गया। किन्तु यह बात भ्रामक है। एक ही नामके अनेक आचार्य विविध कालोमें भी हुए है और सम-सामयिक भी। अतएव उन्हें एक सिद्ध करनेके लिए नाममात्रके अतिरिक्त अन्य प्रमाणोकी भी खोज करना चाहिए।

३ इन प्रकाशित शिलालेखोंसे यह अपेक्षा नही करना चाहिए कि उनमें समस्त प्राचीन आचार्योका उल्लेख आ ही गया है अतएव इनमें किसी आचार्यके नामका अभाव किसी विशिष्ट अनुमान व तर्कका आधार

नही बनाया जा सकता। ये लेख जैन मुनियोंकी पूरी गणनाका लेखा नही समझना चाहिए।

४ कन्नड लेखोंका जो सार हिन्दीमें दिया गया है उसीके आधार मात्रसे कोई नयी कल्पनाएँ नहीं करना चाहिए। उनके लिए मूल पाठ और उसके शब्दश अनुवादका अवश्य अवलोकन करना चाहिए।

यथार्थत ये लेख-सग्रह सामान्य जिज्ञासुओंके लिए तो पर्याप्त हैं। किन्तु विशेष सशोधकोंके लिए तो ये मूल सामग्रीकी ओर दिग्निर्देश मात्र ही करते है।

इस ग्रन्थमालाको अपनी गोदमें लेकर श्री शान्तिप्रसादजी व श्रीमती रमारानीजीने न केवल समाजके एक अग्रणी ह्रितैषी सेठ माणिकचन्द्रजीकी स्मृतिकी रक्षा की है व ग्रन्थमालाके जन्मदाता प० नाथूरामजी प्रेमीकी भावनाका सम्मान दिया है किन्तु जैन साहित्यकी रक्षा व जैन इतिहासके नवनिर्माण कार्यमें बडी महत्त्वपूर्ण सेवा की है जिसके लिए समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

— ही ला जैन
— आ ने उपाध्ये
(प्रधान सम्पादक)

प्राक्कथन

प्रस्तुत संग्रहका प्रथम भाग डॉ० हीरालालजी जैन-द्वारा संपादित होकर सन् १९२८ में प्रकाशित हुआ था। उसमें श्रवणबेलगोल तथा निकटवर्ती स्थानोंके ५०० लेख संकलित हुए थे। इसका दूसरा तथा तीसरा भाग श्री विजयमूर्ति शास्त्री-द्वारा संकलित हुआ। इन दो भागोंमें फ्रेन्च विद्वान् डॉ० गेरिनो-द्वारा संपादित पुस्तक 'रिपोर्टेर द एपिग्राफी जैन'के आधारसे ८५० लेख दिये है। डॉ० गेरिनोकी पुस्तक पैरिससे सन् १९०८ में प्रकाशित हुई थी। अत इन दो भागोंमें सन् १९०८ तक प्रकाशित हुए लेख ही आ सके हैं। इन ८५० लेखोंमें-से १४० लेख प्रथम भागमें आ चुके हैं तथा १७५ लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके है अत. इनकी सूचना-भर दी गयी है — शेष ५३५ लेखोंका पूरा विवरण दिया गया है। इस तरह पहले तीन भागोंमें कुल १०३५ लेखोंका संग्रह हुआ है।

सन् १९५७ में इस संग्रहके तीसरे भागके प्रकाशित होनेपर श्रीमान् डॉ० उपाध्येजीने हमें प्रस्तुत चौथे भागके संपादनके लिए प्रेरित किया। तबसे कोई चार वर्ष तक अवकाशके समयका उपयोग कर यह कार्य हमने किया। इसे कुछ विस्तृत रूप देनेके लिए हमने सन् १९६१ की गर्मियोंकी छुट्टियोंमें दो सप्ताह तक उटकमंड स्थित प्राचीनलिपिविद्–कार्यालयमें भी अध्ययन किया। इसके फलस्वरूप सन् १९०८ के बाद प्रकाशित हुए कोई ६५४ लेखोंका संग्रह प्रस्तुत भागमें प्रकाशित हो रहा है।

यद्यपि ये सब लेख पुरातत्त्वविभागके प्रकाशनोंमें पहले प्रकाशित हो चुके हैं तथापि साधारण अभ्यासकके लिए वे सुलभ नहीं हैं — उनका संपादन अँगरेजीमें हुआ है तथा उनका मूल्य भी बहुत अधिक है। अत इस संग्रहमें उनका पुन प्रकाशन उपयोगी होगा

प्रस्तावना

१. लेखोंका साधारण परिचय—

जैन शिलालेख संग्रहके प्रस्तुत चौथे भागमें कुल ६५४ लेख संगृहीत हैं। इन्हें समयके क्रमसे प्रस्तुत किया है। इसमें सनपूर्व चौथी सदीका १ (क्र० १) सनपूर्व तीसरी सदीका १ (क्र० २), सनपूर्व पहली सदीके ११ (क्र० ३ से १३,) सन् पहली सदीका १ (क्र० १४), दूसरी सदीके ४ (क्र० १५ से १८), पाँचवी सदीका १ (क्र० १९), छठी सदीके दो (क्र० २० व २१), सातवी सदी के २२ (क्र० २२ से ४३) आठवीं सदीके १० (क्र० ४४ से ५३), नौवीं सदीके २० (क्र० ५४ से ७३), दसवीं सदीके ४२ (क्र० ७४ से ११५), ग्यारहवीं सदीके ६७ (क्र० ११६ से १८२), बारहवीं सदीके १३४ (क्र० १८३ से ३१६,) तेरहवीं सदीके ७३ (क्र० ३१७ से ३८९), चौदहवीं सदीके ३० (क्र० ३९० से ४१९), पन्द्रहवीं सदीके ३५ (क्र० ४२० से ४५४) सोलहवीं सदीके ४७ (क्र० ४५५ से ५०१), सत्रहवीं सदीके १५ (क्र० ५०२ से ५१६), अठारहवीं सदीके ११ (क्र० ५१७ से ५२७), तथा उन्नीसवीं सदीके ८ (क्र० ५२८ से ५३५) लेख हैं। शेष ११९ लेखोंका समय अनिश्चित है।

इन ६५४ लेखोंमें राजस्थानके २१, उत्तरप्रदेशके ९, बिहारके ४, बंगालका १, गुजरातके ३, मध्यप्रदेशके १५, उडीसाके १६, महाराष्ट्रके ७, आन्ध्रके ४६, मद्रासके ८२, केरलका १ एवं मैसूर प्रदेशके ४४७ लेख हैं।

भाषाकी दृष्टिसे इन लेखोंका विभाजन इस प्रकार है — प्राकृतके १८, संस्कृतके ८८, हिन्दीके ३, तेलुगुके ८, तमिलके ७७ एवं कन्नडके ४६० ।

प्रयोजनकी दृष्टिसे ये लेख मुख्यत चार भागोंमें बाँटे जा सकते है —८७ लेखोंमें जिनमन्दिरोंके निर्माण अथवा जीर्णोद्धारका वर्णन है, १२६ लेखोंमे जिनमूर्तियोंकी स्थापनाका वर्णन है, २०८ लेखोंमे मन्दिरो तथा मुनियोंको गाँव, जमीन, सुवर्ण, करोंकी आय आदिके दानका वर्णन है, तथा १६४ लेखोंमें मुनियो, गृहस्थो तथा महिलाओंके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके अतिरिक्त १३ लेखोंमें गुहा-निर्माणका, ४ लेखोंमे (क्र० ४८६, ४८७, ४८९ तथा ५७६) मठोके आर्थिक व्यवहारोका, ३ लेखोंमे (क्र० ४२५, ४७१ तथा ४७२) साम्प्रदायिक समझौतोका एव एक लेख (क्र० ५०७) मे सामाजिक कुरूढिके निवारणका वर्णन है।

लेखोके इस स्थूल परिचयके बाद हम इनसे प्राप्त ऐतिहासिक तथ्योंका कुछ विस्तारसे अवलोकन करेंगे — पहले जैनसघके बारेमें तथा बादमें राज-वशो आदिके विषयमे।

२. जैनसंघका परिचय—

(अ) यापनीय सघ—प्रस्तुत सग्रहमे यापनीय सघका उल्लेख कोई १७ लेखोंमें हुआ है। इनमें सबसे प्राचीन लेख गग राजा अविनीतका ताम्रपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है (ले० २०)[1]। इसमे 'यावनिक' सघ-द्वारा अनुष्ठित एक मन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

इस सघके कुमिलि अथवा कुमुदि गणका उल्लेख चार लेखोंमें है[2] (क्र० ७०, १३१, ६११ एव ६१२)। इनमें पहले लेख (क्र० ७०) में नौवी सदीमें इस गणके महावीर गुरुके शिष्य अमरमुदल गुरुका वर्णन है। इन्होंने कीरैप्पाक्कम् ग्रामके उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका निर्माण

---

१. पहले सग्रहके क्र० ९९, १०० तथा १०५ लेखोंमें ५वी सदीके उत्तरार्धमें भी यापनीय संघका उल्लेख है।
२. पहले सग्रहमें इस गणका कोई उल्लेख नहीं है।

कराया था। दूसरे लेख (क्र० १३१) में सन् १०४५ में इस गणके कुछ आचार्योंका वर्णन है। इस समय चावुण्ड नामक अधिकारीने मुगुन्द ग्राममें एक जिनालय बनवाया था। अन्य दो लेख (क्र० ६११ तथा ६१२) अनिश्चित समयके निषिधि लेख हैं। इनमे पहला लेख इस गणके शान्त-वीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है।

यापनीय संघका दूसरा गण पुन्नागवृक्षमूल गण चार लेखोंसे ज्ञात होता है (क्र० १३०, २५९, १६८, ६०७)। पहले लेखमें सन् १०४४ में इस गणके बालचन्द्र आचार्यको पूलि नगरके नवनिर्मित जिनालयके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी लेखके उत्तरार्धमे सन् ११४५ मे इस गणके रामचन्द्र आचार्यको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस गणका अगला उल्लेख (क्र० २५९) सन् ११६५ का है। इसमे इस गणकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है — मुनिचन्द्र — विजयकीर्ति — कुमार-कीर्ति त्रैविद्य — विजयकीर्ति (द्वितीय)। शिलाहार राजा विजयादित्यके सेनापति कालणने एक्कसम्बुगे नगरमे एक जिनालय बनवाकर उसके लिए विजयकीर्ति (द्वितीय) को कुछ दान दिया था। एक लेखमें (क्र० १६८) वृक्षमूलगणके मुनिचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य चारुकीर्ति पण्डित-को कुछ दान दिये जानेका वर्णन है — यह सन् १०९६ का लेख है। एक अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६०७) मे भी वृक्षमूलगणके एक मन्दिर कुसुमजिनालयका उल्लेख है। हमारा अनुमान है कि इन दो लेखोका वृक्षमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगणसे भिन्न नहीं होगा।[1]

यापनीय संघके कण्डूर गणका उल्लेख तीन लेखोंमे है (क्र० २०७, ३६८, ३८६) इनमें पहला लेख १२वी सदीके पूर्वार्धका है तथा इसमें

---

१. पहले संग्रहमें पुन्नागवृक्षमूलगणके दो उल्लेख सन् ८१२ तथा सन् ११०८ के हैं (क्र० १२४, २५०)।

इस गणके बाहुबली, शुभचन्द्र, मौनिदेव एव माघनन्दि इन चार आचार्यों-का वर्णन है – इनमे परस्पर सम्बन्ध बतलाया नही है। दूसरे लेखमे १३वी सदीमें इस गणके एक मन्दिरका उल्लेख है तथा तीसरे लेखमे इसी समयकी एक जिनमूर्तिका उल्लेख है।[1]

इसी सघके कारेयगणका उल्लेख १२वी सदीके पूर्वार्धके एक लेख (क्र० २०९) में है। मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरि ये इस गणके आचार्य थे।[2]

पाँच लेखोमें यापनीय सघका उल्लेख किसी गण या गच्छके बिना ही प्राप्त होता है (क्र० १४३,२९८–३००,३८४)। इनमे पहला लेख सन् १०६० का है तथा इससे जयकीर्ति – नागचन्द्र – कनकशक्ति इस गुरुपरम्पराका पता चलता है। अगले दो लेख १२वी सदीके है तथा इनमें मुनिचन्द्र एव उनके शिष्य पाल्यकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। अन्तिम लेखमे १३वी सदीमें श्रैकीर्ति आचार्यका उल्लेख है।

इस तरह प्रस्तुत सग्रहसे यापनीय सघका अस्तित्व छठी सदीसे तेरहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।[3]

(आ) मूलसंघ—प्रस्तुत सग्रहमे मूलसघके अन्तर्गत सेनगण, देशी गण, सूरस्थगण, बलगारगण (बलात्कार गण) क्राणूरगण तथा निगमा-

---

१ पहले सग्रहमे इस गणका उल्लेख सन् ९८० में हुआ है (क्र० १६०)।

२. पहले सग्रहमे इस गणके दो लेख सन् ८७५ तथा दसवीं सदी-पूर्वार्धके है (क्र० १३०,१८२)।

३. पहले सग्रहमे यापनीय सघके तीन और गणोका उल्लेख है – कनकोपलसम्भूत वृक्षमूल गण, श्रीमूलमूलगण तथा कोटिमडुव गण- (तीसरा भाग-प्रस्तावना पृ० २७–२९)।

न्वय इन छह परम्पराओंके उल्लेख विस्तारसे मिलते हैं।[1] इनका अब क्रमश. विवरण प्रस्तुत करेंगे।

(आ १) सेनगण—इसका प्राचीनतम उल्लेख सन् ८२१ का है (क्र० ५५)। इस लेखमें इसे 'चतुष्टय मूलसघका उदयान्वय सेनसघ' कहा है। इसकी आचार्यपरम्परा मल्लवादी-सुमति पूज्यपाद-अपराजित इस प्रकार थी। लेखके समय गुजरातके राष्ट्रकूट शासक कर्कराज सुवर्णवर्षने अपराजित गुरुको कुछ दान दिया था।[2]

सेनगणके तीन उपभेद थे – पोगरि अथवा होगरि गच्छ, पुस्तक गच्छ, एव चन्द्रकवाट अन्वय। पोगरि गच्छका पहला लेख (क्र० ६१) सन् ८९३ का है तथा उसमे विनयसेनके शिष्य कनकसेनको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस लेखमें इसे मूलसघ-सेनान्वयका पोगरियगण कहा है। दूसरा लेख (क्र० १३४) सन् १०४७ का है तथा इसमें नागसेन पण्डितको सेनगण-होगरि गच्छके आचार्य कहा है। इन्हें चालुक्य रानी अक्कादेवीने कुछ दान दिया था।[3]

चन्द्रकवाट अन्वयका पहला लेख (क्र० १३८) सन् १०५३

---

१. पहले संग्रहमे उल्लिखित देवगणका कोई लेख इस सग्रहमे नहीं है। पहले संग्रहमें मूलसंघके प्राचीन उल्लेख (क्र० ९०, ९४) पाँचवीं सदीके हैं। तथा उनमे गण आदिका उल्लेख नहीं है।

२. पहले सग्रहमें सेनगणका प्राचीनतम उल्लेख सन् ९०३ का है (क्र० १३७)। इसे देखकर डॉ० चौधरीने कल्पना की थी कि आदिपुराणकर्ता जिनसेन ही सेनगणके प्रवर्तक होंगे (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४४) किन्तु प्रस्तुत लेखसे जिनसेनके गुरु वीरसेनके समयमें ही सेनसंघकी परम्पराका अस्तित्व प्रमाणित होता है। वीरसेनने धवलाटीकाकी रचना सन् ८१६ में पूर्ण की थी।

३. पहले सग्रहमें पोगरिगच्छके चार उल्लेख सन् १०४५ से १२७१ तक के आये हैं। (क्र० १८६,२१७,१८६,५११)

का है तथा इसमें अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन इस परम्पराका वर्णन है। लेखके समय सिन्द कुलके सरदार कचरसने नयसेनको कुछ दान दिया था। नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) का उल्लेख सन् १०८१ के लेख (क्र० १६५) में मिलता है। दोण नामक अधिकारी-द्वारा इन्हें कुछ दान दिया गया था। इन लेखोंमें नरेन्द्रसेन तथा नयसेनकी व्याकरण-शास्त्रमे निपुणताके लिए प्रशंसा की गयी है।[1]

एक लेख (क्र० १४७) में चन्द्रिकवाट वंशके शान्तिनन्दि भट्टारकका सन् १०६६ में उल्लेख है। इसमें मूलसंघका उल्लेख है किन्तु सेनगणका उल्लेख नहीं है।

सेनगणके तीसरे उपभेद पुस्तकगच्छका वर्णन १४वीं सदीके एक लेख (क्र० ४१५) में है। उसमें ग्यारह आचार्योंकी परम्परा बतलायी है। इस परम्पराके प्रभाकरसेनके शिष्य लक्ष्मीसेनके समाधिमरणका प्रस्तुत लेखमें वर्णन है। लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनका समाधिमरण सन् १८०५ में हुआ था (ले० ४२१)।

प्रस्तुत, संग्रहके पाँच लेखोंमें सेनगणका उल्लेख किसी उपभेदके बिना हुआ है (क्र० ४९२, ४९३, ५०४, ५०७, ६२६)। पहले दो लेखोंमे सन् १५९७ में सोमसेन भट्टारक-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अगले दो लेखों (५०४, ५०७) में समन्तभद्र आचार्यका सन् १६२२ एवं १६३२ में उल्लेख है। सन् १६२२ में उन्होंने एक मन्दिरका जीर्णोद्धार किया था तथा सन् १६३२ में दीवालीका त्यौहार मनानेके ढंगमें कुछ सुधार किया था। अन्तिम लेख अनिश्चित समयका है तथा इसमें प्रसिद्ध वादी भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्तीके समाधिमरणका उल्लेख है।[2]

---

१ पहले संग्रहमें चन्द्रकवाट अन्वयका कोई वर्णन नहीं है।

२ भावसेन कृत संस्कृत ग्रन्थ विश्वतत्त्वप्रकाश जीवराज ग्रन्थमाला (शोलापुर) द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इसकी प्रस्तावनामें हमने भावसेनका समय १३वीं सदीका उत्तरार्ध निश्चित किया है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहके १३ लेखोंसे सेनगणका अस्तित्व आठवीं सदीसे सत्रहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।[1]

(आ २) देशीगण—प्रस्तुत संग्रहमे देशीगणके पुस्तकगच्छ, आर्यसंघग्रहकुल, चन्द्रकराचार्याम्नाय, तथा मैणदान्वय इन चार परम्पराओंका उल्लेख हुआ है।

पुस्तकगच्छका एक उपभेद पनसोगे (अथवा हनसोगे) बलि था। इसका पहला उल्लेख (क्र० ७४) दसवी सदीके प्रारम्भका है[2] तथा इसमें श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है। इस बलिका दूसरा लेख (क्र० २७२) सन् ११८० के आसपासका है तथा इसमें नयकीर्तिके शिष्य अध्यात्मी बालचन्द्र-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है। इस शाखाके चार लेख और है (क्र० २९२, ३३५, ४१६ तथा ५३८) जो बारहवीसे चौदहवी सदी तकके है। इनमें ललितकीर्ति, देवचन्द्र तथा नयकीर्ति आचार्योंका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें 'घनशोकवली' इस प्रकार इस शाखाके नामका संस्कृतीकरण किया गया है।

पुस्तकगच्छका दूसरा उपभेद इंगुलेश्वर बलि था। इसका उल्लेख सात लेखोमें (क्र० २९०, ३१०, ३६९, ३७८, ३८२, ६०६, ६४२) मिला है। ये सब लेख १२वी – १३वी सदीके है। तथा इनमें हरिचन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुकीर्ति, माघनन्दि, नेमिदेव, चन्द्रकीर्ति तथा जयकीर्ति

---

१. सेनगणकी पुष्करगच्छ नामक शाखा कारंजा (विदर्भ) में १५वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थी। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है। पुष्करगच्छ सम्भवतः पोगिरि गच्छका ही संस्कृत रूप है।

२. यही इस संग्रहमें देशीगणका पहला उल्लेख है। पहले संग्रहमें देशीगणके उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से मिले हैं तथा पनसोगे शाखाके उल्लेख सन् १०८० (क्र० २२२) से प्राप्त हुए हैं।

इन आचार्योंके उल्लेख मिलते है ।[1]

प्रस्तुत संग्रहमें पुस्तकगच्छके उल्लेख विना किसी उपभेदके भी कई लेखोंमे मिलते हैं । इनमें पहला लेख (क्र० १६४) सन् १०८१ का है तथा इसमे सकलचन्द्र भट्टारकका उल्लेख है । इस प्रकारके अन्य लेख १७ है (क्र० १७१, १७७-८, १९०, २०३, २३४, २५१, ३१८-९, ३६१-६, ४९०, ५६१) । ये लेख १६वी सदी तकके है । इनसे कोई विस्तृत गुरु-परम्पराका पता नही चलता[2] ।

देशीगणके दूसरे उपभेद आर्यसंघग्रहकुलका उल्लेख एक ही लेख (क्र० ९४) में मिला है । यह लेख दसवी सदीका है तथा इसमें कुलचन्द्र-के शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख है । विशेष यह है कि यह लेख उडीसाके खण्डगिरिपर्वतपर मिला है जब कि देशीगणके अन्य उल्लेख मैसूर प्रदेशके है ।[3]

देशी गणका तीसरा उपभेद चन्द्रकराचार्याम्नाय भी एक ही लेखसे ज्ञात होता है (क्र० २१७) तथा यह मध्यप्रदेशमें मिला है । इसमें प्रतिष्ठाचार्य सुभद्र-द्वारा १२वी सदीके पूर्वार्धमे एक मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उल्लेख है ।[4]

देशी गणके चौथे उपभेद मैणदान्वयके शुभचन्द्र आचार्यका एक उल्लेख १३वी सदीमे मिला है (क्र० ३७२) ।[5]

---

१. पहले संग्रहमें इंगुलेश्वर बलिके उल्लेख सन् ११८२ (क्र० ४११) से सन् १५४४ (क्र० ६७३) तकके हैं ।

२ पहले संग्रहमें पुस्तक गच्छके उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से सन् १८१३ (क्र० ७४३) तक के हैं ।

३, ४ पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका कोई उल्लेख नही है ।

५. पहले संग्रहमें इस अन्वयका उल्लेख नहीं है इससे मिलता जुलता एक उपभेद वाणद बलि है जो पुस्तकगच्छके अन्तर्गत था (क्र० ४७८) इसका उल्लेख सन् १२३२ का है ।

किसी उपभेदके विना भी देशीगणके कई उल्लेख मिले है। इनमे दो लेखोंमें (क्र० ८३, १६९) सन् ९५० तथा १०९६ मे गुणचन्द्र और रविचन्द्र आचार्योंका उल्लेख है। इन लेखोंमे देशी गणके साथ सिर्फ कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण है। कोई १८ लेखोंमें मूलसघ – देशीगण इस प्रकार उल्लेख है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० १९३, २२९, २५६) बारहवी सदीके है। कोई ८ लेखोंमें देशीगणके साथ अन्य कोई विशेषण नही है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १२६, १३९, १४०) सन् १०३२ तथा १०५४ के है और इनमें अष्टोपवासी कनकनन्दि आचार्यको कुछ दान देनेका वर्णन है।

(आ ३) कोण्डकुन्दान्वय—देशी गणके पुस्तक गच्छको प्राय कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण दिया गया है। कुछ लेखोंमें किसी संघ या गणके विना सिर्फ कोण्डकुन्दान्वयका उल्लेख है। ऐसे लेखोमे प्राचीनतर लेख (क्र० १८०, २२२) ग्यारहवी-बारहवी सदीके हैं। एक प्राचीन लेख (क्र० ५४) में सन् ८०८ मे कोण्डकुन्देय अन्वयके सिर्मलगेगूरु गण-के कुमारनन्दि-एलवाचार्य-वर्धमानगुरु इस परम्पराका उल्लेख है। वर्ध-मानगुरुको राष्ट्रकूट राजा कम्भराजने एक ग्राम दान दिया था। इस लेखमें कोण्डकुन्देय अन्वय यह शब्द प्रयोग है जो स्पष्टत कोण्डकुन्दे स्थान-का सूचक है।[1]

(आ ४) सूरस्थ गण – प्रस्तुत सग्रहमे इस गणका पहला उल्लेख सन् ९६२ का है (क्र० ८५)। इसमें प्रभाचन्द्र – कल्नेलेदेव-रविचन्द्र-

---

१. पहले सग्रहमे कोण्डकुन्दान्वयका प्रथम उल्लेख सन् ७९७ में (क्र० १२२) विना किसी गणके हुआ है। वहाँ सिर्मल-गेगूरु गणका कोई उल्लेख नहीं है। कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण क्वचित् द्राविड संघ, सेनगण आदिके लिए भी प्रयुक्त हुआ है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४९, ५१)

रविनन्दि-एलाचार्य इस परम्पराका वर्णन है। गग राजा मारसिंह २ ने एलाचार्यको एक ग्राम अर्पण किया था।[1]

सूरस्थ गणके दो उपभेदोका पता चला है – कौरूर गच्छ तथा चित्रकूटान्वय।[2] कौरूर गच्छका एक ही लेख है (क्र० ११७) तथा इसमें सन् १००७ में अर्हणन्दि पण्डितका वर्णन है। चित्रकूटान्वयके १० लेख है। पहले लेखमें (क्र० १५३) सन् १०७१ में इस अन्वयके श्रीनन्दि पण्डितकी एक शिष्याको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। श्रीनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी – चन्द्रनन्दि-दामनन्दि-सकलचन्द्र-कनकनन्दि-श्रीनन्दि। श्रीनन्दि तथा उनके गुरुबन्धु भास्करनन्दिके समाधिलेख सन् १०७७-७८ के है (क्र० १६०)। इस अन्वयका तीसरा लेख (क्र० १५८) सन् १०७४ का है तथा इसमें अरुहणन्दिके शिष्य आर्य पण्डितको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अगले दो लेखोसे (क्र० २३७-३८) इस अन्वयकी एक परम्पराका पता चलता है जो इस प्रकार थी – वासुपूज्य-हरिणन्दि-नागचन्द्र। हरिणन्दि तथा नागचन्द्रको सन् ११४८ में कुछ दान मिला था। इस अन्वयके अन्य लेख अनिश्चित समयके है। इस प्रकार काई १४ लेखोसे सूरस्थ गणका अस्तित्व दसवी सदीसे बारहवी सदी तक प्रमाणित होता है।[3]

(आ ५) बलगार-(बलात्कार)-गण – इस गणका पहला उल्लेख

---

१. सूरस्थ गणका प्राचीन लेख पहले सग्रहमें सन् १०५४ का है (क्र० १८५)।

२. पहले सग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका वर्णन नहीं है। वहाँ चित्रकूटान्वयका सम्बन्ध बलगार गणसे भी पाया गया है (क्र० २०८)

३ कुछ लेखोंमें सेनगण और सूरस्थगणको (जिसे कहीं-कहीं शूरस्थ भी कहा है) अभिन्न माना है। इसका विवरण हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' के सेनगण विषयक प्रकरणमें दिया है।

सन् १०७१ का है (क्र० १५४)।[1] इसमें मूलसंघ-नन्दिसंघका वलगार गण ऐसा इसका नाम है तथा इसके ८ आचार्योंकी परम्परा दी है जो इस प्रकार है -- वर्धमान-महावादी विद्यानन्द--उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि-गुणकीर्ति-विमलचन्द्र-गुणचन्द्र--गण्डविमुक्त-उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि।[2] अगले लेख (क्र० १५५) में इसी परम्पराके तीन और आचार्योंके नाम हैं--अभयनन्दि-सकलचन्द्र-गण्डविमुक्त २--त्रिभुवनचन्द्र। इन लेखोंमे गुणकीर्ति तथा त्रिभुवनचन्द्रको मिले हुए दानोंका विवरण है। लेख १५७ में सन् १०७४ मे पुन. त्रिभुवनचन्द्रका उल्लेख है। इस गणके अगले महत्त्वपूर्ण लेख (क्र० ३४२, ३७६) तेरहवी सदीके हैं। इनमें शास्त्रसारसमुच्चय आदि ग्रन्थोंके कर्ता माघनन्दि आचार्यका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परामे १९ आचार्योंके नाम दिये हैं किन्तु उनका क्रम व्यवस्थित प्रतीत नही होता।

चौदहवी सदीमे बलात्कारगणके साथ सरस्वतीगच्छका उल्लेख मिलता है। इसकी एक परम्पराके आचार्य अमरकीर्ति थे। इनके शिष्य माघनन्दिने सन् १३५५में एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० ३९३) इसी परम्पराके तीन लेख और हैं। इनमें वर्धमान, धर्मभूषण तथा वर्धमान २ इन भट्टारकोंका उल्लेख है। ये लेख सन् १३९५ तथा १४२४ के हैं (क्र० ४०२,

---

1 इस लेखसे बलगार गणकी परम्पराका अस्तित्व सन् ९०० तक ज्ञात होता है। अत. डॉ० चौधरीकी यह कल्पना गलत प्रतीत होती है कि यह बलहारि गणका ही रूपान्तर है। बलहारि गणका उल्लेख पहले संग्रहमें सन् ६५० के लगभग मिला है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० २९, ३०)।

२ इस परम्परामें माणिक्यनन्दिका नाम उल्लेखनीय है। हमारा अनुमान है कि परीक्षामुखके कर्ता माणिक्यनन्दि इनसे अभिन्न होंगे।

४०४, ४३४)।[1]

बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छकी उत्तर भारतीय शाखाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४४८, ४६०,४६८)।[2] इनमें सन् १५०० में रत्नकीर्तिका तथा सन् १५३१ में धर्मचन्द्रका उल्लेख है।

(आ ६) क्राणूर गण – इस गणके उल्लेखोंमें पहला दसवीं सदीका है (क्र० ९६)।[3] इसमें एक विस्तृत गुरुपरम्पराका वर्णन है किन्तु लेखके बीच-बीचमें घिस जानेसे इस परम्पराका ठीक ज्ञान नही होता। इस लेखमें मुनिचन्द्र आचार्यके एक शिष्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है।

क्राणूर गणके तीन उपभेदोंके उल्लेख मिले हैं – तिन्त्रिणी गच्छ, मेषपाषाण गच्छ तथा पुस्तकगच्छ। तिन्त्रिणी गच्छके ६ लेख हैं (क्र० २१२, २९१, ३२३, ४७६, ५६५, ६१९)। पहले दो लेख बारहवीं सदीके हैं[4] तथा इनमें मेघचन्द्र तथा पर्वतमुनि इन आचार्योंका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १२०७ का है तथा इसमें अनन्तकीर्ति भट्टारकको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अनन्तकीर्तिके पूर्ववर्ती छह आचार्योंके नाम भी इस

---

१ इस परम्पराका वर्णन पहले संग्रहके क्र० ५७२ तथा ५८५ में भी है।

२. पहले संग्रहमें ऐसे दो लेख हैं (क्र० ६१७, ७०२)। क्र० ६१७ में इसे सरसारद गच्छ पढ़ा गया है, यह 'श्रीमद्शारद गच्छ'-अर्थात् सरस्वतीगच्छका ही रूपान्तर है। उत्तर भारतमें बलात्कारगणकी इस शाखाएँ १४वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थीं। इनका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' मे दिया है।

३. पहले संग्रहमें क्राणूरगणका प्राचीनतम लेख सन् १०७४ का (क्र० २०७) है।

४ पहले संग्रहमें तिन्त्रिणीगच्छका पहला लेख सन् १०७५ का (क्र० २०९) है।

लेखमें दिये हैं। इस गच्छके चौथे लेख (क्र० ४७६) मे सन् १५५६ में देवकीर्ति-मुनिचन्द्र-देवचन्द्र यह परम्परा दी है। लेखके समय देवचन्द्रको कुछ दान मिला था।

मेषपाषाणगच्छके दो लेख है (क्र० २१४, ६०३)। पहले लेखमें सन् ११३० में प्रभाचन्द्र के शिष्य कुलचन्द्र आचार्यका वर्णन है। दूसरा लेख इस गच्छकी एक बसदिके बारेमें है।[1]

पुस्तक गच्छका एक लेख (क्र० २४०) सन् ११५० का है किन्तु यह बीच-बीचमे घिसा हुआ है अत. इसका तात्पर्य स्पष्ट नही है।[2]

बारहवी-तेरहवी सदीके चार लेखोमें (क्र० २०२, ३१२, ३२६, ३७३) क्राणूरगणके कनकचन्द्र, माधवचन्द्र तथा सकलचन्द्र आचार्योका वर्णन है। इनका गच्छ नाम अज्ञात है।

इस तरह कोई १५ लेखोंसे क्राणूरगणका अस्तित्व दसवी सदीसे सोलहवी सदी तक प्रमाणित होता है।

(आ ७) निगमान्वय—मूलसंघ-निगमान्वयका एक लेख (क्र० ३६०) सन् १३१० का है। इसमे कृष्णदेव-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।[3]

उपर्युक्त विवरणसे मूलसघके भेद-प्रभेदोका अच्छा परिचय मिलता है। कोई १५ लेखोंमें किसी भेदका उल्लेख किये विना मूलसघका उल्लेख मिलता है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० ११२, १४५, २०४) दसवी-

---

१. पहले सग्रहमें मेषपाषाणगच्छका पहला उल्लेख सन् १०७९ का है (क्र० २१८)

२ पहले संग्रहमें इस गच्छका कोई उल्लेख नहीं है (देशीगण तथा सेनगणमें भी पुस्तकगच्छ थे उनका वर्णन पहले आ चुका है।)

३. पहले सग्रहमें इस अन्वयका कोई लेख नहीं है।

लिए दो गाँवोके दानका वर्णन है। चौथे लेखमे (क्र० ६३) राजा दुग्गमार-द्वारा नवी सदीमे एक मन्दिरको भूमिदान देनेका उल्लेख है। इसके बाद दसवी सदीके प्रारम्भके एक लेखमे (क्र० ७६) एरेय राजाके समय एक जैन आचार्यके समाधिमरणका वर्णन है। सन् ९५० के एक लेख (क्र० ८३) मे राजा बूतुगकी रानी पद्मब्बरसि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ दानका वर्णन है। सन् ९६२ मे राजा मारसिंह २ ने अपनी माता-द्वारा निर्मित मन्दिरके लिए एलाचार्यको एक गाँव दान दिया था (क्र० ८५) इसी वर्षमे इस राजाने मुजार्य नामक जैन ब्राह्मणको भी एक गाँव दान दिया था (क्र० ८६)। सन् ९७१ मे इस राजाके समय शखजिनालयको कुछ दान मिलनेका वर्णन एक लेखमे (क्र० ८८) मे है। दसवी सदीके अन्तके एक लेख (क्र० ९६) में राजा रक्कसगग तथा नन्नियगगके समय कुछ दानका वर्णन है। एक लेख (क्र० १५४) मे बूतुग राजा तथा रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख है। इनकी स्मृतिमे गगकन्दर्प नामक जिनमन्दिर अण्णिगेरे नगरमे बनवाया गया था। एक अन्य लेखमे (क्र० २०७) पुन रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख हुआ है। इस तरह गगवशके राज्यकालमें जैनसघकी स्थिति सदा ही प्रभावशाली रही थी।[1]

(आ २) कदम्ब वश – इस वशके स्वतन्त्र राज्यकालका एक लेख (क्र० २१) इस सग्रहमें है जो छठी सदीके राजा रविवर्माके समय-का है। इस राजाने एक सिद्धायतनके लिए कुछ भूमि दान दी थी।[2] राष्ट्रकूट तथा चालुक्य साम्राज्यमे कदम्बवशके कई सामन्त प्रादेशिक शासक थे। ऐसे सामन्तोके कोई १५ लेख मिले है। सन् ८९० के एक

---

१ पहले सग्रहमे गग वशके कई लेख हैं, जिनमें सबसे प्राचीन लेख (क्र० ९०) पाँचवीं सदीके उत्तरार्धका है।

२. पहले सग्रहमें इस वंशके दस लेख है जो पाँचवीं व छठी सदीके हैं (क्र० ९६-१०५)।

लेखमें कदम्ब महासामन्त अलियमरस-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका वर्णन है (क्र० ६०)। सन् १०४५ के एक लेखमें कोकण प्रदेशमें महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवके शासनका उल्लेख है (क्र० १३१) तथा एक मन्दिरको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। सन् १०८१ के दो लेखोंमें कदम्ब राजा गोवलदेव तथा 'कादम्बचक्रवर्ति' वीरमके समय एक वसदिको दान मिलनेका तथा एक महिलाके समाधिमरणका वर्णन है (क्र० १६३-४)। सन् १०९६ में कदम्ब कुलके सामन्त एरेयगकी रानी असवव्वरसिने एक मन्दिर बनवाया था (क्र० १६९)। सन् ११२३ और ११३० के दो दानलेखोंमें (क्र० २०२ व २१४) कदम्ब सामन्त तैलपदेव तथा मयूरवर्माके शासनका उल्लेख है। तैलपदेवके शासनका उल्लेख सन् ११४८ के दो दानलेखोंमें भी है (क्र० २३६-२३८)। सन् १२०७ के एक दानलेखमें कदम्ब सामन्त ब्रह्मका तथा सन् १२१८ में जयकेशीका उल्लेख मिला है क्र० ३२३ व ३२५)। सन् १५०४ में कदम्ब लक्ष्मप्परसने चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्यको धर्माधिकार प्रदान किये थे (क्र० ४५५)। एक अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६१४) में त्रिभुवनवीर नामक कदम्ब शासककी रानीके समाधिमरणका उल्लेख है।

(आ ३) राष्ट्रकूट वंश — प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशके देज्ज महाराजके सामन्त सेन्द्रक इन्द्रणन्दका एक लेख है (क्र० २२) जो छठी-सातवी सदीका है। इन्द्रणन्दने आर्यनन्दि आचार्यको एक ग्राम दान दिया था।[1] राष्ट्रकूट वंशकी प्रधान शाखाके कोई १३ लेख इस संग्रहमें हैं।[2] इनमें पहला

१. देज्ज राजाका राष्ट्रकूटोंके प्रमुख वंशसे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है। सेन्द्रक वंशके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं — (क्र० १०४, १०६, १०९)।

२. पहले संग्रहमें इस शाखाके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १२४) सन् ८०२ का है।

लेख सन् ८०८ का है (क्र० ५४)। इसमें सम्राट् गोविन्द ३ के राज्यकालमें उनके ज्येष्ठ बन्धु रणावलोक कम्बराज द्वारा [illegible] एक गाँवके दानका वर्णन है। दूसरे लेख (क्र० ५५) में सन् ८१२ में सम्राट् अमोघवर्षका तथा उनके चाचाके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्षका उल्लेख है। कर्कराजने अपराजितगुरुको एक गाँव दान दिया था। सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्षने नागनन्दि आचार्यको भूमिदान दिया था (क्र० ५६)। सन् ८६४ में इसी सम्राट्के राज्यकालमें एक समाधिलेख लिखा गया था (क्र० ५७)। नवीं-दसवीं सदीके एक लेखमें [illegible] का वर्णन है जिसमें उन्हें राष्ट्रकूट वंशका [illegible] कहा है (क्र० ७०)। सन् ९०२ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् कृष्ण २ अकालवर्षका तथा सन् ९२५ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् गोविन्द ४ प्रभूतवर्षके शासनका उल्लेख है (क्र० ७७, ७८)। कृष्ण ३ के [illegible] ने सन् ९[illegible] में एक जिनमन्दिर निर्माण कराया था (क्र० ७९)। सन् ९[illegible] के एक लेखमें कृष्ण ३ अकालवर्षके शासनका तथा इसके बादके एक लेखमें सम्राट् खोट्टिगका वर्णन है (क्र० ८३, ८७)। इन्द्र ४ [illegible] ने एक जिनमूर्तिका पादपीठ बनवाया था (क्र० ८९)। सम्राट् इन्द्र ३ के सेनापति श्रीविजयकी प्रशंसामें एक स्तम्भलेख मिला है (क्र० ९३)।

बारहवीं सदीके एक लेख (क्र० २१७) में कलचुरि राजा [illegible] के अधीन राष्ट्रकूट कुलके सामन्त गोल्लणदेवका उल्लेख है।

(आ ४) पाण्ड्य वंश – इस वंशके [illegible] लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं[1]। इनमें पहला (क्र० २३) सातवीं सदीके राजा [illegible] विक्रमादित्यके समयका दानलेख है। आठवीं सदीके एक लेखमें (क्र० ५०) सुन्दर पाण्ड्य राजा-द्वारा एक जिनमन्दिरको जमीनकी करमुक्ति करनेका वर्णन है। सन् ८७० में राजा वरगुण २ के समय दो मूर्तियोंका जीर्णोद्धार हुआ

१. पहले संग्रहमें इस वंशका कोई लेख नहीं है।

था (क्र० ५८) । सित्तन्नवासलके गुहामन्दिरका जीर्णोद्धार नवी सदीमें राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयमें हुआ था (क्र० ६२)। इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० ३५६) सन् १२९० का एक दानलेख है तथा इसमें मारवर्मन् विक्रम पाण्ड्यके राज्यका उल्लेख है।

(आ ५) पल्लववंश—इसका उल्लेख तीन लेखोंमें है। इनमें पहला लेख (क्र० २०) छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें पल्लव राजा सिंहविष्णु-की माता-द्वारा निर्मित एक जिनमन्दिरका वर्णन है। दूसरे लेख (क्र० ३९) मे सातवी-आठवी सदीके शासक पल्लवादित्य वादिराजुलको अर्हत् भट्टारक-क पादानुध्यात कहा है। तीसरा लेख (क्र० ५३७) अनिश्चित समयका है तथा इसमें पेरुजिगदेव नामक पल्लव राजाके शासनका उल्लेख है।[1]

(आ ६) चालुक्य वंश—वदामीके चालुक्य राजाओंके दो लेख इस सग्रहमें है।[2] पहला (क्र० ४६) सन् ७०८ का है तथा इसमें राजा विजयादित्यकी रानी कुकुमदेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। दूसरे लेख (क्र० ४६) में राजा कीर्तिवर्मा २के राज्यमें सन् ७५१ मे एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।

वेंगीके चालुक्य राजाओंके तीन लेख इस सग्रहमे है।[3] पहला (क्र० ४४) लेख राजा जयसिंहवल्लभ २ के राज्यका—आठवी सदीके प्रारम्भका है तथा इसमें रट्टगुडि वशके सामन्त कल्याणवसन्त-द्वारा अर्हत् भट्टारकको कुछ दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० ४९) आठवी सदीके उत्तरार्धमे राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके समयका है तथा इसमें सामन्त गोकय्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए दानका वर्णन है। तीसरे (क्र० १००)

---

१. इस वंशका एक लेख पहले संग्रहमें है (क्र० ११५)।

२ इस शाखाके ६ लेख पहले संग्रहमे हैं (क्र० १०६-८ तथा १११, ११३,११४)।

३. इस शाखाके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं (क्र० १४३-१४४, २१०)।

में दसवी सदीके उत्तरार्धमें अम्मराज २-द्वारा विजयवाटकके जिनमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

कल्याणीके चालुक्य राजाओंके लेख संख्यामें सर्वाधिक—५८ हैं। लेखोंकी अधिकताके कारण हम यहाँ उन लेखोंका ही उल्लेख करेंगे जिनमें इस वंशके सम्राटोंका जैन धर्मकार्योंसे साक्षात् सम्बन्ध आया था – जिनमे सिर्फ उनके राज्यकालका उल्लेख है उनका निर्देश सूचीमें होगा ही। इस वंशके लेखोंमे पहला (क्र० ११७) सन् १००७ का है तथा इसमें सामन्त नागदेवकी पत्नी-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। यह लेख सम्राट् सत्याश्रय आहवमल्लके समयका है। सन् १०२७ के एक लेखमें (क्र० १२४) सम्राट् जयसिंह २ की कन्या सोमलदेवी-द्वारा एक मन्दिरको कुछ दान मिला था ऐसा वर्णन है। सन् १०३२ के एक लेखमे सम्राट् जगदेकमल्ल-द्वारा एक मन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० १२६)। इस मन्दिरका नाम ही जगदेकमल्ल जिनालय था। जगदेकमल्लकी बहन अक्कादेवीने सन् १०४७ में गोणदबेडंगि जिनालयको कुछ दान दिया था (क्र० १३४)। सन् १०५५ के एक लेखमे आचार्य इन्द्रकीर्तिको त्रैलोक्यमल्लकी सभाका आभूषण कहा है। (क्र० १४१)। इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० २७४) सन् ११८५ का है तथा इसमें सोमेश्वर ४ के राज्यकालमें एक मन्दिरको कुछ दानका वर्णन है।[1]

(आ ७) चोल वंश—इस वंशका उल्लेख कोई २५ लेखोंमें है।[2] इनमें पहला (क्र० ८२) सन् ९४५ का है तथा इसमें राजा परान्तक १ के समय एक कूपके निर्माणका वर्णन है। सन् ९९९ के एक लेखमें

---

१ पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १६६) सन् ९९० के आसपासका है।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख (क्र० १६७, १७१, १७४) हैं।

(क्र०९२) राजराज १ के समय कुछ जैन आचार्योंका उल्लेख है। दसवी सदीके उत्तरार्धके एक दानलेखमें (क्र० ९८) गण्डरादित्य मुम्मुडि चोल राजाका उल्लेख है। सन् १००९ के एक लेखमें (क्र० ११९) राजराज १ की आज्ञाका वर्णन है जो ब्राह्मणो तथा जैनोको नियमित रूपसे कर देनेके लिए दी गयी थी। दो दानलेखोमें (क्र० १२१,१२९) ग्यारहवी सदी-पूर्वार्धमें राजेन्द्र १ चोलके शासनका उल्लेख है। सन् १०६८ के दो दानलेख राजेन्द्र २ के शासनकालके है (क्र० १५०-५१)। कुलोत्तुग १ के शासनके पाँच लेख है (क्र० १६७,१७३,१९४,१९५,१९८)। जो सन् १०८६ से १११८ तकके दानलेख है। विक्रमचोलके शासनके दो दानलेख सन् ११३१ तथा ११३४ के है (क्र० २१५,२१९) कुलोत्तुग २ के राज्यकालके तीन लेख है जिनमे एक सन् ११३७ का है (क्र० २२३, २२४,२२६)। राजराज २ के शासनके तीन लेख सन् ११५६-५७ के है। (क्र० २४८-२५०)। कुलोत्तुग ३ के समयके दो लेख है (क्र० ३२४,३८०) इनमें पहला सन् १२१६ का तथा दूसरा अनिश्चित समयका है। इस दूसरे लेखके अनुसार कुलोत्तुग राजाने नल्लूर नामक गाव एक देवमन्दिरको अर्पण किया था।

इस तरह हम देखते है कि चोल राजाओके प्राय सब लेख राजपुरुषो-से साक्षात् सम्बन्ध नही रखते।

युद्धके दिनोमें चोल सेना-द्वारा जिनमन्दिरोका विध्वस होनेका वर्णन सन् १०७१-७२ के एक लेखमें (क्र० १५४) हुआ है।

(आ ८) होयसल वंश—इस वशके कोई ३० लेख प्रस्तुत सग्रहमे है।[1] इनमे सबसे पहला लेख (क्र० १४५) सन् १०६२ का है तथा

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० २००) सन् १०६२ का ही है।

इसमें राजा विनयादित्य-द्वारा अभयचन्द्र पण्डितको दान दिये जानेका वर्णन है। सन् १०६९ के एक लेखमें विनयादित्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। ग्रामीण लोग गरीबीके कारण यह कार्य नही कर सके थे अत राजाने सहायता देकर यह मन्दिर बनवाया था (क्र० १५२) ग्यारहवीं सदी-अन्तिम चरणके एक लेखमें (क्र० १७५) वर्धमान आचार्यको होयसल राज्यके कार्यकर्ता यह विशेषण दिया है। राजा बल्लाल १ के सेनापति मरियानेने बारहवी सदीके प्रारम्भमें एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० १८३)। बारहवी सदी – प्रथम चरणके दो लेखोंमें राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी तथा उसके बन्धु दुद्दमल्ल-द्वारा जिन-मन्दिरोंको दान देनेका वर्णन है (क्र० १८८-८९)। इस समयके चार लेखोंमें (क्र० २००, २०१, २१२, २१३) विष्णुवर्धनके चार सेनापतियों– गंगराज, उसका पुत्र बोप्प, पुणिसमय्य तथा मरियानेके धर्मकार्यों का – मन्दिर निर्माण, दान आदिका वर्णन है। राजा नरसिंह १ ने सन् ११५९में एक मन्दिरको कुछ दान दिया था (क्र० २५२) तथा उसके सेनापति भरतिमय्य एव माचियणने सन् ११४५ तथा ११५३ में इसी प्रकारके दान दिये थे (क्र० २३३, २४६)। सन् ११७६ तथा ११९२ के लेखोंमें (क्र० २७१, २८२) राजा वीरबल्लाल २ द्वारा जिनमन्दिरोंको दान देने-का वर्णन है तथा सन् ११७३ एव ११९० के लेखोंमें इसी राजाके अधीन अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानोका उल्लेख है (क्र० २६८, २८१)। इसी राजाके समयके तीन दानलेख और है (क्र० २८५, २८६, ३२३) जो सन् ११९९ से १२०७ तक के है तथा दो समाधिलेख है (क्र० ३२०-३२२)। राजा नरसिंह ३ ने सन् १२६५में एक जिनमन्दिरको दान दिया था (क्र० ३४२) तथा उसके अधीन अधिकारियोंने सन् १२५७, १२७१ तथा १२८५ में ऐसे ही धर्मकार्य किये थे (क्र० ३३५, ३४५, ३५१)। एक लेखमें राजा रामनाथ-द्वारा पार्श्वनाथ मन्दिरको दान देनेका वर्णन है (क्र० ३६०) तथा एक अन्य लेखमें राजा वीरबल्लाल ३ के समय सन्

१३१९में कुछ स्थानीय अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानका उल्लेख मिलता है (क्र० ३९१)।

(आ ९) कलचुर्य वंश—प्रस्तुत सग्रहमें इस वंशका उल्लेख सात लेखोंमें है।[1] इनमें पहला लेख सन् ११५९ का है तथा इसमें किसी सेनापति-द्वारा एक जैन आचार्यको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० २५१)। यह लेख राजा विज्जलके समयका है। इस राजाका उल्लेख चार अन्य लेखोंमें है (क्र० २५६, २६०-२६२)। ये लेख सन् ११६१ से ११६८ तक के है तथा इनमें स्थानीय अधिकारियों-द्वारा जैन आचार्योंको मिले हुए दानोंका वर्णन है। इस वशके अन्तिम दो लेख राजा सोविदेवके राज्यके सन् ११७३ तथा ११७५ के है (क्र० २६७, २७०) तथा इनमें भी स्थानीय व्यक्तियोंके दानोंका उल्लेख है।

(आ १०) यादव वश—देवगिरिके यादवोंका उल्लेख प्रस्तुत सग्रहके १५ लेखोंमें है।[2] इनमे पहला लेख (क्र० ३२६) राजा सिंहणके समय सन् १२३० में लिखा गया था तथा एक मन्दिरके लिए कुछ दानका इसमें वर्णन है। इस राजाके समयके तीन अन्य लेखोंमें (क्र० ३२८, ३२९, ३३०) तीन महाप्रधानो – प्रभाकरदेव, मल्ल तथा बीचिराज-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है। ये लेख सन् १२४५ तथा १२४७ के है। राजा कन्हरदेवके राज्यके चार लेख हैं (क्र० ३३४, ३३६, ३३७, ३३९)। ये लेख सन् १२५७ से १२६२ तकके है इनमे तीन दानलेख है तथा एक समाधिलेख है। राजा महादेवके समयके तीन लेख है (क्र० ३४०, ३४१, ३४४), ये सन् १२६५ तथा १२६९ के है तथा तीनो समाधिमरणके स्मारक है। राजा रामचन्द्रके समयके चार लेख है (क्र० ३५२, ३५४, ३५५, ३५९), ये सन्

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० ४०८, ४२५, ४२६)।
२. पहले संग्रहमें इस वंशके ९ लेख हैं, जिनमें पहला (क्र० ३१७) सन् ११४२ का है।

१२८५ से १२९७ तक के हैं। पहले लेखमें सर्वाधिकारी मायदेव-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है, दूसरा एक समाधिलेख है, तीसरेमें एक मन्दिरके लिए दानोंका वर्णन है तथा चौथेमें महामण्डलेश्वर तिकमदेव-के मन्त्रीके पुत्र-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है।

(आ ११) विजयनगरके राजवंश—विजयनगर राज्यके कोई २० लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।[१] इनमें पहला (क्र० ३९३) सन् १३५५ का है तथा हरिहर राजाके समय एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। बुक्क राजाके समयके दो लेख हैं (क्र० ३९४, ३९६), ये सन् १३५७ तथा १३७६ के हैं। पहला लेख एक जिनमन्दिरके अवशेषोंमें है तथा सेनापति वैचयका इसमें उल्लेख है। दूसरा एक समाधिलेख है। राजा हरिहर २ के सेनापति इरुगने एक जिनमन्दिर बनवाया था (क्र० ४०३)। तथा इस राजाके अधीन गोवाके शासक माधवके सेनापति नेमण्णने पार्श्वनाथ-मन्दिरको सन् १३९५ में कुछ दान दिया था (क्र० ४०२)। सन् १३९५ के ही एक लेखमें वैचय दण्डनायकके पुत्र इम्मडि बुक्कमन्त्रीश्वर-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है (क्र० ४०४)। राजा बुक्क २के समयके दो लेख हैं (क्र० ४०६, ४१५) इनमें एक शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका स्मारक है तथा दूसरेमें लक्ष्मीसेन भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है। राजा देवरायके समयके दो लेख हैं (क्र० ४२५, ४३४) – पहला सन् १४१२ का है तथा दो मन्दिरोंकी सीमाओंके बारेमें एक समझौतेका इसमें वर्णन है। दूसरा सन् १४२४ का है तथा इसमें राजा-द्वारा नेमिनाथ-मन्दिरके लिए वराग ग्रामके दानका वर्णन है। राजा मल्लिकार्जुनके समय सन् १४५० में एक मन्दिरको मिले हुए दानोंका वर्णन एक लेखमें है (क्र० ४४०)। कृष्णदेव महारायके समयके एक लेखमें (क्र० ४५६)

१ पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला सन् १३५२ का है (क्र० ५५८)।

मन्दिरोकी भूमियोंको करमुक्त करनेका वर्णन है, यह लेख सन् १५०९ का है। वराग ग्रामकी मन्दिरकी जमीनको खेतीयोग्य बनानेका वर्णन सन् १५१५ के एक लेखमें है (क्र० ४५८)। राजा अच्युतदेवने सन् १५३० मे एक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए कुछ करोंकी आय दान दी थी (क्र० ४६७)। राजा सदाशिवके समय रामराजने सन् १५४५ में एक जिनमन्दिरको कुछ भूमि दान दी थी (क्र० ४७३)। इसी राजाके समयका एक दानलेख सन् १५५६ का है (क्र० ४७६)। राजा रामदेवके समय सन् १६१९ मे एक जैन विद्वान्को कुछ दान दिया गया था (क्र० ५०३)। इस राज्यका अन्तिम लेख सन् १७५७ का है (क्र० ५२०) तथा इसमें सदाशिव रायके अधीन शासक अरसप्पोडेय-द्वारा चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

(आ १२) दक्षिण भारतके छोटे राजवश—अब हम उन राजवंशोंके उल्लेखोका विवरण देखेगे जिन्होने राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल या यादव राज्योंमें सामन्तोके रूपमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। ऐसे वशोमें नोलम्ववश प्रथम है जिसके चार लेख मिले है (क्र० ५९, ६१, १२३, १३९)।[1]

इनमें पहले दो लेख राजा महेन्द्रके समयके है। एकमे राजा-द्वारा सन् ८७८ मे एक जिनमन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है तथा दूसरेमे सन् ८९३ मे आचार्य कनकसेनके लिए कुछ दानका उल्लेख है। नोलव घटेयककारने एक जिनमन्दिरको सन् १०२४ में भूमिदान दिया था (क्र०१२३)। नोलव ब्रह्माधिराजके समय सन् १०५४ में अष्टोपवासी मुनिको कुछ दान मिले थे (क्र० १३९)।

हुम्मचके सान्तर वशके चार लेख मिले है (क्र० १३७,२५८,४२२-

---

१ पहले संग्रहमे नोलम्बवाडिके कई उल्लेख हैं किन्तु नोलम्ब राजाओंका कोई लेख नहीं है।

४६१)।[1] इनमें पहला लेख सन् १०५३ का है तथा इसमें राजा वीर सान्तर-द्वारा उसके जैन मन्त्री नकुलरसको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। दूसरे लेखमें राजा तैलपदेवके जैन सेनापति गोग्गिकी मृत्युके बाद राजा-द्वारा उसके कुटुम्बियोंको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। यह लेख सन् ११६२ का है। तीसरे लेखमें राजा पाण्ड्यभूपाल-द्वारा एक जिन-मन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। यह लेख सन् १४१० का है। चौथा लेख सन् १५२२ का है तथा इसमें इम्मडि भैरवरस राजा-द्वारा वरागके नेमिनाथमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

सिन्द कुलके सामन्तोंके चार उल्लेख मिले हैं (क्र० १३८, १६६, २६१, २६४)।[2] इनमें पहला सन् १०५३ का है तथा इसमें सिन्द कचरस-द्वारा नयसेन आचार्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है। दूसरा लेख सन् १०८५ का है तथा यह सिन्द बर्मदेवरसके समयका दानलेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६७ मे सिन्द होलरस-द्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका वर्णन है। अन्तिम लेखमें सन् ११७० मे सिन्द चावुण्डरस-द्वारा जैन शालाको भूमिदान मिलनेका वर्णन है।

रट्ट कुलके उल्लेख छह लेखोंमें है (क्र० १७६, १८६, २५९, ३१७, ३१८, ३१९)।[3] इनमे पहला लेख ११वी सदीका राजा कार्तवीर्य २ के समयका है, इसका विवरण अधूरा है। दूसरा लेख सन् ११०८ का है तथा इसमें राजा लक्ष्मीदेव-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६५ में राजा कार्तवीर्य ३-द्वारा एक्कसम्बुगेके जिनमन्दिरके

---

१ पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १४६) सन् ९५० के आसपासका है।

२ पहले संग्रहमें सिन्द राजाओंके लेख नहीं है।

३ पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १३०) सन् ८७५ का है।

दर्शनका वर्णन है। अन्तिम तीन लेख कार्तवीर्य ४ के राज्यके सन् १२०१ तथा १२०४ के हैं। इनमें राजा-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है।

शिलाहार वशके चार लेख मिले हैं (क्र० १९२, २२१, २२२, २५९)।[1] इनमे पहला सन् १११५ का है तथा इसमें राजा गण्डरादित्य-द्वारा उनके जैन सामन्त नोलम्बको दो गाँवोंके दानका वर्णन है। अगले दो लेखोंमें गण्डरादित्यके जैन सामन्त निम्बका वर्णन है। इसने सन् ११३५ मे एक जिनमन्दिरका निर्माण कराया था। अन्तिम लेखमें गण्डरादित्यके जैन सेनापति जिन्नण तथा विजयादित्यके सेनापति कालणका उल्लेख है। कालणने सन् ११६५ में एक मन्दिर वनवाया था।

काकतीय वंशका एक लेख सन् १११७ का मिला है (क्र० १९७)।[2] इसमें राजा प्रोलके मन्त्री बेतकी पत्नी-द्वारा अन्मकोण्डमे पद्मावती देवीका मन्दिर वनवानेका वर्णन है।

गुत्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यने सन् ११६२ मे पार्श्वनाथ-मन्दिरके लिए कुछ दान दिया था (क्र० २५७)।[3]

कोगाल्व वशके शासक वीरकोगाल्वने सन् १११५ के आसपास सत्यवाक्यजिनालय नामक मन्दिर वनवाया था (क्र० १९३)।[4]

मैसूरके राजा चामराजकी रानी देवीरम्मणिने मैसूरके शान्तिनाथ-मन्दिरमें दीपस्तम्भ तथा कलश दान दिये थे (क्र ५२४-५२५)। इनका

---

१. पहले सग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० २५०, ३२०, ३३४)।
२.३. पहले संग्रहमें इन दो वंशोंका उल्लेख नहीं है।
४ पहले संग्रहमें इस वंशके छह लेख हैं जिनमें पहला सन् १०५८ का है (क्र० १८९)।

जैन शिलालेख संग्रह

[मूल लेख तथा सारांश]

लिपि सनपूर्व ३री सदीकी है। ये गुहाएँ श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं।]

[रि० मा० ए० १९३७-३८ क्र० ५३१ पृ० ५९]

३

खण्डगिरि (ओरिसा)— (मंचपुरी गुहा—ऊपरका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सनपूर्व पहली सदी

१ अरहतपसादाय कालिंगा (न) (मम) नान लेण कारितं राजिनो लालाक (स)

२ हथिसाहस-पपोतस धु (तु) ना कलिंगच (कवतिनो सिरिखा)-रवेलस

३ अगमहिसि (ना) कारि (त)

[अरहतोकी कृपासे कलिंग प्रदेशके श्रमणोंके लिए यह गुहा कलिंग-चक्रवर्ती खारवेलकी महारानीने बनवायी। यह हथिसाहसके प्रपौत्र लालाककी कन्या थी]

[ए० इ० १३ पृ० १५९]

४

खण्डगिरि—(मंचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी सनपूर्व पहली सदी

१ वेरस महाराजस कलिंगाधिपतिनो महा (मेघ) वाह (नस) कुदेपसिरिनो लेण

[कलिंगके अधिपति महाराज वीर महामेघवाहन कुदेपश्रीने यह गुहा बनवायी।]

[ए० इ० १३ पृ० १६०]

५

खण्डगिरि—(मचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

कुमारो वडुखस लेण

[यह गुहा कुमार वडुखने बनवायी ।]

[ए० इं० १३ पृ० १६१]

६

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

चूलकमस कोठाजेया च

[चूलकम्म (क्षुद्रकर्म अथवा चूडाकर्म) का कक्ष ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

७

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ कमस हलखि–

२ णय च पसादो

[कर्म तथा हलखिण (सल्लक्षण) का बनवाया प्रासाद ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

८

खण्डगिरि (हरिदास गुहा)

प्राकृत–ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

[यह लेख सर्पगुहाके पहले लेखके समान ही है ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

९

खण्डगिरि (वाघ गुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सनूपूर्व पहली सदी

१ नगर अखदम

२ सभूतिनो लेण

[नगरके न्यायाधीश सुभूतिकी गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६३]

१०

खण्डगिरि (जम्बेश्वर गुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सनूपूर्व पहली सदी

महामदास बारियाय नाकियस लेण

[महामदकी पत्नी नाकियाकी गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६३]

११

खण्डगिरि (छोटा हाथीगुफा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सनूपूर्व पहली सदी

अगिस""स लेण

[अगिस""की गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६४]

१२

खण्डगिरि (तत्त्वगुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सनूपूर्व पहली सदी

पादमुलिकस कुसुमास लेण कि •

[पदमूलिकके कुसुमकी गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६४]

१३

खण्डगिरि (अनन्तगुहा)

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्‌पूर्व पहला सदी

डोहद समणन लेणं

[दोहदके श्रमणोकी गुहा]

[ए० इं० १३ पृ० १६४]

१४

खण्डगिरि (तत्त्वगुहा)

ब्राह्मी, पहली सदी

१ ' 'घ '

२ ' 'ण त थ द ध न''''

३ '' 'ण त थ द ध न ' श प स ''

४ ' ण त थ द ध न प फ व श प स ह ''

५ '''त थ द ध न प फ व ' श प स ह '''

६ 'थ ''

[यह वर्णमाला चित्रित की गयी है जो सम्भवत. किसी नवदीक्षित साधुका कार्य है ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६५]

१५

मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्राकृत—ब्राह्मी, वर्ष ८४ (दूसरी सदी)

१ ओं सिद्ध स ८० ४ व ३ दि २० ५ एतस्मि पूर्वय दमित्रस्य धितु ओस-

२ रिकाये कुटुबिणिये दताये दान वर्धमानप्रतिमा प्रतिथपिता

३ गणतो कोट्टियतो ' 'सत्यसेनस्य घरवृधिस्य नि '''

[वर्ष ८४ में वर्षा ऋतुके तीसरे महीनेके २५वें दिन दमित्रकी पुत्री तथा ओखरिककी पत्नी दता (दत्ता) ने यह मूर्ति स्थापित की । कोट्टिय गणके सत्यसेन''''धरवृद्धि ।] [यदि लेखका वर्ष शककालका हो तो वह सन् १६२ होगा ।]

[ए० इ० १९ पृ० ६७]

१६

मथुरा

प्राकृत–ब्राह्मी, पहली-२ री सदी (खण्डित जैनमूर्तिके पादपीठपर)

(शा) खातो वाच (कस्य) आर्य ऋ (षि) दासस्य निर्वर्तना रकस्य भट्टिदामस्य''

[शाखाके वाचक आर्य ऋषिदासने यह बनवायी ।' 'रक भट्टिदामकी ']

[रि० आ० स० १९११-१२ पृ० १७]

१७-१८

मथुरा

प्राकृत–ब्राह्मी, २री सदी

[यह लेख २री सदीकी लिपिमे है । अरहंतके प्रणामसे इसका प्रारम्भ होता है तथा लाघकके पुत्रका इसमे उल्लेख है । एक अन्य पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें वर्धमानको प्रणाम किया है ।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२८–२९ पृ० ७७]

१९

पहाड़पुर ताम्रपत्र (जि० राजशाही, बंगाल)

गुप्त वर्ष १५९ = सन् ४७९ संस्कृत

अगला भाग

१ स्वस्ति पुण्ड्र (वर्ध) नादायुक्तका आर्यनगरश्रेष्ठिपुरोगाश्चाधिष्ठा
नाधिकरणं दक्षिणांशकवीथेयनागिरट्ट-
२ माण्डलिकपलाशाट्टपार्श्विक - वटगोहालीजम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपो-
त्तक-गोपाटपुञ्जक-मूलनागिरट्टप्रावेश्य-
३ नित्वगोहालीषु ब्राह्मणोत्तरान् महत्तरादिकुटुम्बिन कुशलमनुव-
र्ण्यानुबोधयन्ति । विज्ञापयत्यस्मान् ब्राह्मणनाथ-
४ शर्मा एतद्भार्या रामी च युष्माकमिहाधिष्ठितानाधिकरणे द्विदी-
नारिक्यकुल्यवापेन शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमुदयबाह्या-
५ प्रतिकरखिलक्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तदर्हथानेनैव क्रमेणावयो
सकाशाद् दीनारत्रयमुपसंगृह्यावयो. स्वपुण्याप्या-
६ यनाय वटगोहाल्यामवास्यान् काशिक-पंचस्तूपनिकायिकनिर्ग्रन्थ-
श्रमणाचार्य-गुहनन्दि-शिष्यप्रशिष्याधिष्ठितविहारे
७ भगवतामर्हतां गन्धधूपसुमनोदीपाद्यर्थन्तलवटकनिमित्त च
अ (त) एव वटगोहालीतो वास्तुद्रोणवापमध्यर्धं ज-
८ म्बूदेवप्रावेश्य-पृष्ठिमपोत्तकेत् क्षेत्रं द्रोणवापचतुष्टय गोपाटपुंजाद्
द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्ट-
९ प्रावेश्यानित्वगोहालीत. अर्धत्रिकद्रोणवापानित्येवमध्यर्धं क्षेत्र-
कुल्यवापमक्षयनीव्या दातुमि (त्यत्र) यतः प्रथम-
१० पुस्तपालदिवाकरनंदि-पुस्तपालधृतिविष्णु - विरोचनरामदास-हरि-
दास-शशिनन्दिषु प्रथमनु ''' ' 'मवधारण-
११ यावधृतमस्त्यस्मदधिष्ठितानाधिकरणे द्विदीनारिक्यकुल्यवापेन
शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमु (दयबा) ह्याप्रतिकर-
१२ (खिल) क्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तद् यद् युष्मान् ब्राह्मणनाथ-
शर्मा एतद्भार्या रामी च पलाशाट्टपार्श्विकवटगोहालीस्थ-

पिछला भाग

१३ ‥ ‥ 'कपट्टस्तूपनिकायिकाचार्यनिर्ग्रन्थ-गुहनन्दि-शिष्यप्रशिष्या-
धिष्ठितसद्विहारे अर्हतां गन्ध (धूपा) द्युपयोगाय
१४ (तलवा) टकनिमित्तं च नगर वटगोहाल्यां वास्तुद्रोणवाप-
मध्यर्धं क्षेत्र जम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपोत्तके द्रोणवापचतुष्टयं
१५ गोघाटपुञ्जाद् द्रोणवापचतुष्टय मूलनागिरट्टप्रावेश्यनित्यगोहालीतो
द्रोणवापद्वयमाढवा (पद्व) मा॰ग्रकमित्येवम-
१६ मध्यर्धं क्षेत्रकुल्यवाप प्रार्थयतेत्र न कश्चिद् विरोध' गुणस्तु यत्
परमभट्टारकपादानामर्थोपचयो धर्मषड्भागाप्याय-
१७ न च भवति तदेव क्रियतामि त्यनेनावधारणाक्रमेणास्माद् ब्राह्म-
णनाथशर्मत एतद्भार्याराभियाश्च दीनारत्र-
१८ यमाद्यीकृत्यैताभ्या विज्ञापितक्रमोपयागायोपरिनिर्दिष्टग्रामगो-
हालीषु तलवाटकवास्तुना सह क्षेत्र
१९ कुल्यवाप अध्यर्धोक्षयनीवीधर्मेण दत्त. कु १ द्रो ४ तद् युष्माभिः
स्वकर्मणाविरोधिस्थाने पट्कनडेरप-
२० विच्छ्य दातव्याक्षयनीवीधर्मेण च शश्वदाचन्द्रार्कतारककालमनु-
पालयितव्य इति स १०० (+) ५० (+) ९
२१ माघ दि ७ उक्तं च भगवता व्यासेन । स्वदत्ता परदत्तां वा यो
हरेत वसुन्धरां ।
२२ स विष्ठायां कृमिर्भूत्वा पितृभिः सह पच्यते ॥ षष्ठिवर्षसहस्राणि स्वर्गे वसति भूमिद ।
२३ आक्षेप्ता चानुमन्ता च तान्येव नरके वसेत् ॥ राजभिर्बहुभिर्दत्ता
दीयते च पुन. पुन. । यस्य यस्य
२४ यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो
यत्नाद् रक्ष युधिष्ठिर । मही महिमतां श्रेष्ठ

२५ दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥ विन्ध्याटवीष्वनम्भःसु शुष्ककोटर-
वासिनः । कृष्णाहिनो हि जायन्ते देवदायं हरन्ति ये ॥

[यह ताम्रपत्र गुप्तवर्ष १५९ के माघ मासके ७वें दिन लिखा गया था। ब्राह्मण नाथशर्मा तथा उसकी पत्नी रामीने पुण्ड्रवर्धनके राजकोषमें तीन दीनार देकर डेढ़ कुल्यवाप जमीन प्राप्त की। इसमें ४ द्रोणवाप जमीन पृष्ठिमपोत्तक गाँवमें, ४ द्रो० गोषाटपुजक गाँवमें, २½ द्रो० नित्व-गोहालीमें और १½ द्रो० वटगोहालीमें थी। काशीके पञ्चस्तूपनिकायके निर्ग्रन्थ श्रमणोंके आचार्य गुहनन्दिके शिष्य-प्रशिष्योंका एक विहार वट-गोहालीमें था। वहाँ भगवान् अर्हत्की पूजाके लिए गन्ध, धूप, फूल, दीप आदिकी व्यवस्थाके लिए यह जमीन नाथशर्मा तथा रामीने दान दी। इस ताम्रपत्रमें परमभट्टारक पदसे किसी सम्राट्का उल्लेख किया है। ये सम्भवतः गुप्तवंशीय सम्राट् बुधगुप्त थे। पहाड़पुरके समीपका गोआलभिटा गाँव ही सम्भवतः प्राचीन वटगोहाली है। यहाँके एक बड़े मन्दिरके उत्खननमें कई जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण अवशेष मिले हैं।]

[ए० इ० २० पृ० ५९]

२०

होसकोटे (मैसूर)

५वीं सदी पूर्वार्ध संस्कृत

पहला पत्र

१ स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्न-
वेयकुलामलव्योम-

२ नावभासनभास्करस्य स्वभुजजवजयजनितसुजनजनपदस्य
दारुणारिगण-

३ विदारणरणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्री-

४ मत्कोंगणिवर्मधर्ममहाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागतगुणयुक्तस्य

५ विद्याविहितविनयस्य　सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्य-
प्रयोजनस्य

द्वितीयपत्र : पहला भाग

६ विद्वत्कविकांचननिकषोपलभूतस्य विशेषतोऽप्यनवशेषस्य नीति-
शास्त्रस्य वक्तृप्र-

७ योक्तृकुशलस्य सुविभक्तभक्तभृत्यजनस्य दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेतुः
श्रीमन्माधववर्मम-

८ हाधिराजस्य पुत्रस्य पैतृपितामहगुणयुक्तस्य अनेकचतुर्दन्त-
युद्धावाप्त-

९ चतुरुदधिसलिलास्वादितयशस. समदद्विरदतुरगारोहणातिशयो-
त्पन्नतेजसो धनुर-

१० भियोगजनितसम्पादितसम्पद्विशेपस्य श्रीमद्धरिवर्ममहाधिराजस्य
पुत्रस्य

द्वितीय पत्र　पिछला भाग

११ गुरुगोब्राह्मणपूजकस्य नारायणचरणानुध्यातस्य　श्रीमद्विष्णु-
गोपमहाधि-

१२ राजस्य　पुत्रस्य　त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरज.पवित्रीकृतोत्तमांगस्य
व्यायामोद्वृत्तपीन-

१३ कठिनभुजद्वयस्य स्वभुजबलपराक्रमक्रयक्रीतराज्यस्य चिरप्रनष्ट-
ब्रह्मदे-

१४ यबहुसहस्रविसर्गाग्रयणकारिण. क्षुत्क्षामोष्ठपिपिशिताशनप्रीतिकर-
निशितधा-

१५ रासेः कलियुगमलपंकावसन्नधर्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धस्य श्रीमाधव-
महाधिराज-

तृतीय पत्र : अगला भाग

१६ स्य पुत्रेण जननीदेवतापर्यंकतलसमधिगतराज्येन निजप्रभाव-खंडित-

१७ रिपुनृपतिमंडलेनाखंडलविलंबिविभवविक्रमेण करितुरगवरारो-हणसौष्ट-

१८ वजनितगुणविशेषेण स्वदानकुसुममंजरीसुरभितसमंतद्दिगत-राभिग-

१९ तबुधमधुकरसमुदयेन वरांगनापांगशरविक्षेपलक्षांगेन प्रजापरिरक्ष-

२० णैकदीक्षाक्षपितकल्मषेणापरिणतवयसापि परिणतमतिसत्त्व-सम्पदा परम-

तृतीय पत्र : पिछला भाग

२१ धार्मिकेण श्रीमता कोंगण्यधिराजेनात्मनः प्रवर्धमानविजयैश्वर्ये द्वादशे संवत्स-

२२ रे कार्तिके मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्यां शासनाधिकृतस्य सकलमंत्रतंत्रांतर्ग-

२३ तस्य विविधागमजलप्रक्षालितविशुद्धबुद्धे: सिंहविष्णुपल्लवाधि-राजस्य

२४ जनन्या भर्तृकुलकीर्तिजनन्यार्थं चात्मनश्च धर्मप्रवर्धनार्थं च प्रतिष्ठापिताय अर्हद्दे-

२५ वतायतनाय यावनिकसंघानुष्ठिताय कोरिकुन्दभागे पुल्लिऊर् नाम ग्रामे

चतुर्थ पत्र : अगला भाग

२६ महातटाकस्याधस्तात् मूलाभ्यागे श्रमणकेदारसहितसप्तकण्डुका-वापमात्रं

२७ क्षेत्रं मध्यभागे पंचकण्डुकावापमात्र क्षेत्रं इक्षुनिष्पादनक्षममे-

२८ कन्तोदक्षेत्रं ग्रासं दक्षिणेन कण्डुकावापमात्रं पद्रं उत्तरेण च द्वा-

२९ दशकण्डुकावापमात्रमारण्यक्षेत्र च देवतायतनसन्निकृष्टमेक वेश्म च

३० एतत् सर्वं सर्वपरिहारपरिगृहीत पानीयपातपुरस्सर दत्तं योस्य
चतुर्थपत्र पिछला भाग

३१ लोभात् प्रमादाद् वापि हर्ता स पचमहापातकसयुक्तो भवति
अपि चास्मिन्न-

३२ र्थे मनुगीता(न्) श्लोकानुदाहरन्ति ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो
हरेत वसुन्धराम्

३३-३८ (नित्यके शापात्मक श्लोक)

३९ कुवलालत्वष्टकारस्य इदम्पट्टुवस्य पुत्रेण पेरेरन्नामलिखितास्पट्टिका ॥
शिवमस्तु

[यह ताम्रपत्र गगवशीय राजा माधव (द्वितीय) के पुत्र कोगण्य-धिराज (अविनीत) द्वारा राज्यवर्ष १२ के कार्तिक शु० १५ को दिया गया था । इसमे यावनिक सघ-द्वारा अनुष्ठित एक अर्हद्देवतायतन (जिन-मन्दिर) के लिए पुल्लिऊर ग्रामकी कुछ भूमि और एक घर दान दिये जाने-का उल्लेख है । यह मन्दिर पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्माण किया गया था । ताम्रपत्रको इदम्पट्टुवके पुत्र पेरेरने लिखा था ।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० ८०]

२१

कोरमंग (मैसूर)

६वीं सदी, सस्कृत

प्रथम पत्र

१ सूर्यांशुद्युतिपरिपिक्तपकजानां शोभां यद् वहति सदास्य पाद-
पद्मम् ।

सिद्धम्

२ देवानां मकुटमणिप्रभाभिषिक्तं सर्वज्ञः स जयति सर्व-
लोकनाथ. (॥१)

३ कीर्त्या दिगन्तरव्यापी रघुरासीन्नराधिप (।) काकुस्थतुल्य काकु-
स्थो यथायास्तस्य भूपति (॥२)

४ तस्याभूत् तनयः श्रीमान् शान्तिवर्मा महीपति (।) मृगेशस्तस्य
तनयो मृगेश्वरपराक्रमः (॥३)

५ कदम्बामलवशाद्रे. मौलिनामागतो रवि. (।) उदयाद्रिमकुटटेप
(टाटोप) दीप्रांशुरिवांशुमान् (॥४)

६ नृपश्छलनकां विष्णुर्दैत्यजिष्णुश्च स्वयं (।) हिरण्मयचलन्मालं
त्यक्त्वा चक्र विभावित (॥५)

७ साम्राज्ये नन्दमानापि न माद्यति परतप (।) श्रीरपा मदयत्य-
न्यानतिपातेव वारुणी (॥६)

द्वितीय पत्र

८ नर्मद् त मही प्रीत्या यमाश्रित्याभिनन्दति (।) कौस्तुभाभारुण-
च्छाय वक्षो लक्ष्मीर्हरेरिव (॥७)

९ रवावधि जयन्तीय सुरेन्द्रनगरी श्रिया (।) वैजयन्तो चलच्चित्रं
वैजयन्ती विराजते (॥८)

१० रवेर्भुजंगदासीव चदनप्रीतमानमा (।) तथा श्रीर्नामवत् प्रीता
मुरारेरपि वक्षसि (॥९)

११ विश्वा वसुमती नाथन्नाथते नयकोविदम् (।) द्यौरिवेन्द्र ज्वलद्व-
ज्रदीप्तिकोरकितागदम् (॥१०)

१२ यस्य मूर्ध्नि स्वय लक्ष्मी हेमकुम्भोदरच्युतै (।) राज्याभिषेकम-
करोदम्भोजशवलैर्जलै (॥११)

१३ रघुणालम्बितामाली (मालो) कुण्डो गिरिधारयत् (।) रवेराज्ञा
वहत्यद्य मालामिव महीश्वर (॥१२)

१४ धर्मार्थं हरिदत्तेन सोथ विज्ञापितो नृपः (।) स्मितज्योत्स्नाभिषि-
क्तेन वचसा प्रत्यभाषत (॥१३)

द्वितीय पत्र · दूसरा भाग

१५ चतुर्स्त्रिंशत्तमे श्रीमद्राज्यवृद्धिसमासमा (।) मधुर्मासस्तिथि
पुण्या शुक्लपक्षश्च रोहिणी (॥१४)

१६ यदा तदा महाबाहुरासंग्रामपराजितः (।) सिद्धायतनपूजार्थं
संघस्य परिवृद्धये (॥१५)

१७ सेतोरुपलकस्यापि कोरमगाश्रितां महीम् (।) अधिकाग्निवर्त-
नान्येव दत्तवां स्वामरिन्दम. (॥१६)

१८ आमन्दी दक्षिणस्याथ सेतो. केदारमाश्रितम् (।) राजमानेन
मानेन क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (॥१७)

१९ समणे सेतुबधस्य क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (।) तच्चापि राजमानेन
वेटिकौटेत्रिनिवर्तनम् (॥१८)

२० उम्छादिपरिहर्तव्ये समाधिसहितं हितम् (।) दत्तवांश्श्रीमहाराज-
स्सर्वसामन्तसन्निधौ (॥१९)

२१ ज्ञात्वा च पुण्यमभिपालयितुर्विशाल तद्भगकारणमितस्य च
दोपवत्ताम्

तीसरा पत्र ·

२२ · 'श्रमस्खलितसयमनेकचित्ताः संरक्षणेस्य जगतीपतय.
प्रमाण (॥२०)

२३ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि. (।) यस्य यस्य यदा
भूमिस्तस्य तस्य तदा फल (॥२१)

२४ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्मुक्त सद्भिश्च परिपालितम् (।) एतानि न निवर्त-
न्ते पूर्वराजकृतानि च (॥२२)

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

११ स्प्रतिमानवरतपूजार्थं शिक्षकग्लानवृन्दाना च तपस्विनां वै-

१२ यावृत्यार्थं ग्रामस्योत्तरत पूर्वाणग्रामसिरमीमक द-

१३ क्षिणेन मुञ्जनलमार्गपर्यन्त अपरत पुन्नार्वीरन्म-

१४ हितवल्मीक तस्मादुत्तरत पुष्करणी नन्थ यावत पूर्वसिंय-

१५ क राजमानेन पचाशन्निवर्तनप्रमाणक्षेत्रन्द-

तीसरा पत्र

१६ त्तवानेतद् यो हरति स पचमहापातकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च

१७-२० बहुभिर्वसुधा भुक्ता–(नियत शापात्मक श्लोक)

[यह ताम्रपत्र सेन्द्रक वंशके अधिराज विजयानन्दके पुत्र इन्द्रणन्द-द्वारा जम्बूखण्डगणके आचार्य आर्यनन्दिको दिया गया था। अर्हत्प्रतिमाकी पूजाके लिए तथा तपस्वियोंकी सेवाके लिए जलार ग्रामके पासकी कुछ भूमि इन्हें दी गयी थी। राजा इन्द्रणन्द राष्ट्रकूट वंशके देज्ज महाराजका सामन्त था। इस ताम्रपत्रका काल आगुप्तायिक राजाओंका ८४५वाँ वर्ष इस प्रकार कहा है। किन्तु इसमें कौन-सी कालगणना अभिप्रेत है यह स्पष्ट नहीं क्योंकि लिपिकी दृष्टिसे यह ताम्रपत्र छठी या सातवीं सदीका प्रतीत होता है।]

[ए० इं० २१ पृ० २८९]

२३

चितरल (केरल)

७वीं सदी, तमिल

भगवती मन्दिरके लिए प्रसिद्ध तिरुच्चाणत्तुमलै पहाड़ीपर

[इस लेखमें अरिट्टनेमि भटारके शिष्य गुणन्दांगि कुरत्तिगल-द्वारा देवीके लिए कुछ सोनेके आभूषण दान देनेका निर्देश है। यह लेख विक्रमादित्य वरगुणके २८ वें वर्षका है।]

[इ० म० तिरुवांकुर २]

२४

कुलगाण (मैसूर)

संस्कृत—कन्नड, ७वीं सदी

पहला पत्र

१ स्वस्ति श्री जितं भगवता श्रीमज्जान्हवेय॰ ॰

२ श्रमणाचार्यसाधित. स्वखड्गैक॰ ॰ ॰

३ राक्रमैकयशसः दारुणारिगणविदार॰ ॰॰

४ ण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कोंगणिवर्मध॰ ॰॰

दूसरा पत्र

५ युक्तस्य श्रीमन्माधवमहाधिराजस्य प्रियोरसस्य श्रीविष्णुवर्मगोपमहाधिराजस्य अने-

६ कचतुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशसः पुत्रस्य श्रीमन्माधवमहाधिराज-

७ जस्य पुत्रस्य श्रीमत्कृष्णवर्ममहाधिराजस्य भागिनेयस्य श्रीमत्कोंगणिवृद्धराजस्या-

८ विनीतनाम्नः पुत्रस्य श्रीदुर्विनीतनामधेयस्य समस्तपाणाटपुन्नाटाधिपतेरात्मजस्य श्री-

दूसरा पत्र (ब)

९ मत्कोंगणिवृद्धराजस्य प्रथितमुष्करद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्यापारगस्य सूनोः श्रीम-

१० त्पृथिवीकोंगणिवृद्धराजस्य श्रीविक्रमद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्यानिकषोपलभूतस्य प्र-

११ योगनिपुणतरस्य श्रीविक्रमोपार्जितानेकजनपदस्य प्रतापोपनतसकलसामन्तस्य

१२ घनविनीतस्यात्मजे 'श्रीमत्पृथिवीकोंगणिवृद्धराजे प्रणितानेक-
राजस्य मकुटमणिम-

तीसरा पत्र

१३ यूखपुञ्जपिंजरितांगुष्ठे वरयुवतिमनोनयनसुभगे रिपुनृपतिगजाश्व-
रथनरोरुवन-

१४ लोकसमदद्विरदतुरगारोहणोपशोभमाननिरतिशयनिजशरीरश्री-
वल्लभे सकल-

१५ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपता मनोविनीतस्य भ्राता शिव-
कुमार. श्रीमत्पृथिवी-

१६ कोंगणिवृद्धराज स्थिरविनीत' अवनिमहेन्द्रविख्यातः पाणाटपु-
न्नाटाद्यनेकजनपदाधि-

तीसरा पत्र (ब)

१७ पति पृथिवीं परिपालयति कोङ्गुणूनाडा केल्लिपुनूरा चेटिभक्कं
कर्णुलक्षोल तट्टुवल्लु-

१८ वेरेड वसदिगालुमेरडु कलनिड तोट्टमुं मनेत्तानमु पृथिवीकोंगणि
मुत्तरसरनुमतडो-

१९ ल पल्लवेकारमर् पोय्सार् कोकन्दियु मयिल्रगयुं मेल्पालु
जाविगालु कोलिगकंक्कालु ओन्दुवोट्टमुमा-

२० ह कलनिड पृथिवीकोंगणि मुत्तरसरनुमतडोल गजेनाडर् कृणमनू
पोय्सार् चन्त (न्द्र) मंनाचा-

चौथा पत्र

२१ यंर् कर्त्तारराग अडकं साक्षि केल्लिपुसूर् पन्निर्वंरु अय्सामन्तरु
नालत्ताणिड इद्दा-

२२ नल्दोन् पंचमहापातगनप्पोन् श्री बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि-
स्सक (ग)-

२३ रादिभि- यस्य यस्य यदा भूमि (·) तस्य तस्य तदा फलं ॥
देवस्वं तु विषं घो-

२४ रं न विषं विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकं ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा

चौथा पत्र (ब)

२५ यो हरेति वसुन्धरा षष्टिं वर्षसहस्राणि घोरं तमसि वर्तते ।
नारगो-

२६ ट्टेररोन्दु नोट्टं पंयद्दार् देवरा पसु गोट्टोन्दु तोट्टं कोण्डत्तु गज-
नादर्

२७ कण्णम्मन् कोडुगूर्नाडाल्व ओरंकलनायगरं र्मम्मालनायगरभिवरं
तुप्पूरालअरसरान्-

२८ नुमनप्पडिमि पोयन्दु तुल् टिल् काल् किलिप्पुसूर् चेडियक्क

पाँचवाँ पत्र

२९ से ३२ तक पंक्तियाँ १२ से १६ तक के समान है ।

३३ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपतिः पृथिवीं परिपालयति कंडुगूर्-
विषये

३४ केल्लिपुसूर् नाम ग्रामे जिनालयाय वसदिकालुं जानिकालुं
नेलनालुं कोलि-

३५ गनूकेरङ्कालु कागुलडपोल तट्टुवल्लुवेरडं पुलुक्कलनिडं नालु-
तोट्सु म—

३६ नेचानमुं चन्द्रसेनाचार्यके उदपूर्वं कोट्टरडकें नाडी कोट्टेरं
कारेअरकुं

[इस ताम्रपत्रके प्रारम्भमें गग वंशके राजाओंकी वंशावली इस प्रकार बतलायी है – कोंगणिवर्मा माधव – विष्णुवर्मगोप – माधव – अविनीत कोंगणिवृद्धराज – दुर्विनीत – मुष्कर कोंगणिवृद्धराज – श्रीविक्रम पृथिवीकोंगणिवृद्धराज – श्रीवल्लभ पृथिवीकोंगणिवृद्धराज। श्रीवल्लभके बन्धु शिवकुमार अवनिमहेन्द्र पृथिवीकोंगणिवृद्धराजके शासनकालमें यह लेख लिखा गया था। पल्लवेल अरगने राजाकी अनुमतिसे केल्लिपुसूर् ग्रामका एक खेत, बगीचा और कुछ जमीन एक जिनमन्दिरको दान दी उसका इस लेखमें निर्देश है। इसी समय गजेनाड निवासी कण्णम्मनूने भी कुछ खेत इस मन्दिरको अर्पण किये। माल्गोट्टेग्रूने एक बगीचा तथा ओरकल्वाय्गर् और सीम्पाल्वाय्गर्ने कुछ खेत दान दिये। राजाने भी कुछ खेत दान दिये थे। इस जिनमन्दिरके अधिष्ठाता चन्द्रसेनाचार्य थे।]

[ए० रि० मैं० १९२५ पृ० ९०]

२५-२६-२७

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

७वीं सदी, कन्नड

[ये तीन लेख रसामिद्दुलगुट्टु नामक पहाडीपर पाषाणोंपर खुदे हैं। इनमें निम्नलिखित नाम उत्कीर्ण हैं –

१ सिंगनन्दिवन्दितन्

२ श्रीउरिगपम्मिण्डि

३ श्रीसूलाकोमरन्

इनकी लिपि ७वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५४-५५-५६ पृ० १२६]

२८

रत्नगिरि (कटक, उडीसा)

संस्कृत, ७वीं सदी

[इस लेखमे ७वीं सदीकी लिपिमें एक जिनालयका उल्लेख है। लेख खण्डित है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४४८ पृ० ६७]

२९

पेनिकेलपाडु (कडप्पा, आन्ध्र)

संस्कृत–तेलुगु, ७वीं सदी

[इस लेखमें वृषभ नामक जैन आचार्यकी प्रशंसा की गयी है। उन्हें भव्यरूपी फसलके लिए मेघके समान तथा वाद-विवादमें पर्वतके समान दृढ कहा है। इस स्थानको अब सन्यासिगुण्डु कहा जाता है। लिपि ७वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४०१ पृ० १२०]

३०

कोंगरपुलियंगुलम् (मद्रास)

वट्टेळुत्तुलिपि, ७वी सदी

(एक जैनमूर्तिके नीचे –) श्रीगज्जणन्दि

[यहाँसे ३८वें लेख तक ९ लेखोका समय लिपिके आधारपर कहा है।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ५४]

३१
मुत्तुप्पट्टि (मद्रास)
वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[(जैनमूर्तिके नीचे –) यह मूर्ति वेण्णुनाडुके कुरण्डि अट्टउपवासि भटारके शिष्य गुणसेनदेवके शिष्य कनकवीरप्पेरियडिगळ्-द्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६१]

३२
मुत्तुप्पट्टि (मद्रास)
वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[यह मूर्ति कुरण्डि अष्टोपवासिके शिष्य माघनन्दि-द्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६२]

३३-३८
कीलक्कुडि (मद्रास)
वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[यहाँ जैन मूर्तियोंके समीप निम्न नाम खुदे हैं – कनकनन्दि भटारके शिष्य अभिनन्दन भटारके शिष्य अरिमण्डल भटारके शिष्य अभिनन्दन भटार (२) ।
अज्जणन्दिकी माता गुणमतियार् ।
गुणसेनदेवके शिष्य अन्तलैयन् मासेनन्का भतीजा आच्चन् श्रीपालन् ।
गुणसेनदेवके शिष्य कण्डन् पोर्पट्टन् । वेण्णुनाडुके तिरु कुरण्डिके सेवक कनकनन्दि । गुणसेनदेवके शिष्य अरैयगाविदि, पल्लिके प्रमुख ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६३–६९]

३९

नलजनम्पाडु (आन्ध्र)

तेलुगु, ७वीं-८वीं सदी

अगला भाग

१ स्वस्ति म-
२ गवदर्हत (प)-
३ ग्मभट्टारकस्य पा-
४ दानुध्यात परमभा-
५ हेश्वर पर(मे) श्वर प-
६ ल्लवादित्य श्रीवादि-
७ राजुल अन्दु पल्ले-
८ यरि कोडुकु वादि (रा)-
९ जेन्वानूरु राजमा (न)-
१० बु मूनूरु वुट्टु आलं-
११ पट्टु क्षेत्रंबु प(रि)-
१२ म्नि पल्लेयारि (त्रा)-
१३ यनंबुनाकु इच्चे
१४ ढीनि रक्षिंचिनवानि (कि)

पिछला भाग

१५ अहुगडु-
१६ गश्वमेधंबुना
१७ पलंबगु
१८ ढीनि लच्चिन-
१९ वानिकि एकलु
२० श्रीपर्वतबु
२१ लच्चिन पाप-
२२ बगु वाच्चो-
२३ लाल कोडुकु
२४ पल्लवाचा-
२५ ज्यंस्य लिकि-
२६ तम् (॥)

[इस लेखमें परमेश्वर पल्लवादित्य वादिराजुल नामक शासक-द्वारा ३ पुट्टि जमीन किसी ग्राममुख्यको दिये जानेका उल्लेख है। वादिराजुलको अर्हतभट्टारक तथा महेश्वर दोनोंका भक्त कहा गया है। लेखकी लिपि ७वीं-८वीं सदीकी है।]

[ए० इं० २७ पृ० २०३]

४०-४३

सातानिकोट (कुर्नूल, आन्ध्र)

कन्नड, ७वीं-८वीं सदी

[यहाँ एक खेतमें पाषाणोपर निम्न नाम खुदे हैं –

१ श्री कोपा (शि) की निसिधि

२ संसारभीत

३ श्रीविमलचन्द्रन्

४ गणिगे महाव्रति

इनकी लिपि ७वीं-८वी सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ३३०, ३३२, ३३७, ३३९ पृ० ४१-४२]

४४

माचेर्ल (कृष्णा, आन्ध्र)

तेलुगु, ८वीं सदी, पूर्वार्ध

[यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सकललोकाश्रय जयसिंहवल्लभ (द्वितीय) के राज्यवर्ष ८ में लिखा गया था । दयावसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके प्रपौत्र तथा धन्यवसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके पुत्र कल्याणवसन्तुलु-द्वारा अरहन्तभटारको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इस दानकी रक्षा कांठूरुके रट्टगुडि वंशके शासक करेंगे ऐसा लेखमें कहा है ।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १८ पृ० २३१]

४५

शिग्गांव (धारवाड, मैसूर)

शक ६३० = सन् ७०८

संस्कृत-नागरी

[यह ताम्रपत्र चालुक्य राजा विजयादित्यके ११वें राज्यवर्ष शक ६३० में आषाढ पौर्णिमाके दिन दिया गया था। किसुवोलल्के राजस्कन्धावारसे राजाने पुरिगेरे नगरमें कुंकुमादेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए गुड्डिगेरे ग्राम दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ ए० क्र० ४९]

४६

अण्णिगेरि स्तम्भलेख (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ६ = सन् ७५१-५२, कन्नड

१ स्वस्ति कीर्तिवर्म(सत्या)श्रय
२ श्रीपृथु(वीवल्लभ) महाराजा
३ धिराज परमेश्वर भटारर
४ राज्य मोन्दुत्तरमभिवृद्धि स–
५ ले आरनेया वर्ष प्रव–
६ र्दमानमागे जे–
७ बुलगेरिगे कलि–
८ यम्म गामुण्डुगेय्दी
९ चेदियमान्माडिसिदोद्
१० इदर मुन्दे कोण्ड–
११ शुलरकुप्प कीर्तिवर्म–
१२ गोसासिय निरिसिद
१३ कीर्तन। दीशापालस्य लि–
१४ खित। प्रभुनामन्।

[यह लेख बदामीके चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वितीयके राज्यके छठे वर्षका अर्थात् सन् ७५१-५२ का है। इसमें जेबुलगेरिके ग्रामाधिकारी कलिमय्य-द्वारा एक चेदिय अर्थात् जिनमन्दिर बनवाये जानेका निर्देश है।]

[ए० इ० २१ पृ० २०४]

४७

कुडलूर (मैसूर)

कन्नड, ८वीं सदी

श्रीयम्म तोरेय तडिय तोण्टटोल् तम्म भागम देवर्गे कोट्टर् अय्यप्प राउणर पक्कदतोण्टम कोण्डु तोरेय तडिय तम्म भागद तोण्टमं मूडण-बसदिगे कोट्टर् रणपाकरसर् आले काण्डु तोट्टर् ॥

[इस लेखमें रणपाकरसके राज्यकालमें श्रीयम्म तथा अय्यप्प-द्वारा किसी नदीतीरपर स्थित पूर्वीयबसदिके लिए कुछ उद्यान आदिके दानका उल्लेख है। लिपि ८वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९०९ पृ० १४]

४८

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

संस्कृत–कन्नड, ८वीं-९वीं सदी

[यह ताम्रपत्र गंग राजा श्रीपुरुष-द्वारा दिया गया था। इस राजाके 'अनुकूलवर्ती' पसिण्डि गंग कुलके नाग्नर्मा तथा कदम्बकुलके तुलुअडिने तगरे प्रदेशके तोल्लग्राममें स्थित चैत्यालयके लिए मल्लवल्लि ग्राम दान दिया था। इसी प्रकार कौशिक वंशके मणलि मनेओडेयोन्ने कुछ भूमि दान दी। इसी ताम्रपत्रके अन्तिम भागमें गंग राजा शिवमारके राज्यमें निन्दनाडु ८००० के शासक विट्टरस-द्वारा तोल्लरके चैत्यके लिए करिमानी ग्रामके दानका भी उल्लेख है। तदनन्तर इसी चैत्यके लिए राजा शिवमारके मामा विजयशक्ति अरस-द्वारा ६ खडुगभूमिके दानका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२० पृ० २७]

४९

मुनुगोडु (गुन्टूर, आन्ध्र)

तेलुगु ८वीं सदी

[यह लेख पूर्वी चालुक्य राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके राज्यवर्ष ३७ का है। इस समय महासामन्त इळेवर गोंकय्यने मुनुगोडुके जिनालयके लिए कुछ भूमि दान दी थी। यहींके एक अन्य लेखमें गोंकके सेवक वांगुगट्टु-द्वारा इस जिनालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है जिसका निर्माण अग्गोनि-द्वारा मुनिसुव्रतके तीर्थमें किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १७-१८ पृ० ६]

५०

तिरुगोकर्णम् (मद्रास)

तमिल, ८वीं सदी

[यह लेख अडैयागरै नामक पहाड़ीपर एक जिनमूर्तिके पास है। पाण्ड्य राजा कोनेरिमैकोण्डान् सुन्दरपाण्ड्यदेवके २८वें वर्षकी एक राजाज्ञाका इसमें उल्लेख है। तदनुसार तेनविगाडुके निवासियोंसे कहा गया था कि कल्लाडमङ्गलके पेरुम्पल्लि चोलमन्नर्गति आळ्वारके पूजादिके लिए स्थानीय पल्लि (जिनमन्दिर) के व्यवस्थापकों-द्वारा अर्पित जमीनोंको करमुक्त किया गया।]

[इ० पु० क्र० ५३० पृ० ८५]

५१-५२

ब्रिटिश म्यूज़ियम (लन्दन)

८वीं-९वीं सदी, संस्कृत—नागरी

१ अनन्तवीर्य   २ सुलोचना   ३ धृति

[ये नाम तीन मूर्तियोंके पादपीठोंपर खुदे हैं। ये मूर्तियाँ दल तथा

यक्षिणियोकी है और इनके शिरोभागमें जिनमूर्तियाँ खुदी हैं । अक्षरोकी लिपि तथा मूर्तिशिल्प ८वी-९वीं सदीके हैं ।]

[Medieval Indian Sculpture in the British Museum P 41-42]

५४

बदनगुप्पे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, शक ७३० = सन् ८०८

[इस ताम्रपत्रके पाँच पत्रोंमें-से पहले तीन पत्र द्वितीय भागके लेख क्र० १२३ के समान हैं जिनमें राष्ट्रकूट राजाओंका वंशवर्णन गोविन्द-राज३ तक किया गया है ।]

चतुर्थ पत्र : पहली ओर

५१ धारावर्षश्रीवल्लभमहाराजाधिराजस्य पुत्र· शौचाचारप्रभुगुंण-गणप्रण-

५२ मितसमस्तलोक परोपकारकरुणापरः परमेश्वरचरणारविन्दवन्द-नाभिनन्दन र-

५३ णावलोकश्रीकम्भराज. पुन्नाड एडेनाड्डुविषये बदनोगुप्पे नाम ग्राम तलव-

५४ ननगर अधिवसति विजयस्कन्धावारे । त्रिंशदुत्तरेष्वतीतेषु शक-वर्षेषु कार्तिक-

५५ मास-पौर्णमास्यां रोहिणीनक्षत्रे सोमवारे कोण्डकुन्देयान्वय सिमंकगे-

५६ गूल्लाण कुमारणन्दिभट्टारकस्य शिष्य एळवाचार्यगुरु· तस्य शिष्यो वर्धमा-

५७ नगुरु (।) सर्वप्राणिहितः साक्षात् सिद्धान्तानुगमोद्भवः (।) शान्त· सर्वज्ञकल्पोय नयोश-

५८ तगुणांस्त. (॥) तस्मै तं ग्रामं अदात् स्वपुत्रश्रीशंकरगणण विज्ञापनेन श्रीकम्भेव श्रीविजय-

५९ वमतये तलवननगरे प्रतिष्ठितायै। तस्य सीमान्तराणि वडगण दिशे पोन्नपुं-

चतुर्थ पत्र : दूसरी ओर

६० लि वडगण पडुवण कोनेडु पोमचिगल्लु पडुवणसीमे कडम्ब-गेरेय पेर्ब-

६१ ग पडुवण तेंकण कोनेडु पोंगुलवल्लिय तेन्नोल्ते तेंकण सीमे बेलक्काल तेन्नो-

६२ ल्ते तेंकण मूडण कोनेड्डु मुडुवञ्चि कोरलु मूडणसीमे कल्लि-वेट्टिन मूडण पारे-

६३ ये मूरु वेट्टु ओळगु मूडण वडगण कान्नेडु वडनिञ्जिय वडगण ओल्ते

६४ अस्य दानस्य साक्षिण षण्णवतिसहस्रविषय प्रकृतय.

६५ योस्यापहर्ता लोभान्मोहात् प्रमादेन च स पचभिर्महद्भि. पातकै (·) संयुक्तो

६६ भवति यो रक्षति स पुण्यभाग् भवति अपि चात्र मनुगीता ( ) श्लोका (.) स्वदत्ता परदत्तां

६७ वा यो हरेत वसुन्धरां (।) षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमि· (॥) स्व दानु

६८ सुमहच्छक्यं दु खं अन्यस्य पालनं (।) दान वा पालनं वेत दानाच्छ्रेयोनुपा-

पाँचवाँ पत्र : पहली ओर

६९ लनं (॥) बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि. (।) यस्य यस्य यदा भूमि (·) तस्य

६ यं रिपूणां विगलत्यकाण्डे ॥ (५) तस्यात्मजो जगति विश्रुत-
दीर्घकीर्तिरार्तार्तिहारिहरिविक्रमधामधारी । भूप-
७ स्त्रिविष्टपनृपानुकृतिः कृतज्ञः श्रीकर्कराज इति गोत्रमणिर्बभूव ॥
(६) तस्य प्रभिन्नकरटाच्युतदान-
८ दन्तिदन्तप्रहाररुचिरोल्लिखितांसपीठः । क्ष्मापः क्षितौ क्षपितशत्रु-
रभूत्तनूजः सद्राष्ट्रकूटकनकाद्रिरिवेन्द्रराजः ॥ (७) तस्योपा-
९ र्जितमहसस्तनयश्चतुरुदधिवलयमालिन्याः । भोक्ता भुवश्शत-
क्रतुसदृशः श्रीदन्तिदुर्गराजोभूत् ॥ (८) काञ्चीशकेर-
१० लनराधिपचोलपाण्ड्यश्रीहर्षवज्रटविभेदविधानदक्षं । कर्णाटकं
बलमचिन्त्यमजेयमन्यैर्भृत्यैः कियद्भिर-
११ पि यः सहसा जिगाय ॥ (९) अभ्रूविभङ्गमगृहीतनिशातशस्त्र-
मश्रान्तमप्रतिहताज्ञमपेतयत्नं । यो वल्लभं सपदि दण्ड-
१२ बलेन जित्वा राजाधिराजपरमेश्वरतामवाप ॥ (१०) आसेतो-
र्विपुलोपलावलिलसल्लोलोर्मिमालाजलादाप्रालेयक-
१३ लंकितामलशिलाजालात्तुषाराचलात् पूर्वापरवारिराशिपुलिन-
प्रान्तप्रसिद्धावधेर्येनेदं जगती स्वविक्रमबलेनैका-
१४ तपत्रीकृता ॥ (११) तस्मिन् दिवं प्रयाते वल्लभराजे क्षतप्रजा-
बाधः । श्रीकर्कराजसूनुर्महीपतिः कृष्णराजोभूत् ॥ (१२) यस्य
स्वभुजप-
१५ राक्रमनिश्शेषोत्सादितारिदिक्चक्रं । कृष्णस्येवा(कृष्ण) चरितं
श्रीकृष्णराजस्य ॥ (१३) शुभतुङ्गतुङ्गतुरगप्रवृद्धरेणूद्धरुद्धरवि-
किरणं । ग्रीष्मेपि नभो निखिलं
१६ प्रावृट्कालायते स्पष्टं ॥ (१४) दीनानाथप्रणयिषु यथेष्टचेष्टं
समीहितमजस्रं । तत्क्षणमकालवर्षं वर्षति सर्वार्थिनिर्व(प)णं ॥
(१५) राहप्पमा-

१७ स्वभुजजातबलावलेपमाजौ विजित्य निशितासिलताप्रहारैः । पालिध्वजावलिशुभामचिरेण यो हि राजाधिराजपरमेश्वरतां

१८ ततान ॥ (१६) क्रोधादुत्खातखड्ग प्रसृतरिपुभयं संमुखं संमान समन्ताढाजाहुदवृत्तवैरिप्रकटगजघटाटोपसंक्षोभदक्षं । सौर्यं त्यक्त्वारि-

दूसरा पत्र पहला भाग

१९ वर्गो भयचकितवपु क्वापि दृष्ट्वैव सद्यो दर्पोध्मातारिचक्रक्षयकरमगमद्यस्य दोर्दण्डरूपं ।। (१७) पाता यश्चतुरम्बुराशिरसनाऊ-कारभाजो भु-

२० वस्त्रय्याश्चापि कृतद्विजामरगुरुप्राज्याज्यपूजादरो । दाता मानभृदग्रणीर्गुणवतां योसौ श्रियो वल्लभो भोक्तुं स्वर्गफलानि भूरितपसां

२१ स्थानं जगामामरं ॥ (१८) येन श्वेतातपत्रप्रहतरविकरव्रात-तापात्सलीलं जग्मे नासीरधूलीधवलितवपुषा वल्लभाख्यस्स-दाजौ । श्रीमद्गोविन्दराजो जि-

२२ तजगदहितस्त्रैणवैधव्यहेतुस्तस्यासीत् सूनुरेकः ललितागति(म) त्तेभकुम्भः ॥ (१९) तस्यानुजः श्रीध्रुवराजनामा महानुभावः प्रथितप्रतापः ।

२३ प्रसाधिताशेषनरेन्द्रच(क्र.) क्रमेण बालार्कवपुर्बभूव ॥ (२०) जाते यत्र च राष्ट्रकूटतिलके सद्भूतचूडामणौ गुर्वी तुष्टिरथाखिलस्य जगतः सुस्वामिनि प्रत्यहं । (सत्य) सत्यमिति प्रमा-

२४ सति सति क्ष्मामासमुद्रान्तिकामासीद् धर्मपरे गुणामृतनिधौ सत्यव्रताधिष्ठितं । (२१) शशधरकिरणनिकरनिभं यस्य यशः सुरनगाग्रसानुस्थैः । परिगी-

२५ यतेनुरक्तैर्विद्याधरसुन्दरीनिवहैः ॥ (२२) हृष्टान्वहं योषिजनाय नित्यं सर्वस्वमानन्दितबन्धुवर्गं प्रादात् प्रहृष्टो हरति स्मवेगात् प्राणान् यमस्यापि नितान्त-

२६ वीर्यः ॥ (२३) रक्षता येन निश्शेष चतुरम्भोधिसंयुत । राज्यं
धर्मेण लोकानां कृता हृष्टि परा हृदि ॥ (२४) योसौ प्रसाधित-
(मसुन्नत) सारदुर्गो गांगौघसन्ततिनिरोध-
२७ विवृद्धकीर्ति । श्रात्मीकृतोन्नतनृपाकविभूतिरुच्चैर्यन्क्र ततान
परमेश्वरतामिहैक ॥ (२५) तस्यात्मजो जगति सत्प्रथितोरु-
कीर्तिर्गोविन्दराज इ-
२८ ति गोत्रललामभूत त्यागी पराक्रमधनः प्रकटप्रताप सन्तापि-
ताहितजनो जनवल्लभोभूत् ॥ (२६) पृथ्वीवल्लभ इति च
प्रथितं यस्या-
२९ परं ज(ग)ति नाम । यश्चतुरुदधिसीमामेको वसुधां वशे चक्रे ॥
(२७) एकोप्यनेकरूपो यो ददृशे भेदवादिभिरिवात्मा । परबल-
जलधिमपारं
३० तरन् स्वदोर्भ्यां रणे रिपुभि ॥ (२८) एको निहंतिरहं गृहीतशस्त्रा
मे परे वहवो । यो नैवंविधमकरोच्चित्त स्वप्नेपि किमुताजौ ॥
(२९) राज्याभिषेककलशैरभि-
३१ षिच्य दत्ता राजाधिराजपरमेश्वरतां स्वपित्रा । अन्यैर्महानृपति-
भिर्बहुभिस्समेत्य स्तम्भादिभिर्भुजवलादवलुप्यमानां ॥ (३०)
एकोनेकनरेन्द्रवृन्द्रसहिता-
३२ न्यस्तान् समस्तानपि प्रोत्खा(ता)सिलताप्रहारविधुरा वध्वा
महाम्युगे । लक्ष्मी(म)प्यचला चकार विलसत्सच्चामरग्राहिणीं
संसीदद्गुरुविप्रसज्जनसुहृद्व-
३३ न्धुपभोग्यां भुवि ॥ (३१) तत्पुत्रोत्र गते नाकमाकम्पितरिपुप्रजे ।
श्रीमहाराजशर्वाख्य ख्यातो राजाभवद् गुणै ॥ (३२) अर्थिषु
यथार्थतां यस्समभिष्टफलाप्तिलब्धतो-
३४ षेषु । वृद्धिन्निनाय परमाममोघवर्षाभिधानस्य ॥ (३३) राजा-

सून तत्पितृव्यो रिपुभवविभवोद्भूत्यभावैकहेतुः गोविन्दराजो
गुणिजननिकरान्तश्चमत्का-

३५ रकारी। रागान्धस्यान्यवधू प्रकटितविनया य नृप सेव्यमाना
राजश्रीरेव चक्रे स(कल)कविजनोद्गीततथ्यस्वभावं ॥ (३५)
निर्वाणावासिवासाम्बहितविजनो —

३६ पास्यमाना सुवृत्त वृत्त जित्वान्यराज्ञां परिसुत्यवान सर्वतो
हिमकंप्य । एकाकी ह्सर्वरिम्बजनकृतिमहन्त्राणिराज्येनगगु-
र्लाटीय मण्डल

३७ यन्तपन इव निजस्वामिदत्त ररक्ष ॥ (३७) यस्यागमात्रजयिनः
प्रियसाहसस्य क्ष्मापालवेषफलमेव वभू(व) सैन्यं । मुक्त्वा च
सर्वभुवनेश्वरमादिदे —

दूसरा पत्र दूसरा भाग

३८ व नावन्दतान्यसमरेष्वपि यो मनस्वी ॥ (३६) श्रीकर्कराज इति
रक्षितराज्यभारस्सार. कुलस्य तनयो नयशालिशौर्यः । तस्या —

३९ भवद् विस(व)लन्दितचन्द्रमार्थ. पार्थ· सदैव धनुषि प्रथम-
इशुचीना ॥ (३७) दानेन मानेन सदाज्ञया वा शौर्येण वीर्येण च
कोपि भूप । एतेन साम्यास्मि

४० न वेति कीर्तिस्सकलानुका भ्राम्यति स्वस्य लोके ॥ (३८) स्वेच्छा-
गृहीतविषया(न्)दृढसंघभाज प्रोद्वृत्तदससरशौल्किकराष्ट्रकूटान ।
उत्खातखड्गनिज —

४१ बाहुबलेन जित्वा योमोघवर्षमचिरात स्वपदे व्यधत्त ॥ (३०)
तेनेदमनिलविद्युच्चञ्चलमालोक्य जीवितमसार । क्षितिदानपरम-
पुण्य. प्रवर्तितो ध —

४२ र्मदायोयम् ॥ (४०) स च समधिगताशेषमहाशब्दमहासामन्ता-

थिरति सुवर्णवर्षश्री(क)र्कराजदेव. कुशली सर्वानेव यथासंबध्य-
मानान् राष्ट्रपति –

४३ विषयपतिग्रामकूटयुक्तनियुक्ताधिकारिकमहत्तरादि-
कान् समनुदर्शयत्यस्तु वः संविदितं यथा मया श्रीवड्डिकान्द –

४४ स्थावास्थितविजयस्कन्धावारगस्थितेन मातापित्रोरात्मनश्चैहिका-
मुष्मिकपुण्ययशोभिवृद्धये श्रीनागसारिकास्वनगरप्रविष्टार्हच्चैत्या-
ल(या)यतननि(बद्ध) –

४५ सत्त्वपुरान्वयमण्डनवसतिकाया. खण्डस्फुटितनवकर्मचरुबलिदान-
पूजार्थं तथा तथानिबध्यमानचातुष्टयमूलसंघोदयान्वयसेन –

४६ सेनसंघतलवाटिगुरोश्शिष्यश्रीसुमतिपूज्यपादः तच्छिष्य-श्रीअप-
राजितगुरो श्रीनागसारिकाप्रतिबद्ध सम्बालटकग्रामस्य
उत्तरदिशि

४७ हिरण्ययोगासिवानां दायुवापी यस्याघाटनानि पूर्वतः श्रीधर-
वापिका दक्षिणतो वहः अपरत· पूर्वा महानदी उत्तरत-
स्सम्बपुर –

४८ वापिका । एवमियं चतुराघाटपरक्षिता यथान्वहिरण्यादेया
सचाटभटप्रवेश्यस्सर्वराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीय· आच –

४९ न्द्रार्काणवक्षितिसरित्पर्वतसमकालीन· शिष्यप्रशिष्यान्वयक्रमोप-
भोग्यः शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु त्रिचत्वारिंशद –

५० विकेष्वतीतेषु वैशाखपौर्णमास्यां स्नात्वोदकातिसर्गेण प्रतिपादि-
तोस्योचितया आचार्यस्थित्या भुंजतो भोजयत. कर्षत कर्षयत
प्रतिदि –

५१ शतो वा न केनचित् परिपन्थिना करणीया ॥ तथागामिनृपति-
भिरस्मद्वंश्यैरन्यैर्वा सामान्यं भूमिदानफलमवेत्य विद्युल्लोला-
न्यनित्यान्यैश्व –

५२ र्याणि तृणाग्रलग्नचचलविन्दुचचल च जीवितमाकलय्य स्वदाय-
निर्विशेषोयमनुमन्तव्यः परिपालयितव्यश्च । यश्चाज्ञानतिमिर-
पटलावृत –

५३ मतिराच्छिन्द्यादाच्छिद्यमानक वानुमोदेत स प(च)भिर्महापात-
कैरुपपातकैश्च सयुक्तस्स्यादित्युक्त च भग(व)ता वेदव्यासेन
व्यासेन ॥

५४-५८ [नित्यके शापात्मक श्लोक – षष्टि वर्षसहस्राणि आदि]

५९ यथा चैतदेव तथा शासनदाता लिपिज्ञस्स्वहस्तेन स्वमतमारोप-
यति ॥ स्वहस्तोय मम श्रीकर्कराजस्य श्रीमदि –

६० न्द्रराजसुतस्य ॥ लिखित चैतन्मया महासन्धिविग्रहाधिपतिना
नारायणेन कुलपुत्रकश्रीदुर्गभट्टसूनुना ॥ जीयाद्दुरितविद्वेषि
शासन जि –

६१ नशासन । यदन्यमतशैलानां भेदने कुलिशायते ॥ (४९)
जयति जिनोक्तो धर्मष्षड्जीवनिकायवत्सलो नित्य । चूडामणि-
रिव को(के)

६२ विभाति यस्सर्वधर्माणाम् ॥ (५०)

[यह ताम्रपत्र शक ७४३ मे वैशाख पूर्णिमाको दिया गया था । इसमें पहले राष्ट्रकूट सम्राटोकी वशावली अमोघवर्ष (प्रथम) तक दी गयी है । तदनन्तर अमोघवर्षके पितृव्य(चाचा)इन्द्रराजके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्ष-का उल्लेख है जो गुजरातमे शासन कर रहा था । अमोघवर्षके राज्यारोहण-के बाद कई सामन्तोने विद्रोह किया था उनपर विजय प्राप्त करनेमे कर्क-राजकी ही मदद उपयोगी सिद्ध हुई थी । कर्कराजने उक्त वर्षमें मूलसघ-सेनसघके मल्लवादिगुरुके शिष्य सुमतिपूज्यपादके शिष्य अपराजितगुरुको नागसारिकाके जिनमन्दिरके लिए हिरण्ययोगा नामक खेत दान दिया था ।]

[ए इ २१ पृ १३३]

५६

राणिबेण्णूर (धारवाड, मैसूर)

शक ७८१ = सन ८६०, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष (प्रथम) के समयका है। नागुल पोल्लब्बे द्वारा स्थापित नागुलबसदिके लिए शक ७८१ मे कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। यह दान सिहवूरगणके नागनन्द्याचार्यको दिया गया था।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २०१]

५७

चेंदूर (मैसूर)

शक ७८५ = सन् ८६४, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष १ के समय शक ७८५, तारण संवत्सरमें लिखा गया था। चिकण्ण नामक अधिकारीको कुछ भूमि दिये जानेका इसमें उल्लेख है। व्रतोका पालन और सन्यसन इनका भी उल्लेख हुआ है। अत यह समाधिमरणका स्मारक प्रतीत होता है।]

(मूल कन्नडमें मुद्रित)　　[सा० इ० इ० ११ पृ० ६]

५८

पेवरमलै (मदुरा, मद्रास)

शक ७९२ = सन् ८७०, तमिल

१ शकर याण्डु एलु-नूरुत्तोण्णूरिरण्डु
२ पोन्इणवरगुणर्कु याण्डु एट्टु गुणवीरक्कु-
३ रवडिगळ् माणाक्क(र्)कालत्तु शान्तिवीरक्-
४ कुरवर् तिरुत्तयिरं पोरिश्च (पार्श्व)प(भ)टारंयुमिय-
५ क्कि अव्वैगलैयु पुदुक्कि इरण्डुक्कुमुद्-

६ टाववियुमोरढिगलुक्कु शोराग अमैत्त पो-
७ ण् पॆन्नूर्रैन्डु काणम् ॥

[यह लेख पाण्ड्य राजा वरगुण २ के राज्यवर्ष ८, शक ७९२ का है। इस समय गुणवीरके शिष्य शान्तिवीरने तिरुवयिरै स्थित पार्श्वनाथ मूर्ति तथा यक्षीमूर्तिका जीर्णोद्धार किया था। इनके लिए उन्हें ५०२ काणम् (सुवर्णमुद्रा)दान मिला था।]

[ए० इ० ३२ पृ० ३३७]

५९

धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)

शक ८०० = सन् ८७८, कन्नड

किलेम मारियम्मन देवालयके आगे पड़े हुए स्तम्भपर

[इस लेखमें पल्लव महेन्द्र नोलम्ब-द्वारा किसी जैन मन्दिरके लिए दान दिये जानेका निर्देश है। इस लेखका समय शक ८००, विलम्बि सवत्सर था।]

[इ० म० सालेम ८१]

६०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड, शक ८११ = सन् ८९०

[इस लेखकी तिथि कार्तिक पूर्णिमा, शक ८११, शोभन सवत्सर ऐसी है। इस समय दण्डनायक अम्मरसने कुपण तीर्थकी यात्रा की तथा महासामन्त कदम्बवशीय अलियमरस-द्वारा निर्मित वसदिके लिए कुछ दान दिया था।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १५९ पृ० ४१]

६१

धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)

शक ८१८ = सन् ८९३, कन्नड

मल्लिकार्जुन मन्दिरके आगे एक स्तम्भपर

[राजा महेन्द्राधिराज नोलम्बके समय शक ८१५ मे यह लेख लिखा गया। इसमे निवियण्ण और चण्डियण्ण-द्वारा मूलसंघ, सेनान्वय, पोगरियगणके आचार्य विनयसेन सिद्धान्तभटारके शिष्य कनकसेन सिद्धान्तभटारको मूलपल्लि ग्राम दान देनेका उल्लेख है।]

[इ० म० सालेम ७४]

६२

सित्तन्नवासल (पुदुकोट्टै, मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[यह लेख पाण्ड्य राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयका है। इलंगीतमन् (इसीका नाम मदिरै आशिरियन् भी था) द्वारा अन्तर्मण्डपका जीर्णोद्धार तथा बाह्य मण्डपका निर्माण किये जानेका इसमे उल्लेख है। इस मन्दिरको अरिवन् कोयिल् (अर्हन्मन्दिर) कहा गया है। इस गुहामन्दिरके बाहरी भागपर कई यात्रियोंके नाम खुदे हैं जिनकी लिपि ७वी सदीकी है।]

[रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १६७-१६९ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २१५ पृ० ९९]

६३

हेब्बलगुप्पे (मैसूर)

९वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्तिश्रीनरसींगेरे अप्पोर् दुग्गमार

२ कोयिल्वर्मदिगे अरगण्डुगन्बेदे मण् कोट्टर्

३ अरमण्डमेगालुमगोकेमोगेयु ओट्टिपा-

४ डियुं गोयियन्दम्मगलकण्डुग बेट्टेल् मण्कोट्टर्

५ द्दतानलित्तु कंडिसिदोनोवकल् केण्डुग पंचम-

६ हापातकनक्कवन् मक्कलु माग-

७ वसडियानूकंयद्दोन् नारायण पं-

८ रून्तचन्

[यह लेख ९वी सदीकी लिपिमें है । नरसीगेरे अप्पोर् दुग्गमार (जो गगवंशका राजपुत्र था) द्वारा एक जिनमन्दिर (कोयिल्वसदि) को ६ खण्डुग भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इतनी ही भूमि अरमण्डमेगल्, अगोकेमोगे, ओट्टिपाडि इन ग्रामोके निवासियो-द्वारा तथा गोयिन्दम्म-द्वारा दान दी गयी थी । श्रेष्ठ शिल्पकार नारायणने इस वसदिका निर्माणकार्य किया था ।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० २४०]

६४

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

९वी सदी, कन्नड

[यह लेख ९ वी सदीकी लिपिमें है । इसमे किसी वसदिके लिए चन्द्रनन्दि भट्टारको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । इस लेखकी स्थापना इन्दर पिट्टम्मके मेनबोव कुण्डमय्य-द्वारा की गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १११ पृ० १२९]

६५

कलकत्ता (नाहर म्युजियम)

९वीं सदी, कन्नड

१ श्री जिनवल्लभन सज्जन

२ भागियवेय माडिसिद

३ प्रतिमे

[यह लेख पीतलकी चौबीसतीर्थंकरमूर्तिके पादपीठपर है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह मूर्ति जिनवल्लभकी स्वजन (पत्नी) भागियवे-द्वारा स्थापित की गयी थी। लिपिसे स्पष्ट होता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित हुई थी।]

[ए० रि० मैं० १९४१ पृ० २५०]

६६-६७

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा है कि तिरुनरुगोण्डैके किल्लैप्पल्लि (जैन मन्दिर) का चतुर्मुगत्तिरुक्कोयिल् (चतुर्मुख वसति) तथा पूर्वका सभामण्डप तलक्कूडि निवासी विगैयनल्लूलान् कुमरन् देवन्ने बनवाया था। लेखकी लिपि ९वीं सदीकी है। यहींके अन्य दो भागोंमें इसी समयकी लिपिमें वाणकोवरैयर् तथा आरुलगपेरुमान्का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०६-७ पृ० ६६]

६८-६९

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें नारियप्पाडि निवासी गिगणार् पेरियवड्डगणार्-द्वारा दो जैन पल्लियों (मन्दिरों) के लिए १० पोण् (मुद्राएँ) दान दिये जानेका निर्देश है। यहींके एक अन्य लेखमें नारियप्पाडि निवासी पेरियन-क्कनार्के पुत्र (नाम लुप्त) द्वारा भी कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है लिपि ९वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०८-९ पृ० ६६]

७०

कीरप्पाक्कम् (चिंगलपेट, मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कीरैपाक्कम्के उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका उल्लेख है। इसका निर्माण यापनीय संघ कुमिलिगणके महावीरगुरुके शिष्य अमरमुदलगुरु-द्वारा किया गया था। लिपि ९वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० २२ पृ० १०]

७१

बेगूर (बंगलोर, मैसूर)

९वीं सदी, कन्नड

[इस निसिधिलेखमें मौन भट्टारकके शिष्य 'न्दिभटारके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह लेख नागेश्वर मन्दिरमें लगा है।]

[ए० रि० मैं० १९१५ पृ० ४६]

७२

बेलगाँव (मैसूर)

९वीं-१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख नेमिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना 'राष्ट्रकूट वंशरूपी समुद्रके लिए चन्द्रके समान' अणिचन्द्रके गुरु नेमिनाथ (नेमिचन्द्र ?) द्वारा की गयी थी।]

[रि० अ० स० १९२८-२९ पृ० १२५]

७३

अलगरमलै (मदुरा, मद्रास)

वट्टेलुत्तु लिपि—९वीं-१०वीं सदी

[यह लेख एक जिनमूर्तिके समीप खुदा है]

(मूल-) १ श्री अच्चण — २ न्दि शेयल्

२ नासत्करांज्ञा(प)शोभित । मुग्ने(गरः) कौ मूर्त्ति रूढो मही-
भृता ॥३ अभिधिम्रद् रचि काना मावित्री चतुरानन । हरिवर्मा
वभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिक ॥(४) सकललोकविलोकनपंकजस्फुर-
दनकुलवालदिवाकरः । रिपुजधूवदनदुगनद्युति
३ समुदपादि विदग्धनृप(स्तत) ॥(५)म्राचार्यैर्यो रुचिरवच(नैर्वा)-
सुदेवाभिधानैर्बोध नाता दिनकरकरैर्नीरजन्माकरो व । पूतं जैनं
निजमिव यशो (कारयद् ह-)स्तिकुंड्या रम्य हर्म्यं गुरुहिमगिरे
शृंगशृंगारहारि ॥६ दानन तुलितवलिना तुलादिदानस्य येन
देवाय । भाग(द्वय)व्यतार्यत भागश्चा —
४ (चार्यव)र्याय ॥(७) तस्माद्भू(त्कुद्ध)मल्लो ममटाख्यो,महीपतिः।
समुद्रविजयो श्लाघ्यतरवारि मर्द्धमिक' ॥८ तस्मादमम. मम-
जनि (समस्त)जनजनितलोचनानंदः । ध(व)लो वसुधाव्यापी
चन्द्रादिव चन्द्रिकानिकर ॥(९) मक्त्वाघाट घटामि प्रकटमिव भटं
मेदपाटे भटाना जन्यं राजन्य —
५ जन्यं जनयति जनताज रण मुञ्जराजे । (श्री) माणे (प्र)णष्टे हरिण
इव भिया गूर्जरेशे विनष्टे तत्सैन्याना शरण्यो हरिरिव शरणे यः
सुराणा बभूव ॥(१०) श्रीमद्दुर्लभराजभूभुजि भुजैर्भुंजत्यमगा
भुव दंडैमंडनशौण्डचंडसुभटस्तस्याभिभूत विभु. । यो दैन्यं-
रिव तारक —
६ प्रभृतिभि. श्रीमान् महेन्द्र पुरा मेनानीरिव नीतिपौरुषपरोनैर्षीत्
परा निर्वृतिं ॥(११) य मूलादुदमूलयद् गुरुवल श्रीमूलराजो
नृपो दर्पांधो धरणीवराहनृपतिं यद्वद् द्विपः पादप । आयात भुवि
कांदिशीकमभिको यस्त शरण्यो दधौ दष्ट्रायामिव रूढमूढमहिमा
कोलो महीमडल ॥१२
७ इत्थ पृथ्वीभर्तृभिर्नाथमानै सा सुस्थितैरास्थितो यः । पार्थोनाथो
वा विपक्षात् स्वप(क्ष)रक्षाकांक्षे रक्षणे वद्धकक्षः ॥(१३) दिवा-

कण्ठेव कं कठोर' कणन्तिना नृपकङ्गसस्य । अग्निशिखतापहृतो-
रनाप यमुन्नत पादपक्रमेवा: ।।(१४) धनुर्वरशिरोमणेरमलधर्म-
मभ्यस्यता जगा -

८ स जलधेर्गुणो (गु)रुस्तस्य पार पर । मर्मायुरपि नमुस्ता सुमुग्ध
नार्गणाना गणा मता चक्रिनन्तन मकरन्दं लोकोत्तर ।।(१५)
यात्रासु यस्य त्रिपदार्णविनुर्निगेपात चलत्तुरगखुरखाननद्धीरजांसि।
तेजोभिरुज्ज्वितमनेन विनिर्जितस्मात् भास्वान् निलजित इवातितरा
निगंभूत ।।१६

९ न कामना मनो धीमान् न　लता दधौ । अनन्योद्धार्यसत्कार्य-
भारधुर्योर्थिनामि य ।।(१७) यस्तेजोभिरहस्कर करुणया शौद्धो-
दनि शुद्धया भीष्मो वचनवचितेन वचसा धर्मेण धर्मात्मज ।
प्राणेन प्रलयानिलो चलभिदो मन्त्रेण मन्त्री परो रूपेण प्रमदाप्रियेण

१० मदनो दानेन क(र्णो)भवत ।।(१८) सुनयतनय राज्ये वाक्प्रसाद-
मनिशिपन परिणतवया नि मगो या वभूव सुधी स्वय कृतयुग-
कृत कृत्वा कृत्य कृतात्मचमत्कृतोत्कृत सुकृती नो कालुष्य
करोति कलि: मता ।।(१९) काले कलावपि किलामलमंतरीय
लोका विलोक्य करुनानितन गुणो -

११ घ । (पार्थो)दिपाथिव(गुणा)न् गणयनु सन्यानेक स्वभाद् गुण-
निधि यमितीव वेधा: ।। २० गोचरगति न वाचो नद्यपि चन्द्र-
चन्द्रिकारुचिर । वाचस्पतेर्वचस्यो को वान्यो वर्णयेत पूर्ण ।।(२१)
राजधानी भुवो भर्तुस्तस्यास्ते हस्तिकुण्डिका । अलका धनदस्येव
धनाढ्यजनसेविना ।। (२२) नीहारहारहरहास(हि)—

१२ (मा) शुहारि (आ) रका(र) वारि (भु)वि राजविनिर्मराणा ।
वास्तव्यभव्यजनचित्तसम (स)भनान् मतासनपद्मपहारपर परेषा ।।
(२३) धौतकलधौतकलशाभिरामरामास्तना इव न यस्या ।

सत्यपरंप्यपहारा सदा सदाचारजनताथा ॥ (२४) समदमदना लीलालापा प—

१३ नाकुला कुवलयदृशा मदश्यते दशान्तरला पर । मलिनितमुग्ना यत्रोद्वृत्ताः पर कठिना कुचा निविडरचना नी(वीं) बंधा पर कुटिला कचा॰ ॥ (२५) गाढांसुगानि मावं शुचिकुचकलशे कामिनीना मनोज्ञविस्तीर्णानि प्रकाय मह वनजवनदेवतामदि-राणि । भ्राजते दभ्रशुभ्राण्य—

१४ तिशयसुभग नेत्रपात्रैः पवित्र सत्र चित्राणि धात्रीजनहृनहृदयै॰ विभ्रमैर्यत्र मत्र ॥ (२६) मधुरा घनपर्णाणो हृद्यरूपा रमा-धिका॰ । यत्रेक्षुवाटा लोकश्यो नालिकेरवाद् मिदूलिमा ॥ (२७) अस्या सूरि॰ सुराणा गुरुरिव गु(रु)मिगोरवार्हो गुणौघै-र्भूपाना त्रिलोकीवलयविक—

१५ सितानतरानग्रकीर्ति । नाम्ना श्रीशातिभद्रोमवदभिमवितु भास-(या)वामसाना काम काम सम(र्था) जनितजनमन समदा यस्य मूर्तिः ॥ (२८) मन्येमुना मुनीद्रेण (म)नोभू रूपनिर्जित । स्वप्नेपि न स्वरूपेण समगस्तातिलज्जित ॥ (२९) प्रोद्यत्पत्रा-करस्य प्रकटितविकटाशेपभाव—

१६ स्य सूरेः सूर्यस्येवामृताशु स्फुरितशुभरुचि वासुदेवाभिधस्य । अभ्यासीन पदव्या यममलविलसज्ज्ञानमालोक्य लोको लोका-लोकावलोक सकलमचकलत् केवल मभगीति ॥ (३०) धर्माभ्या-सरतस्यास्य सगतो गुणसग्रह । अभग्नमार्गणेच्छस्य चित्र निर्वाणवाछना ॥ (३१)

१७ कमपि सर्वगुणानुगत जन विधिरय विदधाति न दुर्विध । इति कलकनिराकृतये कृता यमकृतेव कृताखिलसद्गुण ॥ (३२) तदीयवचनात्रिज धनकलत्रपुत्रादिक विलोक्य सकल चल दल-

मिवानिलाद्वो(लि)तं । गरिष्ठगुणगोष्ठ्यद्र मसुद्दीधरद् धीरवीरु-
दारसमनिसुदरं प्रथम—

१८ तीर्थकृन्मंदिरं ॥ (३३) (रक्तं) वा रम्यगमाणां मणितारा-
वराजितं । इह मुखमिवाभाति भाम्मानवरालक ॥ (३४)
चतुरस्त्र (पट्टज) नवा(ङ्ग)निक शुभशुक्तिकरोटकयुक्तमिद बहु-
भाजनराजि जिनायतनं प्रविराजति भोजनधामसम ॥ (३५)
विदग्धनृपकारितं जिनगृहं—

१९ निर्जीर्णं पुन समं कृतमसुद्धृतावपि भवांबुधिरात्मन । प्रति-
ष्ठिपन सोप्यथ प्रथमतीर्थनाथाकृतिं स्वकीर्तिमिव मूर्ततामुपगतां
सितांशुद्युतिं ॥ (३६) शांत्याचार्यैस्त्रिपचाशे सहस्रे शरदामिय
माघशुक्लत्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठै प्रतिष्ठिता ॥ (३७) विदग्धनृपति-
पुरा यदतुलं तुलाद्रे—

२० दंडो सुदानमवदानधीरिदमपीपलज्ञाद्भुतं । यतो धवलभूपति-
र्जिनपते स्वय सात्म (जो) रवट्टमय पिप्पलोपप (द्रकू) पर्क
प्रादिशत् ॥ (३८) यावच्छेषशिरस्थमेकरजतस्थूणास्थिताभ्युल्ल-
सत्पातालानुलमडपामलतुलामालवते भूतल । तावत्ना—

२१ रवाभिरामरमणी(गं)घवंधीरावनिर्धामन्यत्र धिनोतु धार्मिकविय -
(म)द्भूपवेलावि(धौ) ॥ (३९) सालकारा समधिकरसा साधु-
संधानवधा श्लाघ्यश्लेषा ललितविलसत्तद्धिताख्यातनामा । सद्-
वृत्ताढ्या रुचिरविरतिर्धुर्यमाधुर्यवर्या सूर्याचार्यैर्व्यरचि रमणीवा—

२२ ति(रम्या) प्रशस्ति. ॥ (४०) संवत् १०५३ माघशुक्ल १३
रविदिने पुष्यनक्षत्रे श्रीऋषभनाथदेवस्य प्रतिष्ठा कृता महाध्वज-
श्चारोपित. ॥ मूलनायक ॥ नाहकजिंडजसगपपूरभद्रनागपोचि-
(स्थ)श्रावकगोष्ठिकैरात्मीयकर्मक्षयार्थं स्वसंतानभवाब्धितर—

२३ (णार्थं) च न्यायोपार्जितवित्तेन कारितः ॥वृ॥ परवादिदर्पमथनं

हेतुलयमहस्त्रसगकाकीर्णं । भव्यजनदुरितशमन जिनेंद्रवरशासनं जयति ॥ (१) आसीद् धाधनससत: शुभगुणो भास्वत्प्रतापो-ज्वलो विस्पष्टप्रतिम प्रमारकलितो भूपोत्तमागार्चित. । योपित्पी—

२४ नपयोधरांतरसुग्गाभिप्त्रगर्भलालितो य. श्रीमान् हरिवर्म उत्तम-मणि सद्वंशहारे गुरौ ॥ (२) तस्माद् बभूव भुवि भूरिगुणोपपेतो भूपप्रभूतमुकुटार्चितपादपीठ । श्रीराष्ट्रकूटकुलकाननकल्पवृक्षः श्री-मान् विदग्धनृपति. प्रकटप्रताप ॥ (३) तस्माद् भूप—

२५ गणा " तमा (कीर्त·) पर भाजन समूत सुगनु सुनीतिमतिमान् श्रीमम्मटो विश्रुत· । येनास्मिन् निजराजवंशगगने चन्द्रायित चारुणा तेनेद पितृशासन समधिक कृत्वा पुनः पाल्यतं ॥ (४) श्रीवलभद्राचार्यं विदग्धनृपपूजित समभ्यर्च्य । आचन्द्रार्कं यावद्-दत्त भवते मया—

२६ ॥ (५) (श्रीहस्ति)कुण्डिकायां चैत्यगृह जनमनोहर भक्त्या । श्रीमद्वलभद्रगुरोर्यद्विर्हित श्रीविदग्धेन ॥ (६) तस्मिन् लोकान् समाहूय नानादेशसमाग(ता)न् । आचन्द्रार्कस्थितिर्यावच्छासन दत्तमक्षय ॥ (७) (रू)पक एको देया वहतामिह विंशतेः प्रवह-णानां । धर्म—

२७ " क्रयविक्रये च त्था ॥ (८) सभृतगन्त्या देयस्तथा वहस्याश्च रूपक श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्पो देयः सवेंण परिपाट्या ॥ (९) श्री(भट्ट)लोकदत्ता पत्राणां चोल्लिका अर्थोदशिका । पेल्लकपेल्लक-मेतद् द्यूतक(रैः) शासने देयं ॥ (१०) देय पलाशपाटकमर्यादा-वर्तिक—

२८ '" । प्रत्यरघ(ट) धान्याढक तु गोधूमयवपूर्णं ॥ (११) पेट्टा च पचपलिका धर्मस्य विंशोपकस्तथा भारं । शासनमेतत्पूर्वं विदग्ध-

राजेन मदत्तं ॥ (१२) (कर्पा)सकांग्यकुंकुमा(पुग)माजिष्ठादिसर्व-
भाडस्य । (द)श दश पलानि भारे देयानि विक—

२९ ॥ (१३) आदानादेतस्माद् भागद्वयमर्हत कृतं गुरुणा।
शेषस्तृतीयभागो विद्याधनमात्मनो विहित ॥ (१४) राज्ञा
तत्पुत्रपौत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च। गुरुदेवधन रक्ष्य नोपे(क्ष्य
हितमात्मनः) ॥ (१५) दत्ते दाने फल दानात् पालिते पालनात्
फल । (भक्षितो)पेक्षिते पाप गुरुदे—

३० (वधने)धिक ॥ (१६) गोधूमसुद्गयवलवणरालू(का)देस्तु मेयजा-
तस्य । द्रोणं प्रति माणकमेकमत्र सर्वेण दातव्य ॥ (१७) बहु-
भिर्वसुधा भुक्ता राजभि. सगरादिभि । यस्य यस्य यदा भूमि-
स्तस्य तस्य तदा फल ॥ (१८) रामगिरिनदकलिते विक्रमकाले
गते तु शुचिमा(से) ।

३१ (श्रीम)द्बलभद्रगुरोर्विदग्धराजेन दत्तमिदं ॥ (१९) नवसु शतेषु
गतेषु तु षण्णवतीन्समधिकेषु माघस्य । कृष्णैकादश्यामिह सम-
र्थित मम्मटनृपेण ॥ (२०) यावद् भूधरभूमिभानुभरत भागीरथी
भारती साम्य(द्मा)नि भुजगराजभव(नं) श्राजद्भवामोधय ।
ति(ष्ठ)—

३२ त्यत्र सुरासुरेन्द्रमहित (जै)न च सच्छासनं श्रीमत्केशवसूरि-
सततिकृते तावत् प्रभूयादिद ॥ (२१) इद चाक्षयधर्मसाधन
शासन श्रीविदग्धराज्ञा दत्त ॥ सवत् ९७३ श्रीसमट(राज्ञा
समर्थि)तं सवत् ९९६ । सूत्रधारोद्भव(शत)योगेश्वरेण उत्कीर्णेय
प्रशस्तिरिति ।

[इस बृहत् शिलालेखके दो भाग हैं । दूसरा भाग जो २३वी पक्तिसे शुरू होता है समयकी दृष्टिसे पहलेका है । इसमे राष्ट्रकूट कुलके राजा हरिवर्माके पुत्र विदग्धराजका वर्णन किया है । आचार्य

वासुदेवके उपदेशसे विदग्धराजने राजधानी हस्तिकुण्डिकामें ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया था। इसने अपनी सुवर्णतुलाका दो तिहाई भाग इस मन्दिरके लिए तथा एकतिहाई भाग गुरुके लिए दान दिया था। विदग्धराजने इसी मन्दिरके लिए हस्तिकुण्डीके व्यापारियोंके कई करोंका उत्पन्न बलभद्र गुरुको दान दिया था। इस दानकी तिथि आषाढ, सवत् ९७३ थी। विदग्धराज-का पुत्र ममट हुआ। इसने उक्त दानको माघ कृष्ण ११, सवत् ९९६को पुन सम्मति दी। ममटका पुत्र धवल हुआ। इसकी वीरताका विस्तृत वर्णन लेखमें किया है। जब मुंजराजने मेदपाटकी राजधानी आघाटको नष्ट किया तब वहाँके राजाको धवलने आश्रय दिया था। दुर्लभराजके आक्रमणसे महेन्द्रका रक्षण इसीने किया तथा मूलराजके द्वारा पराजित धरणीवराहको भी आश्रय दिया। वृद्धावस्थामें धवलने अपने पुत्र बाल प्रसादको सिंहासनपर स्थापित किया। इसके समय सवत् १०५३ मे वासुदेवके शिष्य शान्तिभद्रसूरिके उपदेशसे हस्तिकुण्डीकी गोष्ठी (व्यापा-रियोंके समूह) ने विदग्धराज-द्वारा निर्मित मन्दिरका जीर्णोद्धार किया। गोष्ठीके सदस्योंके नाम पंक्ति २२में गिनाये है। लेखके पहले भागमें जो ४० श्लोकोंकी प्रशस्ति है वह सूर्याचार्यने लिखी थी। लेखके अन्तमें केशवसूरिका उल्लेख है]

[ए० इ० १० पृ० १७]

८२

विलप्पक्कम (जि उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ९४५, तमिल

नागनाथेश्वर मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलापर

[यह लेख चोल राजा मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन् (परान्तक १) के राज्यके ३८ वें वर्षमें लिखा गया था। तिरुप्पान्मलैके आचार्य अरिष्ट-नेमिकी एक शिष्याके द्वारा एक कुआँ बनवानेका इसमें उल्लेख है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २१६]

५ वलयमेल्लमन–　　६ तिरथनी दण्ड(ना)य–
७ कं श्रीविजय ॥(१)　　८ तुरगघलगल–
९ नोड्डिद करिघटे–　　१० यं पिरियनेर–
११ (वि)यं वल्लणिय ।　　१२ धुरदेडे(योलि)रि–
१३ दु गेल्गु करद(म्पि)　　१४ करमरिदु रण–
१५ दोलनुपमकविय ॥(२)　　१६ कुपितवति श्रीवि–
१७ जये वलिकुलति–　　१८ लकं नरेन्द्रदण्डाधि–
१९ पतौ । गिरिरगि(रि)र्वन–　　२० मवन जलमज–
२१ ल रिपुस(मू)हव–　　२२ लमवल ॥(३)

दूसरा भाग

२३ वसुमतियोल–　　२४ गिल्देण्दु (दे)सेगल
२५ कुसुकुलमनेय्दि　　२६ माणदे मत्त । (विस)–
२७ रुहगर्माण्डक्क प–　　२८ सरिसिदुदु (की)र्ति ने–
२९ ड्लनुपमर्कविय ॥(४)　　३० आश्रितजनकल्पत–
३१ रुर्विश्रुतरि(पु)नृप–　　३२ तितृणज्वानलमूर्ति ।
३३ श्रीवनितास्मरपाश·　　३४ पातुस्तव वाहु मे–
३५ दिनीं श्रीविजय ॥(५)　　३६ चतुरुदधिवलय–
३७ वलयितवसुन्ध–　　३८ रामिन्द्रशासनात् सं–
३९ रक्ष(न्) । श्रीविजय　　४० दण्डनायक (जी)व
४१ चिरं दानधर्मनि–　　४२ रतमनस्क ॥(६)
४३ मगल माहाश्री ॥

तीसरा भाग

४४ भद्रमस्तु भगवते (जि)नशासना(य) ॥
४५ अष्टविधकर्ममेल्लमनट्टु–　　४६ यरिगोण्डु कोंडिपे(नें)त्तुडे वगेयि।

४७ (पु)ट्टिदनुदात्तसत्व नेट्टने विट्ठु ४८ येन्दवन्द्यनरिविंगोजम् ॥(७)
४९ तानरिदु तो(र)दु नेट्टने मानि– ५० सवालाबुर्देदु संन्यासनदोळ्।
५१ मानसिके गिडदे कोण्डो(न)नून– ५२ सुखास्पदमनळ्तियोळ्
श्रीविजय ॥(८)
५३ निर्गतमय नीनर(स)मर्ग– ५४ म नानोल्लेनेन्दु पेम्मि त्रिसु–
५५ वें। सर्गद मांगमनुण्डपव– ५६ गंक्कडियिट्टोनरिडोननुप–
५७ मकविर्य ॥(९)दण्डिन साम ५८ ग्रिगे परमण्डलमल्लाडे
५९ (स)र्वविक्रमतुग। दण्डिन थी– ६० रश्रीगोळ्गण्ड श्रीदण्डनायक
६१ श्रीविजयं ॥(१०) (च)ण्डपराक्र ६२ मनुरटरिमण्डलिकरनट्टि पि-
६३ डिदु पतिगोप्पिसुवोळ्गण्ड प्रच-६४ ण्डनीमूमण्डलडोळ् दण्डनायक
६५ श्रीविजय ॥(११) अनुपम– ६६ कविथ सेनयोव गु–
६७ णवर्म बरेद ॥

[यह शिलालेख दण्डनायक श्रीविजयकी प्रशसामें लिखा गया है। अरिविंगोज, अनुपमकवि तथा सर्वविक्रमतुग ये इसके विरुद थे। यह वलिकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा इन्द्रराजकी सेनाका पराक्रमी सेनापति था। इन्द्रराज (तृतीय) ही सम्भवत यहाँ उल्लिखित है जिसका राज्य सन् ९१४ से ९२२ तक था। लेखके तीसरे भागमे कहा है कि श्रीविजयने समस्त वैभव छोडकर सन्यास धारण किया था। यह लेख श्रीविजयके सेवक गुणवर्माने लिखा था।] [ए० इ० १० पृ० १४७]

६८–६९

चोलवाण्डिपुरम् (दक्षिण अर्काट, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

[यह लेख राजा गण्डरादित्य मुम्मुडि चोलके दूसरे वर्षका है। इसमें चेदि सिद्धवडवन् नामक शासककी प्रशसा है। उसे कोवलका स्वामी तथा

मलयकुलोद्भव कहा है। न्यानीर पहाड़ीपर उत्कीर्ण मूर्तियोंकी पूजाके लिए उसने कुछ दान दिया था। कुरण्डिके गुणवीर भटारका भी इसमें उल्लेख है। उत्कीर्ण मूर्तियाँ महावीर, पार्श्वनाथ, गोम्मटदेव तथा पद्मावती की हैं। यहींके एक अन्य लेखमें १०वीं सदीकी लिपिमें कहा है कि इन मूर्तियों (तेवारम्) का निर्माण वेलि कोंगरैयर् पुत्तडिगलने किया था।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० २५१-५२ पृ० ३४]

१००

मसुलिपट्टम ताम्रपत्र (आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत-तेलुगु

१ व्याकृष्टरत्नखचितायतशार्ङ्गचापो यस्सेन्द्रकार्मुकविनीलपयोद-
वृन्दम्। निर्भर्त्सयन्निव विभा—

२ ति स कृष्णकान्तिर्विष्णुश्शिवन्दिशतु वोवधनस्त्रिलोक ॥ (१)
स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमा—

३ नव्यसगोत्राणां हारीतिपुत्राणां कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्यानां
मातृगणपरिपालितानां स्वामि—

४ महासेनपादानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवरवराह-
लाञ्छनेक्ष—

५ णवशीकृताराति मण्डलानामश्वमेधावभृथस्नानपवित्रीकृतवपुषां
चालुक्यानां कु—

६ लमलङ्करिष्णोस्सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्धननृप-
तिरष्टादशवर्षाणि—

७ वेङ्गीदेशमपालयत्। तदात्मजो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतम्। तदनुजे-
न्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्धनो न—

८ व। तत्सूनुर्मङ्गियुवराजः पञ्चविंशतिम्। तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयो-
दश। तदवर—

९ जः कोकिलिष्षण्मासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्धनस्तत्सुखाक्य् सप्तत्रिंशतम् । तत्पुत्रो —वि

दूसरा पत्र पहला भाग

१० जयादित्यभट्टारकोष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्धनष्षट्त्रिंशतम् । नरेन्द्रमृगराजा (ख्यो) मृ—

११ गराज (पराक्रम ।) विजयादित्य (भूपाल) श्चत्वारिं(शत्समा)- ॥(२) तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्ध—

१२ नो (स्त्यर्धवर्षम् । तत्सु)तो गुणगविजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशतम्। तद्भ्रातुर्यौवराज्योन्नतमहि—

१३ (मसूतो) विक्रमादित्यभूपाज्जातश्चालुक्यभीमस्सकलनृपगु (णो- त्कृ) ष्टचारित्रपात्र । दानी

१४ ' रसकर सार्वभौमप्रतापो राज्य कृत्वा प्र (या) तः त्रिद्- शपतिपद

१५ (त्रिंशदब्दप्रमा) ण ॥ (३) तत्पुत्रः कलियत्तिगण्डविजयादित्य- ष्षण्मासान् । तत्सूनुरम्मराजस्स—

१६ (स) वर्षाणि । तत्सुत विजयादित्य कण्ठिकाक्रमायातपट्टाभि- षेक बालसुखाक्य तालराजो राज्यम्मास—

१७ (मे) क । चालुक्यभीमसुतो विक्रमादित्यस्त हत्वा एकादश- मासान् । विजयादित्यो वेंगीन ४ कलियत्ति—

१८ गण्डनामा भीमा (नृ ।) अस्य सती मेलाबा तज्जश्रीराजभीम- नृपतिरखेव ॥ (४) सत्यत्यागाभिमानाद्यखि—

दूसरा पत्र दूसरा भाग

१९ लगुणयुतो राजमार्ताण्डभाजो । जित्वोग्रम्मल्लपाख्य सत्सुतमधि- चल द्रोहि (णो) प्यन्तकामो । ह्निड्भीमो राष्ट्र

२० कूटप्रबलबलमस्सहरो द्वादशाब्द । राज्य कृत्वागमत्स प्रणिहित (सुयशो) धर्मसन्तानवर्गं ॥ (५) वि—

२१ श्गो· पञ्चेव शर्मोग्वि गिरितनया यस्य देवी सपट्टा। मग्गुद्दा (ईह) नाम्निजकु (लवि) पये पुण्यला (व)—

२२ प्यगण्या। लोकांता नत्सुतोभूद् विजितपरबलो वेगिनाथोम्मराजो। राजराजाधिराजो (जितरिपु) म—

२३ कुटोद्घृष्टपादारविन्द ॥ (६) वेगी (राज्याभिपिक्तो) निजरिपुविजयादित्यमुद्यत्समर्थं। जित्वा (नेकाजिरग)—

२४ प्रजितपरबलं (कण्ठिकादामकण्ठ।) दायादद्रोहिवर्गानपि सकरबलः क्षत्रि (या) दित्यदे—

२५ वो। ध्वस्तारिध्वान्तराशिर्विलम्बितकमलस्मप्रतापो विभाति ॥ (७) यन्निर्मातुन्निमित्त कृतमिदमखिलं विष्टप हि

२६ त्रिमूर्तेरात्मान चात्मनास्मादिह मकलगुणै (राजमी)-मोद्वहोभूत् तेजोराशि· प्रजानां पतिरधिकव—

२७ (ल) स्सप्रतापोष्टमूतिस्मोयन्देवोम्मराजो जनगुणजनकोन (न्य) राजाग्रचिन्ह ॥ (८) स्वर्याता पूर्व—

तीसरा पत्र . पहला भाग

२८ नाथा नलनहुषहरिश्चन्द्ररामादयोपि प्रत्यक्षास्ते यशोभिर्गुणवपुरचला स्वैरिदानी—

२९ मदृष्टा। यस्योच्चैं कीर्तिरा (शिभ) गण इव जगत्यद्वितीयोदयोस्मिन्। राजराजाधिराजस्य ज—

३० यति विजयादित्यदेवोम्मराज ॥ (९) गद्यम्। स जगतीपतिरम्मराजो राजमहेन्द्र भोगीन्द्र सह—

३१ स्रभोगोपहासिदीर्घदक्षिणैकवाहुमान्धितविश्वविश्वमराभार । नारायण

३२ इव निरन्तरानन्तभोगास्पद्. । विधुरिव सुखविराजित । पितामह इव कम—

३३ लालन । गिरिविश इव धराधरसुताराधित । रत्नाकर इव समस्त—

३४ शरणागतभूभृदाश्रय. । सुवर्णाचल इव सुवर्णोत्तुगोदय. । हिमाचल

३५ इव सिंहासनोल्लासितचमरीवालव्यजनविराजमानकील. ॥ स सम—

३६ स्तभुवनाश्रयश्रीविजयाविख्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरम—

तीसरा पत्र दूसरा भाग

३७ भट्टारक । वेलनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-नस्समस्त—

३८ सामन्ता(न्त) पुरमहामात्रपुरोहितामात्यश्रेष्ठिसेनापतिश्रीकरण - धर्माध्यक्ष—

३९ द्वादशस्थानाधिपतीन् समाहूयेत्थमाज्ञापयति विदितमस्तु व· । श्रीमानुदपा—

४० दि महान्त्रिणयनकुलसाधु श्रेष्याख्यो । गोत्र सिंहासनतो

४१ विदितो नरवाहनश्चलुक्ये(शानाम् ॥ १०) श्रीकरणगुरुर्गुरुरिव विबुधगुरु—

४२ स्स(क)लरा(जसिद्धान्तज्ञ) । नरवाहन इत्यासीन्न्यक्कृतनरवाह-(न)प्रकाशित—

४३ यशसा ॥(११) यस्यात्मसुतो गुणवान् मेलपराजो गुणप्रधानो दानी । मानी मा—

४४ नवचरितो मानवदेवो जिनेन्द्रपदपद्माकि. ॥(१२) तस्य सती मेण्डावा सीतेव पति—

४५ व्रता जिनव्रतचरिता । सत्यवती (वि)नयवती सतताहारप्रदायिनी धृतधर्मा ॥ (१३)तज्जो

चौथा पत्र   पहला भाग

४६ (सु)तौ प्रसिद्धौ बुद्धिपरौ सकलशास्त्रशस्त्रविवेकौ । भीमनरवाह-
नाम्नौ विख्यातौ रा—

४७ मलक्ष्मणाविव लोके ॥(१४) यौ भीमार्जुनसदृशौ बलयुतबलदेव-
वासुदेव(समा)नौ । (न)—

४८ कुलमहदेवनुतौ तौ जातौ जैनधर्मनिरतचरित्रौ ॥(१५) श्रीमत-
चालुक्यभीम(क्षितिपतिकृप)—

४९ या लब्धसामन्तचिन्हौ श्रीढ्वागैवंशरष्टोवनपट्टविलम्ब(चा)मरच्छत्र-
(लीलौ ।)

५० · रिकस्यौ शिशिरुहपटलच्छाद्यसत्कर्करीकौ जातौ चालुक्य-
(चूलौ)

५१ · कम्हियौ काहलाद्यभ्युपेतौ ॥(१६)जैनाचार्यौ यदीयौ गुरुरसि—

५२ ल्गुणश्चन्द्रसेनाख्यशिष्यो शास्त्रज्ञो नायसेनो मुनिनुतजयसेनो
मुनिर्दीक्षितात्मा । मि—

५३ द्धान्तज्ञ कलाज्ञ परमनयपटु मन्तूनोत्कृष्टवृत्तस्सत्पात्र. श्रावकाणां
क्षपणकसु(ज)—

५४ नक्षुल्लकार्यार्जिकानां ॥(१७) तस्मै ताभ्यां राजभीमनरवाहनाभ्या
विजयवाटिकायां

चौथा पत्र · दूसरा भाग

५५ जिनभवनयुगस्थिमिन्नन्तद्धर्मार्थमस्माभिस्सर्वकरपरिहारं देव-
भोगी—

५६ कृत्य पेद्दगालिड्डिपर्रु नाम ग्रामो दत्त. । अस्यावधय । पूर्वत
सण्ड्यु—

५७ रिपोलगस्सुन यिसु कट्टलचेरुवुन नडिमि दूव । आग्नेयत आल-
पर्तियुं जूडुरि—

५८ यु मुख्यल्कुट्टु (न) वूरुव पड्डुव । दक्षिणतः चूंटूरि प्रान्त(र्पातिं) युत्तरंबुन कुण्ढि—

५९ विड्डिगुण्ठ । नैऋत्यत चूटूरियम्मपोटयव्वगुडि । (पश्चिमत) रेटि(प)ड्डुमटिद्दरि । वा—

६० यव्यतः वलिवेरिपोलगरुसुन गारलगुण्ठ । उत्तरतः तप्पराल प(ड्डु)व । ई—

६१ शानतः कोडगाल्लिडिपर्तियु (वलिवेरियु मु)य्यल्कुट्टुन नड्डुपनिगुण्ठ ।। तस्य (स्थे)यादल—

६२ घ्यं सुविरसुरुतर (शास)न राजकोक्त । सत्कीर्तेर्वेंगिपस्य प्रकटगुणनिधेरम्मराजस्य पूज्य ।

६३ तत्रेद शा(स)न (पालित)जिननिगम शौर्यमीतान्यनाथव्रातो(च्चै)-मौलिमालामणिकमकरिकोमह्लि—

पाँचवाँ पत्र

६४ कोल्लासिताघ्रे' ।।(१७) अस्योपरि न केनचिद्बाधा कर्तव्या य करोति स पचमहापातकस—

६५-६९ युक्तो भवति । तथा चोक्त व्यासेन ।। (नित्यके शापात्मक श्लोक)

७० श्रात्त्रंसि कटकराज' जयन्ताचा—

७१ र्येण लिखितम् ।।

[इस ताम्रपत्रमें मदनूर तथा कलचुम्बुरु लेखोके समान पूर्वीय चालुक्योकी वंशावली कुब्ज विष्णुवर्धनसे प्रारम्भ कर अम्मराज (द्वितीय) विजयादित्य तक दी गयी है। अम्मराजके पिता चालुक्य भीम (द्वितीय) का एक सामन्त नरवाहन था जो त्रिनयनकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा जैनधर्मीय था। उसका पुत्र मेलपराज था। इसकी पत्नी मेण्डाबाको दो पुत्र हुए—राजभीम तथा नरवाहन (द्वितीय)। जैनाचार्य चन्द्रसेनके शिष्य नाथसेन

(जयसेनके गुरु) इन दोनोंके गुरु थे। इनने विजयवाटिकामें दो जिनमन्दिर बनवाये थे। उनके लिए अम्मराजने वेल्नाण्डु प्रदेशका पेद्दगालिडिपर्रु नामक ग्राम दान दिया था।]   [ए० इ० २४ पृ० २६८]

१०१

वरुण (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ श्री · श्रीमत्पर · यि राजगुरु—

२ मण्डलाचार्य वियमकार् अत्रिगोत्र परशुराम आचन चामुण्डरनु आ—

३ भटरकरु वारुणद सांथिनाथस्वामिय माडिसिदरु आवर प्रिय दुण्डुबल—

४ द्राचार्य मकलु विजय-अण बमण मडिदरु—

[इस लेखमें आचन चामुण्डर भट्टारक-द्वारा वरुण ग्राममें शान्तिनाथ-मूर्ति अर्पण किये जानेका निर्देश है। यह मूर्ति विजयण्ण और बमण्ण-द्वारा बनायी गयी थी। लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १७१]

१०२

मण्णे (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें देवेन्द्रपण्डित भट्टारकी शिष्या मारब्बेकन्तिके समाधि-मरणका तथा कलिगब्बे कन्ति-द्वारा इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।]   [ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०३

उम्मत्तूर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें विमलचन्द्रके शिष्य सोत्तियूरके शासक मारम्मयके पुत्र सिन्दय्यके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि १०वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०४

बूवनहल्लि (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना बालचन्द्र सिद्धान्तभटारके शिष्य क(म)लभद्रगुरु द्वारा की गयी थी। लिपि १०वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०५

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वी सदी, कन्नड

[यह लेख अकनाथेश्वर मन्दिरके छतमें लगा है। प्रभाचन्द्र सिद्धान्त-भट्टारकी शिष्या देवियव्वेके समाधिमरणका यह स्मारक है। लिपि १०वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०६–१०७

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वी सदी, कन्नड

[यहाँके सुब्रह्मण्यमन्दिरके छतमें दो निसिधि लेख लगे है। एकमें दढिगसेट्टि तथा देवरदासय्यकी माता चामकव्वेका उल्लेख है। दूसरेमें

महानायक रेचय्यके पुत्र अव्वसामिका उल्लेख है जो चातुर्वर्ण श्रमणसघका सहायक था । लिपि १०वी सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०८

होलेनरसीपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वी सदीकी लिपिमें है । इसमें मुनिमुख्य महेन्द्रकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है ।]　　[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०९

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वी सदीकी लिपिमें है । इसमें कदम्ब वशीय वासवेके पुत्र राचयके समाधिमरणका उल्लेख है । यह लेख वलदेवने स्थापित किया था ।]　　[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३२]

११०

कोडिहल्लि (माण्डया, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ · स–　　२ स्य सन्य–
३ सम गेट्टु　　४ पुरद नॉ–
५ तु मुडिपि–　　६ दनू आतन
७ मगलप्प　　८ विडक्क कल्लु
९ निक्मिद्(ल्)

[इस निसिधि-लेखमें किसी सय्यके समाधिमरणका निर्देश है । उसकी पुत्री विडक्कने यह समाधि स्थापित की थी । लेखकी लिपि १०वी सदीकी प्रतीत होती है ।]　　[ए० रि० मै० १९४० पृ० १६०]

१११

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाडीपर एक पाषाणपर खुदा है। यह श्रीनागसेनदेवका निसिदिलेख है। इसकी लिपि १०वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५१ पृ० १२६]

११२

मथुरा

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

[इस लेखमें १०वी सदीकी लिपिमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२७ पृ० ७७]

११३

कोलक्कुडि (जि० मदुरा, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

समणरमके पहाडीपर जैन मूर्तियोंके उत्तरकी ओर चट्टानपर

[इस लेखमें गुणभद्रदेव तथा न्द्रप्रभका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह लेख १०वीं सदीका होगा।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० २४२]

११४

घँसर (मन्दसौर, मध्यप्रदेश)

१०वीं सदी, संस्कृत–नागरी

[इस लेखमें नन्दियडसंघके जैन आचार्य शुभकीर्ति तथा विमलकीर्तिका उल्लेख है। लिपि १०वी सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० २०३ पृ० ४५]

११५

कमलापुरम् (वेल्लारी, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वी सदीकी लिपिमें है। इसमे गुणचन्द्रमुनि, इन्द्रनन्दि-मुनि तथा एक महिलाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० २२२ पृ० ४८]

११६

काशिवल (विजनोर, उत्तरप्रदेश)

संवत् १०६(१) = सन् १००५, संस्कृत–नागरी

[यह लेख एक जैन मूर्तिके पादपीठपर है। इसमे भरतका उल्लेख है तथा संवत् १०६ यह तिथि दी है। सम्भवत. संवत्का अन्तिम अंक लुप्त हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ४३६ पृ० ७१]

११७

लक्कुण्डि (मैसूर)

शक ९२९ = सन् १००७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल (जो यहाँ सत्याश्रयका उपनाम होना चाहिए) के सामन्त वाजिकुलके नागदेवके समयका है। इसकी पत्नी अत्तियब्बेने लोक्किगुण्डिमें एक जिनालय बनवाकर उसे कुछ भूमि दान दी थी। यह दान उसके गुरु सूरस्थगण-कौरूरगच्छके अर्हणन्दि पण्डितको दिया गया था। दानकी तिथि फाल्गुन शु० ८, शक ९२९, प्लवग संवत्सर ऐसी दी है। उस समय अत्तियब्बेका पुत्र पडेवल तैल मासवाडि प्रदेशका प्रमुख था।]

[मूल कन्नडमे मुद्रित]   [सा० इ० इ० ११ पृ० ३९]

नोलम्बवाडि तथा करिविडि प्रदेशके सामन्त नोलम्बवंशीय घटेयककार-द्वारा मरवोलल्की वसदिके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम उस समय सत्तिग (सत्याश्रय) की पुत्री महादेवीके शासनमें था। जैन आचार्य अनन्तवीर्य, गुणकीर्ति सिद्धान्तभट्टारक तथा उनके शिष्य देवकीर्तिपण्डितका भी इसमें उल्लेख है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ५०]

१२४
हैदराबाद म्युज़ियम (आन्ध्र)
शक ९४९ = सन् १०२७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जयसिंह २ के राज्यकालका है। इस राजाकी कन्या सोमलदेवी-द्वारा पिरियमोसगिके वसदिके लिए कुछ दानका इसमें उल्लेख है। तिथि शक ९४९ प्रभव संवत्सर ऐसी दी है।]

[एन्शण्ट इण्डिया १९४९ पृ० ४५]

१२५
होसूर (मैसूर)
शक ९५० = सन् १०२८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (१) के समय शक ९५०, विभव संवत्सरकी उत्तरायणसंक्रान्तिके दिन पौष शु० १३, रविवारको लिखा गया था। केशवरसका पुत्र दण्डनायक बावणरस तथा उसका बन्धु महासामन्ताधिपति श्रीपादरस इनके शासनका इसमें उल्लेख है। बावणरस-की पत्नी रेवकब्बरसिके अधीन सिन्दरस पोसवूर नगरपर शासन कर रहा था। उस समय आय्चगावुण्डने पोस्वूरमें अपनी पत्नी कंचिकब्बेके स्मरणार्थ एक वसदि बनायी और उसे कुछ भूमि तथा एक उद्यान अर्पण किया। आय्चगावुण्डके पुत्र एरकके पुत्र पोलेगने यह लेख स्थापित किया था। ये मोरक कुलमें उत्पन्न हुए थे।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ५५]

१२६

मस्की (रायचूर, मैसूर)

शक ९५३ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके राज्यकालमें फाल्गुन शु० ९, सोमवार, शक ९५३, प्रजापति संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें देसिगणके जगदेकमल्लजिनालयके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमि आदिके दानका उल्लेख है। अष्टोपवासि कनकनन्दिभट्टारके निवेदनपर वह दान दिया गया था। स्थान राजधानि पिरियमोसगि यह था।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २४७ पृ० ४२]

१२७

कागिनेल्लि (धारवाड, मैसूर)

(शक ९)५४ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यमें ५४ (शक ९५४) वर्षमें लिखा गया था। इसमें जिनधर्मके भक्त कामदेवके एक पुत्र तथा आयतवर्माका उल्लेख है। इन्होंने एक मन्दिरके लिए कुछ सुवर्ण आदि दान दिया था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २३ पृ० १२०]

१२८

रायबाग (मैसूर)

शक ९६३ = सन् १०४१, कन्नड

[यह लेख आदिनाथमन्दिरके मण्डपमें लगा है। तिथि चैत्र ब० १४, शक ९६३, शुक्रवार, विक्रम संवत्सर ऐसी दी है। अन्य विवरण प्राप्त नहीं है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५४ पृ० ३४]

१२६

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[इस लेखका कुछ भाग दीवालमें दबा है। इनके प्रारम्भमें राजेन्द्र-चोल प्रथमकी ऐतिहासिक प्रशस्ति है। तिरुमणजेरि निवासी कलिमाननू विजयालयमल्लनू-द्वारा देवमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए ९६ भेड़ें दान दी जानेका इनमें उल्लेख है। यह लेख चन्द्रनाथमन्दिरके बरामदेके बाजूमें खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०० पृ० ६५]

१३०

हूलि (जि० बेलगांव, म्हैसूर)

शक ९६६ तथा १०६७ = सन् १०४४ तथा ११४५, कन्नड

१—२ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलांछन। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन ॥ (१)

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-मेश्वर परमभट्टार-

४ क सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रैलोक्यमल्लदेवर विजयराज्य-

५ मुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ मले-

६ दं पगेवरं निर्मूलिसि जसम निमिर्चि दिग्भित्तिवरं काल्डिय बोलवाडि तळे पालिसिद तोजमा-

७ रुम भुजमल्दि ॥ (२) आतन पुत्र विनयोपेत पायिम्म-नृपति-गोप्युव सति

८ विख्यातियुते डम्मिकब्बेगे सीतेगे सरि मारेणब्बे लच्छलेयोगे-
दरु ॥(३) इष्टज-

९ नक्के चट्टमयक्के महाजनमोजनक्केयुत्कृष्टतपोधनगॆयलिदायव-
१० नक्के सकंन्यकालिकाग्निष्टगेगेय्दे नाल्कुम्मयक्कनुरागदे वेगवि-
११ तु सतुष्टते लच्छियब्बरमिगार् मरियर् सचराचरोर्वियोलु ॥(४)
१२ मकलधरित्रियोल् नेगर्द वंदिजन सले रूपिनेल्गेय प्रकटतेवेत्त दा-
१३ नगुणम कुलदुनतिय जिनाघ्रिगल्गकुटिलचित्तम पोगल्तुतिर्पु-
१४ दु कूडिय लिंकदकपालकन कुलोत्तमागनेयनयिये लच्छलदेविय
१५ जग ॥ (५) शरनिधिमेखलावृतवसुधरेयॆव विलासिनीमुखाम्बुरुह-
दवोल् विराजि-
१६ सुव बेल्वलनाल्कॆ पोदल्द शोभेगागरमेनि(सि)र्प पूलि तिलका-
कृतियिंदेसेदिर्पुदा पुरं सुरपु-
१७ रम कुबेरनलकापुरम नगुगुं विलासदिं ॥ (६) अल्लि ॥ सकल-
व्याकरणार्थशा-
१८ स्त्रचयदोलु काव्यंगलोलु सद् नाटकदोलु वर्णकविस्तवदोल् नेगर्द
वेदांतंगलोलु
१९ पारमाथि(क)दोलु लौकि(क)दोलु समस्तकलेयोलु वार्गीशनिंद
यशोधि-
२० कराद‍र् पोगल्वलिगारलवे पेलु मासिर्वर ख्यातिय ॥ (७) स्वस्ति
शकनृपकालातीतसवत्सर-
२१ शतगलु ९६६ नेय तारणमवत्सरद पुष्य सुद्ध १० आदिवार-
मुत्तरायण-
२२ संक्रान्तियंदु ॥ यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहषट्कर्म-
निरतरुं श्री-
२३ (म)च्चालुक्यचक्रवर्तिब्रह्मपुरिस्थानपितृपितामहमहिमास्पदरक्षणा-

२४ थंकोविदरुं   चिटग्धकविगमकवादिवाग्मित्वरुमतिथियभ्यागत-
विशिष्ट-
२५ जनपूजनप्रियरुं हिरण्यगर्भब्रह्ममुखकमलविनिर्गतऋग्यजु-
२६ स्सामाथर्वणसमस्तवेदवेदांगोपमागानेकशास्त्राष्टादशस्मृतिपुराण-
२७ काव्यनाटकधर्मागमप्रवाणरुं   सप्तसोमसंस्थावभृथावगाहन—
पवित्रीकृ-
२८ तगात्ररु कांचनक(ल)शमितपट्टछत्रचामरपंचमहाशब्दघटिकाभेरी-
रवनि-
२९ नादितरुमाश्रि(तजन)कल्पवृक्षरुमहितकालातकरुमेकवाक्यरुं
३० शरणागतवज्रपंज(ररुं च)तुस्समयसमुद्धरणरु श्रीकेशवादित्यदेव-
३१ लब्धवरप्रसादरुमप्प श्रीमन्महाग्रहार पूलियूरोडेयप्रभु-
३२ ग सासिर्वमहाजनगल दिव्यश्रीपादपद्मंगल (क)च्छियब्बरसि-
यरु स-
३३ हिरण्यपूर्वकमाराधिसि भूमियं पडेदु बसदियं माडिसि सं-
३४ डस्फु(टि)तजीर्णोद्धरणक्के पड्डुवण पोलदलु शिवेयगेरियारुमत्तर्व-
३५ सुगेयं मत्तरिंगड्डुचिन्नकेक्कडिदरुवणमं मूरु पणमं तेत्तुव-
३६ तागि श्रीयापनीयसंघद पुन्नागवृक्षमूलगणद श्रीबालचंद्रम-
३७ ट्टारकदेवर काल कर्चि बिट्टलु ॥ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय
श्रीपृथ्वीवल्लभ महा-
३८ राजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालु-
क्याभरणं
३९ श्रीमत्प्रतापचक्रवर्त्ति जगदेकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्त-
४० राभिवृद्धिप्रवर्धमानचंद्रार्कतारंबर सलुत्तमिरे । शकव-
४१ र्ष १०६७ नेय क्रोधनसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रान्तियदु यमनि-
४२ यमस्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठानजपसमाधिशीलसंपन्नरप्प

४३ श्रीमन्महाग्रहारं पूलियूरोडेयप्रमुख मासिर्वमंहाजनंगं(ल)
४४ डिव्यश्रीपादपद्मंगलं पेर्गडे नेमणं महिरण्यपूर्वकमाराधिसि(दो)
४५ (रा)पूर्वकं माडिमि कों(डु) तम्म मुत्तव्वे लच्छियव्वेर्गेमियरु
माडिसिद वस-
४६ डियलिपं ऋपियराहारदाननिमित्तमल्लियाचार्यरु रामचंद्र-
४७ देवर कालं कर्चियवरु मुन्नवालुव पडुवणपोलद शिवेयगेरियाल्मत्त-
४८ वंसुगेर्यि पडु(व)ण (मा)गदलु कलदवल्लिगेरिय स्था(न)दोल-
गारु मत्तकेय्यं
४९ मत्तरिंगड्डचिन्न(लेक्कदिंदर)वणमं मूरु पणमं तेत्तुवंतागि बिट्टरु ॥
५० पतिभक्ते धेमा सनि पायिम्मरसनप्रभुते सकलजनस्तुते मा-
५१ गियव्वेराणिगे सुत दों (नेम)य्यनौदार्यगुणं ॥ (८) जिनदेवं
तनगाद्दन-
५२ (र्थि)जनताकल्पद्रुमं दयने तम्मय्यननूनदानि कलिदेवं साक्षरा-
५३ ग्रेसरं तनगण्णं गुणरत्नभूषणने-संदिर्दं नेमंगेनद्दनवद्याच(रण)-
५४ गं भूवलयदोलु पेल्'॥ (९)

[इस लेखके दो भाग हैं। पहला भाग चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल सोमेश्वर प्रथमके राज्यमें शक ९६६ की उत्तरायण संक्रान्तिके समयका है। इनका सामन्त कालडिय वोलगडि था। इसका पुत्र पायिम्म था जिसने हम्मिकब्बेसे विवाह किया। उसे मागिणब्बे तथा लच्छिग्रब्बे ये दो कन्याएँ हुई। लच्छियब्बेका विवाह कूडि प्रदेशके शासकसे हुआ था। इसने पूलि नगरमें — जहाँ एक हजार धर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते थे — कुछ जमीन खरीदकर एक जैन मन्दिर बनवाया और उसके लिए यापनीय संघ-पुन्नागवृक्षमूल गणके बालचन्द्रभट्टारकको कुछ दान दिया।

दूसरा भाग चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (द्वितीय) के राज्यमे शक १०६७ की उत्तरायणसंक्रान्तिके समयका है। इसमें नेमण नामक

स्थानीय अधिकारीका उल्लेख है जिसने पूलि नगरमें कुछ और जमीन खरीदकर उक्त मन्दिरको दान दी। उस समय रामचन्द्र वहाँके भट्टारक थे। यह नेमण उपर्युक्त लच्छियव्वेका प्रपौत्र था।]

[ए० इ० १८ पृ० १७२]

१३१
मुगद (मैसूर)
शक ९६६ = सन १०४५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल (सोमेश्वर १) के समय शक ९६६, पार्थिव संवत्सर, चैत्र शु० ५, रविवारके दिन लिखा गया था। इसमें नाग्गावुण्ड चावुण्ड-द्वारा मुगुन्द ग्राममें स्वनिर्मित सम्यक्त्वरत्नाकर चैत्यालयके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। चावुण्डके पौत्र महासामन्त मातण्डय्य-द्वारा इस मन्दिरको एक नाटकशाला अर्पण किये जानेका भी इसमें उल्लेख है। उस समय पलसिगे तथा कोंकण प्रदेशपर कदम्ब कुलके महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवका शासन चल रहा था। लेखमें कुमुदि गणके जैन आचार्योंकी विस्तृत परम्परा भी बतलायी है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० ६८]

१३२
जोन्नगिरि (कुर्नूल, आन्ध्र)
११ वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके समय बेगंडे सोवरस तथा मल्लिसेट्टिका उल्लेख है। इन्होंने जोन्नगिरिकी वसदिके लिए कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ६१७ पृ० ६०]

१३३

तिंगकूर (कोइम्बतूर-मद्रास)

शक ९६७ = सन् १०४५, तमिल

१ स्वस्तिश्री	२ को नाट्टन् वि–
३ क्किरमशोल–	४ देवकुं शो–
५ ल्लानिण्ड–	६ याण्डु ना–
७ र्पदावदु	८ अरत्तुला–
९ न्देवन्	१० पेरन् आण ना–
११ ण् कणित मा–	१२ णिक्कच्चेट्–
१३ टि चन्दिरवश–	१४ तियिल् मुक–
१५ मण्डगम्	१६ एडुपित्ते–
१७ न् (॥) शकर या	१८ ण्डु ९ १०० (६) (१०) ७ (॥)
१९ शिंगला (न्तक) न्	२० एण् पुडु मुक–
२१ मण्डगम् (॥)	

[यह लेख शक ९६७ का है। इस वर्षको नाट्टन् विक्रमचोल राजाके ४०वें वर्षमें चन्द्रवसतिके मुखमण्डपके निर्माणका इसमें उल्लेख है। यह कार्य अरत्तुलान् देवन्के पौत्र कणित माणिक्क सेट्टि-द्वारा किया गया था।]

[ए० इं० ३० पृ० २४३]

१३४

अरसीबीडि (जि० विजापुर, म्हैसूर)

शक ९६९ = सन् १०४७, कन्नड

१ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज-परमेश्वर प–

२ रमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रैलोक्यम-

३ ल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्रार्कता-

४ रम्बर सलुत्तमिरे। स्वस्ति अरिनृपमकुटघटितचरणारविंदयर् गंगास्नान-

५ पवित्रेयर् दीनानाथचिन्तामणिगलेनिसाक्यर् गुणद चेट्टंगियरप्प श्रीमद-

६ क्कादेवि (य) र् गोकागेय कोटेय मुत्तिदं धीदिनलु विक्रमपुरद गोणदबेडंगिय

७ जिनालयक्के खण्डस्फुटितसुधाकर्मक्क गन्धधूपदीपक्क मरुलिग मूलसंघ-

८ च (र) सेनगणद होगरिय गच्छद नागसेनपण्डितगें अलिलर्प ऋषियर्गे अजिय-

९ र्गें आहारदानक्क अजियर कप्पदक्क कडुव भूमि सकवर्ष ९६९ नेय

१० सर्वजित् संवत्सरद चैत्रमास्ये आदित्यवारददिन सूर्यग्र-

११ हणनिमित्त धारापूर्वकं माडि नगरदनुभवने मुक्यमागि किसु-

१२ काडेप्पत्तर वलिय सर्वनमस्यमागि पिट्ट बाड गाणद हाल्गोंड्

१३ विक्रमपुरद ईशान्यद डेसेयिं तोंट मत्तरोन्दु ऊरिं तंक मुरुर्वदिन पा-

१४ ल नैरित्यद डेसेयिं पण्डितनागदेवगे सर्वनमस्य मत्तर् पनेरडु अल्लि तेंक

१५ परंकार कंतोजंगे सर्वनमस्य मत्तरिर्प्पत्तारु ऊरिं बडग रायगट्टेयिं

१६ मूड परंकार कंतोजंगे तोंट मत्तरोंदु अल्लि पडुव कल्कुटिग सूरोजगे स-

१७ र्वनमस्य मत्तर् पनेरडु तोंट मत्तरोंदु हडिगारसन कय्यलु मारुगोण्डु देवगें कोट्ट

१० रे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ वृत्तं । विनयक्काधारभूतं पतिहितचरित-क्काश्रयं सद्विवेकक्के निवास—

११ संपत्तिगे, कुलभवनं सन्ततानूनदानक्के निधानं मान्तनक्कागर-मेने नेगल्द् सद्वचोभूषण भूविनु (तं) (बे-)

१२ ल्देवनुद्यद्विधुविशदयशोव्याप्तदिक्चक्रवाल ॥२ ईंव गुणं गुणं पतिहिताचरित चरितं परोप (का-)

१३ रावसथार्थमर्थमघभिज्जिनतत्त्वमे तत्त्वमेम्ब सद्भावने तम्मोळोन्दि नेलेवेत्तिरे कीर्तिगे नोन्तरिन्तु

१४ बेल्देवनुमोल्पनाव्द बलदेवनुमंकद शान्तिवमंनुं ॥(३) वचनं ॥ अन्तु सकलगुणगणोत्तुगरु जिनधर्म-

१५ निर्मलरुं निखिलजनोपकारनिरतरुमुदात्तकीर्तिलतानिकेतनरुम-ग्गलदेवप्रियतनूभवरुं गोज्जि-

१६ काम्बिकाकृशोदरनिबिडनिबद्धपट्टरुमागि पोगल्तेवेत्त तत्सहोदर-त्रयदोल् अग्रभवनप्प सन्धिविग्र-

१७ हाधिकारि ॥ वृत्तं । जिनपादांबुजभृंगनगजनिस गम्यार्थरत्नाकरं मनुमार्गं विनयार्णवं कलिमलप्रध्वंस-

१८ कं केशिराजन चर्टि नयसेनसूरिपदपद्माराधनारक्तचित्तनुदात्तं नेगल्द विवेक—महीभाग-

१९ दोल् ॥ ४ आ महानुभाव धर्मप्रभावप्रकटीकृतचित्तनागे ॥ कन्दं । सिन्द—कनवलानन्दनकररु-

२० पनसमसाहसनिलयं सिन्दनृपनन्दनं लसदिन्दुकरप्रतिमकीर्ति-कान्ताकान्त ॥ ५ जिनधर्मनिर्मलं सत्यनिधा-

२१ ननूनदान—अनन्दिन कंचरसं पंचेषुनिभं मुलगुन्दसिन्ददेश-ललामं ॥ ६ एंब पेंपिंग जसक्कमागरमा—

२२ द कंचरसं तन्न सीवटदोलगे धर्मानुरागचित्तं सहिरण्यपूर्वकं
कुडे कोण्डु ॥ श्रीमूलसंघवारा-
२३ शौ मणीनामिव सार्चिषा । महापुरुषरत्नानां स्थान सेनान्वयो-
जनि ॥ ७ व । आ चन्द्रकवाटान्वयवरिष्ट-
२४ रजितसेनभट्टारकर् तदन्तेवासिगल् कनकसेनभट्टारकरवर शिष्यर्॥
कन्द । चान्द्र कातन्त्र जैनेन्द्रं श- . .. . .
२५ ब्दानुशासनं पाणिनि मत्तेन्द्र नरेन्द्रसेनमुनीन्द्र गेकाक्षरं पेरगिवु
मोग्गे ॥ ८ अन्तु जगद्विख्यातरादर
२६ रवर शिष्यर् ॥ वृत्त । निनगेनेंबेनो शाकटायनमुनीशनन्ताने
शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीयदोले चन्द्रं चा-
२७ न्द्रदोल् तजिनेन्द्रने जैनेन्द्रदोला कुमारने गड कौमारदोल्
पोल्वरेन्तेने पोलर् नयसेनपण्डितरोलन्यर् वार्धि-
२८ वीतोर्वियोल् ॥ ९ इन्तु समस्तशब्दशास्त्रपारावारपारगर् नयसेन
पण्डितदेवर पादप्रक्षालनगे-
२९ य्दु । शकवर्षमोंबयनूरेल्पत्तय्दनेय विजयसंवत्सरदुत्तरायण-
संक्रान्तियंदु तीर्थद व-
३० सदिगाहारदाननिमित्त निजांघ्रिकेयप्प गोज्जिकब्बेगे परोक्षविनय
नगरमहाजनमु पंचमठस्था-
३१ नमुमरियॆ नगरेश्वरद् गडिवद् कोलॊलकेदु किरुगेरॆय केय्योलगे
सर्वबाधापरिहारमा-
३२ गे विट्ट केय्मत्तर् पन्नेरडु । आ केय्गे गुड्डे ईशान्यदोल् कविलेय
कल् आग्नेयदोलादित्यन कल् नैरु-
३३ त्यदोल् चन्द्रन कल् वायव्यदोल् पद्मावतिय कल् असगगेरॆय
तॆंक सासिर बल्लिय तोंटवोन्दु ॥ स्वदत्तां—

२४ (परदत्तां वा) यो हरेत वसुन्धरां। षष्टिर्वर्षसहस्राणि
विष्ठायां जायते कृमिः ॥१०

[यह लेख चालुक्य सम्राट् सोमेश्वर (प्रथम) त्रैलोक्यमल्लके राज्य-में शक ९७५ में लिखा गया था। उस समय वेल्वोल तथा पुलिगेरे प्रदेशपर सम्राट्का पुत्र सोमेश्वर (द्वितीय) शासन कर रहा था। वहाँके सन्धिविग्रहाधिकारी बेल्देव थे। ये अग्गलदेव तथा गोज्जिकब्बेके पुत्र थे। बलदेव तथा शान्तिवर्मा उनके बन्धु थे। बेल्देवकी प्रेरणासे सिन्दकुलके सरदार कंचरसने नयसेन पण्डितदेवको कुछ भूमि दान दी। नयसेनकी गुरु-परम्परा इस प्रकार थी — मूलसंघ-सेनान्वय-चन्द्रकवाट अन्वयके अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन। नरेन्द्रसेन तथा नयसेन दोनो व्याकरणशास्त्रके विशेषज्ञ थे।

[ए० इं० १६ पृ० ५३]

१३९–१४०

नन्दिवेवूरु (बेल्लारी, मैसूर)

शक ९७६ = सन् १०५४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९७६, उत्तरायण सक्रान्ति, रविवार, जय सवत्सरका है। इसमें नोलम्ब पल्लव पेर्मानडिके राज्यकालमें देसिगगणके अष्टोपवासि भटारको रेञ्चूरुके महाजनो-द्वारा भूमि, उद्यान आदिके दानका उल्लेख है। लेखमें जगदेकमल्ल नोलम्ब ब्रह्माधिराजका सामन्तके रूपमें उल्लेख किया है। इस लेखके पीछेकी ओर प्राय ऐसे ही लेखमें अष्टोपवासिमुनिको वैहुरुमें दिये हुए दानका वर्णन है। इसमें वीरणन्दिसिद्धान्तिका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २०१ पृ० १६]

१४१

कोगलि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

शक ९७७ = सन् १०५५

जैन मन्दिरके आगे एक शेडमें, कन्नड

यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालका है। इसमें कहा है कि इस मन्दिरका निर्माण गंग राजा दुर्विनीतने किया था। लेखके समय जैन आचार्य इन्द्रकीर्तिने इस मन्दिरको कुछ दान दिया था। इन्द्रकीर्तिका वर्णन इस प्रकार किया है—

श्रीमदरुहच्चरणसरसिरुहभृंग, कोण्डकुन्दान्वयसमूहमुखमंडन, देशीयगण कुमुदवनशरच्चन्द्र, कोकलिपुरेन्द्र, त्रैलोक्यमल्लसद सरसिकलहंस, कविजनाचार्य, पण्डितमुखाम्बुरुहचण्डमार्तण्ड, सर्वशास्त्रज्ञ, कविकुमुदराज, त्रैलोक्यमल्लेन्द्रकीर्तिहरिमूर्ति]

[इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७४, इ० म० बेल्लारी १९६]

१४२

डम्बल (मैसूर)

शक ९८१ = सन् १०५९, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेव (सोमेश्वर १) के समय चैत्र शु० १३, रविवार शक ९८१, विकोरि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें धर्मवोलल्के नगरजिनालयके लिए वाचय्यसेट्टिके जमात वीरय्यसेट्टि द्वारा कुछ सुवर्णदान दिये जानेका उल्लेख है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० ८९]

१४३

मोरब (धारवाड, मैसूर)

शक ९८१ = सन् १०६०, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख मार्गशिर शु० २ शक ९८१ विकारि संवत्सरका है। इसमें यापनीय संघके जयकीर्तिदेवके शिष्य नागचन्द्र सिद्धान्तदेवके समाधि-मरणका उल्लेख है। उनके शिष्य कनकशक्ति सिद्धान्तदेवने यह निसिधि स्थापित की थी। नागचन्द्रको मन्त्रचूडामणि यह विरुद दिया है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई० २३९ पृ० ५६]

१४४

छब्बि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९८२ = सन् १०६०, कन्नड

[इस लेखमें सब्बि नगरके बोरजिनालयके आचार्य कनकनन्दिके समाधिमरणका उल्लेख है। इनकी निसिधि भागियव्वे-द्वारा स्थापित की गयी। इस लेखकी रचना बज्रने की तथा नाकिगने उसे उत्कीर्ण किया। तिथि वैशाख शु० ५, रविवार शक ९८२ शर्वरी संवत्सर ऐसी थी।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० १५ पृ० २५६]

१४५

तोललु (मैसूर)

शक ९८३ = सन् १०६२, कन्नड

इस लेखकी पहली ८ पंक्तियाँ घिस गयी हैं।

९ ˙ कम्बुकन्धरं केलेयब्बरिसि वीरगग पोयिसलनं

१० पेम्पनवद्यु ˙˙विनयार्क पो-

११ यिसलजनप˙ ˙माडि ॥ श्रीवर्धमानस्वामि-

१२ गल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवलि गौतमस्वामिगलि भद्रबाहुस्वामि-
गलिवलि
१३ पुष्पदन्तभट्टारकरि मेघचन्द्र
१४ ···श्रीमूलसंघ-
१५ द बेलवेय अभयचन्द्रपण्डितरगें विनयादित्यहोयिसलदेवर शक-
वर्ष ९८३ शुभकृत्संवत्सरद
१६ उत्तरायणसंक्रमणद दानार्थंदेमण्ण धारापूर्वक कोट्ट अदर्कें तेरे इ
१७ णवंद्दु हणवारमत्तिट देवर चरुविगे यिप्पत्तयरडु सलगेय
धारापूर्वक माडि
१८ बिट्ट दत्ति तोलकलहल्लिय मुद्दगोडनु तिप्पगोडनु बुरंतकलु
यिरभुगाम्ब होर-
१९ गेरिय मूडणभूमि बिग्गुड्डेय भूमिय अभयचन्द्रपण्डितरिगे धारापू-
२० र्वक माडि बिट्टरु ई धर्मवनू अवनोब्बनु ··

[इस लेखमें होयसल राजा विनयादित्य-द्वारा शक ९८३ में उत्तरायणसंक्रमणके अवसर पर मूलसंघके पण्डित अभयचन्द्रको कुछ भूमिदान दिये जानेका उल्लेख है। अभयचन्द्रकी पूर्वपरम्परामें गौतमस्वामी, भद्रबाहुस्वामी, पुष्पदन्तभट्टारक तथा मेघचन्द्रका उल्लेख किया है। मुद्दगौड तथा तिप्पगौड द्वारा भी कुछ भूमिदान दी गयी थी। ये दोनो तोललहल्लिके निवासी थे।] [ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४३]

१४६

पालियड (गुजरात)

संवत् १११२ = सन् १०६६, संस्कृत–नागरी

१ सिद्ध विक्रम संवत् १११२ चैत्र सुदि १५ अद्येह आकाशिका-
ग्रामावासे समस्त-

२ राजावलीविराजितमहाराजाधिराजश्रीभीमदेव ॥
वायडाधिष्ठानप्रति—

३ वद्धवो (पो) डशोत्तरग्रामशतान्त पातिसमस्तराजपुरुषान् ब्रा(ह्म)
णोत्त (रान्) ज-

४ नपदांश्च बोधयस्यस्तु व मविदितं यथा अद्य सोमग्रहणपर्वणि
चराचर-

५ गुरुं मर्वज्ञमभ्यर्च्य वायडाधिष्ठानीयवसतिकायै अत्रैव वायडा-
(धि)ष्ठाने

६ (च) रोक्षेत्रान्तरितया गुडहुलापाकिसंरुग्नयावणिकमाढाकभूमी-
सं (बध्य)-

७ मानया कलसिकाद्वयवापभुवा सहास्यैव माडाकस्य सत्का
हरद्वयस्य २

८ भूः शामन (ने) नौदकपूर्वमस्माभि प्रदत्तास्याश्च भूमे पूर्वस्यां
दिशि कल्प

९ पाल्केमरिसत्कं क्षेत्रं दक्षिणस्यां च राजकीया चरी। पश्चिमा

१० यां च वाणिय (ज) कमामलीयं क्षेत्रमुत्तरस्यां च पालवाड-
ग्राममा-

११ र्ग इति चतुराघाटोपलक्षितां भुवमेतामवगम्य एतन्निवासि-
जनपदै-

१२ र्यथा दीयमानभागभोगकरहिरण्यादि सर्वमाज्ञा(श्रव)णविधेयै-

१३ र्भूस्यास्यै वसतिकायै समुपनेतव्यं सामान्यं चैतत् पुण्यफल
मत्वास्म-

१४ द्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मदायोयमनुमन्तव्यः

१५ — १६ नित्य-के शापात्मकश्लोक

१९ लिखितमिदं कायस्थ-

१७ कांचनसुतवटेश्वरेण। दूतकोत्र महासांधिविग्रहिकश्रीमोगाङ्गिरय्य
इ (ति)

१८ श्रीभीमदेवस्य ॥

[इस ताम्रपत्रमें चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) द्वारा वायड अधिष्ठानकी एक वसतिका (जिनमन्दिर) के लिए चैत्र शु० १५ संवत् १११२ के दिन कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[ए० इ० ३३ पृ० २३५]

१४७

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

शक ९८८ = सन् १०६६, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९८८, पुष्य शु० ५, सोमवार, पराभव संवत्सरके दिनका है। इसमें महामण्डलेश्वर लक्ष्मरस-द्वारा मूलसंघ-चन्द्रिकावाटवंशके शान्तिनन्दि भट्टारकको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। यह दान बेन्नेवुरमें आयुचिमय्य नायक-द्वारा निर्मित बसदिके लिए था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ११३ पृ० १२९]

१४८

चांदकवटे (विजापूर, मैसूर)

शक ९८९ = सन् १०६७, कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन व० ३ शक ९८९ प्लवंग संवत्सरके दिन सूरस्त गणके माघनन्दि भट्टारककी निसिधिका उल्लेख है। सिन्दिगे निवासी जाकिमब्बेने यह निसिधि स्थापित की थी।]

[रि० सा० इ० १९३६-३७ क्र० ई १४ पृ० १८२]

१४९

मत्तिकट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९९० = सन् १०६८, कन्नड

[यह लेख टूटा हुआ है। मत्तिकट्ट ग्रामकी कुछ ज़मीन पेर्गडे कालिमय्यने मत्तिसेन भट्टारकको दान दी इसका इसमें निर्देश है। (यह नाम मतिसेन अथवा मल्लिसेन हो सकता है)। यह दान कालिमय्य-द्वारा निर्मित एक जिनालयके लिए दिया था। कालिमय्यको (चालुक्य) सम्राट् त्रैलोक्य (मल्लदेव) का पादपद्मोपजीवी कहा है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ४२]

१५०–१५१

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १०६८, तमिल

[इस लेखमें चोल वंशके राजा राजकेसरिवर्मन् वीरराजेन्द्रदेवके राज्य वर्ष ५ में तिरुक्कामकोट्टपुरम्के निकट करन्दै ग्रामके जिन मन्दिरके लिए कुछ भूमि ग्रामसभाके तीन सदस्यों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है। यहींके दूसरे लेखमें इस मन्दिरमें सततदीप रखनेके लिए कुछ बकरियोंके दानका उल्लेख है। इस लेखमें मन्दिरके देवताका उल्लेख अरुगर् देवर् वीरराजेन्द्रपेरुम्बल्लि आल्वार् ऐसा किया है। यह दान कालियूर प्रदेशके परम्बूर ग्रामके तुगिलिकिलान् अरयन् उडैयान्-द्वारा दिया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३९–४० क्र० १२९-१३०]

१५२

मत्तावार (मैसूर)

शक ९९१ = सन् १०६९, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-

२ न । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जि-
३ नशासन ॥
४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्व-
५ र द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुला-
६ म्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मल-
७ परोलुगण्डाद्यनेकनामावलीविराजितरप्प श्री-
८ मत्त्रै (लो) क्यमल्ल विनयादित्य होय्सल-
९ देवर् गंगवाडितोंबत्तरुसासिरमनाळुत्तु
१० सुखदिं पृथ्वीराज्य गेय्ये सकवर्ष ९०१ ने-
११ य पिंगलसंवत्सरद वैशाख शुद्ध त्रयोदशि बृह-
१२ वारदल् पिंदु देवमं होय्सलदेवर् मत्तवुरके
१३ काल तिर्पितद्दु भिजयगंयद्दु बसदिगे बदि
१४ देवर कटि चेट्टदोळे कल्वरव विल्लियकं माडि-
१५ सिदरूरोळगे माडिसिदं देमाणिकसेट्टि
१६ यिन्तोंदु बिसपगेय्दम् देवर् नीवूरोळगं
१७ बसदियं माडिसि भूमिय बिट्ट मा-
१८ नमहिमेगळ कोट्टं बदवल्यर् निसट-
१९ ददर्यंकके प्रमाणुदे देवरथंमं मळेय-
२० रसुगळ इडद मत्तवु समानवदर
२१ माणिकसेट्टिय माति मेच्चि मक्कु करवोळितं-
२२ डु बसदियनूरोळगे माडिसि मामिय
२३ माणिकसेट्टि राजगावुण्ड मुद्दगावुण्डरि बे-
२४ मायिदेन्नूर (?) मत्तक्के बिडिसि ॥ तंरेयोळ् प-
२५ ड नाडलियलि सिद्धायदलिक मत्तनूळ नेक वि-
२६ नयायितनू पर्म्पल्लेरेगळ मत्तवुर च-
२७ सदिगे बिट्टं ॥ अतु बिट्टु बसदियवसदलिपळव-

२८ मनेगल माडिसि रिपिहळिऊर्येंट्टु पेसरनिट्टु
२९ मनेट्टेरे माट्टुवेट्टेरे ऊरट्टिगे तौट्टे सु-
३० रंट्टु कवर्ते सेसे ओसगे मनकरे कूट क-
३१ कन्ति वीरवण कोडतिवण कत्तरिवण अडेकलु-
३२ वण हडवलेय हळियराय कुवर वि-
३३ ट्टि कंमर विट्टि यिवोलगागि हलवु महिमे-
३४ गलं विनयादित्यहोय्सलदेवर् आचन्द्रार्क-
३५ तारंवरं सल्गे ॥ इन्ती धर्मदोलावनानुं तप्पिद-
३६ वं गगेयलु गंगेयं कोंट्टु तिन्दं लिंगालि-
३७ पं गेयद्रनिस्थानवे कट्टेगल स्थानं नागवल्ल
३८ मत्तावुर हळिय गावुण्ड तानित्तुदक्के पे–
३९ न्दे नित्तुदवक्के देवगृह
४० वह नानवक—होलंद्दा-न्नागिपं ॥ ४००००

[यह लेख होयसल वशके राजा विनयादित्यके समय वैशाख शु० १३, बृहस्पतिवार, शक ९९१ पिंगल संवत्सरके दिन लिखा गया था। मत्तवूर ग्रामके लिए एक नहर बनवायी थी तब राजा विनयादित्य वहाँ गये थे। इस ग्रामकी वसदि ग्रामके बाहर एक पहाडीपर थी। उसे देखकर राजाने ग्रामीणोंसे पूछा कि ग्राममें वसदि क्यों नहीं है? इसपर माणिकसेट्टिने कहा कि ग्राममें वसदि बनानेकी हमारी इच्छा है किन्तु हम गरीब हैं। तब राजाने ग्राममें वसदि बनवाकर नाडलि ग्रामके कुछ करोंका उत्पन्न उसे दान दिया। माणिकसेट्टि, राजगावुण्ड तथा मुद्दगावुण्डने भी वसदिके लिए कुछ भूमि दान दी।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७१]

१५३

सोरटूर (मैसूर)

शक ९९३ = सन् १०७१, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव (सोमेश्वर २) के समय माघ शु० १, रविवार, शक ९९३, विरोधकृत् संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था (यहाँ माघ स्पष्टत गलत है जो पौष होना चाहिए ।) उक्त समय महाप्रधान सेनाधिपति कडितवेगंडे दण्डनायक बलदेवय्य-द्वारा सरटवुर ग्राममे स्थित बलदेवजिनालयके लिए कुछ भूमि अर्पण की गई थी । बलदेवय्यके पिता गंग कुलके अग्गलदेव थे, माता गोज्जिकव्वे थी तथा उसके ज्येष्ठ बन्धुका नाम वेल्देव था । इस दानकी व्यवस्थापिका हुलियव्वाज्जिके सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके सिरिणंदिपण्डितकी शिष्या थी । उक्त मन्दिरको सरटवुरके दो-सौ महाजनोंने भी कुछ भूमि, तेलघानी तथा घर अर्पण किये थे । सिरिणन्दिपण्डितकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है -चंदणंदि - दावणंदि - सकलचन्द्र - कनकनंदि - सिरिणंदि ।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० १०७]

१५४

शावरवाड (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९९३-९४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछन । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

२ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराजं परमेश्वर परमभट्टारक स-

३ त्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाच-

४ द्राकंतारं सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजोवि समधिगतपंचमहाशब्द महामंडलेश्वरनुदारमहेश्वरं चलके बलुगंड (शौर्यमार्तंड) पतिरो-

५ कद्दाड संग्रामगरुडं मनुजमान्धातं कीर्तिविख्यातं गोत्रमाणिक्यं विवेकचाणाक्यं परनारीसहोदरं वीरवृकोदरं को-

६ दंडपार्थं सौजन्यतीर्थं मंडलीककंठीरव परचक्रभैरवं रायदंडगोपालं मलेय मंडलीकमृगशार्दूलं श्रीमद्भुव-

७ नैकमल्लदेवपादपंकजभ्रमरं श्रीमन्महामंडलेश्वरं लक्ष्मरसरु बेल्वोलमूनूरुमं पुलिगेरेमूनूरुमन्तेरडरनूरु-

८ मं दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनेयिं प्रतिपालिसुत्तमिरे ॥वृ॥ अणुगाल् कार्यद शौर्यदाल् विजयदाल् चालुक्यराज्यक्के कार-

९ णमादाल् तुलिलाल्तनक्के नेरेदाल् कट्टायदाल् मिक्कमन्नणेयाल् मान्तनदाल् नेगल्तेवडेदाल् विक्रान्तदाल् मेलदाल् रणदाला-लुवनेन-

१० प्पुवावेडेयोलं विश्वासदोलु लक्ष्मण ॥ कलितनमिल्ल चागिगे वदान्यते मेय्गलिगिल्ल चागि मेय्गलियेनिपंगे शौचगुणमि-

११ ल्ल कर कलि चागि शौचिगं निले तुडिवोजेयिल्ल कलि चागि महाशुचिसत्यवादि मंडलिकरोलीवनेन्दु पोगलगुं वुधमड-

१२ लि लक्ष्मभूपन ॥ कुदुरेय मेले विल् परसु तोरिगे सूलिगे पिंडि-वालमेत्तिद करवालवार्डिवुव ककंडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्तो-

१३ दरुवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तरल्चुवरेन्तु निल्परेन्तोदरुवरंन्तु लक्ष्मण-नोलान्तु वर्दुकुवरन्यभूभुजर् ॥ एने ने-

१४ गल्द लक्ष्मभूपति जनपतिभुवनैकमल्लदेवादेशं तनगेसदिरे नाडि-सिदं [जिनशा-]सनवृद्धियं प्रवर्धनमागलु ॥ आ चैत्याल-

१५ यद् पूर्वावतारमन्तेने ॥क॥ श्रीवसुधेशन याव रेचकनिर्मडिय
वल्लभं वूतुगनात्मावगतमकलशास्त्रनिलाविश्रुतकीर्ति

१६ गगमडलनाथ ॥ वृ ॥ रूडिगे रूडिवेत्तेसेद बेल्वलदेशमनाल्द
गगपेर्माडिगलिन्दमणिगरे नालकेरेवट्टेनिमित्त नाड नाडा-

१७ डिगलुंधर्मंविनेगमा पुरदोलु जयदुत्तरंग पेर्माडियिनाय्तु वूतुग-
नरेंद्रनिनल्लि जि-

१८ नेंद्रमंदिर ॥ वृ ॥ संगतमागे माडि तलवृत्तियनल्लिगे मूडगेरि
गुम्मुंगोल्ननादियागे नेगल्डिट्ट-

१९ गें गावरिवाडमेंब बाडगल शासनं चेरसु मवंनमस्यमिबेंट्टु मिट्ट
कोट्ट गुणकीर्तिपडितगें भक्ति-

२० यिनुत्तमदानशक्तियिं ॥क॥ उदितोदितमेने विभवास्पदमेने भुवन-
यकवन्द्यमेने संचलमागदे गगा-

२१ न्वयमुद्धिनमिटु सर्वनमस्यवागि नडेयुत्तमिरलु ॥ वृ ॥ परम-
श्रीजिनशासनक्के मोदलार्ग मूलसघं

२२ निरन्तरमोप्पुत्तिरे नन्दिसंघवेम्परिंदादन्वय पेपुवेत्तिरे सन्दर्
बलगारमुख्यगणदोलु गगान्वयक्कि-

२३ न्तिवर्गुरुगलु तामेने वर्धमानमुनिनाथर् धारिणीचक्रदोलु ॥
श्रीनाथर् जैनमार्गोत्तमरेनिसि तपःख्यात्तिय

२४ ताल्दिदर् सज्ज्ञानात्मर् वर्धमानप्रवरवर शिष्यर् महावादिगलु
विद्यानन्दस्वामिगल् तन्मुनिपतिगनुजर् तार्किका-

२५ कांभिधानाधीनर् माणिक्यनंदिव्रतिपतिगलवर शासनोदात्त-
हस्तरु ॥ तदपत्यर् गुणकीर्तिपडितर् अवर् तच्छास-

२६ नख्यातिकोविदरा सूरिगलात्मजर् विमलचन्द्रर् तत्पादाम्भोजषट्-
पदर् उदयद्गुणचंद्ररन्तवर शिष्यर नोडिशास्त्रा-
२७ थंदोलु विदितरु गण्डविमुक्तरिन्नमयनन्द्याचार्यरार्योत्तमरु ॥
वृ ॥ पोले चोल नेलेगेट्ट तन्न कुल-
२८ धर्माचारमं बिट्टु बेलवलदेशक्कडियिट्ट देवगृहसंदोहगलं
सुट्टु कय्यले पापं बेलेदंते-
२९ नल्के धुरदोलु त्रैलोक्यमल्लगे पदलेयं कोट्टसुवं बिसुट्टु निज-
वंशोच्छित्तियं माडिद ॥क॥ श्रीपेर्मा-
३० नडि माडिसिदी परमजिनालयंगल पोलेवट्टिर्दा पाण्डयचोलनंव
महापातकतिवुलनलिदधोगतिगिलि-
३१ द ॥ वृ ॥ बलिकी बेल्वलदेशमं पडेद दंडाधीशसामन्तमंडलिकर्
धर्मद वट्टेगेट्टु नडेयुत्तिर्दल्लि तज्ज मनं-
३२ गोले कालीयगुणेतर कृतयुगाचारान्वितं लक्ष्ममंडलिकं निर्मल-
धर्मधत्तलेय नष्टोद्धारमं माडि-
३३ द ॥ ई नेलदोलु नेगल्तेय पोगल्तेय बाल्तेय पुण्यतीर्थ-
मन्तानदोलिन्नविल्लेनिसि संदुद्दु दक्षिणगंगे तुंगभ-
३४ द्रानदि तन्नतीतटदोलोप्पुव कक्करगोण्डमेंबधिष्ठानदोलुवराधिपति
चक्रधरं नेलसिर्द बीडिनोलु ॥
३५ वृ ॥ शककाल गुणलब्धिरंध्रगणनाविख्यातमागल् विरोधकृदब्दं
बरे चैत्रमागे विषुवत्सक्रान्तियोलु पु-
३६ ष्यतारके पूर्णागिरमागे चक्रधरदत्तादेशदि देशपालकचूडामणि
धर्मवत्तलेयनत्युत्साहिदिं

३७ माडिद ॥ क ॥ त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररनमिर्वन्दिमि भक्तियिंदं कालगर्चि जगत्प्रभुवनि चेसर्दि लक्ष्मणविभु

३८ कोट्टं हस्तधारेयिं शासनम ॥ वृ ॥ पुरदनूर बाडदोळगी जिन-गेहके पूज्यमेंदक्करसर कां-

३९ के बिल्दु बियमुंबलसुबलिदायमाडियागेरडरुवत्तु पोन्नरुवण ममकट्टेन माडि शासन ।

४० बरंयिसि कोट्टु धर्मगुणम मेरेद नृपमेरु लक्ष्मण ॥ जिननाथा-वासमं वासवरितुनिमम कष्ट-

४१ कालेयदुर्भाववनेयिं चांडालचोल मुडिमि किडिसे विच्छित्तियागि-दुर्द नेटने नष्टोद्धारम शाश्वतमतिशय-

४२ मायृतंविल माडि तच्छासनमाचन्द्राकंतार निले निलिसिदनें धन्यनो लक्ष्मभूप ॥ अरसगं संसेयेन्द-

४३ रसर काणिकेयेन्दु दायधर्मद तेरेयेन्दरुवणडिंडगलमेन्दरेवीमम-नविक कोंडवर् चांडालरु ॥

४४ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्दमहासामन्त भुजबलोपार्जित-विजयलक्ष्मीकान्त समस्तारिविजय-

४५ दक्षदक्षिणदोर्दण्डं कत्तलेकुलकमलमार्तण्ड मयूरावर्तापुरवराधीश्वरं ज्वालिनीलब्धवरप्रसाद क-

४६ पूरवपं जिनधर्मनिर्मल मेरकटियककार नामादिसमस्तप्रशस्ति-सहित श्रीमन्महासामन्त ये-

४७ लुवलाधिपति भुजबलकाटमरु ॥क॥ जगमेल्लं टसेगे कयसुगि-येम कोट्टरियनोन्दु काणिणियुम-

४८ ना गगनदोलिपादित्य बगेदुदनित्तपने बेल्वलादित्यन चोलु ॥ इन्तेनिमिद् वेल्वलादित्य मकवर्ष ९९४ ने

४९ य परिधाविसवत्सरद पुष्यसुद्ध पंचमि बृहस्पतिवारदद अण्णि-
गेरेय गंगपेर्माडिय वस-

५० दिय दानमालेगल्लिगालव गावरिवाडद तम्म सिवटद मत्तर-
य्वत्तुमन् अण्डिगेरेयोलु क्रयविक्रय-

५१ दिं यल्लियाचार्यरु त्रिभुवनचन्द्रपंडितर कालं कर्चि धारापूर्वकं
माडि बिट्टु कोट्टरु ॥

५२ स्वस्ति समस्तविनमदमरमकुटतटवर्तितशोणमाणिक्यमौक्तिक-
मयूखकुंकुमलयजाभ्यर्चि-

५३ तश्रीमदर्हत्परमेश्वरप्रणीतपरमागमविशारदरनवरतपरमागमो-
पदेशप्रसंगरुमप्प श्रीमदु-

५४ दयचन्द्रसैद्धान्तदेवर शिष्यश्रीपादपद्माराधकरुं श्रीमत्बलात्कारग-
णांबुजमरीचरराजहंसररुमप्प श्री-

५५ मत्सकलचंद्रदेवरु श्रीमद्राजधानीबदणमण्णिगेरेय महास्थानं
श्रीमद्गंगपेर्माडिय बस-

५६ दिगालव ग्रामादि वाडदलु याचार्यरु चबुडगावुडमुख्यवागि
हेग्गडे महित मूवत्तु मनुष्य-

५७ देवपुत्रर्गे कोट्ट वृत्तिय क्रम ॥ चंडव्वेय मगं हेग्गडे मल्लय्यनु
यादिनाथस्वामिगेयल्लियाचा-

५८ रियर्गे बेसकेय्दुंब वृत्ति मत्तर् (प)न्नेरडु केतगावुड याचार्यर्गे पाद-
पूजेयं कोट्टु

५९ तम्म सेनगणद बसदिगे हूलिगोलद सीमेविट्टु कुलुपल्लदिं
पडुवलु मत्तरॆडु यरुवणं गद्याणं

६० नाल्करिंदधिक कोंडवर् चांडालरु ॥ एम्मेय केति सेट्टिय साम्यके
मत्तरॊडु मने बॊट्टु मोगवाडगे गद्याणं ना-

६१ ल्कु कणविय सेट्टिय बम्मि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंडु मने वॊंदु मोगवाडगे गद्याण नाल्कु कत्ते-

६२ य दारि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंडु मने वॊंदु मोगवाडगे गद्याण नाल्कु हव्वेय देवि सेट्टिय

६३ साम्यक्के मत्तरॆंडु मने वॊंदु मोगवाडगे गद्याण नाल्कु गोलिय चवुडि सेट्टिय साम्यक्के मत्त-

६४ रॆंडु मने वॊंदु मोगवाडगे गद्याण नाल्कु कट्टलिय संकि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंडु मने

६५ वॊंदु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कटल मल्लि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंडु मने वॊंदु मोगवाडगे गद्याण

६६ नाल्कु मल्लव्वेय पुत्रर चण्डि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंडु मने वॊंदु मोगवाडगे गद्याण नाल्कु माध-

६७ वसेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंडु मने वॊंदु मोगवाडगे गद्याणं नाल्कु

[इसी तरह ८३वी पंक्ति तक बयसर बोप्पि सेट्टि, नेमिसेट्टि, गोखर बम्मि सेट्टि, मयिलि सेट्टि, गोखर बोसि सेट्टि, चदि सेट्टि, एम्मेयर चवुडि सेट्टि, होय्सर चवुडि सेट्टि, केल्लर गोरवि सेट्टि, तालबम्मि सेट्टि, कडवर देवि सेट्टि, मंचल बोसि सेट्टि, वेणिल मल्लि सेट्टि, बेण्णेय नालि सेट्टि, दोड्डर केति सेट्टि, मजडिय येचि सेट्टि, गडि सेट्टि, मुरियर कलि सेट्टि, बयिसर बसवि सेट्टि, नूति सेट्टि, चिक्कि सेट्टि, इनके बारेमें निर्देश है ।]

८३ नाल्कु चिक्कि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरॆंडु मने वॊंदु मोगवाडगे गद्याण नाल्कु यिन्तीं देवपुत्रिकरोलगे याव-

८४ नोर्वंनु धर्म्मक्क याचार्यंगं विरोधियागि राजगामित्व माडिदनप्पडे वृत्तिच्छेदसमयबाह्य ॥

८५ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महाप्रधान वसुधैकबान्धवं श्रीरेचिदेवदण्डनाथ बदकेरे-

८६ य श्रीकलिदेवस्वामिजिनश्रीपादार्चनेगे कर्पूरकुंकुमश्रीगंधसहित यष्टविधार्चनेगे
८७ कोट्ट केयियरकेरेयिं मूडलु मत्तर् पन्नेरडुम याचार्यरुं देवपुत्रि-करुं सर्वाबाधप-
८८ रिहारवागि प्रतिपालिपरु ॥ दक्षिण पेयावोलेयुमप्प ग्रामाविं वाडक्कें श्रीगंगपेर्माडि-
८९ य वसदिय पुरद मर्यादेय बले मूवत्तेडु गेणु हस्त वेगोल्लदंगे वृत्ति सल्लद्दु ॥ वर्धतां जिनशा-
९० सनं ॥
९१ गंगासागरयमुनासंगमदोलु वाणारसि गयेयेम्बी तीर्थंगलोलात्म-कुलद्विजपुंगवगोकुलमनकिडरिन्तिदनलि-
९२ दरु ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां । षष्टिवर्षसहस्त्राणि विष्ठायां जायते कृमि. ॥
९३ याचार्यर येक्कटिगनागि बेसकेय्दुव वृत्ति कुरिवर केते
९४ न्दु ॥ याचार्यरु चवुड गवुडन हेसरिङ्डक्के मूगवाड रन' "
९५ लद सीमेयलु कोट वृत्ति मत्तरु वोंदु यद्दु होलगेरे ॥

[इस वृहत् शिलालेखके चार भाग हैं । पहले भागमें (पक्ति १–४३) अण्णिगेरे नगरके गंगपेर्माडि जिनमन्दिरका वर्णन है । यह मन्दिर रेवकनिर्मडिके पति बूतुगके स्मरणार्थ बेल्वल प्रदेशके शासक गगपेर्माडिने[1] बनवाया था तथा उसने उसे मूडगेरी, गुम्मुंगोल, इट्टगे और गावरिवाड ये चार गाँव दान दिये थे। यह दान मूलसघनदिसंघ–वलगार गणके गुणकीर्ति पण्डितको दिया गया था । गुणकीर्तिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी—गग

१ रेवकनिर्मडि राष्ट्रकूट सम्राट्कृष्ण (तृतीय) की बहन थी जो गग राजा बूतुगको ब्याही गयी थी । गंग पेर्माडि इनके पुत्र मारसिंह (तृतीय) (सन् ९६०–७४) अथवा पौत्र राजमल्ल (चतुर्थ) होंगे ।

वशके गुरु वर्धमान – विद्यानन्द स्वामी – उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि – गुणकीर्ति – विमलचद्र – गुणचन्द्र – गण्टविमुक्त – उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि। कालान्तरसे चोल राजाने बेल्वल प्रदेशपर आक्रमण किया[1] तब इस मन्दिरको नष्ट-भ्रष्ट किया किन्तु शीघ्र ही इस चोल राजाको अपने पापका प्रायश्चित्त करना पडा क्योकि चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल सोमेश्वर (प्रथम) द्वारा वह युद्धमें मारा गया।[2] तदनन्तर बेल्वल प्रदेशके कई शासक हुए जिनने इस मन्दिरकी ओर कोई ध्यान नही दिया। चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर (द्वितीय) के समय बेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशका शासन महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसको सौंपा गया। उसने इस मन्दिरका जीर्णोद्धार किया तथा उसके लिए मुनि त्रिभुवनचन्द्रको समुचित दान दिया।[3] इस दानकी अनुज्ञा देते समय सम्राट् सोमेश्वर तुगभद्रा नदीके तीरपर कक्करगोटके सेनाशिविरमे थे तथा शक ९९३ वर्ष चल रहा था।

इस शिलालेखके दूसरे भागमें बेल्वलके अगले शासक काटरसका उल्लेख है जो मयूरावती नगरका स्वामी था। तथा ज्वालिनी देवीका उपासक था। इसने उपर्युक्त मन्दिरको शक ९९४ में कुछ दान दिया। यह दान भी त्रिभुवनचन्द्रको दिया था।

तीसरे भागमें इस मन्दिरके व्यवस्थापक उदयचन्द्रके शिष्य सकलचन्द्रका उल्लेख है। इनने मन्दिरकी जमीन जोतनेके लिए मल्लय्य आदि तीस श्रेष्ठियोको सौंपी थी।

चौथे भागमें महाप्रधान रेचिदेव - द्वारा बट्टकेरे नगरके जिन तथा कलिदेवकी पूजाके लिए कुछ जमीन दान दिये जानेका उल्लेख है।

---

१. यह राजा चोल राजाधिराज होगा। (सन् १०१८–५२)
२. यह युद्ध सन् १०५२ के आरम्भमें हुआ था।
३. पूर्वोक्त गुरुपरम्परासे त्रिभुवनचन्द्रका सम्बन्ध अगले लेखमें स्पष्ट किया है।

यह शिलालेख अन्तिम रूपसे सन् ११५० के क़रीब लिखा गया होगा।]

[ए० इ० १५ पृ० ३३७]

१५५

अण्णिगेरि (मैसूर)

शक ९९३–९४ = सन् १०७१–७२, कन्नड

[यह लेख अक्षरश. गावरवाड लेखके पहले दो भागों-जैसा ही है— सिर्फ़ चार श्लोक इसमें अधिक हैं। यथा— (१) मगलाचरणमें—जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने। नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ (२) महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसके वर्णनमें—मले यंतो (ट्ट) लतुलिदं मलेयोल् मार्मलेव मलेपरं मग्गिसिदं मलेयेलु कोर्पिर्दुमनलेद जलनिधियोलें प्रतापियो लक्ष्म ॥ (३–४) गुणकीर्ति पण्डितकी शिष्य परम्पराके वर्णनमें—कृतकृत्यरभयनन्दिगल तनूजर् सकलचन्द्रसिद्धान्तिकरप्रतिमर् सर्वागमला-न्वितगण्डविमुक्तदेवरा मुनिशिष्यर् ॥ एनिसिद गण्डविमुक्तर तनूभवर् चरणकरणपदविद्यापावन मन्त्रवाददो त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररल्ते बुधजनवन्द्यर् ॥ इससे अभयनन्दि – सकलचन्द्र – गण्डविमुक्त – त्रिभुवनचन्द्र इस परम्परा का पता चलता है। इस लेखमें गावरवाड लेखके अन्तिम दो भाग नहीं हैं। अतः प्रतीत होता है कि यह शक ९९४ में ही खुदवाया गया होगा।]

[ए० इं० १५ पृ० ३४७]

१५६

हैदराबाद म्युजियम (आन्ध्र)

सं० ११ (२) ८ = सन् १०७२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें वीतरागकी उपासिका रावदेवी-द्वारा देवागना तथा क्षोणीपतिकी मूर्तियोंकी स्थापना किये जानेका उल्लेख है। समय संवत्

११ (२) ८ है। इसका तीसरा अंक कुछ अस्पष्ट है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५३]

१५७

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ९९६ – सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लके समय चैत्र शु० ८, रविवार आनन्द संवत्सर, शक ९९६के दिन लिखा गया था। मणल कुलके महासामन्त जयकेसियरसने पुरिगेरेके पेर्माटिबसदिके दर्शन किये तथा मूलसंघ-बलात्कारगणके गण्डविमुक्त भट्टारकके शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पण्डितके निवेदनपर उसे पुरके रूपमें परिवर्तित किया ऐसा इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० २९ पृ० १६३]

१५८

हूनगुन्द (मैसूर)

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव सोमेश्वर (२) के समय पौष शु० ५, रविवार, शक ९९६, आनन्द संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था। इसमें सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके अरुहणदि-भट्टारकके शिष्य आर्यपण्डितको पोन्नुगुन्दकी अरसर बसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान श्रीकरण देवणय्य नायक, पेर्गडे नाकिमय्य, पेर्गडे रेवणय्य, करण आय्चप्पय्य, तथा पसायित काटिमय्यने सर्व प्रधानो-द्वारा की गयी जिन पूजाके अवसरपर दिया था। उस समय बेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशोंपर महामण्डलेश्वर संग्रामगरुड लक्ष्मरस का शासन चल रहा था।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० १११]

१५९

सोमापुर (धारवाड, मैसूर)

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा भुवनैकमल्लके समय शक ९९(६), आनन्द संवत्सर, पुष्य शु० ५, बुधवारका है। इसमे किसी सेट्टि-द्वारा एक जैन वसदिको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३–३४ क्र० ई० ७७ पृ० १२६]

१६०

लक्ष्मेश्वर (मिरज, मैसूर)

शक ९९९-१००० = सन् १०७७-७८, कन्नड

[इस निपिविलेखमें सूरस्थ गणके श्रीनन्दि पण्डितदेव तथा उनके बन्धु भास्करनन्दि पण्डितदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। पुरिकर नगर (लक्ष्मेश्वर) के आनेसेज्जेवसदिमें इन्होने सल्लेखना ली थी। मृत्युतिथियाँ क्रमश- आषाढ शु० १२, बुधवार, पिंगल संवत्सर, शक ९९९ तथा चैत्र अमावास्या, रविवार, कालयुक्त सवत्सर, शक १००० इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई ६ पृ० १६१]

१६१

अक्कलकोट (सोलापुर, महाराष्ट्र)

चालुक्यविक्रमवर्ष ४ = सन् १०७८, कन्नड

[इस लेखमें एक जैन मठके लिए कुछ उद्यान, भूमि आदिके दानका उल्लेख है। तिथि पुष्य व० २, रविवार, उत्तरायण सक्रान्ति, सिद्धार्थि सवत्सर, चालुक्य विक्रम वर्ष ४ ऐसी दी है। (वस्तुत उस वर्षका नाम कालयुक्त संवत्सर था।) चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य ६ के समयका यह लेख है।]　　　[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ९६ पृ० ३५]

१६२

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८०, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लके राज्यवर्ष ६, पुष्य ब० (६) गुरुवार, दुर्मतिसवत्सरका है। इस समय महामण्डलेश्वर जोयिमय्यरसकी पत्नी नाविकव्वेने कोण्डकुन्देयतीर्थमें चट्टजिनालयका निर्माण किया तथा उसे कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६५ पृ० ५५]

१६३

अलनावर (धारवाड, मैसूर)

शक १००३ = सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख शक १००३ का है। कदम्ब राजा गोवलदेवके समय अलनावरके जैन बसदिके लिए नरसिंगय्य सेट्टि द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४७० पृ० ७८]

१६४

बनवासि (मैसूर)

सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख कादम्बचक्रवर्ति वीरमके राज्यवर्ष १२, दुर्मति संवत्सरमें कार्तिक कृ० ५, सोमवारके दिन लिखा गया था। इसमें तिप्पिसेट्टि सातय्यकी पत्नी भोगवेके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु देसिगण – पुस्तक-गच्छ – कुण्डकुन्दान्वयके सकलचंद्रभट्टारक थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० १४३ पृ० १७२]

१६५

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८१, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं(।)जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥

२ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्या-

३ भरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्लदेव ॥वृत्त॥ धरेयं वाराशिपर्यन्त-मनवयदिं दुर्विनीतावनीपालर येरं कित्तुं नीरोळ् गळगळनळेदो-

४ डाडि मुन्निन्तु चक्रेश्वररार् निष्कंटकं माडिदरंने महि निष्कंटकं माडि चक्रेश्वररल्तं सन्ततं पालिसिदनतिबलं विक्रमादित्यदेवं ॥२॥ अन्तु श्रीम-

५ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमा-चंद्रतारं सलुत्तमिरे ॥ तदनुजं स्वस्ति समस्तभुवनसंस्तूयमान को-

६ कविख्यातं पल्लवान्वयं श्रीमहीवल्लभ युवराज राजपरमेश्वरं वीरमहेश्वरं विक्रमाभरणं जयलक्ष्मीरमणं शरणागतरक्षामणि चालु-

७ क्यचूडामणि कदनत्रिनेत्रं क्षत्रियपवित्रं मत्तगजांगरालं सहज-मनोजं रिपुरायसूरेकारनण्णनककारं श्रीमत्त्रैलोक्यमल्ल

८ वीरनोळंब पल्लवपेर्मानडि जयसिंहदेव ॥वृत्त॥ परचक्र-कालचक्रं नळनहुषनृगाद्यादिभूपालकालोचरितं चालुक्य-चूडामणि सहजमनोजं नतारा-

९ तिभूर्मोश्वरसघातोत्तमागाभरणमणिगणज्योतिरत्तंसमास्यचरणं सामान्यमें भूपरोलपगतविद्विट्कटश्च नोलम्ब ॥ ३ वचन ॥ पुनिविद पोगल्तेग नेगल्तेग नलेंयं-

१० निसि ॥क॥ श्ररसुगुणगल मेय्वेत्तिरें पगे मिगदिरें जनानुराग पिरिदागिरें कीर्तिल्तिकें निमिरुत्तिरें वीरनोलम्बन-वनतारिकटश्च ॥४ व॥ पुरद्[भू]नूल्म वनवासेपनिर्छामिरसु-

११ म सान्तलिगेमासिरमुम कदूर् मासिरमुमं सुप्तसंकथाविनोददिं प्रतिपालिसुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्ताधिपतिं महाप्र-

१२ चण्डदण्डनायक रिपुमस्तकन्यस्तसायकं साहित्यविद्यांगनाभुजग सरस्वतीमुखकमलभृंगनाराधितहरचरणस्मरणपरिणतान्त.करण । सरस्वतीकर्णाभरणं

१३ श्रीमन्महाप्रधान मनेवेगडे दण्डनायकनेरेयमय्य ॥कंद॥ सकल-कलाब्रह्म ब्रह्मकुलाकं वत्सगोत्रगगनाकरशीतकरं क्रियिमें भुवन-प्रकरटोक-

१४ रिम्द्रुभूपनेरेगचमूपं ॥ ५ वृ ॥ एलेयोलु सादृश्यमप्पदेरेगविभुगे विण्पिंगे गुण्पिंगे तिण्पिंगले पारावारमिद्राचलमचसुरणि रामनिं कृष्णनिं सचलम—

१५ श्लिष्टगभीरसुमगुरुत्वुयागिल्दुवारय्यें बेरांदले बेरोन्दल्पि बेरोन्द-निमिषनगमेत्तानुसुंटप्पो दवकुं ॥ ६ कद ॥ परिकिपोडे हस्ति-मशकान्तरमेनिपुदु तत्र

१६ गुणद नेगल्दर गुणदन्तरमेनें गुणेपु को मत्सर पुव बुधोक्त एरेग-विभुगे सदुक्तं ॥ ७ सदमलकीर्तिवल्लरि दिशान्तरमं तेरपिल्ल-दन्तु पर्विदुदु पराक्रमं

तथा नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) को पौष कृष्ण ६, शुक्रवार, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर कुछ दान दिया। इसके बाद लेखमें दिनकर, उसके पुत्र राजिमय्य तथा डूडम, डूडमकी पत्नी एचिकब्बे तथा पुत्री हम्मिकब्बे, हम्मिकब्बेका पति अरसय्य तथा पुत्र वैद्य कन्नप एव कन्नपके पुत्र इन्दप, ईश्वर, गजि, कल्लिदेव, आदिनाथ, शान्ति, एव पार्श्वका वर्णन है। सभवत. इन लोगोंकी प्रार्थनापर दोणने उक्त दान दिया था।]

[ए० इ० १९ पृ० ५८]

१६६
अरसीबीडि (विजापुर, मैसूर)
चालुक्यविक्रम वर्ष १० = सन् १०८५, कन्नड

[इस लेखकी तिथि आषाढ शु० १, बुधवार, क्रोधन संवत्सर, चालुक्य वर्ष १० ऐसी है। इस समय मुंकवेर्गडे मन्तर बर्मणने विक्रमपुर (वर्तमान अरसीबीडि) स्थित गोणद बेडगि जिनालयके ऋषि-अर्जिकाओं-को आहारदान देनेके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया था। सिन्द वंशके सिन्दरसके पुत्र बर्मदेवरसके अधीन प्रान्तीय शासकके रूपमें मुंकवेर्गडे नियुक्त था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १३९]

१६७
मरुत्तुवक्कुडि (तंजोर, मद्रास)
तमिल, सन् १०८६

[यह लेख ऐरावतेश्वर मन्दिरके आगे मण्डपकी दक्षिणी दीवालपर है। त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंग चोलदेव, जिसने मदुरा जीतकर पाण्डय

राजाका शिरच्छेद किया था—के १६वें वर्षमें यह लेख लिखा गया था। इसमें जननाथपुरम्के दो जैन मन्दिर चेदिकुलमाणिक्क पेरुम्बल्लि तथा गगरुलसुदर पेरुम्बल्लिका उल्लेख है।]

[इ० म० तजोर १००३]

१६८

दोणि (धारवाड, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २० = सन् १०९६, कन्नड

[यह लेख फाल्गुन शु० १३ गुरुवार, चालुक्यविक्रम वर्ष २० के दिन लिखा गया था। सम्राट् त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ) के राज्यका यह लेख है। इस समय यापनीय संघ-वृक्षमूल गणके मुनिचन्द्र त्रैविद्य भट्टारकके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको सोविसेट्टि द्वारा एक उद्यान दान दिया गया था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १६९]

१६९-१७०

तुम्बदेवनहल्लि (मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २१ = सन् १०९६, कन्नड

१ श्रीमदेरेयंगदेवर असवब्बर(सि)माडिसिद बसदि मंगल महा श्री

२ स्वस्ति समस्तसुरासुरमस्तकमणिमकुटरश्मिरञ्जितचरणप्रस्तुत-जिनेन्द्रशासन-

३ मस्तु चिरं सकलभव्यचन्द्रजनाना ॥(१) मङ्गमस्तु जिनशासनाय सम्प्रतां प्रति-

४ विधानहेतवे अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटी-यसे ॥(२)

५ जयवर्म्मं मुडदिन्दं इल्दु नियतं पट्टलिगेय राज्यलीलेयिनाल्-
दुन्नतियिं मनं-

६ गोलिसि विद्विष्टव्रजक्केयदे भीतियनित्तायमनप्पुकेय्दु चलमं
कैकोण्डु लोकप्रमि-

७ द्धियुतं माडिदनावगन् जिले कडम्बाम्नायविख्यातिय ॥(३)
श्रीमत्कडम्बवंशललामा-

८ वनिनाथरोलगे रणकिक्षितिप भीमपराक्रमनेनिसिदनी महियोल्
अरातिनृपजयोद-

९ यदिंद ॥(४) आतन् मगनमलगुणोपेतनतिप्रबलजलदघनपवन-
नेनिप्पानतय-

१० शोविलासविनूतवेगेडेयागि नेगल्द कलि हट्टुवनृप ॥(५) तत्त-
नेयनतुलबलनुद्वृत्त रिपु-

११ क्षितिपकुधरवज्रं धीरोदात्तनेनें नेगल्दनकुटिलचित्त पोचायिनृत-
पूतं नृप ॥(६)

१२ आतंगे पुट्टि दलबद्रानिमहीभुजरनिरिदु गेल्दर्मिनोलुर्वीतलमे
पोगले तोरिदनान-

१३ तमितकीर्ति नोम्पलकण्णं चिण्ण ॥(७) एने नेगल्द चिण्णनृपतिगं
अनवद्यलतांगि सुगियब्बरसिग-

१४ मुर्विनदोम्मगे पुट्टे पुट्टिद तनेयननिप्रकटविगदयगनेरेयग अक्कर
नेगल्द नृ-

१५ परन्ननाल्वरनेव्वेट्टे भीतियिं बन्दु पोगले तन्ननवर पट्टियोडेयनं
पेरगिक्कि काडुनिन्दाल्वरनं बगेयद्-

१६ आन्तरिसेनेयनोडिमि गेल्दर्मिनेसकदिं सिन्धुजंगं मिगिल्दुदप्र-
बलावलेपनं भुजादण्डर्नी नन्निमार्तण्डदेव ॥(८)

१७ मलेदिटिरनान्त चोलिकदलर्मत्तदोडान्तुमदिरदेरेयंगन दोर्बल-
दलवनेवोगल्बुदो जक्कलदेवननेयदे

१८ काडुकलिपिद चलम ।।(९) अन्तु नेगल्देरेगनृपतिगनन्तसुखास्य-
द्येनिप्प येचान्निकेग कन्तुवेनिप्प
१९ न्विण्णं कान्त पुट्टिदनुदारतेजोनिलय ।।(१०) पुट्टोड निम्नये
पेसरिट्टपरी जगद मनुजरेन्दोडे पेसरों-
२० दिट्टलमादुडे कोल्लु पट्टलिगेय चिण्णनेम्त्र भयरसदिंद ।।(११)
आतनो बुद्दिद विख्यातितगितकीर्-
२१ तिं नेगल्द गण्डतरण्ड भूतलकं कल्पवृक्षसमोपेतनेनिप्प दानि
येरेगमहीश ॥ (१२)
२१ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्द महामण्डलेश्वरं बनवासिपुर-
वराधीश्वरं कादम्ब-
२३ चक्रेश्वर नुदारमहेश्वर नुमयवलगण्डं नन्निमार्तंड तनगिल्कदोव
कर्णसहादे-
२४ व मानिनीमनोहर हरचरणशेखरं हरिपादसरसीरुहोर्त्तंस
सरस्वतीक-
२५ र्णावतसं विकलकुलनृपतिहृदयसंतापकरं विवेकविद्याधरं भृगुमता-
२६ चार्यं मन्दरधैर्यं कादम्बकुलकमलविकाशनादित्यं विजातिराजता-
रागणतरुणादि-
२७ त्यं विक्रमप्रक्रमकिशोरकण्ठीरवं कादम्बकण्ठीरवं मागधिकमा-
निनीमदहरिषपु-
२८ कक लाटवधूटीमाललीलातिलकं विरुदत्रिनेत्रं हयशालिहोत्रं तुगितु-
२९ त्तिहुव विरुदरपेण्डिरगण्ड गण्डतरण्ड अरिविरुदरवायोले सुरि-
गेयं किरिपु
३० व दोड्डकवडिव गीतप्रगीतं गेयविनोदं निजकुलोत्तुंग श्रीमदेरे-
यगदे-
३१ व स्थिरं जीयात् ॥ कन्द ॥ गंगेगदग्गाल नोरेतं तिंगल बेल्-
पिंगमोदवलडकिल्वेल्पिं

३२ संगलिसि तीविदर्त्तेरेयंगन जसमखिलभुवनांतरदोलु। नटनिट-
लेक्षणा-

३३ ग्नि नृगणंगणं उज्वलकीर्तिपाण्डुरभू कुरुलु जडेयागे जगक्के

३४ देवनाद्ररिविलद्ध्रिनेत्रनेमगी ' कोण्डकुन्दान्वयो-

३५ त्पन्ने विख्याते देसिगे गणे रविचन्द्राख्यसे' यमनियम-

३६ स्वाध्यायपराणेयरप्प माचवेगन्तिय तावरेयकेरेय केलग-

३७ ण आहणमण्णं धारापूर्वकं कोट्टर् चालुक्यविक्रमकालद २१ने
धातुसवत्सरद कार्तिक न-

३८ न्दीश्वरदष्टमियन्दु मंगलमहाश्री स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत
वसुन्धरां षष्ठिर्वर्ष-

३९ सहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके निर्माणके समयका है। यह वसदि एरेयंगदेवकी रानी असवब्बरसि द्वारा बनवायी गयी थी। लेखमें एरेयगका वंशवर्णन इस प्रकार दिया है—कदम्ब कुलमे रणकि राजा—तत्पुत्र हुदुव—तत्पुत्र बूत—तत्पुत्र चिण्ण—तत्पुत्र एरेयंग—तत्पुत्र चिण्ण २—तत्पुत्र एरेयग २। इस मन्दिरके लिए कोण्डकुन्दान्वय-देसिग गणके रविचन्द्र सै(द्धान्तदेव)के उपदेशसे माचवेगन्ति द्वारा कुछ भूमि दान दी गयी थी। लेखकी तिथि कार्तिककी नन्दीश्वर-अष्टमी (शुक्ल ८), चालुक्य विक्रम वर्ष २१, धातु संवत्सर इस प्रकार दी है।

इसी मन्दिरकी एक प्रतिमाके पादपीठपर ११वी सदीकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—

वस(दिगे) वासवुरदे विद् ग २ भत्त ५०

अर्थात्—इस वसदिके लिए बासवुर ग्रामके उत्पन्नसे २ गद्याण (मुद्राएँ) और ५० भत्त (चावलके परिमाण) दान दिये गये है।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १४५–१५२]

१७१

हुनगुन्द (विजापूर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य षष्ठ) का उल्लेख है। तिथि शक ९ दी है। मूलसंघ–देशीय गण–पुस्तक गच्छ–कुन्दकुन्दान्वयके (इन्द्र)णंदिके शिष्य बाहुबलि आचार्य द्वारा एक जिन-मन्दिर बनवानेका तथा उस मन्दिरके लिए कुछ भूमिदान प्राप्त करनेका इसमें उल्लेख है।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १४१]

१७२

तोललु (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

१ स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर '' त्रिभुवनमल्ल तलका-
२ कमाडि बिट्टन्दु ३ नडसुविरि
४–७ (ये पंक्तियाँ घिस गयी हैं)
८ स्वस्तिश्रीमतु तोलल बसदिगेनाड्ड ' ९ '' '
१० हिरिय मुद्द गनुण्ड ' गनुण्ड बिलग
११ कु'ड बूलुवनड' ''मुण्ड बूरय्वर् ओक्कल
१२ ''उत्तराण संक्रान्तियन्दु नविलू-
१३ रं नेमिचन्द्रपण्डितरों धारापूर्वकं माडि कोट्ट आ-
१४ नविलूरोलगे आवनागि-बदुकुववनु ''हण
१५ वेन्दु हिडिसिद्द''''इन्नोन्दु
१६ तलेयं नरकदल्लिलिवद गयेतडियकि कविले-

१७ यं ब्राह्मणर नोय्सिद फलमन् एय्दुवरु
१८ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां प-
१९ ष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमि. ॥

[इस लेखमें तोललके जिनमन्दिरके लिए नेमिचन्द्र पण्डितको नविलूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान हिरियमुद्दगौण्ड, बिलिगौण्ड तथा अन्य ५२ निवासियो द्वारा दिया गया था। लेखमें प्रारम्भमें त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ)के किसी माण्डलिकका उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९२७ पृ० ४४]

१७३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[इस लेखके प्रारम्भमें कुलोत्तुंग चोल (प्रथम)की ऐतिहासिक प्रशस्ति है। राजेन्द्रचोलचेदिराजन् द्वारा देवमन्दिरमें दीपके लिए कुछ धान अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है। उडैयार् मल्लिषेणका उल्लेख है जो स्पष्टत. कोई जैन आचार्य थे। लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०१ पृ० ६५]

१७४

ऊन (मध्यप्रदेश)

११वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[इस स्थानमें कई जैन मन्दिरोंके ध्वस्त अवशेष है। इनमें एक मन्दिरके एक छोटे-से लेखमें मालवराज उदयादित्यका उल्लेख है। अत यह मन्दिर ११वी सदीका बना है यह स्पष्ट होता है।]

[रि० आ० स० १९१८-१९ पृ० १७]

१७५

सागरकट्टे (मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमद्राविलस	२ घद् आरुंगला-
३ न्वयद नन्दिगण	४ द शान्तिमु-
५ निगल शिष्यसन्त-	६ ति श्रीवादिरा-
७ जदेवर शिष्यरु	८ श्रीवर्धमानदे-
९ वरु होय्सल-	१० कारालियदलु
११ अग्रगण्यरु स-	१२ न्यसनदि मुडि(पि)
१३ दरवर सध-	१४ र्मरु कमलदे-
१५ वरु निसिधियं	१६ निरिसिदर्

[इस लेखमें द्राविल संघ—अरुंगल अन्वय—नन्दिगणके शान्तिमुनिकी परम्पराके वादिराजदेवके शिष्य वर्धमानदेवके समाधिमरणका उल्लेख किया है। वर्धमानदेवके गुरुबन्धु कमलदेवने उनकी यह निसिधि स्थापित की थी। वर्धमानदेवको होयसल राज्यमें प्रमुख कार्यकर्ताका स्थान प्राप्त था। लेखकी लिपि ११वी सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०८]

१७६

वेणगि (जि० बेलगाव, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

[इस लेखकी लिपि ११वीं सदीकी है। लेखके समय (रट्ट वंशके) कार्तवीर्य (द्वितीय)का शासन कूण्डि ३००० प्रदेश पर था। इसे जिनेन्द्रपादसरोजभृंग तथा सेननसिंग कहा है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८४ पृ० २४७]

१७७-१७८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमे हनसोगेके तीर्थ-वसदिकी स्थापना रामचन्द्र-द्वारा की जानेका तथा कालान्तरमें शक, नल, विक्रमादित्य, गंग एवं चंगाल्व राजाओ-द्वारा उसकी सहायताका उल्लेख है। प्रस्तुत लेखके समय नागचन्द्रदेवके शिष्य समयाभरण भानुकीर्ति पण्डितदेवने इस वसदिका जीर्णोद्धार किया था। इसी पादपीठके दूसरे लेखमें जयकीर्ति भट्टारकके शिष्य बाहुबलिदेव-द्वारा वसदिके निर्माणका उल्लेख है। इन लेखोका समय ११वी सदी प्रतीत होता है। ये आचार्य मूलसघ देसिगण-पुस्तकगच्छके प्रमुख थे।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५०]

१७९

चिकमगलूर (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

१ स्वस्ति श्रीमत्तु बूचव्वे-
२ गन्तियर सिष्य नेचटिम-
३ ताय निसिधिगेय नि-
४ लि ' मज वरेद ॥

[यह निषिधि लेख बूचव्वेके समाधिमरणका स्मारक है जो उनके शिष्य नेचतिमतायि-द्वारा स्थापित किया गया था। इसकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६२]

१८०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें कोण्डकुन्द अन्वयके मलधारिदेव तथा अन्य आचार्योंका वर्णन है। एक गृहस्थ जैनका भी वर्णन है।]

[रि० इ० ए० १९५५–५६ क्र० १९८ पृ० ३७]

१८१

मदविलगम् (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वी सदीकी लिपिमें है। किसी जैन मन्दिरके लिए दानशाला, उद्यान आदिकी व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२४–२५ क्र० ३९२ पृ० ५७]

१८२

वेलूर (हासन, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रुतं जिनेन्द्रभगुणि-

२ द दर्प····सले भहे-

३ ··

४ नेयदिव नं· ·

५ पूर्वाक्रमन् एरवं माणद् ··य

६ महीतलकति सुदद्दि ···

७ त्रिलोक बुध बोध ··भाग्य····

८ न्नं द्विविजविनवमं मन्ड मामावि वर्म्मं ॥ पतिहितवृत्तियो-
९ ल्विन् अप्रतिमन् एनल् द्विविज पदूमं ' महीपनियोडने
१० कूडि पोक्कं चतुरं मामावि बर्म्मन' 'आ नेगल्द् भूमि-
११ य मुन्नाल्द्गं मले ' काक्षियं माध्य डेनेंताल्डनोडने सग्गम-
१२ नू आल्द्''' च्यन्तु वर्म्मं'

[इस लेखमें मामावि वर्म्म नामक व्यक्तिके देहत्यागका वर्णन है। अपने स्वामीकी मृत्युपर खेद व्यक्त करनेके लिए उसने सम्भवत देहत्याग किया था। यह प्रथा होयसल राजाओंके समय रूढ थी। लेखकी लिपि ११वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ५९]

१८३

हृदण (मैसूर)

१२वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा वल्लाल १के समय मरियाने दण्डनायक द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। आचार्य शुभचन्द्रका भी इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

१८४

चिकमगलूर (मैसूर)

शक १०२२ = सन् ११०१, कन्नड

१ सव्वन सकवर्ष १०२२ नेय
२ विक्रमसंवत्सरद फाल्गुन शु (४)
३ सोमवारदंदु द-विन ' '

४ सर्व्वगेरुद्दु दिवक्के सुन्दरव(र)सद
५ सिं मालेयव्वगन्तियप्परो ''वि(ने)
६ यमं माडि निसिदिगेय माडि
७ अवर गुड्ड जगमणचारि थ-
८ रेद

[यह लेख फाल्गुन शु० ४, सोमवार, शक १०२२ विक्रमसंवत्सरमें लिखा गया था। एक व्यक्तिके (जिसका नाम लुप्त हुआ है) समाधि-मरणके बाद उसके सहाध्यायी मालेयव्वेगन्ति-द्वारा इस निषिधिकी स्थापना का इसमें उल्लेख है। उसके शिष्य जगमणचारिने यह लेख उत्कीर्ण किया था।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६१]

१८५

टोंक (राजस्थान)

संवत् ११५८ = सन् ११०२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें आलाक नामक व्यक्तिका उल्लेख है। तिथि वै (शाख) शु० ७, संवत् ११५८ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४७? पृ० ६९]

१८६

होसूर (जि० बेलगाँव, मैसूर)

शक १०३० = सन् ११०८, कन्नड

[इस लेखकी तिथि सोमवार, पौष शु० ५, शक १०३०, सर्वधारि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है। (रट्ट वंशके) लक्ष्मीदेव-द्वारा एक बसदिके लिए राजधानी वेणुपुरसे कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। यह बसदि लक्ष्मीदेवने ही बनवायी थी।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० १५ पृ० २४१]

१८७

मुडिगोण्डम् (मैसूर)

शक १०३ (१)=सन् ११०९, कन्नड

[इन लेखमें मुडिगोण्डचोलपुरके नगरजिनालयको हृदिनाडुका एक गाँव दान दिये जानेका उल्लेख है। यहाँकी मुख्य मूर्ति चन्द्रप्रभस्वामीकी थी। तिथि शक १०३ (१)]

[रि० सा० ए० १९१० क्र० १० पृ० ५४]

१८८

श्रवणनहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-
२ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन स्वस्ति
३ श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तल-
४ काडुगोण्ड भुजबलवीरगंग विष्णुवर्धन होय्स-
५ लदेवर पिरियरसि चन्तलदेवियरु त्रिभुवनतिल-
६ 'तीर्थद वीरकोंगाल्वजिनालय-
७ द देवर अगभोगक्कं रिपियराहारदानक्कं त-
८ म्म बप्प पृथ्वीकोंगाल्व देवर वग वलिवलि वि-
९ ट्ट सन्दगेरेय अतियोलगे कावनहल्लिय तम्म
१० तम्म दुदमल्लदेवनु तावुं इल्दु श्रीमूलसघ
११ देसिगगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमेघ-
१२ चन्द्रत्रैविद्यदेवर शिष्यरु प्रभाचन्द्रसिद्धा (न्तदेव-)
१३ र कालं कर्चि धारापूर्वकं माडि स(र्वबाधा-)
१४ परिहारं माडि बिट्ट दत्ति सं(गल महा-

८ को नृप॰ कर्णाटीकुचकुंकुमांकिततनुर्विद्याधराधीश्वरः (॥४) तस्यात्म-
९ जस्सुपरिवर्धितराज्यलक्ष्मी प्रादुर्बभूव समुपार्जितपुण्यपुञ्ज (।)
१० चन्द्राह्वयो जगति विश्रुतकीर्तिकान्तस्त्यागार्णवो बुधनुतो नयनामि-
११ राम (॥५) तस्यापि पुत्रो जतिगो नरेन्द्रो जात प्रवीरो गज-यूथनाथ (।) तस्या-
१२ त्मजौ गोंकलगूवलाख्यौ जातावुभौ वैरिकुलाद्रिवज्रौ (॥६) तद्-गोंकलस्य तनुजो रिपुदन्ति-
१३ सिंह श्रीमारसिंहनृपतिर्मरुचक्कसर्प. (।) प्रादुर्बभूव समरां-गणसूत्र-
१४ धारो विख्यातकीर्तिरिह पण्डितपारिजात (॥७) तस्याग्रसूनुर्जग-देकवीरो वी-
१५ रागनावाहुलतावगूढः कीर्तिप्रियो गूवलदेवनामा बभूव भूपाल-
१६ वरो नरेन्द्र (॥७) तस्यानुजस्सकलमंगलजन्मभूमिरासीन्नृपाल-तिलको भुवि भोज-
१७ देव. (।) प्रोत्तुंगवीरवनिताश्रयबाहुदण्डश्चण्डारि-मण्डलशिरोगिरि-वज्रदंड. (॥९)

दूसरा पत्र पहला भाग

१८ श्रीमत्कदंबांबरतिग्मरश्मेश्शिरस्सरोजं खलु शान्तरस्य (।) पूजां प्रचक्रे स च चक्रवर्तिश्रीविक्र-
१९ मादित्यनृपेन्द्रपादे (॥१०) किं वर्ण्यते जगति वीरतर॰ प्रसिद्धः कोपात्तु कोंगजनृपोपि-
२० पपात यस्य (।) सूर्यान्वयांबररविस्स च विज्जणोपि चक्रे गृहं सुरपतेर्भुवि य-
२१ स्य कोपात् (॥११) यत्प्रतापप्रदीपेस्मिन् कोक्कलश्शलभायितः (।) पलायिता न गण्यन्ते लोय

२२ भोजनृपालकः (॥१२) वेणुग्रामदवानलो विजयते वैरीभकण्ठीरवो गोविंदप्रलयान्त-

२३ क शिखरिणो वज्र कुरंजस्य च (।) भोज स्वीकृतकोंकणो भुजबलात् तद्भिल्लमोद्बन्ध-

२४ कृत सोय कर्णदिशापटो रिपुकुभृद्दोर्दण्डकण्डूहर· (॥१३) तस्यानुजातो गुणराशि-

२५ रासीत् बल्लालदेवो जितवैरिभूप· (।) जीमूतवाहान्वयरत्नदीपो गंभीर-

२६ मूर्तिर्भुवि शौर्यशाली (॥१४) अजनि तदनुजातस्तिग्मरश्मि-प्रतापो दिविजयतिवि-

२७ भूतिस्सर्वलक्ष्मीनिवास (।) कृतरिपुमदभंगो राजविद्याप्रसंगो भुवनवि-

२८ नुतमूर्तिर्गण्डरादित्यदेव (॥१५) चक्रे चालुक्यचक्रेशो विक्रमादित्यवल्लभ (।) निश्शं-

२९ कमल्ल इत्याख्यां गण्डरादित्यभूपतेः (॥१६) धन्यास्ते मानवास्सर्वे धन्याश्च मृगजात-

३० य (।) स देशस्सफलो यत्र गण्डरादित्यभूपतिः (॥१७) यत्खड्गाद्भुततीव्रधा-

३१ तचकितस्तत्कुण्डिदेशाधिपो दण्डब्रह्मनृपो जगाम सदनं ससेव्यमान सुरै-

३२ स्त्यक्त्वा राष्ट्रमतीवरम्यमतुलां लक्ष्मी भुजोपार्जितां सोय गण्डरदेवम-

३३ ण्डलपतिस्संशोभते भूतले (॥१८) रत्नानि यत्नेन ददाति तस्मै रत्नाक-

३४ रो मगमयाज्जडात्मा (।) आपूर्य सम्यक् सततं वहित्रं सूक्ष्माणि

३५ वासांसि हयाश्च तस्मै (॥१९) किमिह बहुभिरुक्तैरल्पगर्भैर्व-
चोभिर्भुवन-

दूसरा पत्र • दूसरा भाग

३६ विदितवीरः क्रूरसंग्रामधीर. (।) अपरनृपतिकोशं देशमत्यन्तशोभं
यदि स कुपितचित्तः

३७ कारयत्यात्मकोयं (॥२०) समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरः
तगरपुरवरा-

३८ धीश्वरः । श्रीशिलाहारनरेंद्र । जीमूतवाहनान्वयप्रसूत सुव-
र्णगरुड-

३९ ध्वजः । मवक्कशसर्प । अय्यनसिंह. (।) रिपुमण्डलिकभैरवः
(।) विद्विष्टगजकण्ठी-

४० रव । गणिकामनोजः । हयवत्सराज । शौचगांगेय । सत्यराधेयः ।

४१ इडुवरादित्यः रूपनारायणः । कलियुगविक्रमादित्य । शनिवार-

४२ सिद्धिः । गिरिदुर्गलंघन· श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादादि-
समस्तराजाव-

४३ लीविराजित· श्रीमन्महामण्डलेश्वरः श्रीगण्डरादित्यदेव श्रीम-
द्वलय-

४४ वाडशिबिरे सुखसंकथाविनोदेन राज्य कुर्वाणः। सप्तत्रिंशदु-
त्तरसह-

४५ स्रेषु शकवर्षेषु १०३७ अतीतेषु मन्मथसंवत्सरे कार्तिकमासे
शुक्लपक्षे ।

४६ अष्टम्यां बुधवारे मिरिंजदेशे । मिरिंजेगम्पणमध्ये । अंकुकगे वोप्पे-

४७ यवाड इति ग्रामद्वय आढगेनामग्रामस्य प्रविष्टं कृत्वा तद्ग्रा-

४८ मारुवण त्यक्त्वा तग्रत्यनागाबुण्डा यदि नायकत्वं कुर्वन्ति तेषां
शरी-

४९ रजीविताथं सुवर्णं न ददाति यदि नायकत्वं नेच्छन्ति स्वेच्छया तिष्ठन्ति त-
५० दा कोदेवण नास्ति । एवमनेन क्रमेण ० श्रीमत्पवित्रेत्र निगुंव-
तीसरा पत्र
५१ वंशे जातः पुमान् होरिमनामधेय॰ (।) कीर्तिप्रिय. पुण्यधनः प्रसिद्ध. श्री-
५२ जैनसंघांबुजतिग्मरश्मि (॥२१) तस्यात्मजोभूदिह वीरणाख्यस्त-स्यानुजोभू-
५३ दरिकेसरीति (।) तद्वीरणस्यापि तनूभवोयं बभूव कुंदातिरिति प्रसिद्ध. (॥२२)
५४ तस्यानुजस्सुपरिपालितबन्धुवर्ग. श्रीनायिमो जिनमतांबुधिच-
५५ द्र एषः (।) त्यागान्वितस्सुचरितस्सुजनो बभूव प्रख्यातकीर्ति-रिह धर्मप-
५६ र प्रसिद्ध. (॥२३) तस्यापि वीर सुजनोपकारी नोलंबनामा तनयो बभूव (।)
५७ श्रीगण्डरादित्यपदाब्जभृंगो धर्मान्वितो वैरिमतंगसिंह॰ (॥२४) तस्मै
५८ समस्तगुणालंकृताय निगुंवकुलकमलमार्तण्डाय । सुवर्णम-
५९ त्स्योरगेंद्रध्वजविराजिताय सम्यक्त्वरत्नाकराय पद्मावतीदेवी-लब्धवर-
६० प्रसादाय नोलंबसामन्ताय सर्वनमस्यं सर्वबाधापरिहारं पुत्र-
६१ पौत्रकमाचन्द्रार्कं दत्तवान् ०

[यह ताम्रपत्र चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ)के माण्डलिक शिलाहार राजा गण्डरादित्यदेव-द्वारा कार्तिक शुक्ल ८, बुधवार, शक १०३७ के दिन दिया गया था । निगुंव वंशके सामन्त नोलंबको मिरिंज

प्रदेशके मकुलगे तथा बोप्पेयवाड इन दो ग्रामोंका अधिकार अर्पण करनेका उल्लेख इसमें किया है। नोलवकी वंशावली इस प्रकार थी—होरिम-वीरण-कुदाति – उसका बन्धु नायिम-नोलव। नोलवको सम्यक्त्वरत्नाकर तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं।]

[ए० इ० २७ पृ० १७६]

१९३

होले नरसिपुर (मैसूर)

१२वीं सदी : पूर्वार्ध (सन् १११५), कन्नड

[इस लेखमें महामण्डलेश्वर वीर कोंगाल्वदेव-द्वारा मूलसंघ-देसिगण-के मेघचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवके उपदेशसे सत्यवाक्य जिनालयके निर्माणका तथा उसे हेण्णेगडलु ग्राम दान देनेका उल्लेख है। (समय लगभग सन् १११५।)]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३]

१९४

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १११५, तमिल

[यह लेख चोल सम्राट् कुलोत्तुंग राजकेसरिवर्मन्‌के ४५वें वर्षमें लिखा गया था। तिरुप्परम्बूरकी ग्रामसभा-द्वारा तिरुक्काट्टाम्पल्लि आलूवार जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि विक्रय किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३५]

१९५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ४६ = सन् १११६, तमिल

[यह लेख राजकेसरिवर्मन् कुलोत्तुंग चोलके ४६वें राज्यवर्षका है।

इसमे तिरुप्परुत्तिकुण्डुके ऋषिसमुदायके लिए एक नहर बनवानेके लिए कैतडुप्पूरकी ग्रामसभा-द्वारा कुछ भूमि करमुक्त रूपमें वेची जानेका उल्लेख है। यह लेख त्रिकूटवसदिके छतमे लगा है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८२ पृ० ३७]

१९६

पुडुप्पट्टु (चिंगलपेट, मद्रास)

११वीं-१२वीं सदी, तमिल

[स्थानीय जैन मन्दिरके मण्डपके एक स्तम्भपर यह लेख है। अस्पष्ट और अधूरा है। इसमें चोल राजा परकेसरिवर्मनका उल्लेख हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० ७९ पृ० १२]

१९७

अनमकोंडा स्तम्भ लेख (वरंगलके समीप, आन्ध्र)

चालुक्य विक्रम वर्ष ४२ = सन् १११७, कन्नड

पूर्वकी ओर

१ श्रीमज्जिनेंद्रपदपद्मभ-
२ शेषभव्यानव्यात् त्रिलोकनृ-
३ पतींद्रमुनींद्रवद्यं लि -
४ शेषदोषपरिखंडनचडका-
५ ण्डं रत्नत्रयप्रभवसुद्व-
६ गुणैकतान॥(१)स्वस्ति समस्त-
७ भुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ-
८ महाराजाधिराजपरमेश्वर-
९ परमभट्टारक सत्याश्रयकु-
१० लतिलक चालुक्याभरण श्रीम-
११ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयरा-
१२ ज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्ध-
१३ मानमाचंद्राकंतारं सलुत्त-
१४ मिरे। तत्पादपद्मोपजीवि समधि
१५ गतपंचमहाशब्द महामं(ड)
१६ लेश्वरनन्मकुडापुरवरेश्वरं
१७ परममाहेश्वरं पतिहितच-
१८ रितं विन(य)विभूषणं श्रीम-

१९ न्महामण्डलेश्वरं काकतीवेत(भू) २० पालकुलक्रमागतं तदीयरा-
२१ ज्यभरनिरूपितमहामात्यप- २२ दवीविराजमान मानोन्नत प्र-
२३ भुमन्त्रोत्साहशक्तित्रयसं- २४ पन्नना(गि)॥घनशौर्याटोप(दिं)
२५ मान्तनद महियेयिं चारुचारि- २६ त्रदिं(दो)ळ्पिन तेळ्पिं सत्क-
२७ ळदिनो)द्विदाश्चर्य(सौं)- काकोश-

उत्तरकी ओर

२८ दर्यदिंद(र्थि)निकायप्रार्थितार्थ-
२९ (प्र)द वितरण(चि)ख्यात- ३० (चि)नुत श्रीकाकतीवेतरसन
नादं धरित्री मचि-
३१ व वैज दण्डाधिनाथ ॥(२)अगणितशौर्य-
३२ दिं नेगल्द काकतिवेतनरेन्द्रन जग
३३ पोगळे चलुक्यचक्रिचरण सले का-
३४ र्णिसि तत्प्रसाददिं बगेगोळे मन्त्रिमा-
३५ थिरमनालिसि(दु)द्धयशो- ३६ धिनाथन पोगलदरारो मंड(लि)
३७ ककाकतिवेतन मन्त्रि वैजन ॥- ३८ तगं विकसितकजाताननें या-
(३)आ-
३९ कमळ्वेगं जनियिसिद ख्यातं ४० धरेयोळु पेगंडे वेत म-
४१ न्त्रिजनमकुटचूडारत्न ॥(४) ४२ आतं मा(धा)तरामोपम-
४३ नेनिसिद श्रीकाकतीभोळभू- ४४ पख्यातामात्य विवेकाग्रणि
४५ सकलकलाकोविद सच्चरित्र- ४६ प्रीतं साहित्यविद्यानिधि बु-
४७ धचित्तधोर्वोरुह सत्यधर्मो- ४८ पेत स्वग्रामदोळ् माडिदनतिभु
४९ दर्दि हत्तु देवालयगळु ॥(६) ५० अतिशयजैनधर्मसमयोचित-
५१ शासनदेवि भारतीसति शशिबिंबव(क्त्र)-
५२ दशनच्छदे शुद्धसुवर्णकुंभसन्नुतत-

५३ नुवर्णपीवरपयोधरि मैल (म था-)
५४ कमांबिकासुततडमात्यबेनहृ-
५५ दयेश्वरि निश्चललक्ष्मि माविसलु ॥(६)

पश्चिमकी ओर

५६ पडडिंडालुलितालकं वेरेग (मं) गो-
५७ पांगमं पचरत्नडिनांगोचितमागे ५८ निर्मिलि सुरस्त्रीमाग्यसौभाग्य-
५९ सम्म (ट) सौंदर्यमनाय्दु तीवि ६० पडेदं कंजातसंजातनी सु(दती)-
६१ रत्नमनेंदु मैलमननारार् वर्णिस-६२ लेंकडोल् ॥(७) नुतरूपवति कला (व)-
६३ ति रतिरति श्रीमतिबटान्तकी- ६४ णीसतियेंडमात्यबेतन सतियं सति था-
६५ क्षितियेल्लमेय्दे नुतियिसुनिर्कु- ६६ मुडडिंडेने नेगल्ड रमास्पडे मै- ॥(८)
६७ लम भक्तियिंदे माडिम्पि तन- ६८ यकरमागिरलु वेट्ट (मं) गण गम्युड-
६९ कडलालयवमदियनेमेयलु ॥(९)७० अडकं नित्यपूजेगं धूपडीप (नि) वेद्य-
७१ क्कं पूजारिगाहा (र) वस्त्राडि- ७२ श्रीमत्रिभुवमल्लमंडलिकभू- गलगं (पा)-
७३ लपुत्रनप्प काकतियपोलरमन रा- ७४ ज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्ध मानमा-
७५ गमम्मकुन्देयलाचंद्रार्कतारं स- ७६ लुत्तमिरं श्रीमच्चालुक्य- विक्रमवर्ष-

७७ द नाल्वत्तेरडेनेय हेमलम्बि(सं)- ७८ वत्सर पौष्यबहुळ १५ सोमवा-
७९ रदन्दिनुत्तरायणसंक्रांतिनिमि- ८० त्त धारापूर्वकमागि तन्न वल्लभनप्प
८१ बेत्तन-पेर्गडे तन्न पेसरिंद माडि- ८२ सिद केरेयेरिय केळगनेरडु
८३ हासरेगल्लुगळ नडुवण गर्देय ८४ मत्तरेरडुं मत्तमाकेरेय प-
८५ डुवण नेक टोणेय तेंकलेरय ८६ मत्तर्नाल्कुं करंबं मत्तरा-
८७ म कोट्टु निरिसिद्दलीशासनगंम ॥

दक्षिणकी ओर

८८ मत्तमी धर्मक्के तेलुटियागे ॥
८९ अ(श्वी) वन्तिसहस्राणि दशको- ९० टी च वाजिनामनन्त पाटसं-
९१ ख्यातमित्येते माधववर्म- ९२ वशोद्भवरप्प श्रीमन्महा-
९३ मण्डळेश्वरनुग्रवा (डि)- ९४ य मेळरसं तन्ना (लि) के-
९५ योळगल्ल कूचिकेरे- ९६ येरिय केळगे कालुवेय
९७ मोदल गर्देय मत्तरोन्दा स- ९८ मीपदले करवं मत्त-
९९ रु इत्तुमनित्त ॥ निरुतमि- १०० टनलिदवं सासिरकवि (ले)-
१०१ यनळि (द) पापमं (पो) दुं- १०२ गुमादरदिं रक्षि (सि) दं सा-
१०३ सिरयज्ञद फलमनेयदि १०४ शुम (मं) पडेगु॥ (१०) स्वद-
१०५ त्तां परदत्तां वा यो हरेत १०६ वसुंधरा । षष्टिर्वर्षसहस्रा-
१०७ णि विष्ठाया जायते क्रिमिः ॥ (११) १०८ बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिस्स-
१०९ गरादिभि । यस्य यस्य य- ११० दा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ (१२)
१११ अरिकेय वसदिय कसं गळेव बो- ११२ यपडगे पाग वोंदु ॥

[यह स्तम्भ चालुक्यविक्रमवर्ष ४२ (सन् १११७) में पौष अमावस्याको उत्तरायण संक्रान्तिके समय स्थापित किया था । उस समय

चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य (षष्ठ) के मांडलिक कादम्ब वंशका एक तैलप (द्वितीय) हानुगल प्रदेशपर शासन कर रहा था। उसका सामन्त बैजरस था। बैजरसकी पत्नी चाकलदेवी थी तथा एक बेटा बेदमय्य था। बेदमय्य प्रेमका बन्धु था। इसकी पत्नी बैजल थी। उसने हानुगल नगरमें एक जिनमन्दिर बनवाया तथा उसे इसके निमित्तो कुछ जमीन दान दी। इसी मन्दिरको उपर्युक्त तैलपने भी मातवललि कुछ जमीन दान दी। कदम्बलालेश्वरी ... स्थानोंका नाम है। इस समय यह मन्दिर ग्रामदेवीके अधिकारमें है तथा है उसे लोग जैनी देवी समझकर पूजा करते हैं।]

[ए० इं० ९, पृ० ३५६]

१९८
कोविलंगुलम् (रामनाड, मद्रास)
सन् ११५८, तमिल

[एक जैन मन्दिरके दक्षिण तथा पश्चिमकी दीवारोंपर यह लेख त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंगचोलदेवके ४८वें वर्षका है। कुन्दूरके अरु जैनोंद्वारा मन्दिरके लिए एक मण्डप तथा सुवर्ण विमान बनवानेका इसमें निर्देश है। कुन्दूर गाँव वेम्बुनाडु प्रदेशके कीळ्लुनाड्डु विभागमें था। इसी लेखमें त्रिभुवनविनति देव तथा एक स्त्रीकी ताँबेकी मूर्तियोंकी स्थापनाका भी उल्लेख है। इस मन्दिरके लिए जमीन और प्रकाशके लिए भी दान दिया गया था। इस लेखकी तमिल भाषा साहित्यिक दृष्टिसे बहुत अच्छी है।]
[इ० म० रामनाड १३]

१९९
पैद्दोरे (बिजापुर, मैसूर)
चालुक्य विक्रमवर्ष ४४=सन् ११२०, कन्नड

[यह लेख त्रिभुवनमल्लदेव विक्रमादित्य षष्ठके समय वैशाख शु० ३,

सोमवार, विकारी संवत्सर, चालुक्य विक्रमवर्ष ४८ के दिन लिखा गया था। इसमें जेमपार्य तथा जातियक्कके पुत्र केशवय्य सेट्टिका उल्लेख है जिसने स्थानीय जिनमन्दिरमे पूर्व और पश्चिमकी ओर बसदियाँ, एक पट्टशाला तथा कूपका निर्माण कराकर लोकपाल-मूर्तियोंकी स्थापना की थी और देवपूजाके लिए कुछ भूमि आदि दान दिया था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित] [गा० इ० इ० ११ पृ० २१९]

२००

कुमारवीडु (मैसूर)

शक १०४४=सन् ११२२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन (।) जीयात्

२ त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥) स्वस्ति समधिगत पंच-

३ महाशब्द महामण्डलेश्वरं कुलोत्तुंगचोळभुजब-

४ लवीरगंगहोय्सळदेवरु गंगवाडि तोंभत्तरु-

५ सासिरमनेकच्छत्रदिं तलकाडलिद्दु सुखसंकथावि-

६ नोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे शकवर्षं १०४४ ने-

७ य प्लवसंवत्सरद मार्गसिर सुध ५ सोमवार-

८ दन्दु महाप्रधान दण्डनायक गंगपय्य-

९ गळु तम्म सोवणदण्डनायकंग हादरिवागिल-

१० वीडिनल्लु परोक्षविनयक्कं माडिसिद बसदिगे

११ बिट्ट दत्ति सैमेनाड चन्दवनहळ्ळियु वीडिन

१२ मूडण कम्माडिय केरेय गद्दे ३० सलगेयु

१३ आ केरेयिं बडगलु एरिय बेद्दले बेलि २

१४ आ केरेय इट्टुवण कट्टद केळगे तोट

१५ ५०० गुळियु वीडिन २ गाणद एण्णेयु

१६ सोडरिगे सलुवुदु ॥ वसदिगे विट्टीधर्मम-
१७ नोसट्टु कर मलिसुतिर्द्दगंक्कु पुण्य असव-
१८ मन्ति केडिम्मिद्दवर्गल्लु पसुवु ब्राह्मण-
१९ न कोंद वधे ममनिसुगु ॥ स्वदत्तां पर-
२० दत्ता वा यो हरेत वसुंधरा पष्टिर्वर्षस-
२१ हस्राणि विष्टाया जायते क्रिमि ( )

[यह लेख होयसल राजा विष्णुवर्धनके राज्यमें मार्गशिर शु० ५, सोमवार, शक १०४४, प्लव संवत्सरके दिन लिखा गया था। दण्डनायक गगपय्य-द्वारा बोवणदण्डनायककी स्मृतिमें हादरवागिलु ग्राममें एक जैन मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे दिये गये दानका उल्लेख इस लेखमें किया है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६६]

२०१

वेलूर (मैसूर)

१२वीं सदी – पूर्वार्ध, कन्नड

१ पुणिसचमूपनेम्बेसेव शासनवाचकचक्रवर्तिगिन्तेनिसलोड पोगर्तें तनगागिरे पुट्टिद चामराज नाकण कुमरय्यनेम्ब रत्नत्रयमू-
२ र्तिगे पुत्रनोप्पिद पुणिसमदण्डनाथनुदितोन्नतिचामचमूपसभव (।) नमः सिद्धेभ्यः (॥)

[यह लेख किसी जैन मन्दिरके स्तम्भपर था। वह स्तम्भ बादमें केशवमन्दिरमें लगाया हुआ पाया गया। इसमें सेनापति पुणिस तथा उसके तीन पुत्र चामराज, नाकण तथा कुमरय्यकी प्रशसा की है। यह पद्य अन्य लेखोंमें भी पाया गया है। पुणिस राजा विष्णुवर्धनका जैन सेनापति था।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० ८३]

२०२

अरताल (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १०४५ = सन् ११२३, कन्नड

[यह लेख चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका है। इस समय वनवासि तथा पानुगल प्रदेशोंपर कदम्ब कुलका महामण्डलेश्वर तैलपदेव शासन कर रहा था। मूलसंघक्राणूरगणके कनकचन्द्रके शिष्य गगर बम्मि-सेट्टिने कोन्तकुलि विभागके प्रमुख नगर पयिट्टणमें एक मन्दिर बनवाया। बम्मिसेट्टि बट्टकेरेका निवासी था। इस लेखकी तिथि पौष अमावास्या, सूर्यग्रहण, रविवार, शक १०४५, शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४३-४४ एफ् १]

२०३

हिरेसिंगनगुत्ति (विजापुर, मैसूर)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[इस खण्डित लेखका समय चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य षष्ठ) के राज्यका है। देसिगगण-पुस्तक गच्छके आचार्य बालचन्द्रका इसमें उल्लेख है। किसी मन्दिरके लिए उन्हें कुछ भूमि अर्पण की गयी थी।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित] [सा० इ० इ० ११ पृ० २६२]

२०४

तोगरकुण्ट (अनन्तपुर, आन्ध्र)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लके समय एक सूर्यग्रहणके अवसरपर लिखा है। इसमें तोगरकुण्टेके चन्द्रप्रभदेववसदिके लिए दण्डनायक

११　'पोद्) लृद् वेढंगले मूर्तिगोंड्डु देनिपंद्दलोप्पुव विप्ररिदे ग्रामंगल चक्रवर्तियेसेद्दिर्दुदु नोर्पडे पूलि ळीलेयिं ॥(९) मत्तमल्लिय विप्रर महिमेये (न्तेदोडे)।

१२　पोंठनेनिप श्रीकृष्णदेवं सविस्तरदि तन्न सहस्रमप्प पेसरं रूपा-गिरलु माडि साक्षरवेदाक्षरजीवमंत्रचयम तीविट्टु पुळीमहापुर

१३　(एसेदर्) सामिर्वरिंतुर्वियोलु ॥(१०) उपमातीतमेनिप्प पेंपु गुणमौदार्यं चल साहसं जपहोम नियम महोन्नतिकसत्य शौचम।

१४　" शास्त्रदोदवि श्रीकेशवादित्यदेवपादांभोजवरप्रसाददेसेदर् सासि-र्वरितुर्वियोलु ॥(११) हरि किलेनेलेयिं चलिसिद हरिवद्वेट्टि

१५　कक्कुं निराकरिपुदु सासिर्वरुचितदे चलितवचन ॥(१२) स्व-स्थनवरतविनमदम (र) राजत्किरीटकोटिताडितजिनेंद्रचरणा-रविंदम—

१६　" (चल) दुत्तरग। वीरविद्विष्टसंहरणप्रतापकार्तिकेय। गगगांगेय। चपलवैरिवाहिनीसंहननप्रतापलकेश्वरं। कोलालपु(रवराधीश्वरं।)

१७　"' (एतें) दोडे। मंडलिकजगदल मार्कोंदर जवनाथिजनके कल्प-महीज गंडर तीर्थ सितगर गड मार्कोळ भैरवं पिट्टनृपं ॥(१३) मत्त

१८　' पुट्टिदरोप्पे पेर्मनृप विज्जमहीपति कीर्तिभूपनु जेट्टिग गोमंतुं नेगर्द (ल्ड) मैललदेवियुमते रूपिनिधिट्टलवाग्गि '

१९　॥(१४) लिकदंकदरिभूभुजरं तवे कोंड्डु गूर्जराष्ट्र जयसिंहदेव धरणीश्वररं निजराज्यलक्ष्मियोलु पडु

२०　पोगलुतिर्पुदु विज्जलभूमिपालन ॥(१५) मत्तं। रेवकनिमंडि कन्हरदेवंगीतक्कनंते भूनुते सिरिया (देवि)

२१ ॥(१६) द्दु कल्ताय्वनेयेंदु बिज्जलनृपं चउगीमतीर्थंर्कल्ं
मुरडि माडिसि कल्वेम् ममंसि

२२ दि विट्ट—बेल्वळदोलितोप्पिप्प पेर्गुम्मिय ॥(१७) इरलार-
याडकसि

२३ चालुक्यचक्रवर्ति पेर्माडिरायन् कय्योळ् ·

२४ माडिसिद माणिक्यतीर्थं

[यह लेख चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यकालका है। इसमें प्रथम सुधर्म गणधरकी परपरामें यापनीय सघ—कण्डूर् गणके बाहुबली, शुभचद्र, मौनिदेव तथा माघनदि इन आचार्योंका उल्लेख है। इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नही है। अनन्तर एक पूलि नगरके पिट्ट नृपका उल्लेख है जो गगवशमें उत्पन्न हुआ था। इसके चार पुत्र थे—पेर्म, बिज्जल, कीर्ति, गोर्म—तथा एक कन्या थी—मैललदेवी। बिज्जलके सम्बन्धमें गूर्जराष्ट्रके जयसिहका उल्लेख किया है किन्तु इसका ठीक अर्थ स्पष्ट नही क्योंकि यहांके कई अक्षर घिस गये हैं। इसी तरह कृष्णराजकी बहिन रेवकनिर्मडिकी एक श्लोकमें सिरियादेवीसे तुलना की है उसका पूर्वापर सम्बन्ध भी स्पष्ट नही है। अनन्तर कहा है कि बिज्जलने एक जैन मन्दिर बनवाया तथा उसे पेर्गुमि ग्राम दान दिया। लेखके अन्तिम भागमें माणिक्यतीर्थका उल्लेख है। इसका सम्बन्ध भी स्पष्ट नही है।]

[ए० इ० १८ पृ० २०१]

२०८

बेलवत्ति (धारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी - पूर्वार्ध, कन्नड

[इस लेखमें सवणूरके बम्मिसेट्टि-द्वारा एक ब्रह्मजिनालयके निर्माणका उल्लेख है। इस जिनालयके लिए बम्मिसेट्टिने बेलवत्तिके ३०० महाजनो-

को कई दान दिये थे। इस स्थानके कुछ आचार्योंके नाम भी लेखमें दिये हैं। तिथि आषाढ शु० प्रतिपदा, सोमवार, उत्तरायणसक्रान्ति, शोभकृत् सवत्सर ऐसी दी है। उस समयके चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके राज्यका उल्लेख किया है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २१६]

२०९

बैल होंगल (बेलगाँव, मैसूर)

११वीं - १२वी सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लदेवके समयका है। शक वर्षके अक अस्पष्ट हुए हैं। इसमें रट्टवशीय महासामन्त अक, शान्तियक्क तथा कूण्डि प्रदेशका उल्लेख है। अनन्तर यापनीयसघ- मैलाप अन्वय-कारेय-गणके मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरिका उल्लेख है। यह सम्भवत किसी जिनमन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० ३३ पृ० १२]

२१०

गोलिहल्लि (जि० बेलगाँव)

सिद्धेश्वरमन्दिरके समीप शिलापर

१२वी सदी, कन्नड

[मैललदेवी तथा जयकेशिन्के पुत्र वीर पेर्माडि तथा विजयादित्यके शासनका इस लेखमें निर्देश है। अगडिय मल्लिसेट्टि-द्वारा किरुसपगाडिमे बनवाये गये जैन मन्दिरके लिए भूमिदान देनेका इसमें उल्लेख है। मूलसघ, बलात्कारगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य वासुपूज्य भट्टारकको यह दान दिया गया। वासुपूज्यकी गुरुपरम्परा कुछ विस्तारसे दी है। लेखके समय फाल्गुन शु० १५, गुरुवार, मन्मथ सवत्सर था तथा चालुक्य भूलोकमल्ल सम्राट् थे।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५]

२११

बरांग (मैसूर)

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[यह लेख आलुप राजा कुलशेखरके समयका है। इसमें माधवचन्द्र, प्रभाचन्द्र, तथा श्रीचन्द्र इन आचार्योंका उल्लेख किया गया है।]

[रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२७]

२१२

दुड्ग (माण्ड्या, मैसूर)

१२वीं सदी – पूर्वार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं (।) जी-
२ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन (॥)
३ कुलरत्नाकरदोलु कौस्तुमादिगळ वोलु पलरं लोकोपकारपरिणतर् एकीकृ-
४ तसकलराजगुणरु सकळजनोक्ति यादवकुलदोलु पुट्टि पार्थ
५ सलेयिं पुलिय पोय् सल पेसे पोय्सळरिं पोय्सळवंसरवनिद वाळुद-
६ रिलदं''''नयं प्रदारण नना '' ग्रुरांद जग-
७ नयनिमि पोरेद विनयादित्य समस्तभुवनस्तुत्य आतंगतिमहिम-
८ समारव्यातकीर्ति सन्मूर्तिमनोजात मर्दितरिपुनृपजातं तनुजात-
नादन् एरेयंग-
९ नृपं ॥ च 'धर्मार्थकामसिद्धिवोल् अवनीवल्लभर् आतन तन-
१० यर् बल्लाल विष्टिवेयन् उदयादित्य ॥ नृवर- तनयरोल तां
माचिसे म '

११ स्वसनागिरलुं सद्गुणसमुद्रमागिर्दन् उच्चमनाद् विनुतविभवद्भूत-
निष्टु वि-

१२ ष्णुवर्द्धनं । स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामंडले-

१३ श्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सं-

१४ म्यक्त्वचूडामणि मलपरोळुगण्डं गण्डभेरुण्ड शशकपुरनिवास

१५ वासंतिकादेवीलब्धवरप्रसाद शनमण्डलमंपादितविप्रग्रामोद

१६ नामादिसमस्तप्रशस्ति सहितं तलकाडु कोंगु नंगलि गंगवाडि नो-

१७ ळंबवाडि बनवासे हानुंगल्लु गोंड भुजबलवीरगंग प्रताप

१८ होय्सळदेवर् पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीविगळप्प ॥ सौ-

नीत अ-

१९ त्युंनतचक्रवर्ति माल्केयगल् जंते पुट्टिदे मेरुद्र श्रीमनुज्ज्याने-

२० युं उद्दामगुणा लक्ष्मीमन्त टाविरत ॥ कलियानि सिंहमल्ल वल-

२१ मल्लनि दोम्लसमुद्रवार्धि मिश्रविक्कडाझे वलिसुबि बेग्गहि

२२ गंडविलासलक्ष्मि नामुरं मुनर्गोदिमानं गुणारनवशोहारि को-

२३ लिंगोपमि लियरसन्दे नक्कियक्कनेने पोल्वर् आर् असलकान्त

नतुर्वं ॥

२४ वल्लेजनर्वोगं चगिनार्थं देगल्ड नन्दे सागवर् ॥ नदरसमजिन-

देव्यमन्दि

२५ द्वियदेयव्वेरडं लोन्न क्लेकलेल्नं ॥ श्रीमूलसंघ कुन्दकुन्दान्व-

२६ य कन्नूरगण तिंत्रिणीगच्छद नवनिंदय मुनिचन्द्रसिद्धान्तदेवर

शिष्य

२७ मेघचन्द्रसिद्धान्तदेवरों श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक गंगिया-

२८ नेयुं श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक मारिमय्यनलुं दंडि-

२९ नकेरेय पंचवसदियोळगे बाहुबलिद्रूम बाराद्वे-

३० कं माडि कोट्टर् गंगियानेमसुदद दयलुनं

३१ मलेहल्लिय मुंडण किरुकेय अल्लिय गेल्लगुत्त-
३२ गेयु कोट्टियहल्लिय मुडण किरुकेय आचेदलेय
३३ तिरियकेरेय केलगण अडकेय तोटमु ॥ स्वस्तु सर्वांय मुद्दयागि
देशियगणद बसदि २ कक काणूरगणद ब-
३४ सदि योन्दक्क अन्तु पंच बसदिगं समानवागे डल्लि दृद्दि-
३५ द साचिर्गोडनु कसवर्गोडनु ॥
३६ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरा षष्टिवर्षं सह-
३७ स्राणि विष्टायां जायते क्रिमि

[इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धनके महाप्रधान दण्डनायक मरियाने तथा भरतिमय्य-द्वारा दडिगनकेरे स्थानकी पाँच बसतियोंमें बाहुबलि-कूट नामक बसतिका दान तथा कुछ भूमिके दानका निर्देश है। यह दान काणूरगण-तिन्त्रिणिगच्छके मुनिभद्र सिद्धान्तदेवके शिष्य मेघचन्द्रदेवको दिया गया था।] [ए० रि० मै० १९४० पृ० १५६]

२१३

कम्बदहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी–पूर्वार्ध (सन् ११३०), कन्नड

१ (द्रोह)घरट्ट दण्डनायक गंगराजन सग बोप्पदेवरिगे रूवारि
२ द्रोहघरट्टाचारि कल्लेबसदिय माडिद ॥ मंगल महाश्री

[यह लेख स्थानीय शान्तीश्वर बसदिके भग्नावशेषोंमें है। यह बसदि दण्डनायक गंगराजके पुत्र बोप्पदेवके लिए द्रोहघरट्टाचारि नामक शिल्पकारने बनवायी ऐसा लेखमें कहा गया है। यह कल्लेबसदि अर्थात् निर्माता-द्वारा बनवायी पहली बसदि थी। अतः इसका समय लगभग सन् ११३० है क्योंकि बोप्प-द्वारा सन् ११३३ में हलेबिडमें निर्मित शान्तीश्वरबसदि विद्यमान है।]

(ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९३]

२१४

सालूर (मैसूर)

सन् ११३०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्य-
२ (नाथस्य शासनं जिन) शासन ॥ स्वस्ति समस्तभुवना-
३ · · (म)हाराजाधिराज परमेश्वर पर-
४ · (सत्या)श्रयकुलतिलक चालुक्याभरणं
५ श्रीम(द्भूलोकमल्ल)देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृ-
६ (द्धिप्रवर्धमान) माचंद्रार्कतार सलुत्तमिरे । समधिगतपञ्चम-
७ (हाशब्द महामं)डलेश्वरं बनवासिपुरवराधीश्वर त्रिक्षयस्मा-
८ (समव चतुरासीतिनग)राधिष्ठितल(लाटलोचन)चतुर्भुज
९ श्रीजयन्तीमधुकेश्वरदेवलब्धवरप्रसादं नामादि-
१० समस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महामण्डलेश्वरं मयू-
११ रवर्मदेव तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महामण्डलेश्वर
१२ मगर कारगरसर् सान्तलिगेसासिरमुमं दुष्टनि-
१३ ग्रहशिष्टप्रतिपालनदिनालुत्तिरे ॥ श्रीमूलसंघको-
१४ (ण्ड) कुन्दान्वय काणूर्गणद मेष(पा)षाणगच्छद श्रीप्रभाच-
१५ द्रसिद्धान्तदेवर शिष्य कुलचद्रपं(डित)देवर गुड्ड(म)-
१६ द्रायिसेट्टि श्रीमदग्नादियग्रहार सालियूर सासिर्व-
१७ र ब्रह्मजिनालयद बसदिय निवेद्यक्के भूलोकवर्षद
१८ ५ नेय साधारणसंवत्सरद पुष्य सुद्ध ३ सोमवारद वृत्त

[यह लेख चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लके ५वें वर्षमें पौष शु० ३ सोमवारको लिखा गया था । उस समय कदम्बवंशीय मण्डलेश्वर मयूरवर्मा-के शासनान्तर्गत सान्तलिगे प्रदेशपर मगर कारगरसर् शासन कर रहा था । उक्त तिथिको सालियूर अग्रहारमें स्थित ब्रह्मजिनालय बसदिको भद्र-

रायिसेट्टिने कुछ दान दिया था। मूलसंघ-काणूरगण-मेषपाषाणगच्छके प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य कुलचन्द्रपण्डित भद्रराथि सेट्टिके गुरु थे।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० २४५]

२१५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष १३ तथा १७ = सन् ११३१ तथा ११३५, तमिल

[यह लेख चोल राजा परकेसरिवमन् विक्रमचोलके राज्यवर्ष १३का है। इसमें विलगार्की ग्रामसभा-द्वारा त्रैलोक्यनाथजिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है। इसीके बाद इसी राजाके १७वें वर्षमें तिरुप्परुत्तिकुण्डुकी कुछ भूमि आरम्भनन्दिको बेची जानेका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८१ पृ० ३७]

२१६

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

सन् ११३२, कन्नड

[इस लेखमें गोग्गियबसदिके इन्द्रकीर्ति पण्डितका उल्लेख है। उन्होंने तथा पेर्गडे मल्लियण्ण आदिने बसदिकी भूमिमें घर आदि बनवानेके कुछ नियम बनाये थे। हेमदेव-द्वारा बसदिके पुजारीको कुछ भूमि दान दी जानेका भी उल्लेख है। तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, परिधावि संवत्सर, भूलोक-वर्ष (चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लका राज्यवर्ष) ७, बुधवार इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ४८ पृ० १६४]

२१७

बहुरीबंद (जि० जबलपुर, मध्यप्रदेश)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

स्वस्ति ' 'वदि ९, सोमे श्रीमद्गयाकर्णदेवविजयराज्ये राष्ट्रकूटकुलोद्भवमहासामंताधिपतिश्रीमद्गोल्हणदेवस्य प्रवर्धमानस्य ॥ श्रीमद्गोल्लापूर्वाम्नाये वेल्लप्रभाटिकायामुरुकृताम्नाये तर्कतार्किकचूडामणिश्रीमन्माधवनंदिनानुगृहीतः साधुश्रीसर्वधरः तस्य पुत्रः महाभोज धर्मदानाध्ययनरत । तेनेदं कारितं रम्यं शान्तिनाथस्य मंदिरं ॥ स्वलात्यससटकसूत्रधारः श्रेष्ठिनामा वितानं च महाश्वेतं निर्मितमतिसुंदरं ॥ श्रीचंद्रकराचार्याम्नायदेशीगणान्वये समस्तविद्याविनयानंदितविद्वज्जनाः प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत्सुभद्राश्चिरं जयंतु ॥

[यह लेख कलचुरि राजा गयाकर्णके सामन्त राष्ट्रकूट गोल्हणदेवके राज्यकालमें लिखा गया है। वेल्लप्रभाटिका गाँवमें गोल्लापूर्व जातिका महाभोज नामक श्रावक था जो माधवनन्दिके शिष्य सर्वधरका पुत्र था। इसने शान्तिनाथका एक सुन्दर मन्दिर बनवाया। इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा चन्द्रकराचार्याम्नाय-देशीगणके आचार्य सुभद्रके द्वारा हुई थी।]

[इन्स्क्रिप्शन्स आफ दि कलचुरि-चेदि एरा पृ० ३०९]

२१८

आदिनाथमन्दिर, नाडलाई (जि० देसूरी, राजस्थान)

संवत् ११८९ = सन् ११३३, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् ११८९ माघसुदि पंचम्यां श्रीचाहमानान्वय श्री-
महाराजाधिराज (रायपा) ल

२ देव तस्य पुत्रौ रुद्रपालअमृतपा (लौ) ताभ्यां माता श्रीराज्ञी मा (न) ल्हदेव्या तया (नड्डू) ल (डा) गिका-

३ यां सता परजर्तानां (रा)ज कुडपल (म) ध्यात पलिकाद्वय याण (क) प्रति धर्माय प्रदत्त । म० वार्गान्दि-

४ वप्रमुख्यसमस्तग्रामीणाक । रा० तिमदा त्रि० मिरिग्ग वणिक पोसरि । लक्ष्मण वर्त्त मा ।

५ खिं कृत्वा दत्त । लोपकस्य यद्दु पापं गोहत्यासरमूेण । ब्रह्म-हत्यासतेन च । तेन

६ पापेन लिप्यते स ॥ श्री ॥

[यह लेख सवत् ११८९ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था । इसके दो पुत्र थे—रुद्रपाल तथा अमृतपाल । इनकी माता मानल्देवीने नड्डूलडागिका आनेवाले यतियोंके लिए कुछ दान दिया था ।]

[ए० इ० ११ पृ० ३४]

२१६

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

सन् ११२४, तमिल

[यह लेख परकेसरिवर्मन् विक्रम चोल राजाके १६वें वर्षमें लिखा गया था । इसमे वैगाशि मासमे उत्सवोके अवसरपर अरुमोलिदेव (अर्हत्) तथा नित्यकल्याण देवकी पाल्की-यात्राकी व्यवस्थाके लिए मलैयन् मल्लन् अर्थात् चिक्रमचोलमल्लन-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २१० पृ० ६६]

२२०

शेरगढ़ (कोटा, राजस्थान)

संवत ११६१=सन् ११३५, संस्कृत-नागरी

१ मान्दिइस्जमार्यान्तिमा—स्य तिलके सूर्याश्रमे प (त्त) ने। श्रीपालो गुणपालकश्च विपु-

२ ले ग्वण्डि (लुवा) ले कुले सूय (र्या) चन्द्रमसाविवाम्बरतले प्राप्तौ क्रमान्मालवे ॥१॥ श्रीपालादिह देवपालतनयो दानेन चिन्तामणि(:) शा-

३ (न्तेः श्री) गुणपालठक्कुरसुनाद् रूपेण कामोपमात्। पूर्नीमर्थजनैरहुकप्रभृतय पुत्राश्च येग्रा नव तैः सर्वैरपि कोशवर्धनत-

४ ले रत्नत्रय कारित( ) ॥२॥ वर्षे रुद्रशतैर्गतै शुभतमैरकानवत्याधिकैर्वैशाग्व(खे) धवले द्वितीयदिवसे देवान् प्रतिष्ठा-

५ पितान्। वन्दन्ते नतदेवपालतनया माल्हूमधान्वादय पूर्नीशान्तिसुतश्च नेमिसरता श्रीशान्तिमत्कुन्थ्वरान्।

६ ।३॥ दादिसूत्रधारोत्तमः शिलाश्रीसूत्रधारिणा। शान्तिकुन्थ्वरनामानो जयन्तु घटिता जिनाः ॥४॥ देवपालसु-

७ तेल्हुक गोष्ठिवीमलल्लुक सोक हरिश्चन्द्रादि गागासुपुत्र ( ) श्रल्लक ॥५॥ संवत ११९१ वैसाप सुदि २ (म)-

८ गलदिने प्रतिष्ठा कारापिता ॥

[यह लेख वैशाख शु० २, मगलवार, सवत् ११९१ का है। इस समय खण्डिल्लवाल कुलके शान्तिके पुत्रोने रत्नत्रय अर्थात् शान्ति, कुन्थु तथा अर इन तीन तीर्थकरोंकी मूर्तियां स्थापित की थी। इनका निर्माण सूत्रधार दादिके पुत्र शिलाश्रीने किया था।]

[ए० इ० ३१ पृ० ८३]

२२१

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शक १०५८ = सन् ११३५ कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछन । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥ (१) स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्द महाम-

२ ण्डलेश्वरं । तगरपुरवराधीश्वरं श्रीशिलाहारनरेंद्र । जीमूत-वाहनान्वयप्रसूत । सुवर्णगरुडध्वज मरुवोक्कमर्पं । अय्यन

३ सिंग । रिपुमण्डलिकभैरव । विद्विष्टगजकण्ठीरवं । इडुवरादित्य । रूपनारायण । कलियुगविक्रमादित्य । शनिवारसिद्धि गिरिदु-

४ र्गल्लघन । श्रीमहालक्ष्मीदेवीलब्धवरप्रसादादिसमस्तराजावली-विराजितरप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वर गण्डरादित्यदेवरु वल-वाडद ने-

५ लेवीडिनल् सुखसकथाविनोददि राज्यगेय्युत्तमिरे । तत्पादपद्मोप-जीवि समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्त । विजयल-

६ क्ष्मीकान्त । रिपुसामन्तसीमन्तिनीसामन्तभग । वीरवरागना-प्रियभुजग । वैरिसामन्तमेघविघटनसमीरणं । नागलदेविय गन्धवा-

७ रण विद्विष्टसामन्तविलयकालं । सामन्तगण्डगोपालं । दायादसा-मन्ततारासुरवीरकुमार । सामन्तकेदार । तोण्डसामन्त-पुण्डरीक-

८ पण्डप्रचण्डमन्तवेदण्ड । गण्डरादित्यदेवदक्षदक्षिणभुजादण्ड । याचकजनमनोभिकपितचिन्तामणि । सामन्तशिरोमणि । जिन-चरणसरसिरु-

९ हमधुकरं मन्यकन्वररत्नाकरनाहारामयमैषज्यशास्त्रदानविनोदं पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसाद । नामादिसमस्तप्रशस्तिसहित श्री-मन्महा ।

१० मामन्त । निंबदेवरसरु । कवडेगोल्लद बल्लिय सन्तेय मुद्गोडे-यल् माडिसिद बसदिय पार्श्वनाथदेवराष्टविधार्चनक्कमा बसदिय जीर्णोद्धारक्क-

११ मल्लिष्प ऋषियराहारदानक्कं । स्वस्ति । समस्तभुवनविख्यात-पञ्चशतवीरशासनलब्धानेकगुणगणालङ्कृत सत्यशौचाचारचार-चारित्रनयविनय-

१२ विज्ञान वीरबलञ्जुधर्मप्रतिपालन विशुद्ध गुडुध्वजविराजमानानून-साहसोत्तुंग कीर्त्यङ्गनालिंगित निजभुजोपार्जितविजयलक्ष्मी-निवासवक्षस्थलरुं

१३ भुवनपराक्रमोन्नत वासुदेवखण्डलीमूलभद्रवशोद्भवरुं । भगवती-लब्धवरप्रसादरं । तावु काडि सोलदरुं । मरुवक्कमारिगलु परस्त्रीपर

१४ धनवर्जितरुं चतुष्षष्टिकलेगलोल् प्रवीणरप्पुदरिं । ब्रह्मनन्नरं । चक्रमुल्लुदरिं नारायणनन्नरं । दृष्टियोल् नोडि कोल्वुदरिं । कालाग्निरुद्रनन्नर । को-

१५ न्दुनरमि कोल्वुदरिं । परशुरामनन्नरुं । तुलिदु कोल्वुदरिं । मदान्धगन्धसिन्धुरदन्नरं । गिरिदुर्गमं मरेवोक्करं तेगेदु कोल्वे-डेयोल् सिंहदन्नर ।

१६ पातालम पोक्करं कोल्वेडेयोल् वासुगियन्नरं । आकाशदोलिर्दर कोल्वेडेयोल् गरुडनन्नरुं । पेपिनल् पृथ्वियन्नरुं । शिणपिनल् कुलगि-

१७ रियन्नरुं । गुणपिनल् महासमुद्रदन्नरुं । उद्योगदल् रामनन्नरुं ।

२२२

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड
महालक्ष्मी मन्दिरमें छतके खम्भोंपर

[यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके समयका है। इनके सामन्त निम्बने एक चैत्यालय बनवाया था। नाकिराजकी कन्या कर्णादेवीका भी उल्लेख है जो एक रानी थी। कोण्डकुन्दान्वयके माघनन्दि आचार्यका भी उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३५१]

२२३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)
सन् ११३७, तमिल

[यह लेख कुलोत्तुंग चोलदेव (द्वितीय) के राज्यवर्ष ४ में लिखा गया था। आलप्पिरन्दान् मोगन् उपनाम कुलोत्तुंगचोलकाडवरायन्-द्वारा कन्चिनायनार् (चन्द्रप्रभ) की पूजाके लिये जननाथमंगलम् गाँवके उत्पन्न-से ४२० कलम् (नापका प्रकार) चावल अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३११ पृ० ६६]

२२४

गणपवरम् (गुण्टूर, आन्ध्र)
११वीं-१२वीं सदी, तेलुगु

[यह लेख श्रावण शु० ३ का है — शकवर्षके अंक लुप्त हुए हैं। कुलोत्तुंग राजेन्द्रके पुण्यवृद्धिके लिए अक्कसाल कामोजु-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। अन्तमें चन्द्रप्रभजिनालयका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ पृ० ४३ क्र० ४५८]

२२५-२२७

तिरक्कोल (उ० अर्काट, मद्रास)

११वी–१२वी सदी, तमिल

[इस लेखमे तण्डपुरम्की पल्लि (जैनवसति) के लिए एरणन्दि उपनाम नरतोग पल्लवरैयन्-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम पोन्नूरनाडुमे सम्मिलित था। यहीके एक अन्य लेखमे शेम्बियन् शेम्बोत्तिलाडणार्-द्वारा कनकवीर शित्तडिगल्को कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह चोल राजा परकेसरिवर्मन्के १२वे वर्षका लेख है। तीसरा लेख स्थानीय वर्धमानमन्दिरके दो स्तम्भोपर है। ये स्तम्भ अरुमोलिदेव-पुरम्के इडैयारन् आट्कोण्डान् मावीरन्-द्वारा स्थापित हुए थे।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० २७६–२८० पृ०९१]

२२८-२३०

वस्तिहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[यहाँ तीन लेख है। एक जिनमूर्तिके पादपीठपर मूलसघ-देसियगणके-कुक्कुटासन-मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तिदेवके शिष्य दण्डनायक गंगपय्यका नामोल्लेख है। एक दूसरे मूर्तिके पादपीठपर मूलसंघ-देसिगणके दिनकरजिनालयमें हेग्गडे मल्लिमय्य-द्वारा मूर्तिस्थापनाका उल्लेख है। इस मन्दिरके द्वारके लेखमे इस मन्दिरकी स्थापनाका वर्ष सन् ११३८ दिया है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४४]

२३१

नाडलाई (जि देमूरी, राजस्थान)

सवत् ११९५ = सन् ११३९, सस्कृत-नागरी

१ ओं नम सर्वज्ञाय॥ संवत ११

२ ९५ आसउज वदि १५ कुजे ।
३ अद्येह श्रीन (ड्डू) लडर (गि) काया महा-
४ राजाधिराजश्रीराय (पा) लदेवे । विज -
५ यी राज्य कुर्वतीत्येतस्मिन् काले
६ श्रीमदुजिततीर्थं श्री (ने)मिनाथदेव-
७ स्य दीपधूपनैवे(द्य)पुष्पपूजाद्यर्थं गू-
८ हिलान्वय राउ० ऊधरणसूनु
९ ना मोक्तारि ठ० राजदेवेन स्वपु-
१० ण्यार्थे स्वीयादानमध्यात् मार्ग[ग]
११ च्छतानामागताना वृषभानादेकं (पु)
१२ यदाभाव्य भवति तन्मध्यात् विं(श)
१३ तिमो भागः चंद्रार्कं यावत् देवस्य
१४ प्रदत्त. ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा
१५ केनापि परिपथा न करणीया
१६ अस्मद्दत्तं न केनापि लोप(नी)य ॥
१७ स्वहस्ते परहस्ते वा य कोपि लाप -
१८ यिष्यति तस्याह करे लग्नो
१९ न लोप्य मम शासनमिद । लि०-
२० (पा)सिलेन ॥ स्वहस्तोय सामि -
२१ ज्ञानपूर्वकं राउ० रा(ज)देवे-
२२ न मतु दत्त ॥ अत्राह साक्षि-(णा)-
२३ ज्योतिषिक (दूद्)पासूनुना सूमि-
२४ ना । तथा पला० पाला० । पृथि
२५ वा १ माणु(ला) ॥ देपला । रा
२६ पला ॥ मगल महा (श्रीः) ॥

[उक्त लेख संवत् ११९५ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था। इसमें नड्डूलडागिकाके नेमिनाथमंदिरके लिए ठा० राजदेव द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है]

[ए० इ० ११ पृ० ३६]

२३२

नाडलाई, (जि देसूरी, राजस्थान)

संवत १२०० = सन् ११४४, संस्कृत-नागरी

१ ओं सव(त्)। १२०० जेष्ट (सु)दि ५ गुरौ श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्ये—हाल –

२ समये रथयात्रायां आगतेन रा० राजदेवेन आत्म-गाइलामध्यात् (सर्वसाउलपुत्र) विंसो–

३ पको दत्त । आत्मीयवाणकतेलव(ल)मध्यात् । मातानिमित्तं पलिकाद्वय। पलीं २ दत्त ॥ म-

४ हाजनप्रमीण। जनपदसमक्षाय। धर्माय निमित्तं विंसोपको १ पलिकाद्वयं दत्त ॥ गोह –

५ त्यानां सहस्रेण ब्रह्महत्यामतेन च। स्त्रीहत्याभ्रूणहत्या च अतु पाप तेन पापेन लिप्यते स ॥

[यह लेख संवत् १२०० में राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था। यात्राके लिए आये हुए रा० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें निर्देश है।]

[ए० इं० ११ पृ० ४१]

२३३

कम्बदहल्लि (मैसूर)

सन् ११४७, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके दो दण्डनायक मरियाने तथा

भरतिमय्य-द्वारा शान्तीश्वरबसदिके लिए मोदलियहल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान क्रोधनसंवत्सरका है। तदनुसार सन् ११४५ का यह लेख है। ये दण्डनायक आचार्य गण्डविमुक्तदेवके शिष्य थे।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ५१]

२३४

बालेहल्लि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११४५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लदेवके राज्यवर्ष ८, क्रोधन संवत्सरमें फाल्गुन शु० १, रविवारके दिन उत्कीर्ण किया गया था। बम्मिसेट्टिने बालेयहल्लिमें पार्श्वनाथमन्दिरका निर्माण किया तथा उसकी रक्षाके लिए देसिगण, पुस्तकगच्छ, (कोण्डकुन्द) अन्वयके मलधारिदेवको कुछ दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है। मन्दिरको दिये गये कुछ अन्य दानोंका भी इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १७६ पृ० २२]

२३५

नाडलाई (जि० देसूरी, राजस्थान)

संवत् १२०२ = सन् ११४६, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् १२०२ आसोज वदि ५ शुक्रे श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्ये प्रवर्त(माने)

२ श्रीनड्डूलडागिकाया रा० राजदेवठकुरेण प्रव(र्त)मानेन श्रीमहावीरचैत्ये साधुत-

३ पोधननि(ष्ठार्थे) श्रीअभिनवपुरीय वडायां अ(त्रे)षु स(म)स्तवणजारकेषु दम्मी मिलित्वा वृ –

४ (प) म (म) रिन जनु पाइलालगमाने ततु बीस प्रति रूआ २ किराडउआ गाड प्रति रू १ वण –

५ जारकं घर्मांथ प्रदत्तं ॥ लोपकस्य जनु पापं गोहत्यामहत्तेण ब्रह्महत्यासतेन पापेन लिप्यते स ॥

[यह लेख सवन् १२०२ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था। इसमें नड्डूलडागिकाके महावीर मन्दिरमें आये हुए साधुओं-के लिए ठ० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है।]

[ए० इं० ११ पृ० ४२]

२३६

कुण्टन होसल्लि (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

बसवण्ण मन्दिरके समीप शिलापर

[यह लेख खराब हुआ है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय दसवें वर्ष, प्रभव संवत्सरमें यह लिखा गया था। नागिसेट्टि-द्वारा किसी जैन देवताको कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। कदम्ब-वंशीय तैल मण्डलेश तथा आचलदेवीका भी इसमें उल्लेख है।]

(रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६८)

२३७

नीरलगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यवर्ष १० में पुष्य शु० १३, गुरुवार, उत्तरायण संक्रान्तिके दिनका है। इसमें नेरिलगेके नालप्रभु मल्लगावुण्ड-द्वारा स्वनिर्मित मल्लिनाथ-जिनालयके लिए कुछ भूमि मूलसंघ-

सूरस्थ गण-चित्रकूट गच्छके हरिणन्दिदेवको अर्पित की जानेका उल्लेख है। मल्लगावुण्ड चतुर्थजातिका व्यक्ति था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ६१ पृ० १२४]

२३८

करगुदरि (जि० धारवाड, मैसूर)

सन् ११४८, कन्नड

[यह लेख पौष शुक्ल १, सोमवार, प्रभव संवत्सर, के दिन लिखा गया था। महावड्डव्यवहारि कल्लिसेट्टि-द्वारा करेगुदुरेमें विजयपार्श्वजिनेन्द्र मन्दिर बनवाया गया उसे कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है। यह दान सूरस्थ गण, चित्रकूट अन्वयके वासुपूज्यके शिष्य हरिणन्दिके शिष्य नागचन्द्र भट्टारकको दिया गया था। उस समय महाप्रचण्डदण्डनायक सोवरसका शासन हानुगल ५०० के प्रदेशपर चल रहा था तथा उसके एक भागपर मण्डलेश कदम्बवंशीय तैलका अधिकार था। इस समय चालुक्य प्रतापचक्रवर्ती जगदेकमल्ल सम्राट् थे।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६७]

२३९

हुलगूर (जि० धारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी – मध्य, कन्नड

[यह लेख अधूरा है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय पुरिगेरे तथा बेल्वोल प्रदेशोंपर महाप्रचण्डदण्डनायक बावणरस शासन कर रहा था। इसका सामन्त मणलेर कुलका जयकेशी था जो पुरिगेरेके राष्ट्रकूट पदका अधिकारी था। इसके समयकी एक जैन श्राविका सोलिकब्बेका इस लेखमें निर्देश है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ३२)

२४०

शृंगेरी (मैसूर)

शक १०७१ = सन् ११५०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलां-
२ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन
३ स्वस्ति श्री(श)क वर्षंगलु १०७१ ने प्रमोदू-
४ तसंवत्सरद वयिसाखमासद शुद्ध सतमि
५ स दन्दु श्रीकाणूर्गण मूलसघ
६ पुस्तकगच्छद···हरिय
७ मगल

[यह लेख पार्श्वनाथमन्दिरके मुखमण्डपके एक पाषाणपर है। वैशाख शु० ७, शक १०७१, प्रमोदूत संवत्सर इस तिथिका तथा मूलसघ-काणूर-गण-पुस्तकगच्छका इसमें उल्लेख है। लेख अस्पष्ट होनेसे इसका उद्देश आदि विवरण ज्ञात नहीं हो सकता।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० ११३]

२४१

अरसीबीडि (बिजापूर, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष ७६ = सन् ११५१, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके सामन्त वीरचाउण्डरस तथा उसकी पत्नी देमलदेवी-द्वारा पौष व०-७, बुधवार, चालुक्य विक्रम वर्ष ७(६)के दिन मूलसघ-देशियगणके आचार्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र पण्डितदेवको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ३३ पृ० ४३]

२४२-२४३

छतरपुर (मध्यप्रदेश)

स० १२०८ = सन् ११५१, सस्कृत-नागरी

[ये दो लेख लखनऊ म्युजियमकी दो मूर्तियोके पादपीठोपर है। ये मूर्तिया छतरपुरसे प्राप्त हुई थी। सुविधिनाथ तथा नेमिनाथकी इन मूर्तियोकी स्थापनातिथि आषाढ शु० ५, गुरुवार, स० १२०८ थी ऐसा लेखमें कहा है।]

[मे० आ० स० ११ (१९२२) पृ० १४]

२४४

स्टेट म्युजियम, भरतपुर (राजस्थान)

स० ११०९ = सन् १०५३, सस्कृत-नागरी

[इस लेखमें ज्येष्ठ शु० (?) रविवार, सवत् ११०९ के दिन पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लेख मूर्तिके पादपीठपर उत्कीर्ण किया है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६३ पृ० २१]

२४५

शेडवाल (बेलगांव, मैसूर)

शक १०७५ = सन् ११५३, कन्नड

[यह लेख बसवण्णमन्दिरमें लगा हुआ है। इसमे सेणिग कोत्तलिद्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ करोके उत्पन्नके दानका उल्लेख किया है। तिथि चैत्र शु० ५, रविवार, श्रीमुख सवत्सर शक १०७८ ऐसी दी है। किन्तु तिथि आदिकी गणनानुसार यह शक १०७५ का लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १८७ पृ० ३६]

२४६

वेलूर (मैसूर)

शक १०७५ = सन् ११५३, कन्नड

१ निश्शेषशास्त्रवाराशिपारगैः । श्रीवर्धमानस्वामिगल धर्मतीर्थ प्र –
२ भद्रबाहुभट्टारकरिं । भूतवलिपुष्पदंतस्वामिगलिंद । एकसंधि-
सु(मतिगलिंद अ) –
३ कलंकदेवरिं । वक्रग्रीवाचार्यरिंद । वज्रणंदिभट्टारकरिंद
सिंहणं(दि कनक-)
४ सेन वादिराजदेवरिं । श्रीविजयदेवरिं । शांतिदेवरिं पुष्प-
सेन(देवरिं ।)
५ अजितसेनपंडितदेवरिं । कुमारसेनदेवरिं । मल्लिषेण मलधा-
रि(देवरिं)
६ (श्रु)तकीर्ति श्रीपाल वरवाणिश्रीपालं विरुद्धवादिमदविस्फालं ॥
तमगे –
७ (अ)मर्दत्ति धरेगेदडे तम्म मुखदोल् पद्मकवाराशिविभ्रममापो
८ न्नम कीर्त्तिपडिसित्तु पेंपिनेसकं श्रीपालयोगीन्द्रर ॥ आवन
विषयमो
९ (ग)द्यपद्यवचोविन्यास निसर्गविजयविलासं । कश्चिद् वाद-
विनोदकोविद ·
१० दक्ष कश्चन कश्चनापि गमको वाग्मी पर कश्चन । पांडित्ये
सुचतुर्विधेपि निपुण श्रीपालदेव पुनस्तर्कव्याकरणागम-
११ प्रवणश्रीस्त्रैविद्यविद्यानिधि । अवर सधर्मर् । वर्गत्यागद
सूचितमार्गोपन्यासदलम मानुंडियक्कामर्गगवरिदे-
१२ नक्के निरर्गलमादत्तनन्तर्वीर्यव्रतियोल् ॥ आ श्रीपालत्रैविद्यदेवर
शिष्यर् ॥ श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापतिपदकमलारा-

२५५

श्रृंगेरी (मैसूर)

शक १०८२ = सन् ११६०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं (।)
२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (॥)
३ स्वस्ति श्रीमत् सकवर्ष ड १०८२
४ विक्रमसंवत्सरद कुम्भ शु-
५ द्ध दशमि बृहवारदन्दु श्रीमल्लिदुगोड
६ विजयनारायण शान्तिसेट्टिय पुत्र वा-
७ सिम्मेट्टियर अक्क सिरियवेम्मेट्टियर स-
८ गलु नागवेमेट्टियिर मगलु सिरिय-
९ लेमेट्टितिग हेम्माडिमेट्टिगं सुपुत्रन-
१० प्प मारिसेट्टिं परोक्षविनयक्के मा-
११ डिसिद बसदिगे बिट्ट दत्ति केरेय केलग-
१२ ण हिरिय गद्देय बमदिय बडगण होम-
१३ यु मडियु होलेयुं नडुवण हुडुविन होरद
१४ मण्णु कण्डुग सुल्लिगोड अरुगण्डुग मण्णु
१५ वणजसु नानदेसियु बिट्टय
१६ मलवेगे हाग हज हात्तिय मल
१७ · ·ले मेलम्मिन मारुक्के हागसु
१८ मत्तं पोत्तोब्बलुप्पु हेरिगय्बत्तेले अरिसिनद मलवेगे बीसक्के बिट्ट
नपिन्दे तप्पिदवलु गगेय-
१९ लु माडर कविलेय कोण्ड पातक

[यह लेख पार्श्वनाथमन्दिरके सभागृहमें है। इनकी तिथि शक

१०८२, विक्रमसवत्सर, कुम्भ माम शु० १० गुरुवार ऐमी है। इस दिन इस मन्दिरके लिए कुछ भूमि तथा व्यापारियो-द्वारा कुछ करोका उत्पन्न दान दिया गया था। यह मन्दिर हेम्माडिसेट्टिकी पत्नी मिरियवेके पुत्र मारिसेट्टिकी स्मृतिमें वनवाया गया था। मन्दिरके गर्भगृहकी पार्श्वनाथ-मूर्तिके पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—श्रीमत्-पारिसनाथाय नम ।]

[ए० रि० मैं० १९३२ पृ० १२२, १२५]

२५६

वावानगर (विजापूर, मैसूर)

शक १०८३ = सन् ११६१, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा विज्जणदेवके समय शक १०८३, विक्रम सवत्सरका है। इसमें मूलसघ-देसिगणके मगलिवेडके आचार्य माणिक्य-भट्टारकका तथा मैलुगि नामक शासकका उल्लेख है। इसने कन्नडिगेके जैन वसदिको कुछ दान दिया था।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ पृ० १३० क्र० ई १२०]

२५७

गुत्तल (धारवाड, मैसूर)

शक १०(८४) = सन् ११६२, कन्नड

[यह लेख गुत्त वशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यरसके समय पौष शु० १५, सोमवार, शक १०(८४) का है। इसमे केतिसेट्टि-द्वारा निर्मित पार्श्वदेवमन्दिरके लिए राजा-द्वारा भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। पुस्तकगच्छके मलधारिदेव तथा सोमेश्वरपण्डितदेवका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई ५१ पृ० ९६]

२५८

हालुगुड्डे (मैसूर)

शक १०८४ = सन् ११६२, कन्नड

१ नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्त-म्भाय शम्भवे ॥ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्द

२ अशेषमहामण्डलेश्वरनुत्तरमधुराधीश्वर पट्टिपोम्बुच्चपुरवरेश्वर पद्मावतीलब्धवरप्रसाद मृगमदामोद सन्नत-

३ सकलजनस्तुत्य नीतिशास्त्र-विरदसर्वज्ञ-नामादिप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वर प्रतापभुजबल

४ शान्तरदेवरु सान्तलिगेसासिरम सुखसकथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपच-

५ महाशब्द महाप्रचण्डकुमार वेदण्डपंचानन रिपुकुमारतारक-षडाननं अरसकगाल विजयलक्ष्मीलोल श्रीमतु-

६ होम्बुगुन्दद वीररमर मेलुसान्तलिगेयुमं अग्रहारमुम सुखदि-नालुत्तमिरं शकवर्ष १०८४ नेय चित्रभानुसंवत्सरद

७ वैशाख सुद १० बडुवारदन्दु कटद दण्डु अलिय बम्मणेयनुं पाण्ड्यरसनुम्बलिगारनु समस्तसाधन वेरसि बूरलु बिट्टु

८ बन्ति बहल्लि नेल्लिवडेयलु जिनपादशेखर सन्धिविग्रहि माचि-राजन ॥ कं० तलपारिनायकगे पुलेयल् बोप्पेयब्बे नायन्निप्ति

९ सगं भूवलयदोल् अधिकं पुट्टिद कलिगल भुखतिलकं गोग्गि-सण्डन्देव । रूपिनालु काममन्निस कूर्पिनोला नरतनूज अभिमन्यु

१० तां वेर्प तनक्कीवेडेयोलु नोर्पडे कलि गोग्गि कल्पवृक्ष जगदोल् धुरदोल् अरातिभूभुजन्नन्तघटिदम्मकगाल वीर

११ नलक्केर्यि वेममे गोग्गणन्तिरिवहल्लि विर्द वीरर नोरेनेत्तरि नेणन रणदद दिण्डेगरलुगलिं सयकरं पुने विक्रमं कलिग ··

१२ ना जगदेकवीरन । अणियरमोड्डिदड्डणद वीररनान्तिसुतिर्पं बिल्लु
वल्लुणिय तुरग साधनमनान्तिरिवल्लि महासम
१३ (ने)णमय खण्ड दिण्डि नोरेनेत्तर कार्पुरमन्दु नोर्पोडिनणकमो
गोग्गियान्तिरिद विक्रममाहवरगभूसियो (ल्)
१४ कलहदोलान्त वीरचतुरगबलगलनान्तु गोग्गि तोल्बालघट्टिन्दे
तूल्दिरियं घिदरिसेनेय लाहिताम्बुर्विं पलवु मिरंगल •
१५ रवड बोलोप्पिरे वीररट्टेगल् तोलतोलगन्दु तल्तिरिव मम्भ्रम
सगररगभूलियोल्
१६ णमय लोहितवारि नेणद केसदगल कुणिवट्टेगल् पुन्डडिटेन-
णकमो विक्रमद
१७ बागलोन्दु तिरुविं बिड्डवागलु नूरु परियं सायिरवरिय
नेड्डवल्लि कोटियेने पोर्डवियोल
१८ रु ॥ तरिसन्दोड्डिदरातिय मरुवक्रमनान्तु गोग्गि यिरियल्
धुरदोलु परिढकेयोलु मह
१९ दलव ॥ नायकतन मुम्बरिसिद नायकरिडिरागि गोग्गियोलु
तागुडलु सायकदिनेच्चु तू
२० देवरदंन पेल्लुवे ॥ मामंलेदोड्डिदन्यनृपसैन्यपयोधिगे वीरमूभुज
नूर्मडि वाडवानल
२१ नोर्पुंडु कूर्मनराज्ञमेम्बुरिय नालगेगल् बिडेयट्टियेवेदु मुम्म-
लियायतु वैरिव
२२ कृताञ्जनो ॥ धुरदोलतिसेलेय निर्भरमिरियल् गोग्गि वैरिवि-
क्रान्तसरल् मरदिन् तनुवनुच्चा
२३ दोला सिन्धुसुतन पोल्त ॥ सन्ततमोड्डि निन्दरिवलाल्गल-
नान्तिरिवल्लि वैरिविक्रान्तसरालिगल् तनुवनुच्चा
२४ प्रदोल् ॥ सन्तनसूनुवेन्तु सरलैयेयोलोप्पिदनन्ते गोग्गि
विक्रान्तमनासेवट्टु सरलोट्टिदनाहु •

२५ ˙ योल् ॥ मगरवोलिरिद वीरमं श्टगारममक्केवत्त गोग्गिय तम्मुल्मंगवोल् इट्टयूडि निलिपागनेयर्

२६ ˙˙(अ)मरावतियं ॥ अन्तु तलप्रहारिनायकन मग गोग्गिय-नायक कटकमनान्तिरिद्दु तुमुल

२७ ˙˙˙मम्मान्तरनेनिसिद श्रीवल्लभदेवनग्रपुत्र प्रतापभुजबल मान्तर-मेनिम्पिद तैलपदेवरु विद्दियम्मम्मन पुत्र श्रीमतु

२८ रु तम्मरसर हेम्मल्लु (?) गोट्टनेन्दु (?) हालुगुड्डेय त्रिभोगा-भ्यन्तरसिद्धियागि कल्लु नट्टु कारुण्यं गेय्दु कोट्ट होस

२९ ˙ वंर मने बडि (?) डविन कैयोलगे हांड कैय मक्कि (?) सहितमागि कोट्टरु ॥ मगल महा श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० १०, बुधवार, शक १०८४, चित्रभानु संवत्सरके दिन लिखा गया था । पट्टिपोम्बुच्चके मान्तरवंशीय राजा श्रीवल्लभदेवके पुत्र तैलपदेव-द्वारा हालुगुड्डे ग्राम दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है । तलप्रहारि नायकके पुत्र सेनापति गोग्गिकी पाण्डयरसके विरुद्ध लडते हुए मृत्यु हुई थी । गोग्गिके कुटुम्बियोंको यह ग्राम दान दिया गया था । लेखमें तैलपदेवको पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह विशेषण दिया है तथा गोग्गिको जिनपादशेखर कहा है । तैलपदेवके अधीन सेलु-सान्तलिगे प्रदेशके शासक वीररसका भी उल्लेख किया गया है ।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ७४]

२५९

एकसम्बि (बेलगाँव, मैसूर)

शक १०८७ = सन् ११६५, कन्नड

[यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके पुत्र विजयादित्यके समय-का है । रट्टवंशीय कत्तम (कार्तवीर्य) का सेवक मारगौड था । इसकी

वंशपरम्परा इस प्रकार दी है – मारगौंड – आचगौंड – होल्लिगौंड – जिन्नण, कालण तथा मद्दुवण। इनमें जिन्नण गण्डरादित्यका सेनापति था तथा कालण विजयादित्यका। कालणकी पत्नी लच्छब्बे थी तथा उसे तीन पुत्र थे – जिन्नण, आचण तथा रामण। कालणने एक्कसम्बुगेमें नेमिनाथबसदि बनवायी, तथा उसके लिए यापनीय संघ – पुन्नागवृक्षमूलगणके महामण्डलाचार्य विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी। विजयकीर्तिकी गुरु-परम्परा यह थी – मुनिचन्द्र-विजयकीर्ति-कुमारकीर्ति त्रैविद्य-विजयकीर्ति (प्रस्तुत)। इस मन्दिरकी कीर्ति सुनकर राजा कार्तवीर्यने भी इसके दर्शन किये तथा फाल्गुन शु० १३ शक १०८७ को विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ४८]

२६०

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११६५, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा बिज्जणदेवके राज्यवर्ष १०, पार्थिव संवत्सरमें (?) मासके शु० ५, गुरुवारके दिन लिखा गया था। पानुंगल्लु (वर्तमान हानगल) के कलिदेवसेट्टि-द्वारा चतुर्विंशति तीर्थंकरमूर्तिकी प्रतिष्ठा तथा मन्दिरके निर्माणका इसमें उल्लेख है। इसके लिए नागचन्द्र भट्टारकको कुछ दान दिया गया था। हानुगल नगर तथा कलिदेवसेट्टिकी विस्तृत प्रशंसा की है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०७ पृ० २५]

२६१

अरसीबीडि (विजापूर, मैसूर)

राज्यवर्ष १२ = सन् ११६७, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा भुजबलमल्लके राज्यवर्ष १२, सर्वजित

संवत्सरमें पुष्य शु० १४, सोमवारके दिन सिन्द कुलके विट्टरसके पुत्र होलरस द्वारा गुणवेडगिय बसदिके लिए कुछ करोंसे उत्पन्न दान देनेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ४० पृ० ४६]

२६२

नदिहरलहल्लि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[इस लेखमें कलचुरि राजा बिज्जलदेवके समय शक १०९० सर्वधारि संवत्सर, चैत्र पूर्णिमा, सोमवारके दिन जैन साधु-साध्वियोंके आहारदानके लिए कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५८ पृ० १५७]

२६३

हलसंगि (विजापुर, मैसूर)

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[इस लेखमें शक १०९० में चन्द्रग्रहणके समय पार्श्वजिनालयके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८, क्र० ई० ८५ पृ० २०१]

२६४

हिरेमन्नूर (धारवाड, मैसूर)

शक १०९१ = सन् ११७०, कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० ५, गुरुवार शक १०९१ विरोधि संवत्सरका है। इसमें सिन्द कुलके महामण्डलेश्वर चाउण्डरस-द्वारा हिरियमणिगुन्दके जैनशालाके अधिष्ठायक वासवोजकी प्रार्थनापर कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ४ पृ० ८०]

२६५

विजोलिया (राजस्थान)

संवत् १२२६ = सन् ११७०, संस्कृत-नागरी

१ सिद्धम् ॥ ॐ नमो वीतरागाय । चिद्रूप सहजोदित निरवधि ज्ञानैकनिष्ठापित नित्योन्मीलितमुक्तसत्परकल स्याद्वादविस्फारितं । सुव्यक्तं परमाद्भुत शिवसुखानन्दास्पदं शाश्वत नौमि स्तौमि जपामि यामि शरण तज्ज्योतिरात्मो(स्थि)तं ॥ ॥ नाम्न गत कुग्रहमग्रहो न नो तीर्थतेजा

२ नैव सुदुष्टदेहोऽपूर्वो रविस्तात् स मुदे वृषो व ॥२॥ [स] भूयाच्छ्रीशाति शुभत्रिभवभगीभवभूर्ता विमोर्यस्यामाति स्फुरितनखरोचि करयुग । जिनत्राणामेषामखिलकृतिनां मगलमयीं स्थिरीकर्तुं लक्ष्मीमुपरचितरज्जु व्रजमिव ॥३॥ नासाश्वासेन येन प्रबलबलभृता पूरित पाचजन्य

३ वरदलमलि(नीपाद)पद्माग्रदेशे । हस्तांगुष्ठेन शार्ङ्गं धनुरतुलबल कृष्णमारोप्य विष्णोरंगुल्या दोलितोयं हलभृदवनित तस्य नेमेस्तनोमि ॥४॥ प्राशुप्राकारवातात्रिदशपरिवृढव्यूहरुद्धावकाशां वाचाला केतुकोटि(क्व)णदनणुमणीकिंकिणीभि समतात् । यस्य व्याख्यानभूमामहह किमिदमित्याकुला कौतुकेन प्रेक्षते प्राणभाज

४ (स भुवि) विजयतां तीर्थकृत् पार्श्वनाथः ॥ ५ ॥ वर्धता वर्धमानस्य वर्धमानमहोदय । वर्धता वर्धमानस्य वर्धमान(महो)दय ॥६॥ सारदा सारदा स्तौमि सारदानविसारदा । भारतीं भारती भक्तभुक्तिमुक्तिविशारदां ॥७॥ नि प्रत्यूहमुपास्महे जिनपतीनन्यानपि स्वामिन श्रीनाभेयपुर सरान् परकृपापीयूषपाथोनिधीन् । ये ज्योति परमागभाज-

५ ननया मुक्तस्मनामा(श्रि)ना श्रीमन्मुनिलिनिन विर्नास्तनतटे
हार्गश्रिद विक्रनि ॥८॥ मन्दाना हृदयाभिरामवम्मनि मद्धर्म-
(म्मं)स्थिनि कर्मोन्मन्नम्मंगनि शुमननि. निर्वाव(र्वा)र्वा-
दूर्थनि. । जीवानानुग्रहाग्रगणगशि श्रेय श्रिया सम्नृनि.
देपान्ते मवम्भूनि शिव(म)नि जैने चनुर्विंशनि ॥ ९ ॥
श्रीचाहमानक्षिनिगजवंश: पोर्वोप्यदूर्वो न जडावनद्ध । मिन्नो
न चां-
६ (गो न च) ग्रयुक्तो नो नि फर मारयुनो ननो नो ॥१०॥
लावण्यनिर्मलमहाज्वलिनांगयष्टिरच्छोच्छलच्छुचिपय परिधानभा-
(श्री । टत्तुं)गपर्वतपयोधरमाग्भुरना शाकमराजनि जनीव
ननोपि विष्णो. ॥११॥ विप्र श्रीवत्सगोत्रेमूदहिच्छत्रपुरे पुग ।
मामंनोननमामन्न. पूर्णनल्लो नृपस्नन ॥१२॥ नम्माच्छ्री-
जयराजविग्रहनृपो श्रीचन्द्रगोपेन्द्रको नस्माद्दु(ल)नगूवको शशि-
७ नृपो गूवाकसच्चंदनो । श्रीमद्वप्पयराजविंध्यनृपतो श्रीसिंह-
राड्विग्रहौ । श्रीमद्दुर्लभगुन्दुवाक्पनिनृपा श्रीवीर्यरामोऽनुज:
॥१३॥ (चामुंडो) वनिपोऽतिडत्र गणक्वर श्रीसिवटो दूम-
लन्नभ्राताथ ततोपि वोमलनृप श्राराजदेवीप्रिय । पृथ्वीराज-
नृपोथ नत्तनुमवो गसल्लदेवीविभुस्तत्पुत्रो जयदेव इत्यवनिप
सोमल्लदेवीपति ॥१४॥ हत्वा चच्चिगसिंधलाभिधयसोराजादि-
वीरत्रयं ।
८ क्षिप्रं क्रूरकृतांतवक्त्रकुहरे श्रीमार्गदुर्दान्वित । श्रीरत्मो(ल्ल)ण-
दण्डनायक्वर· सत्रामरगागणे जीवन्नेव नियंत्रित करमके
येन · (क्षि)मान ॥१५॥ अर्णोराजोस्य सूनुर्हृतहृदयहरि मत्व-
वांगिष्टर्मासो गांर्मार्यौदार्यवर्य ममभवद(चि)रालब्धनम्यो न
दीन । तच्चित्रं जं न जाड्यस्थितिरभूत महापकंटनुनं मध्या न
श्रीमुक्तो न दोपाकरमचितरतिनं द्विजिह्वाविसेव्य ॥१६॥

९ यद्राज्य कुशवारणं प्रतिकृतं राजाकुशेन स्वय येनात्रैव नु चित्रमेतत् पुनर्मन्यामहे त प्रति । तच्चित्र प्रतिभासते सुकृतिना निर्वाणनारायणन्यक्काराचरणेन भंगकरण श्रीदेवराज प्रति ॥१७॥ कुवलयविकासकर्ता विग्रहराजोजनि (स्तु) नो चित्र । तत्तनयस्तचित्र य(च्च) अडक्षीणसकलक ॥१८॥ मादानस्व चक्रे मादानपत्रे परस्य मादान. । यस्य द्धयत्करवाल करतलाकलित

१० करतलाकलित ॥१९॥ कृतातपथमज्जोभूत् सजनो सजनो भुव । वैकुत कुतपालोगा(द्यत) वै कु(त)पालक ॥२०॥ जावालिपुर ज्वाला(पु)रं कृता पल्लिकापि पल्लीव । नड्डलतुल्य रोषान्नड्ल येन शौर्येण ॥२१॥ प्रतोल्या च वलभ्या च येन विश्रामितं यश. । ढिल्लिकाग्रहणश्रातमाशिकालाभलभित ॥२२॥ तज्ज्येष्ठभ्रातृपुत्रोऽभूत् पृथ्वीराज पृथूपम । तस्मादर्जितहेमाशो हेमपर्वतदानतः ॥२३॥ अतिधर्मरतेना-

११ पि पार्श्वनाथस्वयभुवे । दत्त मोराझरीग्राम भुक्तिमुक्तिश्च हेतुना ॥२४॥ स्वर्णाद्रिदाननिवहैर्दशभिर्महद्भिस्तोलानरैर्नगरदानचयैश्च विप्रा. । येनार्चिताश्चतुरभूपतिवस्तुपालमाक्रम्य चारुमनसिद्धिकरी गृहीत ॥२५॥ सोमेश्वराप्लब्धराज्यस्तत सोमेस्वरो नृप । सोमेश्वरनतो यस्माजनः सोमेस्वरोभवत् ॥२६॥ प्रतापलङ्केस्वर इत्यभिख्या यः प्राप्तवान् प्रोढपृथुप्रताप । यस्याभिमुख्ये वरवैरिमुख्या केचिन्मृता केचिदभिद्रताश्च ॥२७॥ येन श्रा-

१२ पार्श्वनाथाय रेवातीरे स्वयभुवे । सासने रेवणाग्रामं दत्त स्वर्गाय काक्षया ॥२८॥ छ ॥ अथ कारापकवशानुक्रम. ॥ तीर्थे श्रीनेमिनाथस्य राज्ये नारायणस्य च । अंभोधिमथनाद्देवश्रीर्मिर्वंकशालिभि. ॥२९॥ निर्गत प्रवरो वंशो देवदृंदे समाश्रित । श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापित शतमन्युना ॥३०॥ श्रीमालशैलप्र-

वरावचूल पूर्वोत्तरमत्वगुर सुवृत ।प्राग्वाटवंशोस्ति बभूव तस्मिन्
मुक्तोपमो वैश्रवणाभिधान ॥३१॥ तडागपत्तने येन कारित
१३ जिनमंदिर । (नीत्वा) आत्मा यशस्तत्स्वमेकत्र स्थिरतां गत
॥३२॥ यांचोकरच्छसुचित्रप्रमाणि व्याघ्रेरकाद्यौ जिनमंदिराणि ।
कीर्तिद्रुमारामसमृद्धिहेतोर्विभाति कन्दा इव यान्यमन्दा ॥३३॥
कल्लोलमांमलिनकीतिसुधासमुद्र.   मद्वुद्धिव शुरवधूधरणे
ध(रेशः) । ·· पाकारकरणप्रगुणान्तरात्मा श्रीचच्चुलस्वनतय
पदंभूत् ॥३४॥ शुभकरस्तस्य सुतोजनिष्ट शिष्टैर्महिष्ठैः परि-
कीर्त्यकीर्ति । श्रीजामटोसून तदगजन्मा यदगजन्मा खलु
पुण्यराशि ॥३५॥ मंदिर वर्ध-
१४ मानस्य श्रीनाराणकसंस्थित । भाति यत्कारित स्वीयपुण्य-
स्कंधमिवोज्वल ॥३६॥ चत्वारश्चतुराचारा पुत्रा· पात्र शुभ-
श्रिय· । अमुष्यामुष्यधर्माणोत्रंभूवुर्भार्ययोर्द्वयो ॥३७॥ एकस्या
द्वावजायेता श्रीमन्दास्वटपद्मटो । अपरस्या (सुतौ जातौ श्रामल्ल)-
श्मटन्डेमलो ॥३८॥ पाकाणा नरवरे वीरवेश्मकारणपाटव ।
प्रकाटेत स्वीयवित्तेन धातुनेव महीतल ॥३८॥ पुत्रौ पवित्रा
गुणरत्नपात्रौ विशुद्धगात्रौ ममशीलसत्यौ । बभूवतुर्लश्मटकस्य
जेत्रौ मुनींदुरामेद्वभिधौ प्रशस्तौ ॥४०॥
१५ पट्खडागमवद्धसौहृदमरा पड्जीवरक्षेश्वराः षड्भेदंप्रियवश्यता-
परिकरा पट्कर्मकल्पूसादराः । पट्खडावनिकीर्तिपालनपरा षाड्-
गुण्यचिंताकरा षडदृष्टयवुजभास्करा ममभव पट् डेशलस्या-
नजा. ॥४१॥ श्रेष्ठी दुद्यकनाथक प्रथमक श्रीमोमलो वीगडि-
डेवम्पशौ इलोपि सीयकवर श्रीराहको नामतः एते तु क्रमतो
जिनक्रमयुगांभोजैकभृंगोपमा मान्या राजशतैर्वदान्यमतयो
राजति जंबूलसवा ॥४२॥ हर्म्यं श्रीवर्धमानस्याजयमेरोर्विभूषणं
कारितं यैर्महाभागैर्वि-

१६ मानमिव नाकिना ॥४३॥ तेपामत· श्रियः पात्रं (मीय)कः श्रेष्ठिभूषण। मडलकरमहादुर्गं भूपयामास भूतिना ॥४४॥ यो न्यायांकुरसेचनैकजलद् कोर्तेर्निधान पर सौजन्याबुजिनो विकासनरवि पापाद्रिभेदे पवि। कारुण्यामृतवारिधेर्विलसने राकाशशाङ्कोपमो नित्य साधुजनोपकारकरणव्यापारबद्धादरः ॥४५॥ येनाकारि जितारिनेमिभवन देवाद्रिशृगोद्धुर चंचत्काचन-चारुदडकलशश्रेणीप्रभाभास्वरं। खेलत्-खेचरसुन्दरीश्रमभरं भजद् ध्वजोद्वीजनैर्धत्तेष्टापदशैलशृंगजिनभृतप्रौढामसत्रश्रियं ॥४६॥ श्रीसीयकस्य भार्ये द्वे

१७ सोनागश्रीमामटाभिधे। आद्यायास्तु त्रयः पुत्रा द्वितीयायाः सुतद्वय ॥४७॥ पचाचारपरायणात्ममतयः पचागमश्रीज्वका पचज्ञानविचारणासुचतुराः पचेन्द्रियार्थोंजयाः। श्रीमत्पचगुरु-प्रणाममनस पचाणुशुद्धव्रताः पचैते तनया गृही(तवि)नया श्रीसीयकश्रेष्ठिन ॥४८॥ आद्य. श्रीनागदेवोऽमल्लोलाकश्रोज्व-लस्तथा। महीधरो देवधरो द्वावेतावन्यमातृजो ॥४९॥ उज्वल-स्यागजन्मानौ श्रीमद्दुर्लभलक्ष्मणौ। अमूताभुवनोद्भासियशो दुर्लभलक्ष्मणौ ॥५०॥ गाभीर्यं जलधे स्थिरत्वमचलात्तेज-

१८ स्विनां भास्वत सौम्य चंद्रमसः शुचित्वममरस्रोतस्विनीत परं। एकैक परिगृह्य विश्वविदितो यो वेधसा सादर मन्ये बीजकृते कृत सुकृतिना सल्लोलकश्रेष्ठिन ॥५१॥ अथागमन्स (दिरमे) पकीर्त श्रीविं(ध्यव)ल्लीं धनधान्यवल्लीं। तत्रालु(लोके ह्यमितल्प-सुप्त) कश्चिन्नरेश पुरत स्थित स ॥५२॥ उवाच कस्त्व किमिहाभ्युपेत कुत स त प्राह फणीश्वरोह। पातालमूलात्तव देशनाय (श्री) पार्श्वनाथ स्वयमेष्यतीह ॥५३॥ प्रातस्तेन समुत्थाय न किंचन विवेचित। स्वप्नस्यांतर्मनोभावा यतो वातादिदूपिता ॥५४॥ लोला-

१९ क(स्य) प्रियास्तिस्रो बभूवुर्मनस प्रिया । ललिता कमलश्रीश्च लक्ष्मीर्लक्ष्मीसनामय ॥५५॥ तत स मक्तां ललिता बभापे गत्वा प्रियां तस्य निशि प्रसुप्तां । शृणुष्व भद्रे धरणोहमेहि श्री (पार्श्वनाथ खलु द)र्शयामि ॥५६॥ तथा स चोक्तो (यत्त्व न हि) सत्यमेतत् । श्रीपार्श्वनाथस्य समुद्धृतिं स प्रासादमर्चां च करिष्यतीह ॥५७॥ गत्वा पुनर्लोलिकमेवमूचे भो भक्त शक्तानुगतातिरिक्त । देवे वने धर्मविधौ जिनोष्टौ श्रीरेवतीतीरमिहाप पार्श्वं. ॥५८॥ समुद्धरेन कुरु धर्मकार्यं त्व कारय श्रीजिनचै-

२० त्यगेहं । येनाप्स्यसि श्रीकुलकीर्तिपुत्रपौत्रोरसतान-सुखादिवृद्धिं ॥५९॥ त(देतन्नी) माख्यं वनमिह निवासो जिनपतेस्त पूते प्रावाण. शठकमठमुक्ता गगनतः । सदारा(म) (शश्वत्स) दुपचयत कुडसरितास्तदत्रैतत् स्थान·· (नि)गमं प्रायपरम ॥६०॥ अत्रास्त्युत्तमसुत्तमाद्रिसिखरं साधिष्ठमचोच्छ्रितं तीर्थं श्रीवरलाइकात्र परमं देवोतिमुक्ताभिध । सत्यश्चात्र वटेश्वर सुरनतो देव कुमारेश्वरः सौभाग्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरो मार्कंडरिच्छेश्वरौ ॥६१॥ सत्योंवरेश्वरो देवो ब्रह्ममहेश्वरावपि कुटि-

२१ लेशः कर्करेशो यत्रास्ति कपिलेश्वर ॥६२॥ महानाल-महा का(लम)रयेश्वरसंज्ञका. श्रीत्रिपुष्करता प्रासा(संति) त्रिभुवनाचिताः ॥६३॥ कीर्तिनाथश्च (केदार) मिस्वामिन· । संगमेश पुटीशश्च मुखेश्वरवटेश्वराः ॥६४॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वरगयेश्वरा. । (गगाभेदश्च) सोमेश. गगानाथत्रिपुरातका. ॥६५॥ सस्नात्री कोटिलिंगानां यत्रास्ति कुटिला नदी । स्वर्णजालेश्वरो देव सम कपिलधारया ॥६६॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न दुर्भिक्षमवर्षणं । यत्र देवप्रभावेन कलि-

२२ पंकप्रधर्षणं ॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंगं स्वयंभुवं ।

तत्र कोटीश्वरे तीर्थे का श्लाघा क्रियते मया ॥६८॥ इत्येवं · ·
कृत्वावतारक्रिया। कर्ता पार्श्वजिनेश्वरोत्र कृपया सोधाद्य वासः
पतेः शक्तेर्वैक्रियिक. श्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रबोध प्रभुः॥६९॥ इत्या-
कर्ण्य वचो विभाव्य मनसा तस्योरगस्वामिनः स प्रातः प्रतिबुध्य
पार्श्वमभित क्षोणीं विदार्य क्षणात्। तावत्तत्र विभुं ददर्श
सहसा नि.प्राकृताकारिण कुडाभ्यर्णत एव धाम दधतं स्वायभुव
श्रीश्रितं ॥७०॥

२३ नासीद्यत्र जिनेन्द्रपादनमन नो धर्मकर्मार्जनं (न स्नानं) न
विलेपन न च तपो ध्यानं न दानार्चनं। नो वा सन्मुनिदर्शनं
(न) · ॥७१॥ तत्कुडमध्यादथ निर्जगाम श्रीमीयकस्यागमनेन
पद्मा। श्रीक्षेत्रपालस्तदथाम्बिका च (श्रीज्वा)लिनी श्रीधरणोर-
गेंद्र ॥७२॥ यदावतारमकार्षीत्तत्र पार्श्वजिनेश्वरः। तदा नागह्रदे
यक्षगिरिस्तत्र पपात स ॥७३॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं
लक्ष्मणब्रह्मचारिण। तत्राहमपि यास्यामि यत्र पार्श्वविभुर्मम
॥७४॥ रेवतीकुण्ड-

२४ नीरेण या नारी स्नानमाचरेत्। सा पुत्रं भर्तृसौभाग्य (लक्ष्मीं
च) लभते स्थिरं ॥७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र
एव वा। रेवतीस्नानकर्ता य. स प्राप्नोत्युत्तमां गतिं ॥७६॥
धन धान्य धरा धाम धैर्यं धौरयतां धियं। धराधिपतिसन्मान
लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलां ॥७७॥ तीर्थाश्चर्यमिद जनेन विदित
यद्गायते सांप्रत कुष्टप्रेतपिशाच-कुज्वररुजाडीनागगंडापह,
संन्यास च चकार निर्गतभय घूकसृगालीद्वय काली नाकमवाप
देवकलया किं किं न संपद्यते ॥७८॥ श्लाघ्यं जन्म कृत धन
च सफलं नीता प्रसिद्धिं मतिः।

२५ सद्धर्मोपि च दर्शितस्तनुरुहस्वप्नोर्पितः सत्यता स 'दृष्टिदूषित-
मना सद्दृष्टिमार्गे कृतो जै(ने) · ना श्रीलोलकश्रेष्ठिनः ॥७९॥

तत्पुत्रो पाल्हणो भुवि । तदंगजेनाहडेनापि निर्मापित जिनमंदिरं ॥६०॥ नानिग. पुत्रगोविंदपाल्हणसुतदेल्हणौ । उत्कीर्णा प्रशस्तिरेषा च कीर्तिस्तम्भ प्रतिष्ठितं ॥६१॥ प्रसिद्धिमगमद्देव काले विक्रमभास्वत षड्विंशे द्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥६२॥

२६ (तृ)तीयायां तिथौ वारे गुरुस्तारे च हस्तकं । धृतिनामनि योगे च करणे तैतिले तथा ॥६३॥ (स) वत् १२२६ फाल्गुन वदि ३ कांवारेवणाग्रामयोरतराले गुहिलपुत्र रा० दाधरमहं वणसीहाभ्यां दत्त क्षेत्र डोहली १ खहुवराग्रामवास्तव्य गौडसोनिगवासुदेवाभ्यां दत्त डोहलिका १ आंतरीप्रतिगणके रायताग्रामीय महंतमलींबडिपोपलिभ्या दत्त क्षेत्र डोहलिका कणुवोझोलिग्राम सगुहिलपुत्र राव्याहरूमहतममाहवा---

३० (भ्या द) त्त क्षे (त्र) डोहलिका १ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिर्भरतादिभि । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फल ॥छ॥

[इस लेखका निर्देश जै० शि० स० के तृतीय भाग मे क्र० ३७४ पर हुआ है किन्तु उस समय इसे श्वेताम्बर लेख समझकर मूल पाठ नही दिया गया था । इसमें पहले २८ श्लोकोमें साभरके चौहान राजाओकी वशावली चाहुमानसे सोमेश्वर तक दी है । इसमें कुल ३१ राजाओके नाम है । इनमें अन्तिम दो राजाओने इस स्थानके पार्श्वनाथ मन्दिरको दो गाँव दान दिये थे---पृथ्वीराज (द्वितीय) ने मोराझरी गाँव और सोमेश्वरने रेवणा गाँव दिया था । तदनन्तर इस मन्दिरके निर्माताकी वशावली विस्तारसे ५१वें श्लाक तक दी है जो इस प्रकार है --

प्राग्वाटवशीय वैश्रवण (इसने तडागपत्तन, व्याघ्रेरक आदि स्थानोमें मन्दिर बनवाये) -- उसका पुत्र चच्चुल -- उसका पुत्र शुभकर--उसका पुत्र जामट (इसने नाराणक स्थानमें वर्धमान मन्दिर बनवाया)--उसकी दो स्त्रियोसे दो दो पुत्र हुए -- आम्बट, पद्मट, लक्ष्मट तथा देसल (इनने

नरवर नगरमे वीरजिनमन्दिर बनवाया) – लच्मटके पुत्र मुनीन्दु तथा रामेन्दु – देमलके पुत्र दुचक, मोमल, वीगडि, देवस्पर्श, सीत्रक तथा राहूक– मीयकने मण्डलकर दुर्ग विभूषित किया और नेमिनाथ मन्दिर बनवाया – उसकी स्त्रिया नागश्री तथा मामटा – नागश्रीके पुत्र नागदेव, लोलक तथा उज्वल – मामटाके पुत्र महीधर तथा देवधर – उज्वलके दो पुत्र दुर्लभ तथा लक्ष्मण । इनमें मीयकके पुत्र लोलकने यह मन्दिर बनवाया । मन्दिरके निर्माणका वर्णन ८७वें श्लोक तक किया है । कहा है कि लोलक तथा उसकी पत्नियाँ ललिता, कमलश्री और लक्ष्मी विन्ध्यवल्ली नगरमे थे उस समय धरणेन्द्रने स्वप्नमें लोलाक श्रेष्ठीको इस मन्दिरके निर्माणका आदेश दिया । तदनुसार जमीन खोदते हुए एक पार्श्वनाथमूर्ति मिली और उसके लिए लोलकने यह मन्दिर बनवाया । इस स्थानको वरलाइका तीर्थ कहकर यहाँके कई शिवमन्दिरोंका माहात्म्य भी इस लेखमे दिया है । यहाँके रेवतीकुण्डमें स्नान करनेसे कोढ आदि रोग दूर होनेका भी वर्णन है । लोलाकके गुरु जिनचन्द्रसूरि थे । इस लेखकी रचना माथुर सघके महामुनि गुणभद्रने की । इसे केशवने शिलापर लिखा और गोविन्द तथा देल्हणने उत्कीर्ण किया । यह कार्य फाल्गुन कृ० ३ सवत् १२२६ को सम्पन्न हुआ । अन्तमें इस मन्दिरको दानरूपमें प्राप्त कुछ जमीनोंका विवरण दिया है ।]

(ए० इ० २६ पृ० १०२)

२६६

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

सवत् १२२७ = सन् ११७१, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें शख चिह्न है जिससे प्रतीत होता है कि यह नेमिनाथकी मूर्तिका पादपीठ होगा । इसमें देशीगणके गुणचन्द्र, श्रीकीर्ति, रत्नचन्द्र तथा भावचन्द्रका उल्लेख है और गुर्जर जातिके वीन नामक व्यक्तिका भी उल्लेख है । समय सवत् १२२ (७) ।]

[रि० इ० ए० क्र० (१९५०-५१) १६१]

२६७

नदिहरलहल्लि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९(४) = सन् ११७३, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा रायमुरारि सोविदेवके समय श्रावण शु० (?) गुरुवार, शक १०९ (५), नन्दन सवत्सरका है। इसमें उल्लेख है कि दण्डनायक महेश्वरदेवके अधीन कर सग्रह करनेवाले अधिकारियोने गोट्टगडि स्थित नागगावुण्डकी बसदिके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान दिया। उस समय बनवासि प्रदेशपर कासिमय्य दण्डनायकका शासन चल रहा था।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई० ५९ पृ० १५२]

२६८

बोगादि (माड्या, मैसूर)

शक १०९५ = सन् ११७३, कन्नड

१ श्रीमत् पार्थिवकुलेचन्द्र यदुवशवार्धिवर्धनचन्द्र सोमसुजं ललना-
जनकामाभिरामन् वल्लाल ॥ दिग्गिमंगलु मदविह्वलगल मलुंकलु
कूर्मनिन्तोमॆयुं मोगमीर्यं भुजगाधिपं बहुमुख सारल्कु यार्सग-
मॆन्दुगुणोदभ्रमसभ्रलक्ष्यालसद्दोर्दण्डदोल् संतोष मिगे भूकामिनि
यिर्दल् श्वापदुलदि वल्लालभूपालन ॥ आ नृपनगण्यपुण्यं
मानसरूपादुर्दविन भुवनजन मानोन्नतकनकाचलन् आनतरक्षैक-
दक्षरत्ननिधानं ॥ महागमन्त्रकमनीयालवितसुरराजपूज्यचरणा-
क्यन् एनलु सचितकीर्तिपराक्रमप्रभावनन् एनिसि

२ माचिराज नेगल्दं ॥ वतुर्वि कामन(न)र्थिगीव गुणादि कल्पाद्रिय
हेमाचलम चारुचरित्रदिंदुदधिय गाम्भीर्यदिं स्थैर्यदिं कनकाद्रीन्द्र-

मनिंडनं विभवदिं गेल्डिदंना माचिराजनन् आर्मण्णि (सल्लापंर्
ई) विश्वंभरामागदोलु ॥ आ विभु माचिराजन मार्वं वल्लय्यन्
अय्यन् ई धरेगेल्ल काव गुणदिन् आतन् अदाव गुणगणदिन्
आतन् एणेयप्पनं ॥ अधिगमसम्यग्दृष्टियन् अधिगतसकलाग-
मार्थनं कविबुधमागधदीनजैनजनतानिधियं पोगलल्के वल्लर्
आर् वल्लय्यनं विरिदवन् ईयलु वल्लं सरणेंदडे करुणदिंदे कायलु
वल्लं पुरुषांतरमं वल्ल परिकिपडन्तल्ते·

३ ल नाडं वल्ल ॥ परकान्ताऊकजालकवके पर···दाराहरल्क्के
पानतरोत्तुगस्तनद्वन्द्वसुंदरमंगक्के परांगनाभुजलतासंश्लेषणकी-
डिसं निरत श्रो · वलदेव निर्ड परिहृतपरदार दीनांधनाथ···
विदितविशदकीर्तिविश्रुतोदारमूर्ति स जयतु वलदेव श्रीजिने-
न्द्रांघ्रिसेव· ॥ अन्ता वल्लाळमहीकांतन वरमन्त्रिवल्लभं वल्लय्य
सन्ततजिनपूजनेगागन्तुकम मो(ग)वडिय वसदिगे विद ॥

नीचेकी ओर

४ होरवार ओलवार मग्गदेरे काकवोचनहल्लिय थिनितर मत्तंतु
मनेसुक नेरे मलवत्तियसुंक विनित ॥ ··॥ वनपालम सुक-
वनितं मनुमार्गं मदनमूर्ति विभु वल्लय्यं मनमोसडु भोगवमदि-
योलु जिनपूजेगे भक्तियिंदिदा

५ दिदिन्तिदनेय्दे काव पुरुषंगायुं जयश्री दं कायदे कान्य
पापिगे वारणासियोल् एक्कोटिमुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाध्यरं
कोन्दुर्दोंदयशं पोर्दुगुमेंदु सारिदपुदीशैलाक्षरं धात्रियोल् ॥ विषं
न विषमित्याहु. देव–

६ स्वं विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकं ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरा· षष्टिर्वर्षसहस्राणि
विष्टायां जायते क्रिमिः ॥ मंगल

७ सामान्योय धर्ममेतुर्नृपाणा काले-काले पालनीयो भवद्भिः सर्वानेवान् भाविन. पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयो याचते रामचंद्रः ॥ स्वस्ति श्रीमन्महामंडलेश्वर त्रिभुवनमल्ल वीरगग बल्लालदेवरु दोरसमुद्रदल्लु सुखसंकथाविनोददिं राज्य गेयुत्त विरलु तत्पाद-पद्मोपजीवि महाप्रधान सर्वाधिकारि हेग्गडे वल्लय्य शककालं सासिरद् तोभत्तैदनेय विजयसंवत्सरद कार्तिक शुद्ध पचमि सोमवारदन्दु कालवोवनहल्लिसहितवागि बोगवदियल्लुळ्ळ समस्त-सुकव श्रीकरणजिनालयद श्रीपार्श्वदेवर् अष्टविधार्चनेगेंदु श्रीमदकलंकदेव(सिंहा-)

८ हासनस्थितरप्प श्रीपद्मप्रभस्वामिगळगे धारापूर्वक माडि कोटरु

(इस लेखमे होयसल राजा वल्लालके महाप्रधान हेग्गडे वल्लय्य-द्वारा भोगवदिके पार्श्वजिनालयके लिए अकलकदेवकी परम्पराके पद्मप्रभ स्वामी-को कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका निर्देश है। यह दान कार्तिक शु० ५, शक १०९५, विजयसवत्सर,के दिन दिया गया था। हेग्गडे वल्लय्य महाप्रधान माचिराजका भाव (ससुर या चाचा था)

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १५०]

२६९

सोगि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

१२वी सदी, कन्नड (वीरप्पके घरके आगे एक शिलाखण्डपर)

[इस लेखमे होयसल राजा विष्णुवर्धन वीरवल्लाल-द्वारा कार्तिक कृ० ५, गुरुवारको किसी जैन सस्थाको भूमिदान दिये जानेका निर्देश है।]

[इ० म० बेल्लारी २३७]

२७०

चिक्कहन्दिगोल (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११७५, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा सोविदेवके राज्यवर्ष 'जयसंवत्सरमें शङ्ख-जिनालयको दिये गये दानका वर्णन है। इस लेखकी रचना 'अनुपमकवि-कालिदास' हित्तिन सेनबोव-द्वारा की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० १५० पृ० १२]

२७१

कलसापुर (कडूर, मैसूर)

शक १०९८ = सन् ११७६, कन्नड

१ (घिस गयी है)

२ कैवल्यबोधेन्दिराधाम षोडशतत्त्व(तीर्थ)कर्त्तृं विमलज्ञानाश्रिय मत्सुखारामं माल्के विनेयसन्ततिगे नित्य शान्ति-

३ तीर्थेश्वरं ॥ (१) श्री स्वस्ति होयिसळवंशाय प्रतापार्जितकीर्तये। यदुवंशनृपान भूभृ-

४ ते ॥ (२) तदन्वयावतारमेन्तेन्डोडे ॥ मरसीजोदरनाभिपद्मजनज तत्पुत्रनन्तत्रियत्रिरुहांद्भूनब्बु-

५ धं पुरूरवने तज्ज तत्तनूजायुवायुरपत्य नहुष ययातिमहिप तत्सन्मनं नरेश्वरजा-

६ तं। यदु तत्कुल मलनृपं लोकोत्तमं पुट्टिद। (३) यादवरोळे होयिसळवेसराद्दु सळनिन्दे हुलि-

७ य मेळेयुण्डिडगेयाद्दु चिह्न वसन्ताद्दु सळे शशकपुरद वासन्तिकेर्यि ॥ (४) सळनृपनि य-

८ लियिं यदुकुलदोळ् पलम्बरोगेदर् अवरन्वयदोळ्। वलवद्-
विरोधिकुलिश जनियिसिदनेसेयेवि-

९ नयादित्य ॥ (५) घनमार्गानुगत जगतप्रणुतमित्रं मण्डलाग्र-
प्रतापनियुक्त रिपुभूपसन्तम-

१० समेद सज्जन नसन्तोपकर स्वयन्बुजनचक्राह्लादक पुट्टि
विनयादित्यनृपाल-

११ क यदुकुलोत्तुंगोदयार्क्रान्द्रदिं ॥ (६) विनयादित्यनृपालन कुळ-
वधुवेनिसि सिरियोळ्-

१२ वाणियोल तनगे केळेयोवन्दु बुधजनवेने केलियब्बरसि
सरसिजाननेनेयसेद्दळ् ॥ (७) मति केलियब्बरसिगमा-

१३ विनयादित्यनृपनिग पुट्टिदसुद्धतवैरिदर्पदलनोद्यतमयनयशौर्य-
शालियेरेयंगनृप ॥ (८)

१४ विनयादित्यावनिपालन सुतनेरेयंगं सगर्वित भू''निरत्यं
धर्मदीक्षागुरुविनतमहीभृत्समू-

१५ हैकरक्षावनधिप्रिय समस्ताश्रितनटनटीसिन्धमू कलनिव निजत-
सत्यवाणिमुखमणि मा-

१६ पुरनिर्मलाम्बोधसुतं हिमकरांचियन्ते सेचादरविय ४ातयं सरसिजम
मनोरमकुसुमंगलं कद-

१७ नयं मदन विद्दियागि ताने तोयदमृतद्दिनेदङ्ग निर्मिसिदनेन्नदे
केलदेय भूरमणन कान्तेय पेरत-

१८ नेळदिर् एचलदेविराणिय ॥ (९) अन्तेरेयंगमहीशन कान्तेगे
जनियिसिदरेसेव बल्लाळमहीकान्त विष्णुमहिपननन्तगुण

१९ नृपळ्ळामनुदयादित्य । (१०) अवरोधद्रुमनागियु बुधनिकाय-
स्तूयमानि श्री विशेषोन्नतियिन्दमु -

२० समनेनिप्पं सच्चरिताद्रि वगगाजलधौतनिर्मलकुलदप्तारिदर्पापहं
भुव 'विभव' श -

२१ श्रीविष्णुभूपालकं ॥ (११) जनियिसिद विष्णुमहीशन ल॰
विदनुपम नरसिंहावनिप नतरिपुभूपाल-निकायलला –
२२ टतटविघटितचरण देवनृसिंहन प्रियमहिषीपट्टदोलरेत्तु पट्टमहि-
षियें देचलदेवा कसल्लतागि
२३ राजीवदलाक्षि पल्लवनिभाधरे पाटलकण्ठि कोकिलारावे ॰ राजीव-
नल·· य । यनेयं तालिदिदल् ॥ (१२) कालनिभप्रत्त –
२४ जनरसिंहमहीपतिग मदमलालसयानेकम्बुनिभकन्धरे येचल-
देविग ॰ श्रीलकनेशन्नानेने पुट्टिदनूर्जित –
२५ पुण्यमूर्ति वल्लालनृपाल समदवैरिमहीभुजदर्पभंजन ॥ (१३)
क्रा···वादिधरावनितेय चातुर्यदि नोडी (?)
२६ निरमणि रमणीशकुलम श्रीयोलायशनुरत्यागदिं वन्दिवृन्द-
मनित्यानतसत्यदि चरितदि सन्ततमु तन्नोल् क्रमदिं निश्चल –
२७ मपूर्वं तळेद वल्लालभूपालक ॥ (१४) निजपादानत दित-
लक्ष्मीवल्लभ - ला ··मूर्ति विबुधाराध्य
२८ जगन्नेत्र नीरजमित्र स·· दे कान्तनेनिप प्रतापदेवं समस्त-
जगद्वन्द्यपदारविन्द·· रारा ॰ नल ॥ (१५) पुरहू (त)
२९ ख्यातभोगं शिखिनिभवनतेज यमावार्यशौर्यं नरवाहातोप ॰ ·वायु-
सत्रं धनाधीश्वरसं –
३० वर महेशप्रकटितमहिम लोकपालप्रभावान्तरनादं दिग्वधूमण्डन-
विशदयशं वीरवल्लालदेव ॥ (१६) भृगुगेणि व सराज
३१ हयद्विनिभसमारूढप्रौढियिन्दं मगदत्तं वेषदिन्दं द्विजपति कं
सत्वगुण प्रभूति
३२ राघवन् इनतनय त्यागदिं वाविभूपाल नदिदतप्रतिमनेनिसिद
वीरवल्लालदेवं ॥ (१७) स्वस्ति समधिगतपंच –
३३ महाशब्दमण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बर-
द्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि तलकाडुकोंगुणिव –

३४ नवासिवुच्छगिहानुंगलगोण्ड भुजबलवीरगंगनसहायशूर निश्श-
कप्रताप होय्सलवीरबल्लालदेवरसर् द्वारसमु –

३५ द्रदोल् सुखदि राज्यं गेयुतिर तत्पादपद्मोपजीविगल् मुनिमिद
श्रीमन्महावड्डव्यवहारि कचडेमय्य नति

३६ दय्वर गुरुकुलान्वय क्रमसंन्तेन्दडे ॥ विमलश्रीजैनधर्मक्रमल-
तोऽविनन्तोप्पुग मूलसंघ क्रमर्नाथं

३७ कोण्डकुन्दान्वयम नरगण देशि ' गच्छ क्रमदि तत' "वर्ध '
गेमेयें श्रीवधूटीरम –

३८ ण देवेन्द्रसैद्धान्तिक मुनियेसेद महोत्साहधामं ॥ (१८) तच्छिष्य
नाडे विधृतगुण वृषनन्दि मुनि कायो –

३९ त्सर्गगोण्डुपवासदिन्द चतुर्मुखाख्येयनान्दम् । (१९) अवरग्र-
शिष्यरोलग्रन्तटिं द्विजराजिकुमनवाङ्मदर्पद –

४० नावर्तिकीर्तिवृक्षनु श्रीगोपनन्दिपण्डितदेवर् ॥ (२०) जिनसमय-
यशश्चन्द्र जिनागमाम्भोनिधिप्रवर्धनचन्द्र जिनमुनिकु –

४१ वलयचन्द्र' जिनचन्द्र विबुधनिकरराकाचन्द्र' ॥ (२१) निरवद्य-
यशोधदर्शनचरणयुतर् माघनन्दिसैद्धान्तिकदेवरशि –

४२ ष्यरार् धामाश्रितनिरुपमधर्मेन्द्र रत्ननन्दिमुनीन्द्रर् ॥ (२२)
तत्सधर्मर संहिताखिलागमार्थनिपुणव्यारग्गाअसशुद्धि –

४३ यिं क सैद्धान्तिकतत्त्वनिर्णयवचोविन्यासदिं श्रुतिसख्य '
तयनार्थशास्त्रमरतालङ्कारसाहित्यदिरुद्दानूह

४४ बालचन्द्रमुनियं विद्याधर (२३) चक्रे श्रीमूलसंघ' पद्माकर-
- राजहंसो' 'निपुणप्रवराचतस' जीया –

४५ ज्जिनेन्द्रसमयार्णवपूर्णचन्द्रः क्रुधा. । (२४) यन्तेनिसिद
श्री हलाचार्यर गुड्ड देवी –

४६ उग्रयान्वयवारिधिचन्द्रमनु ' ग् अर्हन्म्य ' चरितनुं वरजैनसमय-
कुमुदेन्दु अन्यायार्जितधनम –

४७ नेयड़े कवडेमय्यन् अणुवन्तय्यम् ॥ (२५) वरसुगुणसमन्वित
कवडेमय्य तन्न ॰ पूज्ययशःमद्गुणि केतिसेट्टियुमुदात्त –
४८ प्रणयरेचिसेट्टिगमन्ता पूणुमसेट्टिगमिलासंस्तुत्य डेकव्वेग प्रियपुत्र
– प्रभु दाम'' सम्पूर्णमन्योदय
४९ अनुपम ॰ सेट्टि'' यदा कान्ते ॰ अनूनशौर्य निधि
५० '' नामादि'' अपूर्व ॰ जनविनुत जक्किसेट्टिय वनिते सु –
५१ ॰ हामि'' निय तलेदल् ॥ (२७) अवरात्मीयांद्भयपुण्योदय
५२ '' निखिलगुणक्कास्थान नमन पुण्य कुलवधु डेक-
५३ ॰ द्वितोदाचलव्सोनिघामं ॥ (२८) नीतिज्ञता दानधर्मपयो-
५४ धिचन्द्रम राह्मिनु' ॰ श्रंदानकल्पभूज विरो-
५५ तनुजोन्नत णिमेट्टिय ॥ (२९) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर
भुजबलवीरगंगनम्हायशूर नि शंकप्र-
५६ ताप होय्सलेश्वरमद शकवर्ष १०६८ नेय दुर्मुखिसंवत्सरद
उत्तरायणसंक्रमणदोल् अमरदानव-
५७ माडुवल्लि ॰ श्रीमन्महाव्ड्डव्यवहारि कवडमय्यन देविसेट्टिय
तां माडिसिद श्रीवीरवल्लालजिनाल-
५८ यद यकेलाहारदानक्क खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारक्कमेन्दु विन्नपं
गेय्यलवर
५९ ॰ गणद ॰ तंद श्रीमन्महामण्डलाचार्य वालचन्द्रसिद्धान्ति-
देवगे धारा-
६० पूर्वक वालचन्द्र ॰ होसनाडोलगण कोरटिकेरेयनद्र कालत्रा-
ल्लिगळो-
६१ कनादि ''नाचहल्लि मडवद मरियहल्लियोलगाद हल्लिगल
सीमासम्बन्धमेन्तेन्दोडे मू-
६२ वनाल ॰ म्यडु - रि - वक्य हलेयिलेय मोरडि तॅकलारडिगेरे
नैरित्य-

६३ ' यदोल् वायव्यदोल् नेरिलकेरेयोलगण माविनमर ईवर अरगल्ला '

६४ वहमु नगर मुन्ता वायव्य

६५ लाल तिगुल तेलुग कर्णाडग देश मुख्यमाद सु-

६६ ' द्रद नेरंपुलिय चिकहरिन्य केतलदेविय गडिय वाचलेश्वरदे सम-

६७ स्तनख श्रीशान्तिनाथदेवर 'कर कैंकर्यक्के विट्टायमेन्तेन्डोडे होय्सल नाडोल

६८ त्ति हेरिंगे हागवेरडु कत्तेय हेरिंगे हाग ओन्दु कुदुरे

६९ कर्पूरपट्टनूलण्ड-क्के हणवोन्दु श्रीगन्धद मालवेगे

७० हणनख वडिय मलवेगे हण नाल्कु येत्तिन मलवेगे हण वोण्

७१ हसुवेगे हाग वोन्दु पडसालेय गडिगे यरिसके हण वोन्दु आविडिव

७२ रल देविय गडिगे वरिसक्के हाग वोन्दु निच्च सेडिवत्त दवसद हेरिगे मान वोन्दु

७३ मेलसु इड हेरिंगे मान वोन्दु गणदोल् धारयर

७४ गेय तडियोल् शतसहस्रब्राह्मणर्गलंकारसमन्वित शतसहस्र-कपिलेगलं

७५ क्षेत्रदोलनिवर् ब्राह्मणरुमननितुकविलेगल कोन्द महापातक-नक्कु परिपालिपु

७६ गन्ते वर ' निर्मिरे धरेगे शिलाशासनाक्षरावलियेसंगु' ॥ स्वदत्ता

७७ हरत वसुन्धरा षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते क्रिमि ॥ सामान्योयं धर्मसे –

७८ · ·कनीयो भवद्भि । सर्वानेतान् भाविन पार्थिवेन्द्रान् भूयो-
भूयो याचते राम –

७९ य स्थलन्द चतुस्सीमेय निवेशनमेन्तेन्दोडे मूडलु हिरिय
राजवीडि मोडल्

८० ·य वलेयलु पश्चिमके नालविप्पत्तु वडगण मोडलोल
तेकलु अ ·

[यह विस्तृत लेख दुर्मुखि सवत्सर, शक १०९८ में लिखा गया था। इसके प्रारम्भमें होयसल वशके राजाओका कुलवर्णन वीरवल्लालदेव (द्वितीय) तक किया है। इनके समय देविसेट्टि नामक धनिकने वीरवल्लालजिनालय नामक मन्दिर बनवाया। मूलसंघ-देसिगण-कोण्डकुन्दान्वयके आचार्य बालचन्द्रकी प्रेरणासे यह कार्य हुआ। इस मन्दिरके लिए राजा वीरवल्लाल-ने कुछ गाँव तथा कुछ करोका उत्पन्न अर्पण किया था। बालचन्द्रकी गुरुपरम्परा देवेन्द्र सैद्धान्तिक – वृषभनन्दि-चतुर्मुख-गोपनन्दि-जिनचन्द्र-माघनन्दि-रत्ननन्दि-उनके गुरुबन्धु बालचन्द्र इस प्रकार दी है।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ३६]

२७२

कुब्बंगि (तुकूर, मैसूर)

१२वी सदी (सन् ११८०) कन्नड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना मूलसघ-देशीगण-पनसोगे शाखाके नयकीर्तिसिद्धान्त चक्रवर्तिके शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्रके उपदेशसे बम्मिसेट्टिके पुत्र केसरिसेट्टिने वेलूरमें की थी। (समय लगभग ११८० ई०)।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८३]

२८२

सोमपुर (मैसूर)

शक ११११ = सन् ११९२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलांछन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनं ॥ (१) जयति सकलविद्यादेवता —

२ रत्नपीठं हृदयमनुपलेप यस्य दीर्घ स देव (।) जयति तदनु शास्त्र तस्य यत् सर्वमिथ्यासमयतिमिरघातिज्योतिरेक नराणा (॥२)

३ द्रप्रदि सलनेम्बनाग पुलियं पोय्दा सल पोय्सल थोगं

४ पेलम्बरु राज्य गेयुत्तिपिनं । (३) विनयप्रतापसंस्थी जननाथो- चिनचरित्रयुगदि जगम जननयनवेनिसि नेगल्द विनया-

५ दित्य समस्तभुवनस्तुत्य । (४) आतगतिमहिमं हिमसेतुसमा-

६ ख्यातकीर्ति मन्मूतिमनोजातं मर्दितरिपुनृपजातं तनुजातनादने- रेयंगनृपं । (५) वलिदवनीपतिसम्पादितधर्मार्थ-

७ कामसिद्धियोलवनीवल्लभरातन तनयर् वल्लाल विष्टिदेवमुदया- दित्य । (६) भूवरसुगलोलं तां माविसे मध्यमनदागियु

८ नृगुणपद्मावदिनुत्तमनाद माविसवद्भूतजिष्णु विष्णुनृपाल । (७) मलेयं माधिसि माणद्दने तलवन काचीपुर कोयतू —

९ र् मलेनाटा तुलुनाडु नीलगिरिया कोलालमाकोंगु नङ्गलियु- चळगि विराटराजनगरं वल्लूरिवेल्ल दुर्वारदोर्वलदि

१० लीलेयि साध्यमादुवेणेयार् विष्णुक्षमापालनोल् । (८) येन- लाल्द चूडामणि ' हारमेने

११ किन्नरेश्वरशिरःप्रोत्तुग 'फणि ' गुणमणि

१२ सम्यक्तचूडामणिः आ विष्णुवर्धनंग ' येनिसिद लक्ष्मादेविगमुद्- भविसिदनी भूविश्रुत नरसिंहनाहव-

१३ सिंहं ॥ (९) पडेमातेम्बन्दु कण्डंगमृतजलधि तां गर्वदिं गण्ट-
वातं नुडिवातंगेननेम्बै प्रलयसमयदोळ् मेरेय मीरि बर्पा
कडलन्-

१४ न कालन्नन मुळिद कुलिकनन्न युगान्ताग्नियन्नं मिडिलन्नं
सिगदन्नं पुरहरनुरिगण्णनन्नर्नो नारसिंह । (१०) रिपुसर्पदर्प-
दावानलवहलशि-

१५ खाजालकालाम्बुवाहं रिपुभूपालप्रदीपप्रकरपटुतरस्फारझंझासमीरं
रिपुनागानीकतार्क्ष्यं रिपुनृपलिनी-

१६ षण्डवेतण्डरूप रिपुभूभृद्भूरिवज्र रिपुनृपमदमातंगसिंहं नृसिंहं ॥
(११) " पोगळ्द तीव्रप्रताप" गिदु पोगळ्दुद मा-

१७ ण्डोड शत्रुगात्रप्रगळद्रक्तप्रवाहप्रबलगुरुध्वानमुं शत्रुभूभृद्भूरि-
सन्दोहदाहप्रचुरचिटिचिटिध्वानमु निविक-

१८ र्पं पोगळुत्तिर्कुं नृसिंहप्रबल भुजबकाटोपम भात्रिगेल्लं ॥ (१२)
आ त्रिभुवन पट्टमहादेविगे सद्गुणचरित्रदिन्दं सीतादेविगे मि-

१९ गिलादेचलदेविगे बल्लाळदेवनुदयगेय्द ॥ (१३) कलिकाल-
क्षत्रपुत्रप्रबलतरदुराचारसन्दोहदिन्दं-पोलें पोर्दल् पेसि वेसत्तलव-

२० किद महाकान्तेय रक्षिसल्का जलजाक्षं ताने बन्दिन्तवतरिसि-
दवोल् वीरबल्लाळदेवं कुलजात्याचारसार नृपवरनुदयगेय्द-

२१ नाश्चर्यशौर्यं ॥ (१४) विनयश्रीनिधियं विवेकनिधियं ब्रह्मण्यन
पूर्णपुण्यननुद्दामयशोथियं जितजगत्प्रत्यर्थियं सर्वसज्ज-

२२ नसंस्तुत्यननुद्भवद्वितरणश्रीविक्रमादित्यन मनुजेशर् मलेराज-
राजननतें बल्लाळन पोल्वरं । (१५) उरिगण्णिं वेन्द चण्डा
तिपुर-

२३ मुरिदवोल् सुर्चुरिल्दास्वार्गं रि दन्दर भगिक भग्भग भग
चेडे चेल्चेल्चिटिलगद्दु पोर्देम्बरव कैगाण्मे दिक्पालकर् अलवलिय-

२४ ल् वीरवल्लालनिं (निं) दुरितत्तुच्छगियोडे रिपुनृपति पेल-
लुण्टे ॥ (१६ रणरंगागणशूद्रक नडेनोडिन्तुच्छंगि नुर्चलित्त

२५ नन्ञ्नणदि नोडे विराटराजपुर वोत्तुत्तायतु नुन्नाम्न संवुणरापोग-
नमात्रक नेरेवरिल्लेन्दन्तु वल्लालदोर्गुणव वाणिसलण्ण

२६ वल्लवरदारी भूरिभूचक्रदोल् ॥ (१७) विलयाद्रि येनिप मेवुण-
वलन 'निचयाविल मकराकुळवा यदुकुलपरितरग-

२७ तवायतु वन्दु' '' ॥ (१८) कन्डनदप्तारिरक्त कूडे हयखुर-
त्रिन्दा ' गेल्गिगेत्तगद था दोल् मुम्पेण पेणन वेत्ति-

२८ 'भूतालि पुण्यराशीकृतविपुलतल वीरवल्लालदेवं ॥ (१९)

२९ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ राजाधिराजपरमेश्वर
परमभट्टारक द्वारावतीपुरवराधीश्वर वासन्तिकादेवीलब्ध-

३० वरप्रसाद रिपुसम्मर्दनविनोद यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-
चूडामणि मग्नक्षत्रिय-

३१ मानमर्दन वीररिपुदर्पशर्पप्रझानिल श्रीमद्वीर्य पराक्रमैक-
प्रभाव । निरुपमात-

३२ स्थप्रताप नयविनयस्वभाव । सकलजनमत्याशीर्वाद । मुद्गर-
समरकेलिमम्प-

३३ क्त रिपुविजितादित्यप्रताप । सप्तांग विलास सरस्वती
' स्तम्बेरम राज-

३४ कण्ठीरव । पाण्ड्यकुल ' दण्ड । पल्लवकुलयशोविपिनदावानल ।
'''सिंहलसपालकुरंगकुलपलायनकार-

३५ ण कठोरनिजविजयदोर्दण्ड'' । सकलरिपुनृपकुल इत्यादि-
नामादि-

३६ समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमत्सार्वभौम सग्रामराम मिल्लमदिशा-
पट्ट ' धरित्रीपट्ट मलेराजराज मलेपरोल्गण्ड

३७ तलकाडु-गंगवाडि-नोलम्बवाडि-बनवासे - पानुंगल्-हुलिगेरे-हल-
सिगे-बेल्वल-तकवलि-तलियूगगोण्ड भुजबलवीरगं–

३८ गनेकागर्वार सनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदङ्कराममसहाय-
शूर निश्शंकप्रतापचक्रवर्ति श्रीवीरबल्लालदेवन सन्ध्यातनिजचतु-
रगबलं

३९ बेरसु सेवुणबलमेल्लमं वीरविलासमनेम्ब पट्टमानदिं तोल्दुलदुलियें।
सेवुणबलजलधि-बडवानलनेकागदि सप्तागसा–

४० म्राज्यमनलवडिसि राष्ट्रकण्टकर निर्मूलमं माडि कल्याणपर्यन्त-
मागि सुखसकथाविनोददिं राज्य गेय्युत्तमिरे

४१ तद्राज्यपूज्यमप्प राजधानि दोरसमुद्रदोलु श्रीमद्वादीभसिंह
तार्किकचक्रवर्ति श्रीपालत्रैविद्यदेवरसवर गुड्डगल् मा-

४२ रिसेट्टियु कण्णिसेट्टियु भरतिसेट्टियुमिन्तों नाल्वरु नानादेसियुं
नगरमु श्रीमदभिनवशान्तिनाथदेवर भव्यजिनालयमेनि-

४३ प नगरजिनालयम माडिसिद राजसेट्टियन्वयमुमाचार्यवलियु-
मेन्तेन्दोडे(।)श्रीमद्द्रमिलसंघेस्मिन् नन्दिसंघोस्त्य-

४४ रुगल (।)अन्वयो भाति निश्शेषशास्त्रवाराशिपारगै·(।।)श्रीवर्ध-
मानस्वामिगल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवल्लि गौतमस्वामिगलिं भद्रबा-

४५ हुस्वामिगलिं भूतबलिपुष्पदन्तस्वामिगलिं·· सुमतिभटारकरिन-
कलंकदेवरिन्द वक्रग्रीवाचार्यरिं वज्रनन्दिगलिं सिंहनन्दिगलिं
परवादिमल्लरिं

४६ श्रीपालदेवरिं श्रीहेमसेनरिं दयापालमुनीन्द्ररिं श्रीविजयदेवरिं
शान्तिदेवरिं पुष्पसेनदेवरिं चक्र-

४७ वर्ति श्रीवादिराजदेवरिं श्रीशान्तदेवरिं शब्दब्रह्मस्वामिदेवरिं
अजितसेनपण्डितदेवरिं मल्लिषेणमलधारिस्वामिगलिं

४८ श्रीपालत्रैविद्य गद्यपद्यवचोविन्यासं निसर्गं विजयविलास। तद-
नन्तरं श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापति-पद्मम-

४९ लाराधनालब्धबुद्धि सिद्धान्ताम्भोनिधान मृतास्वाद्···दीक्षा-
शिक्षासुरक्षा' ··ऋचाक्पतिनिपुण सन्तत मव्यसेव्य सोयं
५० दाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयतेवासुपूज्यव्रतीन्द्रः (॥) तदनन्तर
सुरराजेन्द्रमदेमदन्तचयदोल् डिग्गामि ' मन्दिरदोल् म-
५१ गंकराल वि लतमो हिमाद्रिकूटंगलोल् धरणीन्द्रोद्घकिरीटकूट-
तलदोल् वाग्देवि येन्तरिवल् श्रीमुनि वज्र-
५२ नन्दिय गमीरोदार वलसित ज-
५३ गल कोडिनोल् पोदल्देसेदु मन्दरमनेय्दे ' यशोलतेयें मुनि
वज्रनन्दिय
५४ इगडलन्नरुवलि वज्रनन्दिव्रतिया । ततृस-
५५ मयदोल् कुमारनन्दु ममस्तप्रभुगावुण्डगलि नाड कायु प्रताप-
चक्रवर्ति वीरवल्लाल
५६ देवनं काणल्वेडि वन्दिर्दल्लि अभिनवश्रीशान्तिनाथदेव ममष्ट-
विधार्चनेयुम पूजेयुमं ऋषियराहारदानमुमं
५७ कण्डु पिरिदुं सन्तस माडि देवर श्रीकार्यक्के नाडगौण्डुगल्
तम्मोलैकमत्यवागि प्रतापचक्र-
५८ वर्ति वीरवल्लालदेव वन्दु शान्तिदेवरष्ट-विधार्चनेगं खण्डस्फु-
टितजीर्णोद्धारक्क ऋषियराहारदानक्कवागि
५९ शकवर्ष १११४ नेय विरोधिकृत्संवत्सरद उत्तरायणसंक्राण-
दन्दु वज्रनन्दिसैद्धान्त-देवरिगे धारापूर्वकं नाड मैसेनाड
६० गुम्मनवृत्तियोलु मुच्चण्डियं कडलहल्लिय कडलहल्लिय ईशा-
न्यद तोरेना-
६१ ड सन्तेनाडा गण्णिनाड नडदु येलुवलद सीमेय नट्ट कल्लु
अल्लि गुरविनगुण्डिये मरनितालेयमो —
६२ रडि मोरडि चचरिवललद तडि कडलेयहल्लिय आग्नेयदलुरिद-
वालिकेय लविवल्लिय गुम्मनवृत्तिय ना-

६३ गद य मोरडि चचरिवल्लु मत्तवी कडलेयहल्लिय नैऋत्यद
वल्लरेय कणि--
६४ यकलु खंडय 'कोलबूर्वल्ल मत्तिय मरन 'गल्लुतट्टु
मत्तवी कल्लेयहल्लिय वायव्य--
६५ द सोरेनाड हल्लियबीडिन त्रिसन्धियोलु ' 'कर्गल्लमोरडि अल्लि
चंचरिवल्ल तेन्तट्टु वटवृक्ष अ
६६ ल्लि मत्तवी कडलेयहल्लिय ईशान्य गुम्मनकृत्तिय त्रिसन्धिय
नडुगणेय कूडिसु इन्तिट्टु सीमाक्रम। मंगल महाश्री
६७ भूमिदानात् पर दान ॥ स्वदत्ता परदत्तां वा यो
६८ हरेत वसुन्धरां षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रिमि'

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल राजाओंकी वंशावली वीरबल्लाल (द्वितीय) तक दी है। वीरबल्लालने मैसेनाट प्रदेशके दो ग्राम-मुच्छण्डि तथा कडलेहल्लि अभिनवशान्तिनाथमन्दिरको अर्पण किये थे। इस दानकी तिथि शक १११४ की उत्तरायणसंक्रान्ति थी। यह मन्दिर कई नाडुगौण्डोंने तथा सेट्टियोंने मिलकर बनाया था। मन्दिरके कार्यका निरीक्षण कर युवराजके प्रसन्न होनेपर राजाने यह दान दिया था। वासुपूज्य व्रतीन्द्रके शिष्य वज्रनन्दि सिद्धान्तदेव इस मन्दिरके प्रमुख थे। इनकी गुरुपरम्परामें द्रमिलसंघ-नन्दिसंघ-अरुंगलान्वयके निम्नलिखित आचार्योंके नाम दिये हैं-गौतम, भद्रबाहु, भूतबलि, पुष्पदन्त, सुमति, अकलंक, वक्रग्रीव, वज्रनन्दि, सिंहनन्दि, परवादिमल्ल, श्रीपाल, हेमसेन, दयापाल, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेन, वादिराज, शान्तदेव, चन्द्रप्रभ, अजितसेन, मल्लिषेण, श्रीपाल (द्वितीय)। श्रीपाल त्रैविद्यके शिष्य वासुपूज्यव्रतीन्द्र ही वज्रनन्दिके गुरु थे। वर्तमान समयमें यह लेख सोमपुरके निकट नजेदेवरगुड्ड नामक पहाड़ीपर है। वहांके मन्दिरका रूपान्तर शिवमन्दिरमें हो गया है।]

[ए० रि० मैं० १९२६ पृ० ४७]

२८३

इंगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

शक ११९७ = सन् ११९०, कन्नड

[इस लेखमें तीर्थ चन्द्रप्रभदेवकी शिष्या पेण्डर वाचि मुत्तब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है। शक ११९७ का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १४ पृ० ८५]

२८४

ताडपत्री (जि० अनतपुर, आन्ध्र)

शक ११२० = सन् ११९८, कन्नड

रामेश्वर मन्दिरके प्राकारके उत्तर पश्चिम कोनेपर

[इस लेखमें सोमिदेव तथा काचेलादेवीके पुत्र उदयादित्यका उल्लेख है जो जैन था और ताटिपर ताडपत्रीमें रहता था।]

[इ० म० अनन्तपुर २०३]

२८५

वेलगामि (मैसूर)

सन् ११९९, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लालके समय सन् ११९९ में महाप्रधान मल्लियण दण्डनायकके अधीन हेगडे मिरियण्ण-द्वारा मल्लिकामोदशान्तिनाथजिनालयके लिए आचार्य पद्मनन्दिको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४६]

२८६

कान्तराजपुर (मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघ-
२ लांछनं (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-
३ सन जिनशासन ॥
४ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रतापचक्रवर्ति गण्डभेरुण्ड मळपरोळ्
५ गण्ड शनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदङ्कराम होयसळवी-
६ रबल्लालदेवरु सुखसंकथाविनोददि पृ(थ्वी) राज्य गेय्युत्तु-
७ तमिरे ॥ तत्श्रीपादसेवकरु कब्बहिनवृत्तिय अधिष्ठा-
८ यकरु महापसायतरु परमविश्वासिगळ् सामिसन्-
९ तोषकरु सेवुणकटक सूरेकाररु शरणागतवज्रपंजर-
१० रुमप्प बेहूरमोतड सुग्गियनहळ्ळिय अरकेरेय मा-
११ केयनायक होनहळ्ळ मादेयनायक कळियनायक
१२ चाचिहळ्ळिय बोकयनायक बेल्लूर माचयनायक मोनू-
१३ गळाचार्य केसवेयनायक चल्लुवन माचयनाय-
१४ क अरसयनायक बरजियन माचयनायक मसणेय-
१५ नायक कोळेयादिनायक बचन मारेयनायक कोळेयत-
१६ न माचयनायक बलेयन मारेयनायक हळवनाय-
१७ कन बचेयनायक बोम्मेर कयिदाळद बयक कसविय-
१८ नायक हेग्गडेनायक मैलेयनायक मारदेव चालना-

१९ यक कान्चिनायक पम्मणनायक माविथनाय (क)
२० माबुकनायक चिकयनायक माडियनायक बडचर विज्ज-
२१ पनायक वड्डुगेयनायक मनियमनायक हं-
२२ माडिनायक हरियणनायक पूमयनाय-
२३ क जवनेयनायक मैलयनायक वैजयणनायक मा-
२४ केयनाय (क) बमेय नायवेयनायक गुडेयनायक
२५ मारलमनायक मल्लेयनायक हरियबूर माचगौड मि-
२६ गगौड मोमगौड बडियगौडन माडिगौड उत्तगौड बयचिगौट
२७ मारगौट माडिगौट अबिगौड हलुवाडिगट्टद कुडंग्य के-
२८ चगौड मकरनायकर नायक मल्लिगौड कंसिय-हलिय वा-
२९ हुवलिसेट्टि पारिसेट्टि विजेसेट्टि अवर पुत्रक बलुगौड ब-
३० सवगौड माचेय भरतय माडय आलिय माचयदत्त-
३१ गौडन मारय पापय चिक्कम्म विरिगेट्टिय मग आलगौ-
३२ ड चिकगौड मामगौड चिण्णयगौड मारगौड कसवगौड श्रीमन्महा(मं)ण्-
३३ डलाचार्यरु राजगुरुगलु नयकीर्तिसिद्धान्तदेवर शिष्यर नेमि-
३४ चन्द्रपडितदेवरु बालचन्द्रदेवरु नयकीर्तिदेवरगुड्डु-
३५ गलु बाहुबलिसेट्टि पारिससेट्टि माडिसिद एक्कोटिजिनालय-
३६ द पद्मप्रभदेवर अष्टविधार्चनगे बूर मुन्दे आरिय मार-
३७ यनायक कट्टिमिद केरे आ कीलेरिय गद्दे आ मूडलु मुत्तलु नट्ट
३८ वेद्दलेय हिरियकेरेय मोडलेरि-
३९ गद्देय श्रीमुदसवल्मगड वयि

४० बोम्म नातिवेय सा सेनबोव सामन्त

४१ पूर्वक माडि बिट्ट दत्ति यिधर्मव प्रतिपाळिसिद् गगे

४२

[यह लेख होयसल राजा वीरवल्लालदेवके राज्यकालमें वैशाख, श्रीमुखसवत्सरमे लिखा गया था। बाहुबलिसेट्टि तथा पारिससेट्टि-द्वारा निर्मित एक्कोटि जिनालयके पद्मप्रभदेवकी पूजाके लिए अरेय मारेयनायक-द्वारा एक तालाब तथा अन्य कई नायको, गौडो तथा सेट्टियो-द्वारा जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। इनमे नयकीर्तिसिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र तथा बालचन्द्र पण्डित भी सम्मिलित थे।]

[ए०रि० मैं० १९२७ पृ० ४५]

२८७

वेरावल (सौराष्ट्र, गुजरात)

१२वीं सदी, अन्तिम चरण संस्कृत-नागरी

१ त्वचम्प्रति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ १ भूयात्श्रीष्टससिद्ध्यै सु-

२ पाटकाख्यं पत्तन तद् विराजते ॥ ३ मन्य वेधा विधायैतद्विधित्सु' पुनरीदृश-

३ ·रैद्रैश्चंयमत्रजैर्यत्र लक्ष्मी स्थिरीकृता ॥५ तन्निःशेषमहीपाल-मौलिघृष्टाह्नि

४ र्मी नृप.। तेनोत्खातासुहृन्मूलो मूलराज स उच्यते ॥७ एकैकाधिकभूपाला सम --

५ जिग्रजखुरादत। श्रतुच्छमुच्छलत्सूर्यपर्वभ्रममजीजनत् ॥६ पौरुषेण प्रतापेन पुण्येन--

६ ' रन्यूनविक्रम ।श्रीमीमभूपतिस्तेषा राज्य प्राज्य करोत्ययं ॥११ मालाक्षराण्यनश्राणा यो बभञ म--

७ न्नंदिमधे गणेश्वरा । बभूवु कुदकुंदाख्या साक्षात्कृत-जगत्त्रयाः ॥१२ येषामाकाशगामित्व स्या--

८ '' तपंचकमुज्वल । रचयित्वाथ जल्पंति येऽन्यन्नियमपूर्वकं ॥१५ कालेऽस्मिन् भारते क्षेत्रे जाता--

९ ' रीणास्तत्त्ववर्त्मनि तेषां चारित्रिणा वशे भूरय सूरयोऽभवन् ॥१७ सद्वेषा अपि निर्द्वेषाः सकला अक-

१० भावस्याल्रोह तत् । श्रीकीर्ति प्राप्य सत्कीर्ति सूरि सूरिगुणं तत. ॥१९ यद्वीयं देशनावारि सम्यग्वि-

११ कश्चित्रकूटाच्चचाल स । श्रीमन्नेमिजिनाधीशतीर्थयात्रानिमित्तत. ॥२१ अणहिल्लपुर रम्यमाजगाम-

१२ ' नींद्राय ददौ नृपः । विरुद मंडलाचार्य. सछत्रं ससुखासनं ॥२२ ॥२३ श्रीमूलवसतिकाख्य जिनभवनं तत्र

१३ ' सज्ञयैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचंद्रो यस्ततोभूत्स गणीश्वर ॥२५ चारुकीर्तिश्च कीर्तौ ध-

१४ मुक्तो यो रत्नत्रयवानपि । यथावद् विदितार्थोभूत् क्षेमकीर्ति-स्ततो गणी ॥२७ उद्दीप्त स्म लसज्ज्योति

१५ ' लेपि वासिते हेमसूरिणा । वस्त्रप्रावरणाय-

१६ कीर्तिर्यत्कीतिर्नर्तकीव नरिनर्ति । त्रिभुवनरंगे वासुकिनूपुरशशि-तिलकनेपथ्या ॥३१ तं

१७ ' ति ॥ ३२ समुद्धृतसमुच्छलर्शीर्णजीर्णजिनालय. । य कृतारभनिर्वाहसमुत्साहगिरोम (णि ॥३३)

१८ च देवगणयन्तं ॥३५ वाद्रिनो यत्पदद्वन्दनखचन्द्रेषु बिंबिता । कुर्वते दिगन्तश्रीणां कलक-

१९ द तीर्थभूतमनाहिक ॥३६ मीताश्रा स्थापना यत्र सोमेश-पक्षपातकृत् । ग्रामत्रैलोक्य-

२० गदुद्धृत तेन जातोद्धारमनेकशः ॥३८ चैत्यमिद ध्वजमिपतो निजभुजमुद्रस्य सक--

२१ पतो मडलगणिललितकीर्तिसत्कीर्ति । चतुरधिकविंशतिक्रम-द्रुमजपटपट्टास्तक-

२२ ' मेतद्दीयमद्गोष्ठिकानामपि गल्हकानां ॥४१ यस्य स्नानपयो-वुल्लिसमम्बिल कुष्ट हर्ता-

२३ चद्रप्रभ स प्रभुर्म्मीरे पश्चिमसागरस्य जयताद् दिग्वाससां शासन ॥४२ जिनपनिगृह-

२४ चार्यचर्यो व्रतविनयसमेतं. शिष्यवर्गैश्च सार्द्धं ॥४३ श्रीमद्विक्रम-भूपस्य नपाणां द्वाद (श)-

२५ कशालिलघुयशुः । चक्रे प्रशस्ति मनधा (मतिनिष्या) प्रवरकीर्ति-रिमा ॥४५ स १२

२९५

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदा है। इसमें गुम्मिसेट्टिके पुत्र ब्रमदेवका उल्लेख किया है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ८५७ पृ० १२६]

२९६

हुलि (जि० बेलगाँव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य नविलूरके गोवरिय कल्लिगावुण्ड, तावरे महादेवसेट्टि आदिके द्वारा इस दरवाजेके बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई क्र० २४ पृ० २४२]

२९७

गोरूर (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमें मलवसेट्टि, कटकद बम्मिसेट्टि तथा केसिसेट्टि इन तीन व्यक्तियों-द्वारा गोरवूर ग्रामकी बसदिके लिए पाँच खण्डुग भूमि दान दिये जानेका वर्णन है। मल्लियक्का नामक स्त्रीकी भी प्रशंसा की है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। इसका बहुत-सा भाग घिसनेसे नष्ट हो गया है।]

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७४]

२९८-३००

मनोली (जि० बेलगाँव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। यापनीय संघके आचार्य मुनिवल्लिके मुनिचन्द्रदेवकी समाधि कुल्लेयकेतगावुडकी पुत्री गंगेवे-द्वारा स्थापित की गयी थी। ये मुनिचन्द्र सिरियादेवी-द्वारा स्थापित बसदिके आचार्य थे।

इसी समयके दूसरे लेखमें मुनिचन्द्रके शिष्य पाल्यकी(र्ति) देवके समाधिमरणका उल्लेख है। तिथि आश्विन कृ० ५, शुक्रवार, साधा(रण) संवत्सर, ऐसी है।

यहाँके तीसरे लेखमें इसी परम्पराके एक और आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ ई० क्र० ६३-६५ पृ० २४५]

३०१

कोलक्कुडि (जि० मदुरा, मद्रास)

कन्नड, १२वीं सदी

समणरमलै पहाडीपर पाषाणके दीपस्तम्भके समीप

[इस लेखमें आरियदेव, बेलगुलके मूलसंघके बालचन्द्र देव, नेमिदेव, अजितसेनदेव तथा गोवर्धनदेवका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह १२वीं सदीका लेख होगा।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० २४४]

३०२

चेहार (नरसिंहगढ, मध्यप्रदेश)

प्राकृत-नागरी, १२वीं सदी

१ ' अं घणोमम सुंदरं
२ सि··· ······ ········ ·
३ । तिहुअणतिलअ सो-
४ ही- शावडस्स अमराल-
५ अ रम्मं ॥ श्रीआण-
६ देवेन गाथा वि-
७ रचिता

[यह लेख सोलखभ नामक उध्वस्त जैन मन्दिरमे एक स्तम्भपर है। इसमे श्री आणदेव-द्वारा लिखित एक गाथा है जो किसी तिहुअणतिलअ (त्रिभुवनतिलक) मन्दिर तथा उसके स्थापक शावडके बारेमें है। इसी स्तम्भपर कुछ अन्य व्यक्तियोके नाम भी खुदे हैं। गाथाकी लिपि १२वी सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १७४]

३०३

सवणूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १२वी सदी

[यह निसिधि लेख मलधारि आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। तिथि शुचि व० ८, सोमवार, विश्वावसु सवत्सर ऐसी दी है। लिपि १२वी सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५९ पृ० ३३]

३०४

अग्गिनभावि (धारवाड, मैसूर)

[यह लेख वर्धमानमूर्तिके पादपीठपर है। बहुत अस्पष्ट हुआ है। लिपि १२वी सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ७० पृ० ३८]

३०५-६

मण्डूर (धारवाड, मैसूर)

[यहाँ १२वी सदीकी लिपिमें दो लेख है जो जैनोंसे सम्बन्धित प्रतीत होते हैं।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ९४-९५ पृ० ३६]

३०७

सालिग्राम (मैसूर)

कन्नड १२वीं सदी

[यह लेख अनन्तनाथकी मूर्तिके पीठपर है। मूलसंघ-बलात्कारगणके माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तिके शिष्य शम्बुदेवकी पत्नी बोम्मब्बे-द्वारा अनन्त-व्रतकी समाप्तिपर यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। लिपि १२वी सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३६]

३०८

गोरूर (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ ओं श्रीमत् परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं(।)जीयात् त्रैलोक्य-
नाथस्य शासन जिनशासनं(॥)

२ ओं मेलेनिसिपुंदी मलेगे धात्रियोल किसुवल्लियन्ताद पालिसि सततं सुग्गदिन् इर्विनेग सिरि
३ पुट्टे पुट्टिद देसियत्रामेवेंग्गदेगवातन वलमें निजिकच्वेग लोकेयोल् एद्दे वण्णिपुद्दु पं-
४ गंडे सत्यमनं जगजन ॥ स्थिरने वाप्पमशाविर्यिदधिकगंभीरने वाप्पु सागरदिंदग्गलद-
५ न्तु दानियं सुरोर्वीजकं मारण्डलं सुरराजंगणेयेण्दे कीर्तिपुद्दु कैकोण्डकरिं सततं
६ धरेयेल्लं सले सत्यवेगंडेयोल् औदार्यमं सौर्यमं ॥ कोट्टपेनेंदाद् ईश्वरन कोट्ट वर

दूसरा

७ सरणेंदु वद्र नेट्टने ' डे वत्रि 'पूण्डु कोडिट्ट विरो' '
८ तरिवन् गुन्डोडे ताने कृतान्त थि'' पेगंडे' '
९ आतन मात्र सकल मही 'जवलिल वेनिसि नेगल्दं भूतल
१० दोलगंसंय कच्छवेगंडेय' वपु ' थ त्रिण्पु
११ नाडे कंसरिय पोडपुं ''भभो''''यनि
१२ सिर्द वीरनोल् अवेदु करं नकि' तरिपुद्दु क' ले पलरं निरन्तरं

तीसरा भाग

१३ पुनं नेगल्द कच्छवेगंडेगनुपम कुल' गे धो।४
१४ यलु विनुत त थंग
१५ रेनिप्परु' मणिय-
१६ न्तवरीवंरीतन थ' 'मन्तन जम''''
१७ यल् अखिल भूमण्डलदे 'ख्यातंग मले नेगवद गंगेगं गौरिग वेग्म
१८ नो वंरंयनिप्पर् भूतलदोलु' 'थं ॥'''गल्यंतंथरि-
१९ थ समर समयदोल वस ''मन पोललितर''''आ विसुविन

२० कुलवधु ता भूविनुत श्रीने नेलेयेनिप्प गनेयर् पलरुं · पेण्डितिनेनेने वर्पेर

२१ योलु ॥ आतन किरिय पेण्टति रतियं पोल्वलु तुपिपति-चरियोल् अतियव्वे

२२ प्रोल्वलनिधि तत यशोवल्लरिय मतिहीनर् अडेनु वण्णिपर् वाचवेय ॥ अवरीवरं गु-

२३ (रु)गल् अवर् भुवनजनाराध्यगखिलगुणगणनिलयर् कडि···वर नयकीर्ति-

२४ देवसिद्धान्तेशर ॥ आ महानुभावनवांगियरवमान कालदोलु ॥ बोविसुन जिनपडनं वा-

२५ · व सिद्धपदमन् अक्षय पदमं विनुतं मुनिपदमं वाचवे वेग्गडि-तियर् सुरगतिय

२६ ···परम जिनेश्वर पदपकरुहमनानंदुडि नेनेयुतागलु पिरिदोंतु भक्तियिं

२७ तियं वाचियक्कन् एय्दिद्दल् आगलु ॥ अवर परोक्षदोल् आदं मविनयडि केल

२८ यिन्ति कल्ल भुवनजन्न्वरियें निरिसिदल् अविचलमप्पन्तु चंद्रतारंबरं ॥

[इस लेखमें किनुवल्लि ग्रामके शासक सत्यवेग्गडेका उल्लेख है। यह हेरियवासेवेग्गडे तथा उनकी पत्नी निजिकव्वेका पुत्र था। इस सत्य-वेग्गडेकी पत्नी वाचवे थी। वह कच्छवेग्गडेकी पुत्री थी। इसके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव थे। लेखमें वाचवेके देहत्यागका उल्लेख है जो सम्भवतः सत्यवेग्गडेकी मृत्युके कारण किया गया था। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७१]

३०९
हलेबीड (मैसूर)
कन्नड, १२वीं सदी

१ स्वस्ति श्रीमन्नयकीर्तिसिद्धांतचंद्रयतिदेवर्गे कवडेयर जकब्बेयरु माडिसि कोट्ट पट्टशालेय शान्तिनाथदेवर अष्टविधार्च(नें)ग खडस्फुटितजीर्णोद्धारक ...

२ शिष्यरु सुरभिकुमुदचंद्रापरनामधेयरप्प नेमिचद्रपंडितदेवरु जीवगल् हिरियकेरेय बोलवगट्ट डोलगरेय हुणसेय

३ ल्लगे मूरु गगवुरद उत्तमवागि ? मूरु बेद्दलेयं सर्वबाधपरिहारवागि चंद्रार्कतारवरं सल्वतागि कोट्टरु ई धर्ममं अवर शिष्यसंतानगलु नडेसुवरु

[यह लेख १२वी सदीकी लिपिमें है। कवडेयर जकब्बे-द्वारा निर्मित पट्टशालाके शान्तिनाथदेवकी पूजा आदिके लिए कुछ भूमि बोलवगट्ट तालावके समीप और गगवुर ग्रामके समीप दान दी गयी ऐसा इसमें निर्देश है। यह दान सुरभिकुमुदचन्द्र अपरनाम नेमिचन्द्र पण्डितदेवने दिया था। जकब्बेके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तचन्द्र थे।]

[ए० रि० मै० १९३७ पृ० १८५]

३१०
अथनी (बेलगाव, मैसूर)
कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमें बम्मण-द्वारा देसिगण-इगलेश्वरबलिके सामन्तण बसदिसे सम्बद्ध रत्नत्रयमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७३ पृ० ३४]

३११

मरसे (मैसूर)

संस्कृत–कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमद्द्रविलसंघेस्मिन् नन्दिसंघेस्त्यरुंगलः अ-
२ न्वयो भाति योशेषशास्त्रवा-
३ राशिपारगैः

[यह लेख एक खेतमें मिली पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इसमें द्रविलसंघ-नन्दिसंघके अन्तर्गत अरुंगल अन्वयकी प्रशंसा है। यह श्लोक अन्य कई लेखोंमें पाया जाता है। लेखकी लिपि १२वी सदीकी है। मूर्तिके बारेमें अन्य कुछ विवरण नही दिया है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०६]

३१२

मावलि (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वा(द्वा)-
२ मोघलाछन जीयात् त्रैलोक्य-
३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्री (मू)-
४ लसंग कुण्डकुन्दान्वयद
५ काणूर्गण माधवचन्द्रदेव(र शि)-
६ ष्टि नागव्वे गोकव्वेय मगलु म(मा)-
७ धिविधियिंद मुडिपि स्वर्ग-
८ स्तेयादलु मंगल महा
९ श्री श्री

[इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कुण्डकुन्दान्वय-काणूर गणके माधवचन्द्र-देवकी शिष्या तथा गोकवेकी कन्या नागवेके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १२वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० १९२]

३१३

हम्पी (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, १२वी सदी

[यह लेख एक भग्न स्तम्भपर १२वी सदीकी लिपिमें है। इसमें गोरलाचार्य, उनके शिष्य गुणचन्द्र तथा उनके शिष्य इन्द्रनन्दि, नन्दिमुनि तथा कन्तिका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० ३२५ पृ० ५०]

३१४

कलकत्ता (नाहर म्यूजियम)

कन्नड, १२वीं सदी

१ देमायपगलाणन्तियनोपि निमित्त-

२ वागि माडिसिद प्रतिष्ठे

[यह लेख पीतलकी चौवीस तीर्थंकरमूर्तिके पिछले भागपर खुदा है। यह मूर्ति देमायप्प नामक व्यक्तिने अनन्तव्रतकी समाप्तिके समय स्थापित की थी। लिपि १२वी सदीकी है। लिपिसे पता चलता है कि इसका निर्माण कर्नाटकमें हुआ था।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५०]

३१५

इंगि (बिजापुर, मैसूर)

कन्नड १२वीं सदी

[यह लेख किसी जैन आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० इ० ७१ पृ० १८८]

३१६

शेरगढ (कोटा, राजस्थान)

संस्कृत-नागरी, १२वीं सदी

[इस लेखमें आचार्य वीरसेन तथा नागरसेन पण्डितका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३१ पृ० ८०]

३१७

रायबाग (बेलगाव, मैसूर)

कन्नड, शक ११२४=सन् १२०१

[यह लेख रट्ट वंशके कार्तवीर्य ४ के समयका है। इस राजाने वैशाख पूर्णिमा, शक ११२४, शुक्रवारको एक जिनमन्दिरके लिए कूण्डि ३००० प्रदेशका चिचलि ग्राम दान दिया था।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५१ पृ० ३३]

३१८

बेलगाँव (क्रमांक १ ब्रिटिश म्यूजियम)

कन्नड, शक ११२७ = सन् १२०४

१ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥

२ श्रीजिनसमयनवाम्बुधि राजिसुतिर्कमथनोर्जितामृतरत्न-श्रीजननगृह सत्वदयाजीवनमपरिमितगम्भीरमपार ॥ नवमौक्तिकहारं

३ श्रीयुवतिगिदेनिसिदं कृष्णनृपवंशजपार्थिवचयदोळ् सेनरस भुवननुत मिसुपनेसेव नायकमणिवोल् ॥ वरकुं-

४ डिमडलाधीश्वरनेनिपा सेनविभुगे सुतनाद दुर्धरवैरिभूप-भीकरपराक्रम कार्तवीर्यननुपमशौर्यं ॥ आ विभुगादल् सति पद्मा-

५ वति जिनसमयवृद्धिकरणापरपद्मावति बुधाभिमतपद्मावति वज्रा-युधगे पौलोमिय वोल् ॥ अवरिर्वगं पुट्टिदलचलेश्वरमौ-

६ लिमडन लक्ष्मनृप परिमळमुक्ताफलमोसेव वार्धिगं ताम्रपर्णिगं पुट्टुवचोल् ॥ एलेवं लक्ष्मिदेवक्षितिभुजन भुजाटोपमं विद्विषद्वा-त्रीनाथर् संले-

७ गंप मदपदहतियिंदाद कॅडूलियॅंदाळीनाभ्रश्वानम तांनयतुरग-खुरोद्गोषमॅंदलि नानास्थानस्थायित्वम केल्पडेयदे विद्वो-

८ द्दुत्तमिदॅंपरिन्नुं ॥ अपराधिगळने नोल्पुदु नृपालकरदंडनीति वाप्पु घनाज्ञाधिपनागे लक्ष्मभूविभुवपराध दंडसॅंवि-विल्लें कृतियो ॥

९ अमृतामोराशियोळ् पुट्टिद सिरियमणं बप्पु धात्रं स्वमायाक्रमदिं वेरोर्वळं निर्मिसि चपलेयना कृष्णनोळ् कूडि मत्ता विभ-

१० कोाद्यदूभाग्येयं सुस्थिरेयनोसेङ्गु कोट्टं महीभृन्निकायोत्तमनप्पी लक्ष्मिदेवगेने मिगे तलेदल् चन्द्रिकादेवि चेल्व ॥ प्रणुतश्रीनिधि चंद्रिका-

११ सतिय शीलख्यातमं कूडे धारिणियोल् वर्णिसलारुमार्तपरं लक्ष्मोर्वीशन क्षत्रियाग्रणियं शीलदे मेच्चिमल् फणिपनं पूण्डे-

१२ त्ते ता तन्न कय्गुणम कडुदरिंदव पोगळलार्पं विश्वजिह्वालियि ॥ नरपतिलक्ष्मिदेवसति चन्दलदेवि निजोद्वहस्तदि धरंगेसेयल्के

१३ संक्रमणदोल् कुडे काचनम बेरल्गलोल् बेरेसेद हेमकालिकेय कर्पं-सेदिर्पुदु वाहुकल्पवरुझरिय तलप्रवालद नखप्र-

१४ सवक्केलसिदं तुंबिवोल् ॥ श्रीवसुदेवनंतेरन्न लक्ष्मनृपंगवनिद्य-देवकीदेविवोलोप्पुवी विनुतचन्दलदेविगमादरात्मजर् भूवलय-

१५ प्रवद्धवल्केशवरेंदेने कार्तवीर्यधात्रीवरमल्लिकार्जुनकुमारकलूजित-शौर्यशालिगल् ॥ दृढशौर्य कार्तवीर्यं तल-

१६ रे बल्युतं दिग्जयक्कन्यधात्रीपतिगल् बेन्नित्तु नीर पुगलवर शरीरोत्पाटिं वत्ति चित्तोद्गतमोल्युत्कर्षवृत्तिप्रसरणचिमरद्व-

१७ मंतोयोर्मिर्यि विस्तृतमागल हानियुं वृद्धियुमड्डु निजमंभोधिगेय-र्विमूढर् ॥ ई कमनायवाजिचयमी क-

१८ रिमकुलमी विलासिनीलोकमिवेम्मवा कविय कालेगदोल् बयलाजियोल् पुराणीकद युद्धदोल् पिडिदर्निंतिवनी कलिकार्तवीर्यनेदा-

१९ कुलमागि नोडुवुदु बन्धनशालेयोल् इर्दरिग्रजम् ॥ श्रीरट्टवशमेंव सुमेरुवनाश्रयिसि कल्पकुजननमेनलें राराजि-

२० पुदुदो विबुधाधारं श्रीमत्कुलं प्रमोदनिवासं ॥ आ महनीय-कुलक्के शिरोमणि भव्यांबुजक्के तेजोमणि रक्षामणि बुधविततिगे

४८ मल्लुंकिरंडहस्तरुमप्प समयचक्रवर्ति जयपति सेट्टि मुख्यमागि वेणुग्रामद स्थलद समस्तमुम्मुरिदंडंगलुं कूंडिमूसासिरद पट्टणिग मोदलाद-

४९ भयनानादेशिमुम्मुरिदडंगलुं परशुराम नायक पोम्मण नायक अम्मुगि नायक प्रमुखरप्प समस्तलालव्यवहारिगलुं पडप नायक कों-

५० ड नंबि सेट्टि पोरेयच सेट्टि मोदलादेल्ला मलेयालव्यवहारिगलु मत्तमा वेणुग्रामद स्थलद चिन्नगेयिकदवरं दूसिगरं मुख्यमागुलिद परदरु । तेलिगरुं । टिंक-

५१ सालिगरुमिंतिवरेल्ल नेरेदा शान्तिनाथदेवर वसदिगे विट्टायवॅत्त-दोडे वडगणि बंद कुदुरेगे नेलमेट्टु हागवोदु । तेकल् नडेववकें सुंक हागवोंदु । मलेयालर

५२ कुदुरेगे हागवोंदु । अरुवत्तयदेंतु कोनंगलोलेनं पेरिदोडं सर्वाबाध-परिहारं । चिन्नगेयिकद चीरक्के दूसिगवसरक्कें । हत्तिवसरक्के । मणिगारवसरक्के । गधवण-

५३ वसरक्के गववणिगर गडिगे । अक्कसालेगमटक्के वेरेवेरे वरिसदेरे वरिसदेरे हिरिय हागवोंदु । होरगणिं वंद् सीरेय कडगेगे वीम्मवोंदु । होरगणिं वंद गंधवणके । कक्षमंडक्के । आ मं-

५४ डं गद्याणं तूकवप्पदु । हत्तिय मंडिगे तारं मूरु आ पेरिंगे काणियोंदु । मत्तद मंडिगे मत्तवोंवल्लं आ पेरिंगे मत्तवोमानं । अंकणथ मत्तं मारिवडा मत्तमोंवल्लं । मत्त-

५५ वसरदंगडिगे मत्तं निच्चसोल्लगे । अक्किवसरक्के अक्कियद । मेलसिण हेरिंगे मेलसोमानं आ जवक्के अरेवानं । इंगिन पेट्टिगेगे इंगु गद्याणं तूकवारु अलअरिसिनद जवलक्के आ म-

५६ ण्ड पलवन्दु आ हेरिंगे अल्लश्ररिसिन पल हत्तु । गाणक्के निच्चत्वेण्णेयहं । अडकेय हेरिंगे अडकेयिप्पत्तय्दु आ जवलक्क अडके हनेरडु । एलेय हेरिंगेले नूरु हो

५७ रंगेलेययूवत्तु । तेंगिन काय हेरिंगा कायोंदु । ओलेय हेरिंगे ओलेय सूडेरडु आ होरेगे सूडोंदु । होरगणिं बन्द वेल्लद मडिगे वेल्लदच्चु हदिनय्दु आ

५८ होरेंगे अच्चोंदु । बालेय हेरिंगा कायारु आ होरेगे कायमूरु । नेल्लिय काय हेरिंगा काय्वल्लवोंदु । कविंन हगरक्के ओंदु कर्षु । वकहद हेरिं-

५९ गे वकहवोपॅल मत्तमा शान्तिनाथदेवर बसदिगे श्रीकार्तवीर्य-देव कोट्ट अगडि बडगगेरिय बडगण हरिय पडुवण कडेयोल् राजवीथियिं मूडल् नाल्कु ॥

६० बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि. सगरादिभिः, यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल ॥ अपि गगादितीर्थेषु हन्तुर्गामथवा द्विज निष्कृति. स्यान्न देवस्व-

६१ ब्रह्मस्वहरणे नृणा ॥ ओदविंदी धात्रियेल्ल भिगे पोगले चिर वर्तिसुत्तिर्के नित्याभ्युदयश्रीकार्तवीर्यक्षितिपविपुलसाम्राज्य-सन्तानमुर्वीविदि-

६२ तश्रीवीचिशाखप्रथितविमलशान्तीशरावासधर्मं सदलंकारस्फुटार्था-न्वितपदकविकन्दर्पसुव्यक्तसूक्त ॥ दोपव्यतीतमर्थविशेषमिदंने पेल्दनोरडु शासनम पीयू-

६३ षसमसूक्ति चातुर्भाषाकविचक्रवर्ति कविकन्दर्पं ॥ श्रीमन्माधवचन्द्र-त्रैविद्यचक्रवर्तिवाक्सुधारसनाभ्युदितनित्यसाहित्यकमलवनमराल बालचन्द्रदेव पेल्द शासनं

[इस लेखका सारांश जै० शि० सं० भा० ३ में क्रमांक ४५३ में आ गया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नही हुआ था। पाठकोंकी सुविधाके लिए सारांशकी मुख्य बातें यहाँ दोहरायी जाती हैं। इस लेखमें रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके बन्धु मल्लिकार्जुनका एवं उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोंसहित परिचय दिया है। बीचणने बेलगाँवमें रट्टजिनालय स्थापित किया था। इस मन्दिरके प्रधान भट्टारक शुभचन्द्रको शक ११२७, रक्ताक्षी संवत्सरमें द्वितीय पौष शुक्ल २ को बेलगाँवकी कुछ ज़मीन तथा कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया गया था। इस शिलालेखके पाठकी रचना माधवचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य बालचन्द्र कविकन्दर्पने की थी।]

[ए० इं० १३ पृ० १५]

३१९

बेलगांव (क्रमांक २) (ब्रिटिश म्यूज़ियम)

शक ११२७ = सन् १२०५, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछन। जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य
शासनं जिनशासनं ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥

२ श्रीजिनसमयनवाम्बुधि राजिसुतिर्कमथनूर्जितामृतरत्नश्रीजननगृहं
सत्त्वदयाजीवनमपरिमितगंभीरम-

३ पारं ॥ जंबूद्वीपद भरतदोलवुजभवसारसृष्टि कूडिमहीचक्र वगे-
गोलिपुदु सकलजनावकवनसुक्-

४ तफलविलासनिवास ॥ श्रीराष्ट्रकूटवंशसरोरुहवनराजहंसनाद्-
नाहं विस्तारियशोनिधि सेनमहीरमण

५ संभृतामलोमयपक्षं ॥ सिरिय निजानुजेयनादरिंदं शशियित्तु
राजनाद्वं नण्पं धरियिसि सिक्कता सेनराजनो-

६ ळ् सेणसि राजनेनिपवनावं ॥ स्थिरतेयनुत्तंगतेयं धरिथिसिदा
सेननृपवरोदयदोळ् भासुरतेजोनिधि पद्माभिराम-
७ नेने कार्तवीर्यरविशुदयिसिदं ॥ विनतारिपुप्रतिविंबालि नितांतं
कार्तवीर्यपदनखदोळ् चेल्वेनिक्कु पूर्वपदाश्रि-
८ तरनळिदु तन्मंत्रकृतिगे पडेदप्पुवबोळ् ॥ स्थितिकारिणि विमल-
गुणान्विते पद्मलदेवि कार्तवीर्यधरित्रीपतिदयिते तां त्रिव-
९ र्गोन्नतिसाधिकेयपरनीतिविद्येवोलेसेवळ् ॥ जनियिसिद समस्त-
गुणसकुलसंस्तुतलक्ष्मभूमिपं जननुतकार्तवीर्य-
१० विभुग सतिपद्मलदेविग सुतं जनिथिपवोल् जयन्तनमरप्रभुगं
शचिगं मयूरवाहनभवंगबद्रिजेगमगमव हरिगं
११ रमाब्जेग ॥ वनितेयर मल्लूत्तु समाकृतियिं सुमनोभिवृद्धिय
जनियिप शीलदिं कुवलयक्के विकासमनीव मयमेयि जन-
१२ नयनक्के कामनो वसन्तनो चन्द्रमनो दिटक्के पेळेने विभु लक्ष्मी-
देवनेसेव कविसंकुलकल्पमूरुह ॥ विजितरिपुराजराजात्म-
१३ जे चन्दलदेवि लक्ष्मनृपसतियेसेवळ् विजितवटसर्पमदे विश्वजन-
स्तुतचारुचरितेयेने धारिणियोळ् ॥ अवरिर्वगं कलिकार्तवी-
१४ र्यंनु मल्लिकार्जुननुमादर् प्रोद्भवसाम्राज्यरामाधिपयुवराज-
कुमारराल्मजर् घनतेजर् ॥ जनमेल्ल पेळ्व नृळ
१५ पेंगवरुद सेल्लं जयश्रीगे नल्ल मनुमार्गं सन्निवगं तनगेसेये
निसर्गं गृहीतारिदुर्गं सनयाळापं
१६ सुरूप नेगळ्दनतिदिलीपं जितारातिभूपं घनशौर्यं क्षत्रवर्यं
सुरकुजसदृशौदार्यनी कार्तवीर्यं ॥
१७ श्रीमत्कुलाब्धिवर्धनसोमनेनिप्पुदयविभुविनात्मजनत्युद्दामयशो-
निधि वीच भूमहितं सौम्यवृत्तिय तळेदेसेव ॥ वीचं-
१८ गे सुकविसंस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेन्द्रमतश्रीलोचनसन्निभरात्म-
हिताचरणर् नेगळ्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ तनग

१९ ब्रह्मंगमुद्यच्चतुरने तनग वार्थिन गुणप्पु चागं तनगं कर्णगमत्युन्नति-
मरि तनग मेन्ग भूप्रियन्व तनग चंद्रगमर्हन्मतक-

२० च्चि ननग वारिषेणगर्मेडतनिश मन्यालि वर्णिणप्पुद्दु गुणियेनि-
मिर्डप्पणं प्रीतियिं ॥ श्रीकरणाग्रणिगप्पगाकलितलम-

२१ च्चरित्रे दयितेयलंकाराकीर्णे विनुते वरवर्णाकृति वाग्देवियुच्चिन-
नामदिनेसेवल् ॥ वनलक्ष्मीपतिपाडुगं नेगल्द कु-

२२ न्तीदेविगं धर्मनंदनभीमार्जुनरादवोल् तनुजराद् विश्रुतर्
कार्तवीर्यनृपश्रीकरणाध्यणगमेमेवी वाग्देविग सारशो-

२३ र्यनिधानर् विभुवीचर्वजयलदेवर् निर्जितारातिगल् ॥ अनुपम-
विद्येगुद्धविनय मिरिगोप्पुव चागदेल्गे जीवनके विनिर्मला-

२४ चरणमायुगे विस्तृतकीर्ति वाक्प्रवर्तनेगे कृतोक्ति तनेसकदि-
मल्ले मंदनमागे वर्तिप जनपतिकार्तवीर्यसचिवैकशिरो-

२५ मणि वीचनुर्वियोल् ॥ इट्टु तां श्रीकरणप्पणाग्रसुतसनपुण्यप्रभा-
जालमिन्तिद्दु रट्टक्षितिपालमंत्रिय रमाम्मेरावलोकाशु-

२६ मत्तिद्दु दल् धार्मिकचक्रवर्तिय दयादुग्धाब्धिवीचिसमभ्युदयं
ताने वीचिराजन यश पर्विंतु भूलोकम ॥ विनुतनिज-

२७ प्रभुगालोचनदोल् नयशास्त्रदृष्टि दुर्धरसमावनियोल् निशित-
जयास्त्रं विनोददोल् नर्मसचिवनेनिपं वैज ॥ मरदिं तनं नो-

२८ डिद तरुणीजनवेरेद वदिवूड मत्तोर्वर्नीक्षिसदेरंयदेनल् सुरूपन-
नतिशयवितरणं बळदेव ॥ श्रीकार्तवीर्यनृपति-

२९ श्रीकरणाधिपन वीचणन गुरुकुलदोल् लोकोत्तरसुचरित्रविवेकर्
मलधारिदेवमुनिपर् नेगल्दर् ॥ आ मुनिमुख्यर् शिष्यर्
भूमीश्वर-

३० वंद्यरमलतरसिद्धांतश्रीमुखतिलकर् प्रथितोद्दामगुणर् नेगल्द
नेमिचंद्रमुनींद्रर् ॥ निरुपमतपोनिधानर् धरणीश्वरजालमौ-

३१ लिलालितपदरेंदुम्मुदर्डि कीर्तिपुट्टुवरं चिमुशुभचन्द्रदेवभट्टारकरं ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहामंड-
३२ लेश्वरं कार्तवीर्यदेव निजानुजयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेव वेरसु वेणुग्रामस्कंधावारदोल् साम्राज्यसुखमनु-
३३ भविसुत्तमात्मीयश्रीकरणाग्रगण्यनुमगण्यपुण्यनुमप्प वीचिराज माडिसिद रट्टजिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर अगभोग-
३४ रंगभोगनित्याभिषेकार्चनतदावासखंडस्फुटितजीर्णोद्धरणाहारादि-दाननिमित्त श्रीमूलसंघकोंडकुंदान्वयदेशीयगणपु-
३५ स्तकगच्छहनसोगप्रतिवद्धतजिनाकयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवर्गं शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पु-
३६ ष्यशुद्धविदिगे चड्डवारदोलाद संक्रमणसमयदोल् कूडिमूसासिर-दोलगण कोरवल्लिगंपद्ण उत्तरवाणियेंब ग्रा-
३७ मम सर्वाबाधपरिहारमष्टभोगतेजस्वाम्यसहितं निधिनिक्षेप-जलपाषाणारामादिसमन्वितं सर्वनमस्यं माडि स्वकीयसा-
३८ म्राज्यसंतानयशोभिवृद्ध्यर्थमागि धारापूर्वकमतिप्रीतिय कोट्टनदकें सीमे ऐशानियकोणोल् नरवल सोनेय-
३९ ल्लि नट्ट कल्लुल्लि तेंक भोगदे मूडण दिक्किनोल् नट्ट कल्लुल्लि मुंते नट्ट कल्लुल्लि मुडे नगरकेरेयाल्लिक मुंदे आग्नेयकोणोल् मू-
४० डवल्लिवेळगोड मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लुल्लि पडुव भोगदे तेंकण दिक्किनोल् बम्मणवाडकट्टुकवाडद मुग्गुड्डेय इंगुणिगेरे-
४१ य केलगे नट्ट कल्लुल्लि मुडे कुनिकिलगल्लुल्लि नट्ट कल्लुल्लि मुटे निरुतियकोणोल् कट्टकवाडकरवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लुल्लि वडग भो-
४२ गदे पडुवण दिक्किनोल् मेलुगुंडिय करवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लुल्लि मुडे केंदरिय मोकिनोल् नट्ट कल्लुल्लि मुते वायुविन-

४३ कोणाल् मेल्गुंडिय नाविदिगेय मुग्गुडेय गॉयूटे गट्टिनल्लि नट्ट
कल्लल्लि मूड मोगदे वडगण दिक्किनोल् सुण्णद कोडिय मेगणो-
ट्टुगल-
४४ ल्लि मुडं मिन्निकेबेट्टद पनुवण नोनेयल्लि नट्ट कल्लल्लि मुते
हेरहिनकोडिय कल्लहुजिकेय मेल् नट्ट कल्लल्लि मुडे मालद मेल्
नट्ट कल् ॥
४५ मत्तं नाडोल् कोट्ट स्थलवृत्ति कवूर काल्वल्लि मूलबल्लियोल्लरि
मूडल् बेलकब्बेय केय्य तेकल् केय्कम्मवेटु नूरु आकवूरो-
४६ ल् मट्टि गावुडन मनेयि पडुवलरगय्यगलडिप्पत्तोंडु कय्नीलद
मनेयोंडु ॥ कुलियवाल्लिगेमोल्लरिंगीशान्य-
४७ दल्लि केनेश्वरदेवर केय्य मूडल् कूडिय कोल मत्तरोंडु बसदियि
तेकल् हन्निरंय्यगलडिपंत्तोंडु कय्नीलद मनेयोंडु ॥
४८ हरिगब्बेयाल्लरोल्लरिं पडुवल् हिंगलजेय वट्टेयिं वडगला कोल
मत्तरोंडु वडगण केरियल्लि हन्निरंय्यगलडिपंत्तु
४९ कय्नीलद मनेयोंडु ॥ चच्छकियल्लि मूडण प्रभुमान्यदोलगे
वोच्चुलगेरेयिं मूडल् मुट्टुगोंडेय वट्टेयिं तेंकल् हारुव-
५० गोल मत्तर् मूवत्तु मेट्टिगुत्त नागणन मनेयिं वडगल् हन्निरं-
य्यगलडिपंत्तु कय्नीळद मनेयोंडु ॥ बेलगलेय हल्लि हट्टिगु-
५१ तियोल्लरिं मूडणोत्ति पडुवल् कम्म नाल्नूरय्वत्तु ॥ उच्चुगावेय
हल्लि निट्टूरोल्लरिं नैर्ऋत्यदोल् महाजनगल् कोट्ट-
५२ गोडगेय अप्पेय सावन्तनुयल्लियल्लि कोट केयं सीमे कडेय केरेयिं
वडगल् हुलगन गुत्तियिं मूडल् मावन्तन कोडगे-
५३ यिय तेंकल् लेल्लमरल्लि पडुवल् नट्ट कल् मूडगेरियल्लि दनगार
मनेय स्थलदोल् हन्निना (ल्कु) गय्यहुवने मुतेरडु गोदिगे ॥
कण्णगावेया-

५४ ल्लरि नैऋत्यदल्लि एलेदोंटं हास्वगोळ मत्तरोंदु कम्मवेल्नूरुवत्तेंटु तोंकणि बद मुगुलिय हल्लवदकें तोंकण हेले प-

५५ डुवला हल्ल बडगरूवथाचिय तोंटं। मूडल् मूलस्थानदेवर तोंट। आग्नेयकोणोरूल नडुवण देवालयद तोंट । आ पु-

५६ लेय तोटर्दिं तेंकला हल्लदिं मूडल् हूदोंटं कम्म नाल्नूरु ॥ ई सामेगकोलेल्ल नट्ट कल्गल् ॥ ओसेदो शासनमार्गदिं नृपरदार् पालिप्परी

५७ धर्ममं निसद तत्सुकृतात्मरात्मबलमित्रप्रेयसीगोत्रपुत्रसमृद्ध-स्त्रदोलोंदि विश्वधरेयं निष्कंटक माडि सतोर्सदिं राज्यमनप्पु-केय्दु पडेव-

५८ दीर्घायुस श्रीयुमं ॥ एनिसुं कोमदे शासनक्रममनार्वो मीरिद तद्दुरात्मनसेव्याचरणान्वित पलिगे पैशून्यकके पापक्के भाजन-नल्पा-

५९ यु रूजाविल रिपुहतात्मोर्वीतल दुर्व्वल धनदुःखास्पदनागलुं नरकदोलोल् काडुगु मूडुगु ॥ सामान्योय धर्मसे-

६० तुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भि.। सर्वानेतान् भाविनः पार्थिवेंद्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः ॥ स्वदत्ता परदत्तां

६१ वा यो हरेत वसुन्धरा षष्ठिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते क्रुमि ॥ प्रहतारिव्रजकातवीर्यसचिवं श्रीवीच्चिराजं यशोमहि-

६२ त पेलिमेनल्के शासनमनोल्पिं बालचन्द्रं गुणाग्रहि विद्वज्जन-समतस्फुटपदार्थालक्रियासकुलावहमप्पन्तिरे पेल्दनिन्तु कवि-कन्दर्पं बुधाधीश्वरं ॥

[इस लेखका साराश जै० शि० स० भाग ३ मे क्रमाक ४५४ में दिया है। किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नही हो सका था। यह लेख भी पहले लेखके ही दिन अर्थात् पौष शुक्ल २ शक ११२७ को लिखा गया

था। इसमें भी रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोंके साथ परिचय दिया है। बेलगाँवमें बीचणके द्वारा स्थापित रट्टजिनालयके अधिष्ठाता शुभचन्द्र भट्टारक थे। ये मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छके मलधारिदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके शिष्य थे। इन्हें कूण्डि प्रदेशके कोरवल्लि विभागका उम्बरवाणि ग्राम दान दिया गया था।]

[ए० इ० १३ पृ० २७]

३२०

बालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, राज्यवर्ष १६ = सन् १२०५

[इस लेखमें होयसल राजा वीरबल्लाल २ के समय राज्यवर्ष १६, क्रोधन संवत्सरमें आषाढ व० ३ बुधवारके दिन मेघचन्द्रभट्टारकके शिष्य कसप गावुण्डकी इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१९]

३२१

बालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह निसिधिलेख बहुत घिस गया है। 'श्रीवीतराग' इतने अक्षर पढ़े जा सकते हैं।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१४]

३२२
बेलगामे (मैसूर)
कन्नड, सन् १२०६

१ स्वस्ति श्रीमत् वीरबल्लालदेवर्वपंद १६ नेय क्षयसंव-
२ त्सरद भाद्रपद ब ११ बृहस्पतिवारदन्दु कमलसेन-
३ देवर गुड्डि जक्कौब्बे समाधिविधियिं मुडिपि सुगति-
४ य प्राप्तेयादलु ॥ श्रीवीतरागाय नमो

[इस लेखमे होयसल राजा वीरबल्लालके १६वें वर्ष क्षयसंवत्सरके भाद्रपद कृष्णपक्षमें ११ को कमलसेनकी शिष्या जक्कौब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है।]

३२३
हुंचि (मैसूर)
सन् १२०७, कन्नड

[यह लेख सन् १२०७ का है। होयसल राजा वीरबल्लालके राज्यमें नागरखण्ड प्रदेशके बान्धवनगरमें कदम्बवंशीय सामन्त बोप्पके पुत्र ब्रह्मका शासन चल रहा था। उस समय सामन्त मुद्दने भागुण्डिमें एक बसदि बनवायी तथा उसे कुछ भूमि दान दी। यह दान मूलसंघ-काणूर गण-तिन्त्रि-णीक गच्छके अनन्तकीर्ति भट्टारकको दिया गया था। उनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है - गोवर्धन सैद्धान्ति-मेघनन्दि सैद्धान्ति-दिवाकर सिद्धान्तदेव-पद्मनन्दि सैद्धान्त - मुनिचन्द्र सैद्धान्त - भानुकीर्ति सैद्धान्त - अनन्तकीर्ति भट्टारक। मुद्दकी प्रशंसा विस्तारसे की है तथा उसे रेचचमूपतिके समान कोप्पण तीर्थका रक्षक कहा है।]

[ए रि मै १९११ पृ० ४६]

३२४

आनन्दमंगलम (चिंगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ३८ = सन् १२१६ तमिल

[इस लेखमें विनैयाम्पूर कुरवडिगलके शिष्य वर्धमानपेरियडिगल्-द्वारा तिनगिरिसरिअमें एक श्रावकको आहारदान देनेके लिए ५ कलंजु (सुवर्णमुद्रा) अर्पण करनेका उल्लेख है। यह लेख चोल राजा (कुलोत्तुंग ३) मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन्के ३८वें वर्षका है।]

[रि. सा ए. १९२२–२३ क्र. ४३० पृ २५]

३२५

मनगुन्दि (धारवाड-मैसूर)

शक ११३८-४० = सन् १२१६–१८, कन्नड

[यह लेख कदम्ब राजा जयकेशि तथा वज्रदेवके समय चैत्र ब ७, शक ११३८ तथा कार्तिक शु ८, शक ११४० इन तिथियोंका है। इसमें मणिगुन्दिके जिनालयके जीर्णोद्धारके लिए कई भव्य पुरुषों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है तथा वहाँके जैन आचार्योंकी नामावली दी है।]

[रि. सा ए. १९२५–२६ क्र ४३९ पृ ७५]

३२६

कंदगल (बिजापुर, मैसूर)

राज्यवर्ष (२) १ = सन् १२३०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिंहणदेवके राज्यवर्ष (२) १, विक्रम संवत्सर ज्येष्ठ अमावास्याका है। इसमें मूलसंघ-काणूरगणके सकलचन्द्र भट्टारककी शिष्या नागसिरियक्के-द्वारा निर्मित पार्श्वनाथ बसदिके लिए भूमि आदिके दानका उल्लेख है।]

[रि. सा ए. १९२८-२९ क्र. ई ५० पृ ४५]

३२७

हलेबीड (मैसूर)

शक ११५७ = सन् १२३६, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद्देवासुराहीन्द्रपूजितश्रीगजन्मजिद् देव. श्री-

२ वीरतीर्थेशः पायाद् भव्यजनव्रजान् ॥ (१) श्रीमल्लोकैकविख्या-

३ तमूलसंघो विराजते कोण्डकुन्दान्वयस्तत्र देशीयाख्यगणा-

४ ग्रणी ॥ (२) श्रावीरनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्त्यनुजो महान् श्रीमद्वा-

५ हुबली नाम मुनि सिद्धान्तपारग ॥ (३) सकलङ्ग-प्रतिपादितोभयनया-

६ भिज्ञानसंपन्नको मदनोद्यद्द्वदावलोयदविभु सद्धर्मरक्षामणि. दक्षिता-

७ ष्टादशसत्पदार्थनिपुण. षड्द्रव्यवेदो जयत्यखिलोर्वीनुतचारु वाहुवलिसिद्धान्तीश्वर -

८ सन्मुनि. ॥ (४) तस्याग्रशिष्योखिलशब्दशास्त्रपारगम स्वात्म-सुखानुवर्ती । स्याद्वादविद्याकुश-

९ को विभाति कामाम्बुजेन्दु सकलेन्दुयोगी ॥ (५) अर्हणन्दिमुनी-न्द्राणां चारित्र विस्मयावह ।

१० तेषा प्रणयिनी वाणी तस्यास्तन्मुनय प्रिया ॥ (६) जल्प-वितण्डकथासु च शब्दाग-

११ मजिनमुखोत्थपरमागमयोरुच्चित्र यच्चित्त स त्रैविद्यारुहोर्हणन्दि-

१२ मुनि ॥ (७) एष श्रुतगुरुर्यस्य सकलेन्दुमहाव्रते. । तस्य विद्यामहाप्रौढिर्मा-

१३ दृशैर्वर्ण्यते कथ ॥ (८) इत्थभूतो यमीशो वरजिनमुनिसद्वृन्द-मध्ये विराजत् षड्विंशत्यर्धि-

३३४
विजापूर (मैसूर)
शक ११७९ = सन् १२५७, कन्नड

[यह लेख करीमुद्दीनकी मसजिदमें पाया गया। यह मसजिद एक जैन मन्दिरके स्थानपर बनवायी गयी थी। इस मन्दिरके आचार्य करसिदेवके लिए यादव राजा कन्हरदेवके समय शक ११७९ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२४]

३३५
बस्तिहल्लि (मैसूर)
सन् १२५७, कन्नड

[यह मूर्तिलेख होयसल राजा नरसिंहके समय सन् १२५७ का है। इस समय श्रीकरणद मधुकण्णके पुत्र विजयण्ण तथा दोरसमुद्रके अन्य जैनोंने मूलसंघ-देसिगण हनसोगे शाखाके शान्तिनाथ मन्दिरका निर्माण किया था। इस मन्दिरके लिए हीरगुप्पे नामक ग्राम नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्तिको अर्पित किया गया था।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४९]

३३६
कलकेरि (विजापूर, मैसूर)
राज्यवर्ष ४ = सन् १२६०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्नरदेवके राज्यवर्ष ४ साधारण संवत्सरमें लिखा गया था। इसमें अनन्ततीर्थंकरमन्दिरके लिए रंगरस-द्वारा-पुत्र प्राप्तिके उपलक्ष्यमें कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। करसंग्राहक सर्वदेव नायक-द्वारा भी इस समय कुछ दान दिया गया था।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ५४ पृ० १८६]

३३७

नेगलूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष (६) = सन् १२६२, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्धरदेवके राज्यवर्ष (६) विरोधी सवत्सरमें भाद्रपद शु० १४, गुरुवारको लिखा गया था। इसमें कुलचन्द्रभट्टारकके शिष्य सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२–३३ क्र० ई० १६२ पृ० १०७]

३३८

बालूर (धारवाड, मैसूर)

शक ११८४ = सन् १२६२, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें कहा गया है कि सॅबूरके कावय्यकी माता चेकवाने यह निसिधि स्थापित की। लेखकी तिथि पौष शु० ११, सोमवार, शक ११८४, दुर्मति सवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९४५–४६ क्र० २१८]

३३९

बालूर (धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा कन्धरदेवके राज्यकालमें नल सवत्सरके पौष मासमें गुरुवारके दिन इस निसिधिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। लेख बहुत घिस गया है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१७]

३४०-३४१

हत्तिमत्तूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ५ तथा ९ = सन् १२६५ तथा १२६९, कन्नड

[ये दो लेख हैं। पहला लेख यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ५ में कार्तिक व० १३, बुधवार, क्रोधन संवत्सरके दिन सेवयर जक्कयकी पत्नी मादवेके समाधिमरणका स्मारक है। दूसरेमें महादेवके राज्यवर्ष ९ में हत्तियमत्तूरकी बसदिके आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है। (न) न्दिभट्टारकदेवका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ६८-६९ पृ० ९८]

३४२

हलेबीड (मैसूर)

सन् १२६५, कन्नड

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय सन् १२६५ का है। इस वर्षमें राजा-द्वारा त्रिकूट रत्नत्रय शान्तिनाथ जिनालयके लिए माघनन्दि सैद्धान्तिको कल्लनगेरे ग्राम दान दिया गया था। माघनन्दिकी गुरु-परम्परा इस प्रकार है — मूलसंघ — नन्दिसंघ-बलात्कारगणके वर्धमानमुनि-जो होयसल राजाओंके गुरु थे, श्रीधर त्रैविद्य-पद्मनन्दि त्रैविद्य-वासुपूज्य सैद्धान्ति-शुभचन्द्र-भट्टारक-अभयनन्दिभट्टारक — अरुहणंदि सिद्धान्ति, देवचन्द्र, अष्टोपवासि कनकचन्द्र, नयकीर्ति, मासोपवासि रविचन्द्र, हरियनन्दि, श्रुतकीर्ति त्रैविद्य, वीरनन्दिसिद्धान्ति, गण्डविमुक्त, नेमिचन्द्रभट्टारक, गुणचन्द्र, जिनचन्द्र, वर्धमान, श्रीधर, वासुपूज्य, विद्यानन्द स्वामि, कटकोपाध्याय श्रुतकीर्ति, वादिविश्वासघातक मलेयालपाण्ड्यदेव, नेमिचन्द्र, मध्याह्नकल्पवृक्ष वासुपूज्य। श्रीधरदेव-वासुपूज्य — उदयेन्दु — कुमुदेन्दु — माघनन्दि। माघनन्दिके चार

ग्रन्थोंका उल्लेख किया है – सिद्धान्तसार, श्रावकाचारसार, पदार्थसार तथा शास्त्रसार समुच्चय। इनके शिष्य कुमुदचन्द्र पण्डित थे। अन्तमें इस दानके सहायकके रूपमें महाप्रधान सोमेय दण्डनायकका उल्लेख किया है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४८]

३४३

अण्णिगेरि (धारवाड, मैसूर)

शक ११८९ = सन् १२६७, कन्नड

[इस लेखमें चैत्र व० ४, मंगलवार, शक ११८९, प्रभव संवत्सरके दिन मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके सोमदेवाचार्यकी शिष्या आकलपे अव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २०४ पृ० ५३]

३४४

संगूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ९ = सन् १२६९, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ९, विभव संवत्सरमें नन्दिभट्टारकके शिष्य नयकीर्ति भट्टारकके शिष्य नालप्रभु गगर सावन्त मोवके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२–३३ क्र० ई १६८ पृ० १०७]

३४५

हुलिकेरे (मैसूर)

सन् १२७१, कन्नड

१ स्वस्ति प्रजोत्पत्तिसंवत्सरद चैत्र सु १ बि दंदु श्रीमत् प्रतापवीर होय्सल श्रीवीरनारसिं.... .

२ वाद्दुनं सोमेयदण्णायकर मेयूदुन बाचेयदण्णायकर होंकुन्द बसदि जीणवा

३ दण्णायकरं जीर्णोद्धारवं माडिसिके – य निडिसिदरु

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके शासनकालमें चैत्र शु १, गुरुवार, प्रजोत्पत्ति संवत्सर, के दिन होकुदकी बसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। यह कार्य सोमेय दण्डनायकके बहनोई बाचेय दण्डनायक-द्वारा किया गया था। लिपि १३वी सदीकी है। संवत्सर नामानुसार यह वर्ष सन् १२७१ होगा जब नरसिंह तृतीयका राज्य चल रहा था।)

[ए० रि० मै १९३७ पृ० १८७]

३४६

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक ११९७ = सन् ११७५, कन्नड

[यह लेख वैशाख व १ (३), गुरुवार, शक ११९७ युव संवत्सरका है तथा पार्श्वनाथबसदिके भीतरी दीवालमें लगा है। इसमें सरटूके तिलकरसके मन्त्री देवण्णके पुत्र अमृतैयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६–२७ क्र० ई ९१ पृ० ८]

३४७

अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

शक १२०० = सन् १२७८, कन्नड

[यह लेख निडुगल्लुके महामण्डलेश्वर इरुगोण चोल महाराजके समय आषाढ शु० ५ सोमवार शक १२००, ईश्वर संवत्सरका है। इसमें मूलसंघ-देशियगणके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य बालेन्दु मलधारिदेवके उपदेशसे संगयन बोम्मिसेट्टि तथा मेलव्वेके पुत्र मल्लिसेट्टि-द्वारा

तेलगेरेके प्रसन्नपार्श्वदेवके लिए २००० वृक्षोके उद्यानके दानका वर्णन है। इस मन्दिरका उपाध्याय जैन ब्राह्मण चल्लपिल्ले था जो पाण्ड्यप्रदेशके भुवलोकनाथनल्लूरका निवासी था।]

[रि० सा० ए० १९१६–१७ क्र० ४० पृ० ७४]

३४८

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संस्कृत-नागरी, सं० १३३४ = सन् १२७८

[इस लेखमें पण्डिताचार्य रत्नकीर्ति-द्वारा एक मूर्ति सं० १३३४ में स्थापित किये जानेका उल्लेख है।

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० १२३]

३४९

एटा (उत्तरप्रदेश)

संवत् १३३५ = सन् १२७८, संस्कृत-नागरी

[मूलसंघके गोललतक कुलके कुछ साधुओं-द्वारा सवत् १३३५ मे तीन मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं ऐसा इस लेखमें वर्णन है।]

[रि० आ० स० १९२३–२४ पृ० ९२]

३५०

कड्कोल (धारवाड, मैसूर)

शक १२०१ = सन् १२८०, कन्नड

[इस लेखमे मूलसघके पद्मसेन भट्टारकके शिष्य सावन्त सिरियम गौडकी पत्नी चण्डिगौडिके समाधिमरणका तथा कई गौडों-द्वारा एक वसदिको दान दिये जानेका उल्लेख है। तिथि भाद्रपद शु० ६, सोमवार, शक १२०१, प्रमाथि सवत्सर ऐसी है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई ५१ पृ० १२३]

३५१

सण्णमल्लीपुर (मैसूर)

शक १२०७ = सन् १२८५, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीप्रतापचक्रवर्ति
२ होय्सळ वीर नरसिं-
३ हदेवरसरु पृथिवि-
४ राज्य गेय्युत्तिरलु
५ शक वरिष १२०७ नेय
६ सुभक्रितुसंवत्सरद फाल्गु-
७ ण 'हे-
८ ग्गडे
९ ···गरबेद्दलु
१० ' लवुं
११ ···मतरु····
१२ ····हि आतन तम्म '' आळ-
१३ ····कोडगे ···आळ
१४ ' 'ल्दु होळवेरडु अन्तु
१५ तिद्दने 'सा-
१६ थिर मत्तरु 'बिट्ट
१७ ''सिद सासन ॥
१८ 'दक्षिण तगडूरकि
१९ ·······
२० (ता) यूर गुळियपुर
२१ ···यण्ण अळ
२२ ' ' नागगावुड ॥ वीतराग

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय शक १२०७ के फाल्गुनमे लिखा गया था। किसी हेग्गडे-द्वारा नागगावुडको तगडूर, तायूर तथा गुलियपुर ग्रामकी कुछ भूमि करमुक्त दी जानेका इसमें वर्णन है। अन्तमें वीतराग यह मुद्रा है इससे दानदाता जैन प्रतीत होते है।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० १८४]

३५२-३५३

ताडकोड (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १४ = सन् १२८५, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रके राज्यवर्ष १४, चित्रभानु संवत्सर-का है। इस समय कन्नरदेवकी रानीकी आज्ञासे सर्वाधिकारी मायदेवने एक जिनमन्दिर बनवाया था। यहींकि अन्य लेखमें चन्द्रनाथको नमस्कार कर बालचन्द्रके शिष्य श्रीवासुपूज्यका उल्लेख किया है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४८४-८८५ पृ० ७६]

३५४

कलकेरी (मैसूर)

राज्यवर्ष १८ = सन् १२८९, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामदेवके राज्यवर्ष १८ में पौष शु० ८, बड्डवार, (सर्व)धारि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें नागेयिसेट्टि और मादब्बेके पुत्र मादैय्यके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु समन्त-भद्रदेव थे।]

[रि० सा० ए० १०३५-३६ क्र० ई० ७२ पृ० १६७]

३५५

डम्बल (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १२११ = सन् १२९०, कन्नड

[यह लेख रामदेव (यादव) के समयका है। धर्मवोललके महानाडु-के १६ प्रतिनिधि तथा नाडुके ८ प्रतिनिधि एव माल्लवीर चबुण्डके छोटे बन्धु सप्तरस-द्वारा नगर जिनालयके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान देनेका इसमें उल्लेख है। इसी मन्दिरको अय्वत्तोक्कलु तथा उगुर ३००-द्वारा कुछ तेल वगैरहका दान भी दिया गया था। तिथि पौष शु० २, रविवार, शक १२११, सर्वधारी संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ क्र० एफ् ६३]

३५६
पोन्नूर (उ० अर्काट, मद्रास)
राज्यवर्ष ७ = सन् १२९०, तमिल

[यह लेख स्थानीय जैन मन्दिरमें है। मारवर्मन् विक्रमपाण्डयके राज्यवर्ष ७ मे विडालपर्क्के नाट्टवर् (ग्रामप्रमुखो)-द्वारा आदिनाथके पल्लिविलागमूमें रहनेवाले लोगोसे प्राप्त करोका उत्पन्न इस जिनमन्दिरमें पूजा आदिके लिए अर्पण किए जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१५ पृ० ४०]

३५७
हुमच (मैसूर)
शक १२१७ = सन् १२९५, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-
२ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशास-
३ नं स्वस्ति श्रीमत्तु सकवर्षं १२१७ नेय मनु-
४ मथसंवत्सरद चैत्र सु पाडिव बृहस्प-
५ तिवारदन्दु श्रीमत्सिद्धान्तयोगी-
६ न्द्रपादपकजभ्रमर बम्मगवुड म-
७ हापुरुषो···गतो सिद्धिं समाधिना।
८ नमनाण्णं···गुणसेनमुनिश्वरं
९ ···द्राविडान्वय
१० मौलिना

[इस निसिधिलेखमे श्रीमत् सिद्धान्त योगीन्द्रके शिष्य बम्मगवुडके समाधिमरणका उल्लेख है जो चैत्र शु० १, बृहस्पतिवार, शक १२१७ मन्मथसवत्सरके दिन हुआ था। लेखके अन्तमें द्राविड अन्वयके गुणसेन मुनीश्वरका नाम भी आता है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७]

३५८

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १२१७ = सन् १२६५, संस्कृत-कन्नड

[इस लेखमें पुरिकरके शान्तिनाथ मन्दिरके लिए सोमय-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। तिथि भाद्रपद शु० ५, सोमवार, शक १२१७ ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई २८ पृ० १६३]

३५९

मन्नेर मसलवाड (बेल्लारी, मैसूर)

शक १२१९ = सन् १२९७, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रदेवके समय मार्गशिर शु० ५ गुरुवार शक १२१९ हेमलम्बि संवत्सरका है। इसमें महामण्डलेश्वर भैरवदेवरस-द्वारा मूलसंघ-देसिगणके नेमिचन्द्रराउलके शिष्य विनयचन्द्रदेवको भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मोसलेवाडके जिनमन्दिरके लिए था जिसका जीर्णोद्धार महामण्डलेश्वर सालेवेय तिकमदेव राणेयके मन्त्री सावन्त पण्डितके पुत्र केशव पण्डित-द्वारा किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २५६ पृ० २२]

३६०

कोगलि (बेल्लारी, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा प्रतापचक्रवर्ति रामनाथदेव-द्वारा युव संवत्सरमें कोगलिके चेन्नपार्श्वजिनमन्दिरके लिए सुवर्णदान देनेका उल्लेख है।]

[इ० म० बेल्लारी १९२]

३६१–३६७

चिप्पगिरि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

१३वी सदी, कन्नड

[ये छह लेख हैं। मूलसघ-देशीयगण-कोण्डकुन्दान्वय-पोस्तकगच्छके केशणदि भटारके शिष्योके समाधिमरणका इनमें उल्लेख है। इन शिष्योंके नाम है—गोपरस, तथा उसकी पत्नी हालौवे, मादलदेवी, तिप्पयकी पत्नी जाकवे, नागलदेवी, मूलिग तिप्पय, वैंतलेय बोम्मिसेट्टि तथा उसकी पत्नी बीमवे। लिपिके अनुसार ये लेख १३वी सदीके प्रतीत होते है। इसी समयके एक और लेखमें माघवचद्र भट्टारकदेवके शिष्य परिसयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

(रि० सा० ए० १९४४–४५ ई ६३-७२)

३६८

अदरगुंचि (जि० धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख लिपिपर-से १३वी सदीका प्रतीत होता है। यापनीय सघ-काडूरगणकी एक बसदिके लिए दी हुई जमीनकी सीमा बतलानेवाला यह पत्थर है। यह बसदि उच्छगि नगरमें थी। यह दान अदिगुंण्टेके गौण्ड और स्थानिको-द्वारा दिया गया था।]

(रि० सा० ए० १९४१–४२ ई० क्र० ३ पृ० २५५)

३६९

बसवपट्टण (हासन, मैसूर)

१३वीं सदी कन्नड

१ श्रीमूलसघ देसियगण पोस्तकगच्छ

२ कोंडकुंदान्वयद इंगलेश्वरद ब-

३ लिय श्रीश्रुतकीर्तिदेवर गुड्डुगलु
४ कोग नाड श्रीकरणद कावण्णगल मक्क-
५ लु नाकण्ण होनण्णगलु माडिसिद श्री-
६ नेमिनाथस्वामिगल प्रतिमे मग-
७ ल महा श्री श्री श्री

[इस लेखमें श्रीकरणद कावण्णके पुत्र नाकण्ण तथा होनण्ण-द्वारा, जो कोंगु प्रदेशके निवासी थे, नेमिनाथकी इस मूर्तिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। ये दोनो मूलसघ-देसियगण-पुस्तकगच्छकी इगलेश्वरबलिके आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य थे। लेखकी लिपि १२वी या १३वी सदीकी प्रतीत होती है।]

(ए० रि० मै० १९४४ पृ० ४२)

३७०

रत्नापुरि (मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यह दो पंक्तियोका लेख एक मूर्तिके पाद-पीठपर है जिसमे किसी-भट्टारकदेव-द्वारा इस मूर्तिको स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वी या १३-वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमे मुद्रित] [ए० रि० मै० १९४४ पृ० ७०]

३७१

वेलगोल (माड्या, मैसूर)

१२वा-१३वीं सदी, कन्नड

[इस छोटे-से मूर्ति-लेखमें द्रविल सघ-नन्दिसघ-अरुगल अन्वयके कुछ व्यक्तियो-द्वारा इस पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वी या १३वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित] [ए० रि० मै० १९४४ पृ० ५७]

३७२
बिदिरूर (शिमोगा, मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ श्री मैणदान्वयद देसियगणद नागर एक्कगूडिय सु-
२ भचद्र देवरु माडिसिद बसदिगे ॥ श्रीजिनपद-
३ पकजविराजितमधुकरन् एनिप्प मल्लि कोट्ट
४ पूजितवेने तीर्थंकरभ्राजित प्रतिकृतिय-
५ नुचित कडितले गोत्र ॥

[इस लेखमें बिदिरूर ग्रामके बसदिमें मल्लि नामक व्यक्ति-द्वारा इस चौबीसी मूर्तिके अर्पण किये जानेका वर्णन है। यह बसदि देसियगण-मैणदान्वय-कडितले गोत्रके सुभचन्द्रदेव-द्वारा बनवायी गयी थी। लेखकी लिपि १३वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११४]

३७३
होगनूर (मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ श्रीक्राणूद श्रीसकलचंद्रभट्टा-
२ रकदेव सिष्यरु माधवचद्रदेवर गुड्डुगलु
३ उभयनानादेसिगलु माडिसिद होंगनूर शा-
४ न्तिनाथदेवर जोगवट्टिगेय बसदि मगल महा

[यह लेख एक शान्तिनाथ मूर्तिके पादपीठपर है जो वर्तमानमें लक्ष्मीदेवी मन्दिरके एक चबूतरेमें लगी है। इसमें होगनूरकी बसदिका निर्माण सकलचन्द्रके शिष्य माधवचन्द्रके शिष्यो-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। ये मूलसघ-क्राणव (क्राणूर गण) के अन्तर्गत थे। लिपि १३वी सदी-की है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १३६]

३७४
तवनन्दी (मैसूर)
१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ सूर- २ स्तगण चित्रकूटान्वयद
३ प्रतिबद्ध

[यह छोटा-सा लेख एक खण्डित जिनमूर्तिके पादपीठपर है। मूल-संघ-सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके किसी व्यक्ति-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी। लिपि १३वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५]

३७५
वरुण (मैसूर)
१३वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद् द्रविल- २ संगस्य नन्दिसं
३ घे ह्यरुगळे अ- ४ न्वयेऽशेषशास्त्र-
५ ज्ञ श्रीपाल ६ मुनिराश्रिय
७ तच्छिष्यो विदुषां ८ श्रेष्ठ पद्मप्रभ-
९ मुनीश्वर. तस्य १० पुत्र तपोसौ-
११ धर्मसेनमहा १२ मुनि ॥ सोयं
१३ शुद्ध( ) स्वभावस्तो- १४ बाह्यां (न)रपरिग्रहा-
१५ त्त्यक्तो जिनपदाग्रे १६ त्रिदिव गतवान् बुध-
१७ .

[इस लेखमें द्रविलसंघ-नन्दिसंघ-अरुंगल अन्वयके आचार्य श्रीपालके प्रशिष्य तथा पद्मप्रभके शिष्य धर्मसेनके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १३वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १७२]

२० यरु वासुपूज्यसिद्धान्तदेवरु शुभचन्द्र-
२१ भट्टारकरु अभयनन्दिभटारकरु अर्हन्नं-
२२ दिसिद्धांतिगलु देवच(न्द्र) सिद्धांतिगलु अष्टोप-
२३ वासि कनकचन्द्रदेवरु नयकीर्ति चान्द्रा-
२४ यणदेवरु मासोपवास रविचन्द्रसिद्धा-
२५ न्तिगलु हरियनन्दिसिद्धान्तिगलु श्रुत-
२६ कीर्तित्रैविद्यदेवरु वीरणन्दिसिद्धान्तदे-
२७ वरु गण्डविमुक्त नेमिचन्द्रभट्टारकदेव

पूर्वकी ओर

२८ (वर्ध)मानमुनीन्द्ररु श्रीधराचार्यरु वा-
२९ सुपूज्यत्रैविद्यदेवरु उदयचन्द्रसिद्धां-
३० तदेवरु कुमुदचन्द्रभट्टारकदेवर मा··
३१ माघनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल श्रीपादप-
३२ द्मगलगे होय्सलभुजबल श्रीवीरनारसिंहदेवरस-
३३ रु दोरसमुद्रद त्रिकूटरत्नत्रयद श्रीशान्तिनाथ
३४ देवर अं(ग)भोग रंगभोग आहारदान सुन्ताद
३५ समस्तधर्मकार्यक्का
३६ चिक्ककंनेयनहलि
३७ · व येनुल्लंथा अष्टमो-
३८ ग तेजस्वाम्यसहितवागि माघनं-
३९ दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल श्रीपाद-
४० पद्मंगलिगे धारापूर्वकं माडि
४१ कोट्टरु स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत
४२ वसुधरा· ··

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंकी परम्परा नरसिंह (तृतीय) तक दी है। नरसिंहने राजधानी स्थित शान्तिनाथ जिनालयके लिए चिककक्षेयनहल्लि ग्राम दान दिया। यह दान मूलसंघ-बलात्कारगणके कुमुदचन्द्र भट्टारकके शिष्य माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीको दिया गया था। लेखमें कुमुदचन्द्रके पूर्ववर्ती १९ आचार्योंके नाम भी उल्लिखित है।]

[ए० रि० मैं० १९४० पृ० १६४]

३७७-३७८

मूगूर (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

(अ) १ श्रं मूलसंघ देसियगण पुस्त २ कगच्छ कोंडकुंदान्वयक 'हुगेरे-

३ यतीर्थद् प्रतिबद्धर भरतपण्डितरिगे ४ जक्कियब्बेय मगलु....

(ब) १ मूलसंघ देसिगण पुस्तकगच्छ कोंडकुन्दान्वय इंगणेश्वर सं(ब)द श्रीभानुकीर्तिपं-

२ डितदेवर शिष्यरप्प कान ' नंदिदेवर गुड्डुगलप्प मूगूर समस्त

३ गावुण्डुगलु ' कोडेयर बसदिय जीर्णोद्धारणवमा

४ डि ' सिदरु मंगलमहाश्री

[ये दो लेख मूगूरकी आदिनाथवसदि तथा पार्श्वनाथवसदिके मूर्तियोंके पादपीठोंपर है। पहलेमें मूलसंघ-देसियगणके क-हुगेरे तीर्थसे सम्बद्ध भरत पण्डितके लिए जक्कियब्बेकी कन्या (नाम लुप्त)-द्वारा कुछ दान दिए जानेका उल्लेख है। लेख अधूरा होनेसे विवरण स्पष्ट नही हो सकता। दूसरेमें मूल संघ-देसिगण-इगणेश्वर संघके भानुकीर्ति पण्डितके शिष्य --नन्दिके शिष्य गावुण्डो द्वारा मूगूरकी कोडेयरबसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। लेखोकी लिपि १३वी सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९३८ पृ० १८२-८३]

३७९

हलेबीड (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

१ जिननात्मीयेष्टदन्यं निजगुरु नयकीर्तिव्रतीश लसद्भुवि-
२ नुतं तानुक्किसेट्टिप्रभु पितृ तनगेकव्वे तायेन्दोडिन्तीवन-
३ धिव्यावृतधात्रीतलदोल् अदें पुण्योद्भवव्रातदोल् कूडि नितान्-
४ तं नामिसेट्टि स्फुटविशदयशोलक्ष्मिय ताने पेत्त ॥
५ अन्तात व्यवहारदि 'मन्न विक्रमाक्रान्त
६ लडेव ' मान्वात दो
७ कोण्डु स्वान्त विश्रुत ना-
८ मिसेट्टि दिवदोल् कैवल्यमं ताल्दिदं

[इस लेखमें उक्किसेट्टि और एकव्वेके पुत्र नामिसेट्टिके समाधिमरण-का उल्लेख है। नामिसेट्टिके गुरु नयकीर्ति व्रतीश थे। लेखकी लिपि १३वी सदीकी प्रतीत होती है। पंक्ति ५ के अस्पष्ट भागमे सम्भवत वीरबल्लाल (द्वितीय) के राज्यका और तिथिका उल्लेख था।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७८]

३८०

तिरुनिडकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा गया है कि कुलोत्तुंग चोल राजा-द्वारा कनकच्चि-ऩगिरि अप्पर् देवको अर्पित नल्लूर यह एक धार्मिक स्थान है। यह लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके बराण्डेमें लगा है तथा १३वीं सदीकी लिपिमें है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २९९ पृ० ६५]

३८१

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर खुदा है। इस मूर्तिकी–जिसे कच्चिनायक्कर कहा है – स्थापना आलप्पिरन्दान् मोगन् कच्चियरायर-द्वारा की गयी ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१९ पृ० ६७]

३८२

कोट्टगेरे (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें देसियगण-इगलेश्वर बलिके हेरगु निवासी आचार्य हरिचन्द्रके शिष्य माघनन्दि-द्वारा एक शान्तिनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१९ पृ० ३३]

३८३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख यहाँकी पहाडीपर चढनेके लिए बनी सीढियोंके पास है। इन सीढियोंका निर्माण गुणवीरदेवन् पण्डितदेवन्ने किया ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१६ पृ० ६७]

३८४

हुकेरी (जि० बेलगाँव, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख टूटा है। यापनीय सघके किसी गणके त्रैकीर्ति आचार्यका इसमें उल्लेख है। लिपि १३वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४२-४३ ई ६ पृ० २६१]

३८५-३८६

हले हुब्बलि (जि० धारवाड, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यहाँके अनन्तनाथ बसदिमें दो लेख है। एक ब्रह्मदेवकी मूर्तिपर है। इसकी लिपि १२वीं सदीकी है। सेटि महादेवी-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है। दूसरा एक जिनमूर्तिपर है। इसकी लिपि १३वी सदीकी है। इसमें यापनीय सघके (क)डूर गणका उल्लेख है।

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३३-३४]

३८७

मोटे बेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १३वीं सदीकी लिपिमें है। तिथि चैत्र शु० १०, गुरुवार, सौम्य सवत्सर ऐसी दी है। इसमें जिनचन्द्रदेवके शिष्य बोम्मिसेट्टिके पुत्र बाचिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १०८ पृ० १२९]

३८८-३८९
बनवासि (उत्तर कनडा, मैसूर)
१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यहाँ दो मूर्तिलेख हैं जो १२वी-१३वी सदीकी लिपिमें हैं किन्तु अस्पष्ट हैं। एकम मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४३-४४ पृ० २८]

३९०
बिजापुर (मैसूर)
शक १२३२ = सन् १३१०, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें मूलसंघ-निगमान्वयके कृष्णदेव-द्वारा शक १२३२, साधारण संवत्सरमें इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० १६४ पृ० १३४]

३९१
बेलगामे (मैसूर)
सन् १३१९, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु यादवचक्रवर्ति भुजबलवी "बल्लाळ"
२ पंत्र ९ नेय सिद्धार्थिसंवत्सरद आषाढ शु
३ वार व्यतीपात संक्रान्ति शुभदिनद
४ (श्री)मद् राजधानिपट्टण बळ्ळिग्रामेय हिरियब-
५ सदिय मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवर अष्ट-
६ विधार्च(न)गे श्रीमतु महाप्रधानं सेनाधिपति मल्लि-

७ चणदण्डनायकर् नागरखण्ड जिड्डुलिगेयन्तेर-

८ डेप्पत्तुमं दुष्टनिग्र(ह) शिष्टप्रतिपालन माडुत्तं

९ सु(खमं)कथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे पट्टणद अधि-

१० कारि हेग्गडे मिरियण्णं तन्नंतरालिकेय मूलेवर्तनु-

११ स्यवागि हेञ्जुंकडधिकारि चावुण्डरायनुं सोमय्य-

१२ नुं मन्नेयद कोप(?)विसडधिकारि मालवेग्गडे इन्तिनि-

१३ वरं तंतम्म सुकमं येत्तिप्पत्तक्कं सर्वबाधा-

१४ परिहारवागि मिरियण्ण ' आचार्य

१५ पद्मनन्दिदेवर कालं कर्चि धारापूर्वकं माडि कोट्टर ई धर्म-

१६ मं प्रतिपालिसिदंगे वारणासिकुरुक्षेत्रदल्लि सासिर

१७ कविलेयं वेदपालरप्प ब्राह्मणगें कोट्ट फल-

१८ मक्कु

[यह लेख होयसल राजा वीरवल्लालके राज्यवर्ष ९ सिद्धार्थिसंवत्सर-में आषाढ शुक्लपक्षमें संक्रान्तिके दिन लिखा गया था। राजधानि बल्लि-ग्रामके मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवकी पूजाके लिए पद्मनन्दि आचार्यको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। यह दान हेग्गडे मिरियण्ण, चावुण्डराय, सोमय्य और मालवेग्गडे इन चार अधिकारियोंने दिया था। इस समय नागरखण्ड और जिड्डुलिगे प्रदेशपर महाप्रधान सेनापति मल्लियणका शासन चल रहा था। बल्लाल द्वितीय अथवा बल्लाल तृतीय इन दोनोंके ९वें वर्षमें सिद्धार्थि संवत्सर नहीं था। अतः अनुमान किया गया है कि यह बल्लाल (तृतीय) के २९वें वर्षके सिद्धार्थि संवत्सरका उल्लेख होगा। तदनुसार सन् १३१९ यह इस लेखका वर्ष होगा।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२८]

३९२

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १२६६=सन् १३४४, कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ, देसियगणके विशालकीर्ति रावलके अग्रशिष्य नागचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। तिथि श्रावण व० ११, रविवार, शक १२६६, सुभानु संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३९ पृ० २७]

३९३

रायदुर्ग (बेल्लारी, मैसूर)

शक १२७७=सन् १३५५, कन्नड-संस्कृत

तालुक ऑफिसमें रखी हुई मूर्तिके पादपीठ पर

[विजयनगरके राजा हरिहरके समय शक १२७७, मन्मथ संवत्सरमें यह लेख लिखा गया। कुन्दकुन्दान्वय, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण, मूलसंघके अमरकीर्ति आचार्यके शिष्य माघनन्दि व्रतीके शिष्य भोगराज-द्वारा शान्तिनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है।]

[इ० म० बेल्लारी ४५८]

[रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १११ पृ० १२]

३९४

होसाल (द० कनडा, मैसूर)

शक १२७९=सन् १३५७, कन्नड

[यह लेख स्थानीय भग्न जिनमन्दिरमें है। इसमें विजयनगरके राजा बुक्कण्ण महारायके जैन सेनापति बैचय दण्डनायकका उल्लेख है। तिथि शक १२७९ विलम्बि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० २८४ पृ० ३१]

३६५

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

शक १२८३ = सन् १३६१, तमिल

[इस लेखकी तिथि धनु शुक्ल १३ बुधवार, शक १२८३ शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है। इसमें सोम्बादि विन्नवडरैयन्के पुत्र (नाम लुप्त)-द्वारा अप्पाण्डार् मन्दिरमें दीपके लिए भूमि दान दी जानेका उल्लेख है। यह दान गोप्पण्ण उडैयार्की प्रेरणासे दिया गया था। लेख अप्पाण्डार् चन्द्रनाथमन्दिरके मण्डपकी दीवालमें लगा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०३ पृ० ६५]

३६६

साविकेरि (धारवाड, मैसूर)

शक १(२)९८ = सन् १३७६, कन्नड

[इस लेखमें मार्गशिर ब० १(३), बुधवार, शक १(२)९८ नल संवत्सरके दिन बाल्लिहल्लिके बेलप्पके समाधिमरणका उल्लेख है। उस समय विजयनगरके वीरबुक्करायका शासन चल रहा था।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३३ पृ० २७]

३६७

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३०० = सन् १३७८, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (१) श्रीमद्देव-

२ जिनेन्द्राय वर्द्धमानतमहात्मने सर्व्वावधिविशिष्टाय भव्यालि-कुमुदेन्दवे (२) तं वंदे देवदेवं सुरुचि-

३ रमनघं चारुकैवल्यनेत्र नित्य निर्वाणरामाकुचविलिखितकाश्मीर-
राग वराग तुंगं देवेन्द्रानम्रपा-

४ द गुणविकसदनन्तं स्वबोधात्मतत्त्व मांगल्यं भव्यसार्थं निहत-
मनसिज नव्यधर्मस्वरूपं । (३) इदु

५ जम्बूद्वीपमंता भरतविषयदोल् पडुव मेरुसिदं'' 'पदपिन्दा मेरुविं
दक्षिणदे तुलु कोंगिन्दवी शुद्ध-

६ दीप मुदर्दि '''तॅगु ''बकि पनस नदीतीरदोल् कौंगु जम्बूसदनं
चेल्वागि तोकु

७'' विहार हस्तिसमूहं । (४) आ तुलुवाधीशरमणि ' 'वदनमागि
तोर्पुदु नयर्दि नीतियुत गेरसोप्पे सोकि-

८ सुतिर्पुदु विभवदिंदायमरावतिय । (५)।अन्ता नगिरिय राज्य-
कधीश्वरनेनिसिद मल्लयरसरन्वयसम्प्रदायदा-

९ यदिं बन्द कीर्तिगे जयस्तंभनेनिसिदं हैवेभूपालन प्रतापवेन्तेने
सान्द्र श्रेमकुन्दोद्गमकुमुदन-

१० मल्लमल्लिकाफुल्लमुख्यवृन्दं गंगातरंगतरलहरहास तारनीहारहारं
सन्दिर्दी चारुकीर्ति'' '

११ प्रभवद्गुनयवेंबिन' 'माल्पुदु श्रीहैवेभूपालन निजयशम
वर्णिसल् वल्लना-

१२ व दक्षिणमण्डलिक निजनिवास' सलुक्षण राजराजकटकगल
सूरेयना-

१३ यन्ते तोण्डमण्डलभूपर मन्दि रक्षिसु हैवेराज वेलुतिर्पुदु-

१४ नलियदे नोल्पड मावनियंककाररतिचक्रद हस्तपराक्रमाकनी
हैवनृपाल चिन्नय-

१५ शो' 'निश्चय दुन्दुभिताडनंगलिं जावलिशब्ददिं परिदु दूरदि
सचरिसुत्तमिर्पुदा'

१६ येसेव राजहृदयंगलु मिन्नगलाद वद्भुत । श्रीमद्देव गुरुगुणाद्भुतमहानागेन्द्रपंचा-

१७ स्य ''सन्दिर्द्द हामद वैहालि महादाकिनीनामोपद्रवं पल्लव · श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरा-

१८ वासमं श्रीमदनन्तपालगींगे नित्यं दीर्घायुमं श्रीयुम अन्ता नगिरियपुरवराधीश्वरं मामा

१९ वनियकक्कार मावगेमलेव रायरगण्ड शिवसिंहासनचक्रवर्ति परमालुवदङ्कविभाड कलिगल मुन्नद ··

२० सम्यक्त्वचूडामणि वसन्तराज्यचातुर्वर्ण्यक्के इलुव रायरगण्ड हैवेभूपालं सुखसकथाविनो-

२१ दर्दि राज्यं गेय्युत्तिरलु आ गेरसोप्पेय महाजनगल गुण-गलेन्तेन्दोडे ॥ वृ ॥ अदरोल् नानाजा-

२२ निपदरग्रणी सम्यक्त्वराशी जैनर् पडेवर् जैनमार्गाश्रयजलनिधि-संवर्धितपूर्णचन्द्रर् सुदर्स क्रोधादि-

२३ मृ मादुदर्पेकुलनिवर् विट्टु रादर् मुख्यमादधिपनखिल-कलावल्लभर् कीर्तिवेत्तरताता-

२४ मादण्डाधिपरगलु महजात कुलक्षत्रियरादरसुगलन्वयमन्तेन्दोडे स्वस्ति समधिगतपंचमहा-

२५ महिमप्रसिद्धमाद वनवासिपुरवराधीश्वरर् वैजयन्ती-मधुकेश्वर-लब्धवरप्रसाद मृगमदामोद गोकर्ण···

२६ महाबलेश्वरदिव्यश्रीपादपद्माराधकर परबलसाधकरं हरसिवरवर-शूल निगलंकमल्ल चलदंकराम राय-

२७ रगण्ड साहसमल्ल गण्डरदावणि सत्यराधेय साहसोत्तुग शरणागतवज्रपजर पश्चिमसमुद्राधिपतियप्प हैवे-

२८ क्षत्रियकुलकमलवनमार्तण्ड परनृपतामरस पूर्णचन्द्रनेनिसिद वसवदेवरसर · देवरसर-

२९ राज्यलक्ष्मियेनिसिद चन्द्रपुरवेम्ब पट्टणदोळु राज्यं गेय्युव कालदोळु आ अरसुगळिगे पट्टवर्धनवाहसरनियो-

३० गिगळ् जिनसेव्यनुं त्रिशक्तिबलयुतनुं षड्गुणसमर्थनुं राजक्षत्रिय-चतुर्दन्त सोमेश्वरदण्डनायक-

३१ न अन्वयद कीर्तियेन्तेन्दोडे श्रीसोमदण्डपुत्रनु भासुर कामण्ण-दण्डनायकनेनिपं सासनचक्र-

३२ वर्ति धर्मधारक सामन्तं कीर्तिवेत्तनमळचरित्रं श्रीमत्सोमदण्ड-नायकंगे कामार्थं तावु पुट्टिदर् श्रीमद्रामणनेम्ब हेग्गडेय-

३३ सुवेम्बीपुत्रससेव्यक रामं पुट्टिद""दशरथसामर्थ्यदि अपराजिता-रमणिग साहित्यरत्नाकरमन्ता-

३४ रामणनेम्ब हेग्गडे रामक्कंगे तां पुट्टिद शान्तं योजणनम्बिपुत्र-नेनिसल् कुन्तीदेवि समन्तु

३५ आपाण्डुराजगे तां शान्त धर्मजनेन्तु पुट्टिद चोला सम्यक्त्व-रत्नाकरमन्ता योजणसेट्टिय जननि रामक्कनन्वयमेन्तेन्दोडे-

३६ वसुधेयोळु नेगळ्दे""असमैश्वर्यसम्पन्नरु दानगुणसम्पन्नरुमप्प नम्बिसेट्टियर तम्मसेट्टिसहोदररेनिसिद म-

३७ ल्लिसेट्टि होन्नपसेट्टि गुणाढ्यरुं जैनजनबान्धवरुं आ सेट्टरोळगे महाघननेनिसिद आ होन्नपसेट्टि-

३८

३९ शककाल ''साविरद मुन्नूर

(अवशिष्ट ६ पंक्तियाँ पढ़ी नहीं जा सकतीं ।)

[यह लेख शक १३०० में लिखा गया था । गेरसोप्पेके राजा हैवेय भूपालके शासनकालमें चन्द्रपुरमें बसवदेवरस शासन कर रहे थे । उनके दो मन्त्री सोमण्ण दण्डनायक और कामण्ण दण्डनायक थे । सोमण्णका पुत्र रामण्ण था जिसकी पत्नी रामक्क थी । उनके पुत्रका नाम योजणसेट्टि

था। इनके कुलके होन्नपसेट्टि तथा नम्बिनेट्टि इन बन्धुओंने दिये हुए दानका विवरण इस लेखमें दिया था।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५]

३९८

हडजन (मैसूर)

शक १३०(६)=सन्, १३८४, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु शकवरिष १३० संवत्सरद
२ ज्येष्ठ ब १ आ। श्रीमतु मैसुनाड ह-
३ डदनद तडेयर कुलद बम्मय्यनवर सुपुत्र हिरि-
४ य मादण्णनवरु देवरिंगे। श्रीमद् रायराजगुरु मडलाचार्य
५ सकलविद्वज्जनचक्रवर्तिगलुमप्प सैद्धातिदेवर प्रियगुड्डि केशवदे-
६ (वि)यरु आ केशवदेवियर अक्क मारदेवियरु स्वर्ग-
७ तरादरु। अवर निसिदियं माडिसि आ निसिदिय अर्चनेगे बि-
८ ट्टं तह क्षेत्र बसदिगे पूर्वदलुल्लगद्देयिं तेंकण ब
९ त्तिन असरिसदलु हत्तु खडुग गद्देयनु धारापू-
१० र्वकवागि नडव हांगे आ हिरिय मादण्णनवरु बिट्टदत्ति-

[यह लेख मण्डलाचार्य सैद्धान्तिकदेवकी शिष्या केशवदेवीकी बडी बहन मारदेवीके समाधिमरणका स्मारक है। इस निसिदिकी पूजाके लिए हिरिय मादण्णने स्थानीय बसदिको कुछ भूमि दान दी थी। लेखकी तिथि ज्येष्ठ व० १, रविवार शक १३० (चौथा अक लुप्त है) दी है। तिथि और वारके योगसे यह शकवर्ष १३०६ निश्चित होता है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६४]

२७ आ सोमव्वेयनु आ हुलिगेरेय माणिकसेट्टिगे विवाहमाडि ' अवर मगलु नागव्वे
२८ आकेय तन्दे माणिकसेट्टि ममस्तरू आ येचिसेट्टि हुलिगेरेगङ्गि ? न्दिगुलदलि प्र-
२९ ·····आ नागव्वेयनू मलहि हिरिय हन्दिगुल्द चन्द्रनाथ-स्वामिगल चैत्यालयदोलु पूजे
३० यादिक्के आंकार्य नडेवन्ताग वृत्तियनू बिट्टु रामनव हाकिसिदरु आ येचरसियु तम्-
३१ म मावे नागवेयनू गेरसोप्पेय सेट्टि गुत्तगयि ओजेय मग माणिकसेट्टियनू तानु विवा-
३२ हव माडि आ माणिकसेट्टियनन्वयमेन्तेन्दोडे गुरुठक्किय नागिसेट्टिय मगलु रामव्वे आकेय पु-
३३ त्र माणिकसेट्टि माणिकसेट्टिगू नागव्वेयवरिगू जनिसिद मक्कलु हरिसेट्टि कामण-
३४ नेमण्णसेट्टि सरणसेट्टि मगप चिन्तैवरोलगे रामक्कननू गेरसोप्पेय रामण हेग्गडेय मगराज-
३५ णन ओजणगे विवाहव माडि आ वोजण्णसेट्टियू रामक्कनू सुखसकथाविनोददिं-
३६ दिहल्लिगे गेरसोप्पेय अनन्ततीर्थंकरचैत्यालवनारचिसि महा-प्रतिष्ठेयनू माडिसि
३७ यिरुत्तं यिरलु सक वरुस सासिरद मूनूर हदिनाल्कनेय प्रजापतिसंवत्सर-
३८ द कार्तिक शुद्ध पंचमि आदित्यवार सन्यसनसमन्वितवागि स्वर्गस्तरादरु मद्दवक्किगे
३९ रामक्कनवर तन्दे मोदलुगोण्डु चरित्रदिं नेगले विक्रमसंवत्सरद आषाढ-

५० सुध पंचमि सुक्रवार रोहिणीनक्षत्रदलु तुगममाधि ··
५१ ···आचन्द्रार्कमागि
५२ मूडे मत्तवन् वोजण-
५३ सेट्टि ·· रामक ··
५४ निषधिय कल्लिगे मगल महा श्री

[इस निषिधिलेखमें कार्तिक शु० ५, रविवार, शक १३१४, प्रजापति संवत्सरके दिन योजणसेट्टिकी पत्नी रामक्कके समाधिमरणका उल्लेख किया है। रामक्कने गेरसोप्पेमें अनन्ततीर्थकरका मन्दिर बनवाया था। उसका वंशवर्णन भी लेखमें दिया है। रामक्कके पिता माणिकसेट्टिकी मृत्यु आषाढ शु० ५, शुक्रवार, विक्रमसंवत्सरके दिन हुई थी।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० ९७]

४०१

लक्कवरपुकोट (विजगापटम्, आन्ध्र)

संवत् १४४८=सन् १३९२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें संवत् १४४८ में जिनचन्द्र भट्टारक-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह मूर्ति वीरभद्र मन्दिरमें है।]

[रि० सा० ए० १९११-१२ क्र० ४७ पृ० ५०]

४०२

संगूर (धारवाड, मैसूर)

शक १३१७=सन् १३९५, कन्नड

[इस लेखमें जैन मल्लप्पके पौत्र तथा मगमदेवके पुत्र नेमण्ण-द्वारा संगूरके पार्श्वनाथ मन्दिरको भूमि दान देनेका उल्लेख है। विजयनगरके सम्राट् हरिहरके समय गोवाके शासक माधवका यह सेनापति था। नेमण्ण-

के पिताका समाधिमरण पुष्य शु० ११, गुरुवार, युव संवत्सर, शक १३१७ में तथा पितामहका समाधिमरण फाल्गुन व० १४, सोमवार, नल संवत्सर-में हुआ था ।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६७ पृ० १०७]

४०३

गुट्टी (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

[इस लेखमें विजयनगरके राजा हरिहरके समय इरुग दण्डनायक-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है। कोण्डकुन्दान्वयकी परम्परामें वक्रग्रीव, एलाचार्य, अमरकीर्ति, सिंहनन्दि तथा वर्धमानदेशिकका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२०-२१ क्र० ३२६ पृ० १८]

४०४

हम्पी (वेल्लारी, मैसूर)

शक १३१७=सन् १३९५, संस्कृत-तेलुगु

[यह लेख एक जिनमूर्तिके खण्डित पादपीठपर है। तिथि फाल्गुन व० १, सोमवार, भावसंवत्सर ऐसी दी है। शक वर्षके अंक लुप्त हुए हैं। मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके धर्मभूषण भट्टारकके उपदेशसे इरुगप्प दण्डनायक मन्त्रीश्वर-द्वारा कुन्दनप्रोलु नगरमें कुन्थुतीर्थंकरका चैत्यालय बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है। यह मन्त्री वैचय दण्डनायकके पुत्र थे। संवत्सरनामानुसार यह शक १३१७ का लेख प्रतीत होता है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ३३६ पृ० ४१]

४०५

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

१४वीं सदी, तमिळ

[यह लेख विजयगण्डगोपालदेवके २०वें वर्षमे लिखा गया था। पोन्नूरके निवासी अरुवन्दै आण्डाळ् तिरुच्चोत्तुरै उडैयार्-द्वारा इस जिन-मन्दिरमे सन्ध्यासमय छह दीप प्रज्वलित रखनेके लिए तीन पलवन्नमाडै तथा कुछ चावलके दानका इसमे उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३८]

४०६

हिरेचौटि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ नमो वीतरागाय। श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलां-

२ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं। सागरवारि-
वेष्टितसमस्त-

३ धरारमणीवनस्तनाभोगविदंम्बिनं विदितविस्तृतसारतराग्रहारदिं

४ नागरखण्डपत्रपरिवेष्टलदिं जननेत्रपुत्रिकारागमनित्तु माण्दुदे
मनस्तु-

५ स्तटं बनवासिमण्डल। नागरखण्डं बनवासेगागिकुं भूपण-योलु

६ ....गिरेवागि मेरेगुं नागलतापूगवनङिनेसेव तवे सों

७ ....नागरखण्ड ..सागरमागे तोर्पु

८ सुखकिम्बागि' गे मेरेवुदी'''' ननुजना ' सेणिसेट्टि

९ ....वसडिय माडिसिदरु-इन्तण्णतम्मंदिरिब्बरु शान्तिजिनेश्वर-

१० वसडिय माडिसि सन्तोषदिं' 'सन्तसदिं पडेदर्दं धराचन्द्र

११ ....गुणवार्धिय '' पडेडु बालुत्तिरे पलकालं पुरुषनिधि नाग-

१२ सेट्टि तन्नय पेम्पि हेसेवहुरसियक्कनुमत मत

१३ पडेहु सुखदिं बाल्वुट्ट स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर अरिराय-

१४ विभाड अगलि ' भापेगे तप्पुवरायरगण्ड चतुस्समु-

१५ द्राधिपति श्रीवीरवुक्करायमहारायरु राज्यं गेय्युत्तमि 'वि-

१६ रोधिसंवत्सर कातिकशुद्धतडिगे वर देवर नि-

१७ चन्द्रगुड्डिगलुमप्प सान्तिना-

१८ नाथदेवर अमृतपडि नन्दादीप

१९ केरेय केलगे गद्दे ख ४ '

२० ''' र्था धर्मम प्रतिपालिसु ''

२१ वारणासि कुरुक्षेत्र

२२ कविलेय-

२३ पातकनक्कु श्रीशान्तिनाथ,

[यह लेख कार्तिक शु० ३, विरोधिसंवत्सरके दिन वीरबुक्करायके राज्यकालमें लिखा गया था। वनवासि प्रदेशके नागसेट्टि तथा सेणिसेट्टि द्वारा शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका तथा उसमें दीपादि पूजाके लिए ४ खण्डुग भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[ए० क्रि० मैं० १९२८ पृ० ८३]

४०७

हले सोरब (मैसूर)

१४वीं सदी उत्तरार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रै-

२ लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं। अमरावतियलकावति स-

३ ममेनिसुव सोरब तवनिधियुमेबेरडं समनागि चि-

४ पालिसिदं सुमनसतरु सहस तवनिधिय ब्रह्माख्यं ॥

५ तिंगलवेन्तिर्द्दे नाक··

६ युविल

७ वार्धि

[यह निसिधिलेख बहुत खण्डित है। सोरब और तवनिधिके शासक ब्रह्मके समय किसी व्यक्तिके समाधिमरणका यह स्मारक है। मृत व्यक्ति कोई महिला थी क्योंकि लेखके पाषाणपर एक स्त्रीमूर्ति-उत्कीर्ण है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १७९]

४०८

तवनन्दी (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ जिनरं जिनमुनिगलु मत्तनु-
२ पम प्राणेश हरियन-
३ दन नेनदु वनजाक्षि महा-
४ लक्ष्मुयु घनतर शौर्य-
५ दोलुमग्नियोल् स-
६ ले पायिदल्
७ महालक्ष्मिय सद्गुण-
८ समुद्रोपमान ॥ मं-
९ गलमहा श्री श्री

[इस लेखमें महालक्ष्मी नामक किसी महिलाके अग्निप्रवेश-द्वारा मरणका उल्लेख है। जिन, मुनि और अपने पति हरियनदनका स्मरण करते हुए उसने धैर्यपूर्वक प्राणत्याग किया था। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५]

४०९

तलकाड (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख द्रविल सघ-नन्दिगणके कमलदेवके शिष्य लोकाचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १४वी सदीकी है। यह लेख वैकुण्ठ-नारायणमन्दिरको दीवालमें लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ६३]

४१०

मत्तावार (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ मरुलजिन जकवेहट्टि चटवे-

२ गन्ति मत्तवूर वसदि तपसु

३ माडि सिद्धि आदलु अवेय मा-

४ चरन मग मार कल्लु निलिसि-

५ द

[यह निषिधिलेख मरुलजिन-जकवेहट्टि नामक ग्रामकी निवासी चटवेगन्तिके समाधिमरणका स्मारक है। उसका मृत्यु मत्तवूरकी बसदिमें हुआ था। अवेय माचरके पुत्र मारने यह स्मारक स्थापित किया था। लेखकी लिपि १४वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मैं० १९३२ पृ० १७१]

४११

हुलेकल (उत्तर कनडा, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १४वी सदीकी लिपिमें है और बहुत घिसा है। इसके प्रारम्भमे जिनशासनकी प्रशसा है तथा बादमे किसी मठमे आहारदान आदिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० २१ पृ० २२९]

४१२-४१३

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, कन्नड

[ये दो लेख १४वी सदीकी लिपिमें रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाडीपर पाषाणोंपर खुदे हैं। इनमें चिप्पगिरिके श्रीविद्यानन्दस्वामी तथा बोलय नागका उल्लेख हुआ है। अक्षर कुछ अस्पष्ट हुए हैं।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५२-५३]

४१४

उद्दरि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
२ मोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यना-
३ थस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्ति श्रीमतु
४ · · · विजयकीर्तिभटारर···

[यह लेख खण्डित है इसलिए विजयकीर्तिभटार इस नामके अतिरिक्त अन्य विवरण इससे प्राप्त नहीं होता। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १४२]

४१५

सक्करेपट्टण (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, १४वीं सदी

१

२ तस्मिन् सेनगणान्तरिक्षतरणि श्रीवीरसेनो भुवि ससाराम्बु-
धितारणैकतरणिः श्रेयोवनीसारणी। तच्छिष्य प्रचुर-

३ प्रबन्धरचनाचातुर्यपद्मासन पायाद् वो जिनसेन इत्यभिधया
ख्यातो मुनिग्रामणी । (१) श्रीमत्पुस्तक-
४ गच्छसूरसदृशो विश्वप्रकाशात्मकस्त्रैविद्यो गुणभद्रदेवयतिप
श्रीसूरसेनस्तत (१) शिष्य श्रीकमलादिभद्रगणभृद् दे-
५ वेन्द्रसेनस्तत । तेनाकारि कुमारसेनमुनिपो वादीन्द्र-चूडामणिः
(२) तच्छिष्याः हरिसेनदेवाह्वय । मा-
६ धुर्य वाचि कारुण्य हृदि तीव्र तपस्तत । श्रीप्रभाकरसेनाख्य-
गुरुश्रेयो विराजते । (।३) तदग्रोदय-
७ शैलतिग्मकिरणस्त्रैविद्यपारगतो भूपालार्चितपादपङ्कजयुग
श्रीलक्ष्मिसेनो मुनि (।) लोके सत्त-
८ पमा निधानमनघ कारुण्यवारानिधि॰ दाने कल्पकुजोपमो
विजयते कामेभकण्ठीरव. । (४)
९ श्रीमदनसेपमुनिपो सज्ज्ञानामृतपयोधिपूर्णेन्दु. (।) सुदृढतपोगुण-
युक्तो भाति श्रीमत्प्रभा-
१० करार्यसुत । (५) द्वीपितटाकनामनगरीपति शख्वजिनेन्द्रचन्द्र-
मश्रीपादपकजालिरभलाम-
११ रकीर्तिमुनीन्द्रपादसेवापरिपक्वबुद्धि बलगारसमाह्वयवशपद्म-
तारापति रजिप स्वजनक-
१२ जनमोमणि वैश्य मायणं । (६) गुणतुंग होल्लराजं पितृ गुणवति
देवमास्वेतन्नम्वेयु-
१३ मद्गुणरत्न नागराजं परिकिपोडे पितृव्य गुणैकाश्रय माकणन्
आत्मीयानुज तानेनिपगश्वित-
१४ सौभाग्यर्द्धि भाग्यदि धारिणियोल् विख्यातिवेत्तं जिनसमय-
सरस्सारस मायणार्य । (७) मत लोकै-
१५ कमित्र्, प्रचुरत्तरकलावल्लभ वन्दिवृन्दोत्करपुष्यत्-कल्पभूजं
बुधनुतचरितं चावपरं

१६ काव्यगोष्टि-सरस विद्विष्टशैलाशनि सुरपुरमोडलान्तगल मीन-केतूद्धर रूप मद्गुणाढ्य-
१७ हमयन पुनल् आश्चर्यमं मायणार्यं। (८) इन्तु होय्सल-भूविभुलक्ष्मीलपनसुं
१८ श्रीवीरबुक्कराजसाम्राज्यरमारमणीयविलासदर्पणोपमं पुनिसि मोगयिसुव होसपट्टणदोलु प्रसिद्धिवडेद वै-
१९ श्य मायण माकप्पगलु न "दवागि माडिद श्रीलक्ष्मीसेन-भट्टारकर निषिधिय प्रतिष्टे शासन मंगल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[यह निषिधिलेख सेनगणके लक्ष्मीसेनभट्टारककी मृत्युका स्मारक है। इनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी — वीरसेन — जिनसेन — गुणभद्र त्रैविद्य-देव — सूरसेन — कमलभद्र — देवेन्द्रसेन — कुमारसेन — हरिसेन — प्रभा-करसेन — लक्ष्मीसेन। लक्ष्मीसेनके गुरुबन्धु मदनसेन थे। यह निषिधि दलगार वंशके मायण तथा माकण नामक दो वैश्यों-द्वारा स्थापित की गयी थी। ये होसपट्टणके निवासी थे। यह नगर होयसल प्रदेशमें था तथा वीरबुक्कराजके राज्यके अन्तर्गत था।]

[ए० रि० मैं० १९२७ पृ० ६१]

४१६

तेरकणांबि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंघ देशियगण पुस्तक-
२ गच्छ कोंडकुंदान्वय इनसोगेय बलि-
३ य राजगुरु (मह) लाचार्यरमप्प (सम)-
४ यासग्ग ललितकीर्तिभट्टारकरु माडिसिद
५ (प्रतिमे) मंगल महा श्री श्री श्री

[यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना मूलसंघ-हनसोगे बलिके ललितकीर्ति भट्टारकने की थी। लिपि १४वीं सदी की है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १६९]

४१७

तगडूर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ (कों)डकुन्दान्वय
२ (मू)लसंघ नागनन्दि
३ (अन)न्तभट्टारकशिष्य
४ नन्दिभट्टारकरशि-
५ 'यन्तगडू
६ ' यिल्लेकन्तिय(र्)
७ (स)न्यसनगेय्दु सुर-
८ (लोकक्के) सन्दर्

[इस निसिधिलेखमें मूलसघ-कोण्डकुन्दान्वयके नागनन्दि भट्टारकके शिष्य नन्दिभट्टारककी शिष्या ' यिल्लेकन्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। पाषाण टूटा होनेसे कुछ अक्षर नष्ट हुए है। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १७३]

४१८

चामराजनगर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमूलद सगद का-
२ णूर्गणद अन-
३ न्तकीर्तिदेवर गुड्ड
४ बोप्पय सन्य-
५ सनविधियिं
६ (स्व)र्गस्त

[इस लेखमें मूलसघ-काणूर गणके अनन्तकीर्तिदेवके शिष्य बोप्पयके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि १४वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११२]

४१९

माचिनकेरे (कडूर, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमतु मन्मथसंवत्सर प्रथम श्रावण शु । गुरुवार पुष्य-
नक्षत्रदल्लु श्रीचंद्रनाथन चैत्यालयदल्लु
२ सोलहरवलिय अनतकसेट्टितिय मग आदिसेट्टिय येरगिसिद
चतुर्विंशतितीर्थंकरप्रतुमेयनु यिरिसि कु-
३ तार्थं नाद्देनु भद्र शुभं मंगलं भूयात् पुनदर्शनं शुभ मंगल महा
श्री श्री श्री

[इस लेखमें चतुर्विंशति तीर्थंकर मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। अनतकसेट्टितिके पुत्र आदिसेट्टिने यह मूर्ति स्थापित की थी। तिथि प्रथम श्रावण शु० (?) मन्मथ संवत्सर ऐसी दी है। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९४६ पृ० ३७]

४२०

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३२३=सन् १४०१, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछन जी-
२ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं
३ नगिरिय कुलचक्रवर्ति राजनिर्जित
४ ला सामन्तर वलियं यिन्ता होन्नभूपनालिय आ साम-
५ न्तन पुत्रनर्थिकामं कोमल " मरसं अरिनृपालनातन '
६ दे ' भर चारुकीर्तिपण्डित ' सद्गुरुप्रभु आ कासनृपालन सान
७ योजि राज्यमे नगिरियुमनितुं तनगागे बैचणभूपति म
८ नेगल्दं रिपुसैन्य नवर न पडसरसि जिनमुनिपादांबुजात
नृपाल

९ वैचणसेट्टि परिणतान्तस्करणमन्तप्प हैवेरायन प्रतापवेन्-
१० नेन्तोडे स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर ···· नियमीसरगण्ड
प्रताप
११ सूरेकार म्रियसिंहासनचक्रवर्ति निर्लिपपुरवरा-
१२ धाश्वरनेनिप वैचिराज राज्य गयिवलि शकवरुष
१३ १३२३ नेय विक्रमसंवत्सर माग शु १ मन्दवारढ
१४ रात्रियालु हैवेराजन अलिय मंगराजनु स्वर्गस्थनाद श्रीजि-
१५ नराजराजितपदाम्बुजभृग कीर्तिथिन्दी जगदोलो-
१६ वलमोप्पुव दानियु हैवेभूपन राजिय पट्टदानेय···
१७ ·गोचिजनरह विक्रमस नगिर मगनृपं सुरलोक-
१८ केय्दिदं ··विसुद्धरप्प मत्त राजं जिनमताबुधिहिमकि-
१९ रण नगिरपुराधीश मगरसग राजसनुत
२० रतिपचबाणनस····श्रीमगभूपालक हिमरुक्
२१ · श्री विक्रमसंवत्सरद माघमासद· ·
२२ लु ··सुरागनारमण
२३ जीर्थश्विन
२४ सम्मिमित श्रीविक्रमा
२५ काल्यस्थे देवप्प सूमे पक्षे वल-
२६ क्षे मन्दवार · २७ सुरपदमं···

[यह लेख गेरसोप्पेके राजा हैवेयरायके जामात नगिरपुरके प्रमुख मगरसकी मृत्युकी स्मृतिमें लिखा गया था। इसकी तिथि माघ शु० १, शनिवार, शक १३२३ विक्रम संवत्सर यह थी। लेखका बहुत-सा भाग घिस गया है। इसके पूर्वभागमें होन्न राजा तथा वैचणसेट्टिका उल्लेख है। उनका मगरससे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० १००]

४२१

सक्करेपट्टण (मैसूर)

शक १३२८=सन् १४०५, कन्नड

१ श्रीमत् परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥)

२ श्रीमद् रायराजगुरु मण्डलाचार्य पुरविक्रमादित्य मल्याद्य-

३ कल्पवृक्ष सेनगणाग्रगण्यरप्प श्रीमल्लक्ष्मीसेनभट्टारकवर श्रीसन श्रीमानसेनदेवर निषिधि शकव-

४ र्ष···१३२८ नेय पार्थिव संवत्सर १० लु

५ श्रीमुत्तद होसकेर बैचसेट्टिय मक्कलु मायसेट्टि बोम्मिसेट्टि नागणसेट्टि इवर नोम्मक्कलु बैच-

६ सेट्टिय तम्मसेट्टि कोवरिसेट्टि चिक्कबैचसेट्ट नाडिसेट्टियर मक्कलु कोवरिसेट्टियर

[यह लेख सेनगणके भट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनदेवकी समाधि-का स्मारक है। यह निषिधि मुत्तद्होसकेरके बैचसेट्टिके पुत्र मायसेट्टि, बोम्मिसेट्टि आदिने शक १३२८ में स्थापित की थी।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ६२]

४२२

कोरग (द०_कनडा, मैसूर)

शक १३३१=सन् १४१०, कन्नड

[यह लेख केरवंशके राजा सान्तर वंशीय वीरभैरवके पुत्र पाण्ड्य-भूपालके समय पुष्य शु० १०, गुरुवार, शक १३३१, सर्वधारि संवत्सर-का है। इसमें बलात्कारगणके वसन्तकीर्तिरावलकी प्रार्थनापर वारकूरकी बसदिके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५३० पृ० ४१]

४२३-४२४
भटकल (उत्तर कनडा, मैसूर)
शक १३३२=सन् १४१०, कन्नड

[ये दो लेख हैं। कार्तिक शु० १०, सोमवार, शक १३३२ सर्वधारी संवत्सर, यह इनकी तिथि है। एकमें मगिराय ओटेय-द्वारा उनके किसी सम्बन्धित मल्लिराय नामक व्यक्तिके समाधिमरणपर निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें किसी राजकन्याके समाधिमरणपर निसिधिस्थापनाका उल्लेख है। इसमें हैवभूप, भैरादेवी तथा मगिरायका भी नामोल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३३९-४०]

४२५
लक्ष्मेश्वर (मैसूर)
शक १३३४=सन् १४१२, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके देवराय महारायके समय मार्गशिर शु० २, रविवार, नन्दन संवत्सर, शक १३३४ को लिखा गया था। शंखवसतिके आचार्य हेमदेव तथा सोम्यदेव (शिवमन्दिर) के शिवरामय्य-द्वारा दोनों मन्दिरोंकी भूमिकी सीमाके बारेमें कुछ विवादका समझौता किये जानेका इसमें उल्लेख है। यह कार्य नागण्ण दण्डनायक-द्वारा सम्पन्न हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९३५-३८ क्र० ई० ३३ पृ० १६३]

४२६-४३०
टौंक (राजस्थान)
संवत् १४७०=सन् १४१३, संस्कृत-नागरी

[ये ५ मूर्तिलेख हैं। मूलसंघके आचार्य प्रभाचन्द्रके शिष्य पद्मनन्दिके उपदेशसे खण्डेलवाल कुलके कुछ व्यक्तियों-द्वारा ज्येष्ठ शु० ११, गुरुवार, संवत् १४७० को ये मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४६६-७० पृ० ६९]

४३१

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १३४२=सन् १४२०, कन्नड

[यह लेख वैशाख शु० १४, रविवार, शक १३४२, शार्वरी संवत्सर-का है। इस समय रायराजगुरु हेमसेनके शिष्य बुलिसेट्टिका समाधिमरण हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९५ पृ० ८]

४३२

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १३४३=सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख चन्द्रनाथबसदिमें है। इसकी तिथि भाद्रपद शु० ९, शुक्रवार शक १३४३ प्लव संवत्सर है। इस समय स्वरटोरके तिलकरसके मन्त्री हेग्गडे मदुवरसके पुत्र नागरसकी मृत्यु हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९४ पृ० ८]

४३३

गेरसोप्पे (मैसूर)

शक १३४३=सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं। जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्रीजम्बूद्वी-

२ पमध्यस्थितजनसर''' रमणरवार्भ्यंकृतश्रीयर्''''सद्धर 'जिनपद-पद्मभृंग स्तमित ' जायात पत्तन स्यक्तपक

३ '' त्रैविद्यवर्ल्ली मुक सुलमरारम्य ' स्थितजिनेन्द्रपादयुगपद्म-
भृंगा ससा-

४ र ' माब्धि तेसेद हुदुभूबरे-

५ न्द्रः तदीयवशोद्भवमगभूपो साहित्यलक्ष्मी ' भाभाति लक्ष्मो
जिनमदिरेषु काम कामितदायक कन- ।

६ स्ट् कन्दर्पसर्वप्रिय कल्याणकलनानन्त ''श्रीमगभूपस्य जिनेन्द्र-
पादद्वयपद्मगन्धमिलद्भृगोभवत् सन्ततं

७ तदीयवशसमूत. केशवाख्य क्षितीश्वर वशीकरोति सहसा
वन्दिगेहेषु सम्पद मुपासितुं भवतु ते गात्रं हि-

८ मार्द्रीकृत । श्रीमत्केशवभूमिपालचरितं श्रुत्वा स्तुवन् किन्नरः
तोपाकम्पितशंभुमौलिविलसद्गगातरगास्पद आश्रयाशो दह-
त्याशु स्वाश्रय स्वतनाथ सा (? स्वीयतेजसा)

९ केशवेन्द्रप्रतापाग्नि नाश्रय तापयत्यहो । केशवेन्द्रगुणान् वक्तु
को वा शक्नोति पण्डित. आकाशस्थितनक्षत्रगणना केन मुच्यते ॥
वर्धमानान्वयोद्भवे निवृंताश्रित-

१० दरिद्रे निजपतिनियमांतर्धियुते होन्नवरसि विशुद्धात्मिके श्रानं-
दलिगे निलकमेनिक्कुं १ आ होन्नवरमियरसं श्रीहेंचनृप
जिनक्रमाब्जभृग बाहुबलनिंजितरि-

११ पुभूप साहससमुद्रनभिनवकाम । तयोरभून्निर्मलजक्कवरसा
नुता सुशीला जिनभक्तियुक्ता तं चापयेमे वरमगभूपो जामातृवर्यो
भुवि हे-

१२ वराज. अनिन्द्राऽपि निर्गन्तु भीरव खलु योषित मगभूपाल-
कीर्तिस्तु कामिनीवानिलघिनी तयोरभूता जिननाथनत्रौ माता
पुनीतासिलजैनल

१३ धात्रीव हैवणश्री मायल्लरसी मर्मूजिताह्वानयुता सुशीला श्रीमन्नत्रनिलिन्र — मौलिविन्मन्माणिक्य स्मपंनुनिपादपद्म - नखर श्रीपार्श्वना-

१४ थेन नु काम भगरमान्मजो गुन्गुणश्रीहैवणान्योभवत जैनयोगिनिकरर् माहित्यरत्नाकरर् श्रीमद्र्धानृनिनम्बिर्नाब निनग नृपालकृता भू-

१५ मौ भूरिगुणोज्जभास्करलमतग्रन्यत्रमामान्विता काम भगनृपा गुन्दया देवी श्रीमायलाया सुधामृनिधुनि प्रन्यह १ क ।

१६ आ मायल्लरसियरस भूमीशविनम्रपाद केशवभूप कामारिसमित-मन्नस्मोमद्युतिकीर्ति को सुरलोकद मुरतरविन गुरफ-

१७ लमं मेदृदु तृप्तियिरल्दे सुरर् वरेयोल् भूमुराद्य वरकेशवभूर-कन्भूजस्पृहेयिं माति कीर्न्यां श्रीकेशवक्ष्मापतिरप-

१८ राचुधितारगा जिनपतिश्रीपादपद्मानता भूमौ माविजिनेन्द्रचन्द्र-थिलमच्चारित्रनु रागोदया संसारमारोदया ।

१९ स्यव्ययर्न्येकसमन्विते शककृते श्राशार्वरीवत्सरे माघे मानित-पंचमीतिथियुते श्रीसोमवारे सिते पक्षे आदिराजवनिता वर्मोमिधाने पुरे काम कारयति स्म

२० जस्ययरमी पार्श्वप्रतिष्ठा मुदा । अनन्तरं । नगिरद राज द्रान्नरमनन्वयवाधिगे चन्द्र मलेना 'भोगयिप हैवभूपनलिय कलिकालद

२१ कर्णनेम्बरी जगदलु मगभूवरन वान्थवे तनलेदेविनन्दन नगेमोगदा कल्पभूज केशवरायनु कीर्तिवल्लभ । क । अन्ता नगिरद राज-

२२ र मन्तानाब्धियोलु लक्ष्मीमाणिक्यदेवीकान्तनृ पुनिपर्वारायगे कन्तुविलन्नुदयिसिद भगनृपाल मगविदूर क्षेमपुरतीर्थजिनेन्द्र पाद-

२३ पद्मक शगणजीयनाळजनु अम्बमहीशन पुत्र संगमं'''तन्न मनमोल्वन्तीधर्मंव माडि पूर्वदोल् पिंगिद धर्मवेल्ल-

२४ वनु पालिसिद रविचन्द्ररुल्लिनं। अन्ताधर्मप्रतिपालकनेनिप श्रीसगभूपाल सुखदिं राज्य गेयुत्तिरल्. यिळेयोळु कुन्तलनाडु करं रजि-

२५ से पश्चिमनाडु देशदोल् कलवे वापी कूप नदी मामरनिं पनसीले बाळेयिं बाळेयिं बलसिकोण्डु कोकमिथुनमोदलागिर-ल्लियारवेगल नडवोप्पु

२६ वी पुरवनालुवन् अजनृपालनेम्बव। यिरून्दूरधिपति तां करमोप्पुव अढियरबलियिं करमेसेवनु तम्मरस '' यलियं कीर्ति-

२७ वेत्तना तम्मरस। आ तम्मरसनग्रजेय तनूजं धरेयोळ् इरुंदूर भूसुरनुत कल्करसननुजे तंगदेविगे वरनेनिप हैवेयरसन वरपुत्र प-

२८ द्मणरस जैनपद्मभक्त। आ पद्मण्णरसनू आतनग्रजे जक्कल-देविय'''तन्दे हैवण्णरसरु पार्श्वतीर्थेश्वर''' माडिद नित्यपूजे-

२९ आहारदानमोदलाद (बु) मेल्लव पुरो'''दिगे सलिसि मुन्निन धर्मवेल्लवं नेरेमाडि वलिक्क तन्नोलु सन्तुतवृद्धि पुट्टे जिनेन्द्र-नभिणेकनु नित्यपू-

३० जन मुन्नेसेवन्नदानमोदलादवनुं पिरिदागि माडि'''तृप्तियिन्दो-ळिदु पद्मरसं मिगे कोट्ट वृत्तिय। श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरद श्रीकार्य-

३१ क्केयू अंगभोगचैत्यालयद जीर्णोद्धारक्के धारापूर्वकवागि कोहन्ता वृत्तिय विवर हैवण्णरसरु तावु मूलवागि आळुतिर्द कोणुवणिय-

३२ लि कंगन कुळिय इन्नेरडु मूडे सुनिगे सीमे मूडलु अभिन-सेट्टितं हित्तल गदे तेंकलु हरिदु कोडि गाडि पडुवलु तम्मरसर होसगद्देयलु यिक्किद कल्लुगडि

३३ वडगलु हीलेयभागे गडियिन्ती चतुस्सीमेयिदोळगुळ्ळ कलवेय समस्तवृत्ति पद्मरसरु तावु मूलवागि आलुत्तैद होन्नमन केरेय

२४ "मेले येत्ति होन्नावरड नाल्कुवरे होन्नन् तम्म अम्म तंगल-
देवियरिगे पुण्यार्थं परिहारमागे बिट्टु हैवण्णरसर त-
२५ म्म मन.पूर्वकवागि कोट्टु सर्वमान्यवागि मूलस्थलवागि ताबु
आलुत्तं पिट्टु यडेय मज्जन वृत्तिगे गद्दि मूडलु होले तेंकलु
होले गद्दि पडुवलु
२६ .. ..
२७ ..."नमस्तवृत्तियनू आहारदानक्कवागि याचन्द्रार्कवागि
२८ धारापूर्वकं माडि कोट्टरु मत्तु आहारदानक्के या चित्यालयद
गृह

[इस लेखमें पद्मण्णरस-द्वारा पार्श्वतीर्थंकरमन्दिरके लिए ४ होन्नु कीमतकी भूमि दान दिये जानेका निर्देश है। पद्मण्णरसकी माता तंगलदेवी तथा पिता हैवण्णरस थे। उसकी बड़ी बहिन जक्कलदेवी थी। तंगलदेवी-का बन्धु कल्लरस था जो इक्कुन्दूरके शासक तम्मरसका भानजा था। यह कुन्तलनाडुके राजा मज्जका जामाता था। मज्जका समकालीन राजा संग था जो अम्बराजाका पुत्र था। अम्बका पिता संग था जो अम्बीराय और माणिकदेवीका पुत्र था तथा राजा केशवका वंशज था। केशवकी पत्नी मावलरसि मंग राजाकी कन्या थी। मंगकी पत्नी जक्कव्वरसि हैवप और होन्नवरसिकी कन्या थी। इस दानकी तिथि माघ शु० ५ बुधवार, शक १३४३, शार्वरी संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मैं० १९२८ पृ० ९३]

४३४

उडिपि (द० कनडा, मैसूर)

शक १३४६=सन् १४२४, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख (ताम्रपत्र) विजयनगरके देवरायमहाराजके राज्यकालमें पुष्य शु० ६, बुधवार, शक १३४६ क्रोधि संवत्सरके दिनका है। इसमें

मूलसघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके वर्धमान भट्टारककी प्रार्थनापर राजा-द्वारा वराग नामक ग्राम नेमिनाथमन्दिरको अर्पित किये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ए १२ पृ० ५]

[इस ताम्रपत्रकी प्रतिलिपि वराग ग्रामस्थित नेमिनाथवसदिमें एक पाषाणपर उत्कीर्ण है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२५ पृ० ४९]

४३५

माण्डू (धार, मध्यप्रदेश)

(संवत्) १४८३=सन् १४२६, सस्कृत-नागरी

[इस लेखमें सम्भवनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। तिथि (सवत्) १४८३, वैशाख (चैत्र) शु० ५, गुरुवार ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १८२ पृ० ४४]

४३६

बसरूर (दक्षिण कनड, मैसूर)

शक १३५३=सन् १४३१

[यह लेख देवराय २ के राज्यमें शक १३५३ में लिखा गया था। इसमें जैन मन्दिरके लिए बसरूरके चेट्टियों-द्वारा वहांके बाजारमें आनेवाली चावलकी हर गाडीपर एक 'कोलग' दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[इ० म० दक्षिण कनडा २७]

४३७

कुण्णत्तूर (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १३६३=सन् १४४१, तमिल

[यह लेख ऋषभनाथवसदिके पूर्वी दीवारपर खुदा है। कुण्रै (कुण्णत्तूर) के अर्हत्-मन्दिरका निर्माण शक १३६३ में होनेका इसमें वर्णन है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १०३ पृ० १४०]

४३८

वदनोर (भीलवाडा, राजस्थान)

संवत् १(४)९७=सन् १४४२, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें सवत् १(४)९७ में शान्तिनाथका उल्लेख किया गया है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४५० पृ० ६७]

४३९

कुण्डघाट (जि० मोंघीर, विहार)

संवत् १५०५=सन् १४४९, संस्कृत-नागरी

भग्न मन्दिरमें एक महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें संवत् १५०५ फाल्गुन शु० ९ को महावीरमूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है।]

[रि० इं० ए० क्र० ८ (१९५०-५१)]

४४०-४४१

बैन्दुरु (द० कनडा, मैसूर)

शक १३(७)१ = सन् १४५०, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके मल्लिकार्जुन महारायके समय चैत्र शु० १०, गुरुवार, शक १३(७)१ शुक्ल संवत्सरका है। इस समय बैंदूरके पार्श्वनाथ बसदिके लिए कुछ लोगों-द्वारा दिये हुए दानोंका विवरण इसमें दिया है। देवप्प दण्डनायकका भी उल्लेख है। इसी समयका दूसरा लेख यही है। इसमें हाडुवलिय राज्यके शासक संगिराय ओडेयके पुत्र इगरस ओडेयके समय पार्श्वनाथबसदिको प्राप्त दानोंका विवरण है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ५३६-३७ पृ० ५३]

४४२

चितलदुर्ग (मैसूर)

शक १३८५ = सन् १४६३, कन्नड

१ सखवरुस १३८५ सोमकृति स-

२ वछरद कर्तिकसुध १५ आकिय मं-

३ गिसेट्टिय मग गुम्मिसेट्टियर नि-

४ सिदगे श्रीवीतराग

[यह एक निसिदिलेख है। आकिय मंगिसेट्टिके पुत्र गुम्मिसेट्टिके समाधिमरणका यह स्मारक है। तिथि कार्तिक शु० १५, शक १३८५, शोभकृत् संवत्सर इस प्रकार दी है।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४]

४४३-४४४

चितलद्रुग (मैसूर)

१५वीं सदी (सन् १४७२), कन्नड

१ नंदन सं   २ बाचण्णगल   ३ निस्तिगे

[यह निसिधिलेख बाचण्णके समाधिमरणका स्मारक है। १५वीं सदीकी लिपिमें नन्दन संवत्सरका उल्लेख है अतः सन् १४७२ का यह लेख होगा। यहींका एक अन्य लेख इसी समयकी लिपिमें है जिसमें गुम्मटदेवकी निसिधिका उल्लेख है। यथा-

१ सखवरु – २ आसाडसु   ३ (गु) मटदेव

इसमें तिथिके अंक लुप्त हो चुके हैं।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४-५]

४४५

गुरुवयनकेरे (द० कनडा, मैसूर)

शक १४०६=सन् १४८४, कन्नड

[इस लेखमें शक १४०६ में नरसिंह वंग-द्वारा कन्नडिवसदि नामक जिनमन्दिरको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८१ पृ० ४५]

४४६

विद्रिरूर (शिमोगा, मैसूर)

शक १४१०=सन् १४८८, कन्नड

१ स्वस्ति स (क) वरिप १४१० नेय प्लवग संचरद जेष्ट सुद

पंचमि आदिवारदलु अदियर् बकिय गण्डलिकेय उरेकोंड राम-
नायकनु विदिरुरलि तनगे स्वर्गापवर्गसुखक्के का-

२ (र)णवागि चैत्यालयव कट्टिसि आदीश्वरन प्रतिष्ठेयन माडिसि-
दनु श्री

[इस लेखमें रामनायक-द्वारा विदिरूर ग्राममे चैत्यालय बनवानेका तथा आदिनाथकी इस मूर्तिकी स्थापना करवानेका वर्णन है। यह कार्य ज्येष्ठ शु० ५, शक १४१० के दिन सम्पन्न हुआ था।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११३]

४४७

जबलपुर (मध्यप्रदेश)

संवत् १५४९=सन् १४९२, संस्कृत-नागरी

[यह लेख पार्श्वनाथकी भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। तिथि वैशाख शु० ३, सवत् १५४९ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १२३ पृ० २१]

४४८

शिवडूंगर (राजस्थान)

सं० १५५६=सन् १५००, संस्कृत-नागरी

[यह लेख मूलसंघ-बलात्कारगण – सरस्वतीगच्छके आचार्य रत्नकीर्तिके समय स० १५५६ में लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-रत्नकीर्ति इस प्रकार बतलायी है।]

[रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३२]

४४६

हुम्मच (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्या-
२ द्वादामोघलांछनं
३ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-
४ सनं जिनशासन
५ विरोधिकृत् संवत्सरद आश्वी-
६ ज बहुल दसमि सोमवा-
७ रदलु । श्री मद्रायराज-
८ गुरु मंडलाचार्यर
९ महावादवादीश्वर रा-
१० यवादिपितामह सकल-
११ विद्वज्जनचक्रवर्तिगलुं श्रीम-
१२ द्वादीन्द्रविशालकीर्तिस-
१३ -स्वरकुरुकमलमार्तंडरं
१४ श्रीमदमरकीर्तियतीश्वरप्रि-
१५ याग्रशिष्यरं मूलसंघ ब-
१६ लात्कारगणाग्रगण्यरुमप्प
१७ श्रीधर्मभूषणभट्टारकदे-
१८ वर प्रियगुड्ड श्रीमदम-
१९ रेन्द्रवंदितजिनेन्द्रपादार-
२० विंदमधुकररुं चतुर्विधदा-
२१ नचिंतामणियु रुडस्फुटि-
२२ तजीर्णजिनालयोद्धारकरुम
२३ प्प विटिसेट्टिय मग चोकिसेट्टि-
२४ य निसिधि ॥

[इस लेखमें विटिसेट्टिके पुत्र चोकिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है जो आश्विन ब० १० सोमवार, विरोधकृत् संवत्सरके दिन हुआ था। चोकिसेट्टिके गुरु धर्मभूषण भट्टारक थे जो मूलसंघ-बलात्कारगणके अमरकीर्ति यतीश्वरके शिष्य थे। लिपि १५वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९२४ पृ० १७५]

४५०-४५१
आदवनी (बेल्लारी, मैसूर)
१५वीं सदी, तेलुगु

[ये लेख पहाडीपर एक पाषाणपर खुदे हुए तीर्थंकरमूर्तिके पास और चरणपादुकाओंके पास है। ये बहुत घिसे हुए है। मूर्तिके पास एक शकवर्षकी सख्या खुदी है तथा पादुकाओंके पास किसी आचार्यका नाम है। दोनो अच्छी तरह पढना सम्भव नही है। लिपि १५वी सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० ७४-७५ पृ० १३७]

४५२-४५३
नरसिंहराजपुर (मैसूर)
१५वीं सदी, कन्नड

[यहांके दो मूर्तिलेख १५वी सदीके लिपिके है। इनपर देविसेट्टिके पुत्र दोडणसेट्टि तथा नेमिसेट्टिके पुत्र गुम्मणसेट्टिके नाम उत्कीर्ण है।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

४५४
हनसोगे (मैसूर)
१५वीं सदी, कन्नड

१ हनसोगेय हिरियबसदिय
२ कोण्डिय कल्ल ओरसेय बोम्मि-
३ सेट्टियरु इक्किसिदरु

[यह लेख स्थानीय आदीश्वरबसदिके सभामण्डपके छतके पाषाणपर खुदा है। यह पाषाण (कोण्डियकल्लु) बोम्मिसेट्टि-द्वारा स्थापित किया गया था ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १५वी सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९४]

४५५

मूडविद्रुरे (मैसूर)

शक १४२६ = सन् १५०४, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि कदंब कुलके शासक लक्ष्मप्परस अपरनाम भैररसने जैनोंके ७२ संस्थानोंके प्रधान आचार्य चारुकीर्ति पंडिताचार्यके एक शिष्यको अपने राज्यके एक हिस्सेके धार्मिक अधिकार प्रदान किये। तिथि-आश्विन कृ० ५, शक १४२६, क्रोधि संवत्सर।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ५)

४५६

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १४३१ = सन् १५०९, तमिल

[यह लेख मकर शु० १०, गुरुवार, शक १४३१ को लिखा गया था। विजयनगरके शासक नरसिंहरायके समय रामप्प नायकने मन्दिरोंकी भूमिपर जोडि सलक कर लगाया था जिससे मन्दिरोंकी हानि हुई थी। कृष्णदेवराय सिंहासनारूढ हुए तब उन्होंने मन्दिरोंकी भूमिको करमुक्त घोषित किया। इस घोषणाका लाभ पडैवीट्टु तथा चन्द्रगिरि प्रदेशके जैन और बौद्ध मन्दिरोंको भी हुआ। करन्दै स्थित जिनमन्दिर भी इससे लाभान्वित हुआ ऐसा लेखमें कहा गया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४४]

४५७

गुरुवयनकेरे (द० कनडा, मैसूर)

शक १४३१ = सन् १५१०, कन्नड

[यह लेख स्थानीय शान्तीश्वरबसदिके मण्डपमें है। इसमें माघ व० १०, सोमवार शक १४३१ को वेलतगडीके कुछ लोगों-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८० पृ० ४५]

४५८

वरांग (द० कनडा, मैसूर)

शक १४३७ = सन् १५१५, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके कृष्णदेवमहारायके समय माघ शु० ५, शुक्रवार, शक १४३७ भावसंवत्सरका है। इसमें तुलुराज्यके शासक रत्नप्पोडेयका उल्लेख किया है। देवेन्द्रकीर्तिकी प्रार्थनापर इस बसदिके लिए देवराय-द्वारा पहले दी हुई भूमिके पुन खेतीयोग्य बनानेका इसमें उल्लेख है। यह कार्य अक्कम्म हेग्गिडिति तथा उनके सहयोगियो-द्वारा सम्पन्न हुआ था]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ पृ० ४९ क्र० ५२८]

४५९

चामराजनगर (मैसूर)

सन् १५१८, कन्नड

[इस लेखमें अरिकुठारके महाप्रभु कामैय नायकके पुत्र वीरैय नायक-द्वारा विजय (पार्श्व) नाथ मन्दिरके लिए सन् १५१८ में कुछ दानका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५१]

४६०

कोह्न नगोरी (जयपुर, राजस्थान)

सवत् १५७७=सन् १५२१, संस्कृत-नागरी

[इस लेखकी तिथि माघ शु० ५, संवत् १५७७ यह है। इसमें मूल-संघ-बलात्कारगणके आचार्योंकी परम्परा दी है तथा खण्डुलवाल अन्वयके राय रामचन्द्रके शासनका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१६ पृ० ६९]

४६१

वरांग (द० कनडा, मैसूर)

शक १४४४=सन् १५२२, कन्नड

[यह लेख पोंबुच्चके राजा इम्मडि भैरवरसके समय चैत्र व० १२, सोमवार शक १४४४ चित्रभानु सवत्सरका है। इसमें राजा-द्वारा वरांगके नेमिनाथ वसदिके लिए भैरवपुर नामक ग्रामके दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२९ पृ० ४९]

४६२

सोदे (उ० कनडा, मैसूर)

शक १४४५=सन् १५२२, सस्कृत-कन्नड

[यह ताम्रपत्र आषाढ पूर्णिमा शक १४४५ चित्रभानु सवत्सरका है। तौलव प्रदेशके क्षेमपुर (गेरसोप्पे) नगरसे इम्मडि देवराज ओडेयर्ने वप्डुवाल ग्रामकी कुछ भूमि लक्ष्मणेश्वरके शङ्खजिनवसतिके लिए दान दी थी। यह दान देशीगणके चन्द्रप्रभदेवके लिए था।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ६९]

४६३

मोंड (जि० [illegible], मैसूर)

शक १४४४ = सन १५२२, कन्नड

[यह ताम्रपत्र यहाँके भट्टारक मठमें प्राप्त हुआ । [illegible] जिनके बसतिके लिए [illegible] सागर [illegible] दिया गया [illegible] इसमें देवराज [illegible] । [illegible] प्रेरणा देकर [illegible] विजयकीर्तिके शिष्य [illegible] की थी । श्रावण शु० ५, बुधवार, शक १४४४, चित्रभानु संवत्सर यह दानपत्र लिखा गया है ।]

(रि० [illegible] १९३९-४० [illegible] क्र० १५ पृ० ३२)

४६४-४६५

[illegible] (मैसूर)

१६वीं सदी (सन १५२३), कन्नड

[ये दो लेख हैं । पहला अनन्तनाथमूर्तिके पादपीठपर है । चैत्र कृ० ५, रविवार, स्वभानु संवत्सरके दिन यह मूर्ति अर्पित की गयी थी । इसका स्थापक हलुमिडि निवासी देविसेट्टिका पुत्र देवणसेट्टि था । मूर्तिका वजन १८० [illegible] कहा गया है । दूसरा लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर है । यह मूर्ति आदिसेट्टिके पुत्र बोम्मरसेट्टि-द्वारा वैशाख शु० १, गुरुवार, स्वभानु संवत्सरके दिन अर्पित की गयी थी । दोनों लेखोंकी लिपि १६वीं सदीकी है अतः संवत्सरनामानुसार ये शक १४४५ अर्थात् सन् १५२३ के प्रतीत होते हैं ।]

(मूल लेख कन्नडमें मुद्रित)

[ए० रि० मै० १९३३ पृ० १३४]

४६६

नेल्लिकार (द० कनडा, मैसूर)

शक १४४७=सन् १५२५, कन्नड

[यह लेख स्थानीय अनन्तनाथबसदिके प्राकारमें है। देवणरस उपनाम कोप्पकी बहन चकरदेवी-द्वारा कोयरवुरकी बसदिके लिए धनु १५, रविवार, शक १४४७, तारण संवत्सरके दिन कुछ भूमिके उत्पन्नके दानका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२२ पृ० ४९]

४६७

पल्लिच्चन्दल् (द० अर्काट, मद्रास)

शक १४५२=सन् १५३०, तमिल

[यह लेख एक भग्न जैनमन्दिरके स्थानपर है जिसे शैनियम्मण् कोयिल् कहा जाता है। विजयनगरके राजा अच्युतदेवमहारायने वैयप्प नायकके निवेदनपर शम्बैके नायनार् विजयनायकर् नामक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए ओडि और शालुवरि करोंका उत्पन्न अर्पण किया था। यह राजाज्ञा वेलूर बोम्मुनायकके समय उत्कीर्ण की गयी ऐसा लेखमें कहा है। तिथि मिथुन शु० १०, बुधवार, शक १४५२, नन्दन संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ४४९ पृ० ५१]

४६८

पटना म्युजियम (बिहार)

संवत् १५९२=सन् १५३१, संस्कृत-नागरी

[यह लेख एक पीतलकी जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना मूलसंघ-कुन्दकुन्दाचार्यान्वयके मण्डलाचार्य धर्मचन्द्रके उपदेशसे खण्डेलवाल

अन्वयके कुछ सज्जनोंने की थी। प्रतिष्ठा तिथि ज्येष्ठ शु० ३, सोमवार, संवत् १५९३ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६२ पृ० ३३]

४६९

हनुमंतगुडि (रामनाड, मद्रास)

शक १४५५=सन १५३३, तमिल

मलयनाथ जैन मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलाओंपर

[इसमें शक १४५५ के लेखके खण्ड हैं। एकमें जिनेन्द्रमंगलम् अथवा कुरुवडिमिट्टिका निर्देश है जो मुत्तोर कूर्रम् विभागमें था।]

(इ० म० रामनाड २७१)

४७०

नीलत्तनहल्लि (मैसूर)

सन् १५३४, कन्नड

[इस लेखमें सन् १५३४ में मदवणसेट्टिके पुत्र पद्मणसेट्टि-द्वारा अनन्तनाथचैत्यालयमें किसी व्रतके पालनका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८]

४७१

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १४(६१)=सन् १५३९, कन्नड

[इस लेखमें जैन और शैवोंके एक विवादके समझौतेका उल्लेख है। यह विवाद जिनमूर्तियोंके सम्मानके सम्बन्धमें था। जैनोंकी ओरसे शंख-वसतिके शंखणाचार्य तथा हेमणाचार्यने और शैवोंकी ओरसे दक्षिणसोमेश्वर

मन्दिरके कालहस्ति और शिवरामने यह समझौता किया था। तिथि ज्येष्ठ शु० १ सोमवार, शक १४(६१), विलंबि संवत्सर ऐसी दी है। (शकवर्षकी संख्याके अन्तिम अंक लुप्त हैं जो संवत्सरनामानुसार दिये गये हैं)।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई १८ पृ० १६२]

४७२

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १४६५=सन् १५४३, कन्नड

[यह लेख (ताम्रपत्र) चैत्र शु० ४ शक १४६५ शोभकृत् संवत्सर-का है। इसमें चन्दलदेवीके पुत्र पाण्डयप्परस तथा तिरुमलरस चौटरु इनमें अनाक्रमण सन्धिका उल्लेख किया है। इसके साक्षीके रूपमें जैन आचार्य ललितकीर्ति भट्टारकका उल्लेख हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२१-२२ पृ० ९ क्र० ए ५]

४७३

कुरुगोड्डु (बेल्लारी, मैसूर)

शक १४६७=सन् १५४५, कन्नड

एक भग्न मन्दिरके दक्षिणी दीवालपर

[विजयनगरके राजा वीरप्रताप सदाशिव महारायके समय शक १४६७, विश्वावसु संवत्सरमें यह लेख लिखा गया। रामराज्य-द्वारा जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमिदान देनेका इसमें निर्देश है।]

(इ० म० बेल्लारी ११३)

४७४

कारकल (मैसूर)

शक १४६६=सन् १५४५, कन्नड

[यह लेख माघ शु० ३, गुरुवार, शक १४६६, क्रोधि संवत्सरका है। चन्दलदेवीके पुत्र चन्द्रवंशीय पाण्डयप्प वोटेयके राज्यकालमें कारिजे निवासी सिदवसयदेवरस-द्वारा कारकलके गुम्मटनाथ स्वामीको कुछ भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३९ पृ० ५२]

४७५

मूडविदुरे (मैसूर)

शक १४६८=सन् १५४६, संस्कृत-कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें बिलिगिके शासक वीरप्पोडेयकी वंशावली छह पीढियों तक दी है। विदुरे नगरकी त्रिभुवनचूडामणि वसतिके लिए इस शासकने चिक्कमालिगेनाडु विभागके कुडुगिनवयलु ग्रामकी कुछ जमीनका उत्पन्न दान दिया था। इसी मन्दिरके चन्द्रनाथदेवको नैवेद्य अर्पण करनेके लिए एक चाँदीका प्याला और कुछ धन भी दान दिया था। यह दान वीरप्पके चाचा तिम्मरसकी पत्नी वीरम्मके नामसे था। इसी तरह घण्टोडेयके पुत्र तिम्मप्पके नामसे चन्द्रनाथदेवके दुग्धाभिषेकके लिए कुछ दान दिया गया था। कार्त्तिक शु० ७, शक १४६८, विश्वावसु संवत्सर, यह इस दानकी तिथि थी। प्रथम आषाढ शु० १०, पराभव संवत्सर यह दूसरी तिथि दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए २ पृ० २३]

४७६

काप ताम्रपत्र (जि० दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १४७९ = सन् १५५६, संस्कृत-कन्नड

१ श्री धर्मनाथ (ने) शरणु ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाछन । जीया-
२ त्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्तिश्रीसकलज्ञान-साम्राज्यपदराजितः । व-
३ र्धमानजिनाधीश स्याद्वादमठभासुर. ॥ तिन्त्रिणीगच्छवाराशे-सुधांशुर्नानदी-
४ धिति । सद्धर्मसरसीहंस. प्रवादिगजकेसरी ॥ काणूर्गण-नमोमागे भामाति मुनि-
५ कुं (ज) र. । अज्ञानतिमिरोद्धृतिः श्रीमान् भानुमुनी(श्व)र ॥ पञ्चाचारशरध्वस्तपञ्च-
६ बाणशरव्रज । अखण्डश्रीतपोलक्ष्मीनायको भानुसंयमी ॥ श्रीमद्भानुमु-
७ नीश्व(रो) विजयतं स्याद्वादधर्माम्बरे श्रीमद्ज्ञानविनूत्नदीधिति (श)तध्वस्तान्धका-
८ रव्रज । श्रीमूलामलसंवनीरजमहाषण्डेग्वखण्डश्रियं व्यात (न्व) न् मुनि-
९ कोकचारुनिकर सौख्यार्णवे मग्नयन् ॥ तुलुदेशवेम्बभूपन पोलेव महाप-
१० दकडंङ्ग येसगं (ने) गु निच्चं । धरेयोलगे कापिन नगरद नेलन-नाल्व भूप महहेग्गडेयंब्व ॥
११ पंगुलवलि अधिपतियनु पोंगल्सदे नेरके तानु नृपकुलतिलकं । संगतसमेयोलु

१२ पो (गलु) भगजजयजिनपदाब्जमधुकरनेंवं ॥ भूदेविय मुखकनडि
वाडें हेल्व-

१३ गॅ कापुवेनिसिद नगर । श्रादरदिन्नदरो (ला) मेदिनिसतधर्म-
नाथनेन (से) गु जिनपं ॥ आ नगर-

१४ ककधिपतिगु श्रीपति तिरु (म) रस नृप (अ)वनीतिलक।
वोमनदकि आतानुं वोतुकर मुक्तिल-

१५ क्ष्मिगिरु मनम ॥ येनेम्वे मद्दहेग्गडे दानचतुर्विधक्के दाने
चिंतारत्न । सन्नुतगुणगण-

१६ निलेय उन्नतशीलवनु ताल्द (नृ) परिपुसंहारं ॥ धर्मदोलं (दृढ)
चित्तनु निर्मल-

१७ गुरुभक्तियल्लि तिरुमरसनृप । धर्मजिनजैनशासनम वोम्मन्दि तानु
माडि क्रिति (य)

१८ नित्तं ॥ स्वस्ति श्री जयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १४७१ नेय
संद नलसवत्सर-

१९ द कार्तिक शुद्ध १ आदित्यवारदलु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपर-
मेश्वर सत्यरत्नाकर

२० शरणागतवज्रपंजर चतुसमुद्राधीश्वर कलियुगचक्रवर्ति श्रीवीर-
प्रताप सदाशिव-

२१ राय राजराजेंद्र दक्षिणभागभाग्यदेवतासंनिभरुमप्प रामराजय्य-
नवरु ये-

२२ क (च्छ) त्रदिं राज्यवनु प्रजिपालिसुतिर्द कालदलु वारकूरु
मगलूरलु सदा(शि)वनायकरु

२३ राज्यव गे(यि)तिर्द कालदलु तुलु(व)देशकामिनीमुखकमलविल-
कायमानानादिसि-

२४ द्धप्रसिद्धकापिसिंहासनोदयाचलालंकरणतरुणतरणीप्रकाशरु-
अनन्यराजन्यसौ(ज)-

२० न्य (श्रीं)शार्यवीर्यधैर्य(मा)धुर्यगांभीर्यनयविनयसत्यशौचाद्यन-
न्तगुण-

२६ गणनूत्नरत्नाभरणगणकिरणोद्योतितभरताद्रिमकल (पु)राणपुरप-
न्नमप्र

२७ तिरमलरमरास महहेग्गडेयर् अवर नालिनवरु गणपणमावनरु
कापिन राज्यव-

२८ नु प्रतिपालिसुतिर्दे कालदलु ॥ स्वस्ति श्रीमद्रायराजगुरु मडला-
चार्य महा-

२९ वादवादीश्वर राज्यवादिपितामह सकलविद्व(ज्ज)नचक्रवर्तिगलुं
इत्याद्यनेकवि-

३० रुदावलीविराजमानर् काणूर्‌गणाग्रण्यरुगलुमप्प श्रीमदभिनव-

३१ देवकीर्तिदेवरुगल शिष्यरु मुनिचद्रदेवरगलु (अ)वरगल शिष्यरु
देवचद्रदे-

३२ वरगलु तम्म गुरु मुनिचद्रदेवरुगलिगे स्वर्गापवर्गक्के कारणवागि
कापिन-

३३ लु धर्मवनु माडबेकेंब चित्तदिंद तिरमलरमरास महहेग्गडेयरु
कू (कू)-

३४ डेयु अवर नालिनवरु गण(प)णमामतर कूडेयु कापिन हलर
महार्यदि-

३५ द धर्मके बोट्टु क्षेत्रवनु कोडबेकु येंदु चित्तमलागि अवरगलु धर्म-

३६ परिणामस्वरूपवने बुलुवरास कारण गुरुभक्तियिंद तम्म सीमेय-

३७ लुम(ला)रेम्न (चू)रोलगे पदु(व)ण दिक्किनलु कलतोपतिना
बालकेयलु अगलि-

३८ द बोलने बेट्टिन गद्देल्क बीज यल्लु मूवत्तर लेक्कद वत्त मूडे २
मत्तम-

३९ गालिंद होरगे पापिनाडियॆंब गद्देयक्कं बीज बल्ल मूवत्तर लेक्कद बीज

४० मूडे ४ मत्त बागिल गद्देयक्कं बीज बल्ल मूवत्तर लेक्कद मूडे ४ गद्दे मू-

पिछला भाग

४१ रक्कं बीज मूडे १० ई भूमिगळिगे बुक्क करे मुरे मने बावि हलसु मावु सु-

४२ वे निक्किलिरक्करॆं कडिरु जल पाषाण सह मूलधारेयनु एरडु को-

४३ ट्टु चिम्मिकोंड दोड्डवराहग ८० अक्षरदलु येमट्टु वराह यी हॊं-

४४ निगे येरडु बेलेयलु सह वर्षक्कं वह अक्कि अगडिय होरिगॆय

४५ बल्ल पॆवत्तर लेक्कद अक्कि मूडे २४ ई अक्किगे नडव धर्मद विवर कापिन वस्ति-

४६ य कंलगण नेलेयलु धर्मतीर्थंकरसन्निधियलु मध्याह्नकालदलु नित्यद –

४७ लु दिन वोंदक्के वॊंदुबल्ल अक्कि नैवेद्यक्कु (सु) निचंद्रदेवरगल हॆस-

४८ रिनलु नड(व) हालधारेगु सह अक्कि मूडे १० तिंगलु तिंगलु तप्पदॆ तिं-

४९ गलल्लि १७ होहाग नडव बार १ मत्त हुण्णुवॆदु २५ होहाग नडव

५० बार १ अंतु तिंगळल्लि येरडु बार समदाय नडवुदक्कं अक्कि मूडवु

५१ १२ई बारगळल्लि मगलत्रयोदशी यहाग आ मगलत्रयोदशी नडव-

५२ (दॅंडु) विशेषवागि यिरिसिद अक्कि मूडे २ अंतु अक्कि मूडे यिप्पत्तनाल्कु
५३ यी धर्मद स्थलदल्लि वल्लारिगे अनाय सनाय सल्लदु इल्ल आ स्थ(ल)गदलु इद
५४ वोक्कलिगे बिट्टि विडार सल्लदु काणिके देसे अप्पणे पद्दल्लि येत्तु सल्लदु येडु
५५ सर्वमान्यवागि तिरुमलरसराड मद्देग्गडेयरु अवर नाळिनवरु ग-
५६ णपणसामंतरु सह तम्म धर्मपरिणामनिमित्तवागि तम्म स्वरुचि-
५७ यिंद गुरुभक्तियिंद वोडवट्टु बरसि कोट्ट तांम्रशासन इंत-
५८ प्पुदक्के साक्षिगलु अधिकारि कातसेट्टि चट विक्रसेट्टि सामणि संकर-
५९ सेट्टि राजसेट्टि वग्गे(से)ट्टिय अळिय केसण मूल्लर बेळिले बिरुमाळ
६० दुग्ग वंडारि विरुसामणि यिंतिनवर वुभयान्म(त)दिं मं-
६१ गल्लरु सकै सेनवोवन वरह। यितो धर्मशास(न)क्के मगल-
६२ महा श्री श्री श्री ॥ स्वदत्ताद् द्विगुण पुण्य परदत्तानुपालन।
६३ परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ दानपालनयोर्मध्ये
६४ दानाच्छ्रेयोनुपालन। दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं
६५ पद ॥ यी धर्मशासनक्के आवनानोव्व जैननादव तप्पिदरे बेळुगु-
६६ ळद गुम्मटनाथ कोपणद चन्द्रनाथ ऊर्ज्जतगिरिय नेमीश्वर-
६७ मोदलाद जिनविंबगलनोडद पापक्के होहरु शैवनादरे प-
६८ र्वतगोकर्णमोदलाद्वरळ्ळि कोटिलिंगवनोडद पापक्के होहरु
६९ वैष्णवनादरे तिरुमलेमोदलाद्वरल्लि कोटिविष्णुमूर्तियनोड-
७० द पापक्के होहरु ॥ भद्र भूयाज्जिनशासनस्य ॥ श्री

[यह ताम्रपत्र शक १४७९ में लिखा गया था। उस समय विजयनगरसाम्राज्यके अधिपति सदाशिवराय थे तथा रामराज उनके प्रधान सेनापति थे। इस साम्राज्यके वारकूरु तथा मगलूरु प्रदेशपर केलडि सदाशिव नायककी नियुक्ति की गयी थी। इस प्रदेशमे काप नगरका अधिकारी मद्द हेग्गडे था। इसने धर्मनाथ तीर्थंकरकी पूजा आदिके लिए मल्लार गाँवमे कुछ जमीन दान दी जिसकी आय ८० वराह थी (वराह उस समयकी रौप्यमुद्राकी सज्ञा थी)। यह दान अभिनव देवकीर्तिके प्रशिष्य तथा मुनिचन्द्रके शिष्य देवचन्द्रके उपदेशसे दिया गया था। इसके पहले मूलसघ-काणूरगण-तिन्त्रिणीगच्छके भानुमुनीश्वरकी प्रशसा की गयी है। देवचन्द्र भी काणूरगणके ही थे। अन्तमे दानकी रक्षाके लिए जो शाप दिये है उनमे श्रवणबेलगोलके गोम्मटेश्वर, कोपणके चन्द्रनाथ तथा गिरनारके नेमिनाथकी मूर्तियोका उल्लेख किया है]

[ए० इ० २० पृ० ८९]

४७७

चिप्पगिरि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

शक १४८२=सन् १५६०, कन्नड

[इस लेखमें आदवानीके विशालकीर्तिगुरु तथा चिप्पगिरिके श्रावको-द्वारा चतुर्थमुनीश्वरकी वन्दनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ७४]

४७८

मूडबिदुरे (जि० दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १४८५=सन् १५६३, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमे बिदुरे नगरकी चण्डोग्र पार्श्वतीर्थंकर बसतिके लिए शकरसेट्टि उर्फ विरणन्तर-द्वारा उसकी बहन शकरदेवीके आग्रहसे कुछ

धन दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान अभिनव चारुकीर्ति पण्डितके आज्ञावर्ती सेट्टिकारोंको सौंपा गया था। १२५० वराह मुद्राओंके एक और दानका भी इसमें उल्लेख है। तिथि मेष (त्रयोदशी), शुक्रवार, शक १४८५, रुधिरोद्गारी संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० १ ए]

४७९

प्रिन्स आफ वेल्स म्युजियम, बम्बई

शक १४८५=सन् १५६३, शिलालेख क्र० B B. ३०७, कन्नड

[यह लेख चैत्र शुक्ल १२, सोमवार, शक १४८५, दुन्दुभि संवत्सर, के दिन लिखा गया था। विट्ठप्प नायक तथा हेम्मरसि नायिकितिके पुत्र सालुव नायक-द्वारा गेरसोप्पेमें शान्तिनाथका मन्दिर बनवाये जानेका तथा इस मन्दिरको कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है। इसमे नगिरे, हैवे, तुलु तथा कोंकण इन पश्चिम समुद्रतटके प्रदेशोंपर रानी चेन्न भैरादेवीके शासनका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० (१९५०-५१) क्र० २४]

४८०

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १४९३=सन् १५७१, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें मीचारमागाणे विभागके मरकत ग्रामकी कुछ जमीन बिद्रेकी बसतिमें आहारदानके लिए अर्पित करनेका उल्लेख है। यह दान चौट कुलकी अब्बक्कदेवीने उसकी बहन पदुमलदेवीकी पुण्यवृद्धिके लिए दिया था। पुत्तिगेके शासक इस दानका भंग न करें ऐसी सूचना अन्तमें दी है। तिथि पौष शु० ८, रविवार, शक १४९३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर, इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० ए ३]

४८१

महेश्वर (मध्यप्रदेश)

सं० १६२७ = सन् १५७१, संस्कृत-नागरी

[यह लेख सम्राट् अकबरके राज्यकालमें संवत् १६२७ में लिखा गया था। मालवामें उस समय ख्वाजा अजीझ बेग प्रान्तीय शासक नियुक्त था। इस समय मण्डलोई सुजानरायने महेश्वरस्थित आदिनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार किया।

अकबरके शासनकालके अन्य दो लेख यहीं प्राप्त हुए हैं। इनमें मण्डलोई देवदास (सुजानरायके बन्धु) द्वारा संवत् १६२२ में महेश्वर मन्दिरका तथा संवत् १६२६ में कालेश्वर मन्दिरका जीर्णोद्धार किये जानेका उल्लेख है। इस तरह जैन सज्जनो-द्वारा जैनेतर मन्दिरोकी सहायता-का यह उदाहरण है।]

[इ० हि० का० १९४७ पृ० ३९२]

४८२

कुम्बंगि (तुकूर, मैसूर)

सन् १५७३, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें कहा है कि नाल्कुवागिलु निवासी बोम्मिसेट्टिके पुत्र दानप्पने यह मूर्ति तथा प्रभावलि सन् १५७३मे स्थापित की।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

४८३

चित्तामूर (द० अर्काट मद्रास)

शक १५०० = सन् १५७८, कन्नड-तमिल-संस्कृत

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके मानस्तम्भपर है। इस स्तम्भकी

स्थापना जगतापिगुत्ति निवासी वायिसेट्टिके पुत्र बुम्मसेट्टिने शक १५००, बहुधान्य संवत्सरमें की ऐसा इसमें उल्लेख है। स्तम्भके दूसरी ओर संस्कृत भाषा और कन्नड लिपिमें इसी वर्णनका लेख है। इसमें बुम्मसेट्टिको महा-नागकुलका कहा गया है।]

[रि० सा० ए १९३७-३८ क्र० ५१७-१८ पृ० ५७-५८]

४८४

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १(५)०१ = सन् १५८०, कन्नड

[इस लेखकी तिथि कार्तिक शु० १, शक १(५)०१ है। प्रारम्भ श्रीमत्परमगम्भीर ' 'आदि श्लोकसे है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३७ पृ० ५२]

४८५

सेतु (शिमोगा, मैसूर)

शक १५०५ = सन् १५८३, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशक वरुष १५०५ चित्रभानु-संवत्सरद भाद्रपद सुद्ध १० शुक्रवारदंदु करूरु नाड चैपल्लिय तिम्म गौडरु यिवल्लिय नायक्क गौडर जट्टिगौडर मग सेट्टि-गौडरु आ समस्त श्रावकरु सह सुंतागि सेतुविन बसदि श्री आदितीर्थेश्वररिंगे माडिस्त लोहद

२ प्रभावलिगे आ समस्त जनगलिगे मंगल महा श्री श्री श्री

विरपयनु माडिदुदु

[यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना भाद्रपद शु० १० शक १५०५ के दिन हुई थी। स्थापक चैपल्लि ग्रामके तिम्मगौड तथा यिवल्लि ग्रामके सेट्टिगौड थे।]

[ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६७]

४८६

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०६ = सन् १५८४, कन्नड

१ शुभमस्तु नमस्तुगशिरश्चुबिचंद्रचामर (चार)वे

२ त्रैलोक्यनगरारंभमू(ल) स्तंभाय शंभवे ॥ स्वस्ति श्री-

३ विजयाभ्युदय सासिवाहसकवरुष १५०६ नेय सद वर्तमान।

४ तारण सं। आश्विजा शु १० मि आदिवारदलु श्रीमतु। दानिवा-

५ सद चेन्नरायवडेर। मकलु चिक्कवीरप्पवाडेरु मकलु चेन्नवि-

६ रवाडेरु गेरसोप्पे समंतभद्रदेवर सिष्यरु गुणभद्रदेवरु सिष्य-

७ रु। वीरसेनदेवरिगे। कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेन्तेन्दरे आलेपा(क)

८ वन्दप्पन मग लिगण्णनु। नष्टसन्ततवा(गि)होद सम्मद। आतन भू-

९ मि नागकपुरद आमद वळगे तेंगिनहित्तलगद्दे ख ६ कंडुग वम-

१० तु बीजवरि। आ भूमि नम्म आरमनिगे हरवरियागि वन्द

११ सम्मद। यी वीरसेनदेवरिगे क्रयावागि कोट्टेवागि आ भूमि-

१२ गे सलुव क्रय द्रव्य। लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरि-कल्पित उ-

१३ भयवादिसप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव पियसाहेनिजग-

१४ हि वरह ग ३२ अक्षरदलु मूवत्तु येरडु वरहनु। तरविस दकि-

१५ यदे। सले-साकल्यवागि सल्लिसि कोण्डेवागि। आ भूमिगे सलुव चत्तु-

१६ सीमेय विवर। मूडलु। ई गद्देय नीरएर्कल आगलिंद पडुलु

१७ तंकलु केरेगुरियिंदं ब(ड)गलु ॥ पडुवलु गुल्लप्प हेब्बरुव्वन तो-
१८ टदिंदं मूडलु । बडगलु हानम्बियिंद तंकलु । यिंतीं चतुस्सि-
१९ मेवलगुल्ल । निधि । निक्षेपजल । पाषाण अक्षीणि । आगमि । सिद्धसा-
२० ध्यगलेंब । अष्टाभोग तेजस्साम्यवन्नु नीउ निम्म शिष्यरु पा-
२१ रम्पर्यवागि सुखदिं बोगिसि बहिरि यन्दं वरसि कोट क्रय शा-
२२ सन पटे यिदके अविलासे विटवरु देवलोक मर्त्यलोकके विर-
२३ हितरू । श्रीहत्य । गोहत्यक्क वजिनरहरू । विरपव-
२४ डेर श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख आश्विन शु० १०, रविवार, शक १५०६, तारण संवत्सरके दिन लिखा है। इसमें दानिवासके शासक चेन्नरायके पौत्र तथा चिक्कवीरप्पके पुत्र चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है। वीरसेनके गुरु गुणभद्र तथा प्रगुरु समंतभद्र थे। उन्होंने ३२ वराह मूल्य देकर यह भूमि खरीदी थी जो पहले भालेपाल बन्दप्पके पुत्र लिंगण्णकी थी और उसके सन्तानरहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी। यह भूमि नागलापुर गांवके क्षेत्रमें थी।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०४]

४८७

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०७ = सन् १५८१, कन्नड

१ शुभमस्तु । नमस्तुंगशिरश्चुंबिचंद्रचामरचा-
२ रवे त्रैलोक्यनगरारंभमूलस्तंभाय शंभवे (।) स्व-
३ स्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुष १५०७
४ मंद वर्तमान पार्थिवसंवत्सरद चयित्र ब ७ मि आदि-

५ वारदल्लु श्रीमस्तु । दानिवासद चेन्नरायवोडेयर म-
६ क्कलु । चिक्कवीरप्पवोडेयर मक्कलु । चेन्नवीरप्पोडेयरु । गेरसो-
७ प्पे समंतभद्रदेवर सिष्यरु । गुणभद्रदेवर सिष्य-
८ वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेंतें-
९ दरे । वालेपाल तम्मयन मग नरसप्पनु नष्टसं-
१० तानवागि होद सम्मद आतन भूमि थीचलटाल ग्रामदकि ।
११ एण्टु खण्डुग बिजवरि भूमि नम्म अरमनिगे हरवरियागि
१२ बन्द सम्मंद आ भूमिनू दानिवासद चेन्नरायवोडेय-
१३ र मक्कलु । चिक्कवीरवोडेयर मक्कलु चेन्नवीरवोडेयरु ।
१४ गेरसोप्पेय समतभद्रदेवर शिष्यरु गुणभद्रदेवर शिष्यरु
१५ वीरसेनदेवरिगे । क्रयवागि कोटवागि । आ भूमिगे । सलुव । क्र-
१६ यद्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित सम्यस्तपरिकल्पित उभे-
१७ यवादिसम्प्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव प्रिय-
१८ सूहे । निजगति वरह गद्याण ग ३० अक्षरदलु मू-
१९ वत्तु वरहंनु तारविस वलियटे सल्लिसि कोण्डेवागि । आ एण्टु
२० खण्डुग भूमिगे सलुव चतुर्सीमेय विवर मूडलु नन्दिगाव ।
२१ तिम्मरसैयन गद्देयिंदलू पडुवलु । पडुवलु नरसोपुरद-
२२ हलदि वलु(?) मूडलु । वडगलू दरेयिंदलू । तेंकलू । तें-
२३ कलु अरमनेगद्देयिंदलु वडगलू । यिंति चतुर्सीमेयोलगु-
२४ ल निधि निक्षेप जल पाषाण अक्षीणि आगमि सिध साध्यगलेंब
२५ अष्टभोग तेजसाम्यवनु आगुमाडिकोण्डु निवु निम्म शिष्य-
२६ रु पारम्परेयागि आचंद्रार्कस्तायियागि सुखदिं भोगिसि
२७ वहिरि यॆंदुवरसि कोट क्रयस्यासनपटे यिदक्के अभिला-
२८ से बटवरु देवलोक मर्त्यलोकक्के विरहितरु । श्रीहत्य
२९ गोहत्यक्के वजनरहरु चेन्नवीरवोडेरु श्री
३० श्री श्री श्री

[यह लेख चैत्र व० ७, रविवार, शक १५०७, पार्थिव संवत्सरके दिन लिखा है। इसमें दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वोडेयर-द्वारा गेर-सोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है। इस भूमिके लिए ३० वराह कीमत दी गयी थी। यह पहले वालेपाल तम्मयके पुत्र नरसप्प-की थी जो पुत्ररहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी। भूमि यीचल-दाल ग्रामके क्षेत्रमें थी।]

[ए० रि० मैं० १९३१ पृ० १०८]

४८८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

सन् १५८५, कन्नड

[यह लेख आदिनाथवसदिके गोमुखपर है। चारुकीर्ति पण्डितदेवके शिष्य तथा ब्राह्मणप्रमुख चिक्कणय्यके पुत्र पण्डितय्य द्वारा आदीश्वर, चन्द्र-नाथ तथा शान्तीश्वरकी मूर्तियोंकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। समय सन् १५८५ है।]

[ए० रि० मैं० १९१३ पृ० ५१]

४८९

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०९=सन् १५८७, कन्नड

१ शुभमस्तु। नमस्तुगशिरश्चुंबिचंद्रचामर-
२ चारवे त्रैलोक्यनगरारंभमू(ल)स्तंभाय शंभवे।
३ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहन शक वरुष १५०९
४ नेय सद वर्तमान। सर्वजित्तु स। वशिशाक शु ५ मि
५ यु आदिवारदलु श्रीमत्तु। दानिवासद चेन्नरा-

६ यवडेर मकलु । चिक्कवीरप्पवाडेर मक्कलु चेन्नविरवा-
७ डेरु । गेरसोप्पे समंतभद्रदेवर शिष्यरु । गुणभद्रदेव-
८ र सिष्यरु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रम-
९ वेंतेंदरे नालपुरद ग्रामदोलगे सकण्णन मग मल-
१० यन डॉक्किन कोड्डुगे बिजवरि ख १० हत्तु खण्डुग भूमि
११ यु । सलविट्टु नम्म आरमनिगे हरवरियागि मद स-
१२ मद । यी वीरसेनदेवरिगे श्रेयक्के कोटेवागि । आ भूमिगं सलु-
१३ व क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित । तत्कालोचितमध्यस्तपरिकल्पित
१४ उभयवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव प्रियसा-
१५ हे । निजगटि वरह ग ४० अक्षरदलु नाल्वत्तु वरहनु । तर
१६ विस उलियदे साक्ष्यवागि । सलिसि कोण्डेवागि आ भूमिगे सलु-
१७ व चतुसिमेय विवर । मुडलु यिगद्देय नीरेरकलनलिं-
१८ द पडुवलु । बडगलु केरेयेरियिंद तेंकलु तेंकलु नं-
१९ म गद्देयिंद बडगलु । यिंती चतुरसीमेयोलगुळ नि-
२० धि निक्षेप जल पासण अक्षीणि आगमि सिध साध्यग-
२१ लेंब आष्टभोग तेजसाम्यवनु निडनिम्म शि-
२२ ष्यरु पारम्परियवागि सुखदिं वोगिसि बहिरि
२३ येंदु बरसि कोट क्रयशाम्नपटे । यिदक्के अविला(पे) घटवरु दे-
२४ वलोक मर्त्यलोकक्के विरहितरु श्रीहत्य गोहत्यक्कं बजनरह-
२५ रु । चेन्नवीरवडेरु श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० ५, रविवार, शक १५०९ सर्वजित संवत्सर उम तिथिका है। दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका इसमें उल्लेख है। नालपुर ग्रामकी यह भूमि ४० वराह कीमत देकर खरीदी गयी थी।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११०]

४९०

रत्नत्रयबसदि बीलिगि, (उत्तर कनडा, मैसूर)

१६वीं सदी (सन् १५८७)

[इस लेखमे मूलसंघ-देसिगण-पुस्तकगच्छके श्रवणबेलगुल मठके चारुकीर्ति पण्डितका उल्लेख किया है। इन्हें रायराजगुरु, मण्डलाचार्य, वल्लालरायजीवरक्षापालक आदि उपाधियाँ प्राप्त थी। इनकी परम्परामें श्रुतकीर्ति पण्डित हुए। इनकी शिष्यपरम्परा इस प्रकार थी—श्रुतकीर्ति—विजयकीर्ति—श्रुतकीर्ति (द्वितीय) – विजयकीर्ति (द्वितीय) अकलंक – विजयकीर्ति (तृतीय) – अकलंक (द्वितीय) – भट्टाकलंक। भट्टाकलंकदेवका समय शक १५१० = सन् १५८७ दिया है। संगीतपुरका लोकप्रयुक्त नाम हाडुवल्लि है। यहाँके राजा इन्द्रभूपालको विजयकीर्ति (प्रथम) की कृपासे सिंहासन प्राप्त हुआ ऐसा कहा गया है। विजयकीर्ति (द्वितीय) की प्रेरणासे पश्चिम समुद्र तटपर भट्टकल नगरकी स्थापना हुई थी।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

४९१

जि० दक्षिण कनडा (स्थान नाम अज्ञात)

शक १५१३ = सन् १५९१, कन्नड

[यह ताम्रपत्र शक १५१३ खर संवत्सरमे किन्निग भूपालने दिया था। इसमें एक जैन मन्दिरके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है।]

(इ० म० दक्षिण कनडा २)

४९२-४९३

रायबाग (मैसूर)

शक १५१९ = सन् १५९७, संस्कृत-कन्नड

[ये दो लेख स्थानीय आदिनाथमन्दिरके दो स्तम्भोंपर हैं – एक कन्नडमें है तथा दूसरा उसीका संस्कृत रूपान्तर है। इसमें ज्येष्ठ व० १४, शक १५१९ के दिन मूलसंघ-सेनगणके सोमसेन भट्टारक-द्वारा इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५२-५३ पृ० ३३]

४९४-४९५

मारूरु (दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १५२० = सन् १५९८, कन्नड

[ये दो लेख हैं। मारूरुके पार्श्वनाथवसतिमें स्थित तीर्थंकरमूर्तियोंकी पूजाके लिए पार्श्वदेवो विन्नाणि-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका इनमें उल्लेख है। पहला लेख चैत्र शु० ३, सोमवार, शक १५२० का है तथा दूसरा लेख पौष शु० २ शुक्रवार शक १५२० का है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ७४-७५]

४९६-४९७

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

संस्कृत-ग्रन्थ, १६वीं सदी

[यह लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है। पुष्पसेन योगीन्द्रके गुरु समन्तभद्रकी अक्षय कीर्तिका इसमें वर्णन है।

यहींके एक अन्य लेखमें मुनिभद्रस्वामीका नामोल्लेख किया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३४, १४५]

४९८

हुमच (मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ श्रीबोम्मरसनु रूपवतिसिदनू

[यह लेख पार्श्वनाथबसदिमें स्थित क्षेत्रपालमूर्तिके पादपीठपर १६वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें मूर्तिके निर्माताका नाम बोम्मरस दिया है।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७]

४९९

सेतु (शिमोगा, मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीगुम्मय सेट्टियर बस्तिय श्रीवर्धमानस्वामिय सन्निधानदल्लि गणपणसेट्टियर मग सघय्यसेट्टियरु तमगे पुण्यार्तवागि प्रतिष्ठे माडिसिद अभिनन्दनतीर्थंश्वरनिगे म-

२ गल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[इस लेखमें सघय्य सेट्टि-द्वारा अभिनन्दन तीर्थंकरकी इस प्रतिमा की स्थापनाका निर्देश है। इस समय गुम्मैयसेट्टिकी बसतिके वर्धमान-स्वामी उपस्थित थे। लिपि १६वीं सदीकी प्रतीत होती है।]

[ए० रि० मै० १९४४ पृ० १९९]

५००–५०१

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१६वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें एक पद्यमें कोण्डैमलै निवासी गुणवद्दिरमुनिवन् (गुणभद्रमुनि) की प्रशंसा की गयी है जो दक्षिणप्रदेशमें तमिल और संस्कृतके

सुप्रसिद्ध विद्वान् थे। लेख १६वी सदीकी लिपिमे है तथा चन्द्रनाथमन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है। मन्दिरके मण्डपकी दीवालपर खुदे एक अन्य लेखमे इन्ही आचार्यको वीरसघप्रतिष्ठाचार्य यह विशेषण दिया है।

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र०, ३०२ पृ० ६५]

५०२

सोंदा (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १५३० = सन् १६०७, कन्नड

पहली ओर

१ श्री (।) स्वस्ति (।) श्रीजयाभ्युदय शालिवाह-

२ नशकवरुष १५३० नेय प्लवंगसवत्सर-

३ द कार्तिक शु १० गुरुवारदलि श्रीमद् राय-

दूसरी ओर

४ (राजगुरुमं) डलाचार्य महावाद-

५ (वादीश्वर रा) यवादिपितामह सकलविद्वज्ज-

६ (नचक्रवर्ति व) ल्लालरायजीवरक्षापा-

तीसरी ओर

७ लक दक्षिणाग्रगण्य सगीतपुरसिंहा (सन)-

८ पट्टाचार्य श्रीमदकलंकदेवरुगलु

९ श्रीपचगुरुचरणस्मरणियिंद स्वर्गस्थरा-

चौथी ओर

१० (दरु) (।) अवर निषिधिमंटपक्के मंगल महाश्री (।)

११ भट्टाकलंकदेवेन स्याद्वादन्यायवादिना(।)

निषि-

१२ धीमंटपो दत्त स्थेयादाचंद्रमा (स्क) र (॥)

[इस लेखमें देशिगणके प्रमुख संगीतपुरके पट्टाचार्य अकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शु० १० शक १५३० के दिन हुआ था। उनकी यह निषिधि उनके शिष्य भट्टाकलंकदेव-द्वारा स्थापित की गयी थी।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

५०३

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १५४१ = सन् १६१९

[यह लेख विजयनगरके महामण्डलेश्वर रामदेव महारायके समय शक १५४१, कालयुक्ति, चैत्र ३ के दिन लिखा गया था। वाल नागम नायक और तलत्तार् लोगों-द्वारा कथिलायप्पुलवर् (नामक जैन विद्वान्) को कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३७]

५०४

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १५४४ = सन् १६२२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें निर्देश है कि सेनगणके समन्तभद्रदेवने इक्केरिमें केलडि वेंकटप्प नायकसे मिलकर तथा उसके अधीन अधिकारी चिन्नभंडार देवप्पसे साहाय्य पाकर बिदुरे नगरकी त्रिभुवनतिलक वसतिका जीर्णोद्धार कराया। तिथि-वैशाख, शक १५४४, रुधिरोद्गारी संवत्सर।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ४]

५०५

कलकत्ता (नाहर म्युजियम)

शक १५४८ = सन् १६२६, कन्नड

१ सक १५४८ श्रीमूलसघ भट्टारक

२ श्रीधर्मचन्द्रोपदेशात् प्रणम

३ श्रीमतिर्वार

[यह लेख पीतलकी चौवीसतीर्थंकरमूर्तिके पादपीठ पर है। मूलसघके धर्मचन्द्र भट्टारकके उपदेशसे श्रीमतिवीर-द्वारा इस प्रतिमाकी स्थापना शक १५४८ मे की गयी थी। लिपिसे पता चलता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित है।]

[ए० रि० मैं० १९४१ पृ० २४९]

५०६

कोलारस (शिवपुरी, मध्यप्रदेश)

संवत् १६८४ = सन् १६२८, हिन्दी-नागरी

[इस लेखमें शाहजहांके *अधीन शासक अमरसिंहके समयमें एक* जैन चैत्यालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। तिथि आषाढ शु० ९, गुरुवार, सवत् १६०॥८४ इस प्रकार दी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २४१ पृ० ४८]

५०७

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १५५४ = सन् १६३२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि बिदुरेके दो विभाग वेट्टकेरी तथा मादलपडिकेरीमें रहनेवाले श्रावक पहले दीवालीका त्योहार मनाते वक्त

५१६

बेल्लूर (मैसूर)

कन्नड (सन् १६८०)

[यह लेख विमलनाथमूर्तिके पादपीठपर है। पद्मकुलके शंकर-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी। यह हुलिकल निवासी था तथा समन्तभद्राचार्य के शिष्य लक्ष्मीसेनाचार्यका शिष्य था। समय लगभग सन् १६८० का है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८]

५१७-५१८

पोन्नूर (उ० अर्काट, मद्रास)

शक १६५५ = सन् १७३३, तमिल

[स्थानीय जिनमन्दिरके छतमें लगे स्तम्भपर यह लेख है। तिथि वैगाशि २७, प्रमादी संवत्सर, शक १६५५, कलिवर्ष ४८३४ यह है। इसमें कहा है कि स्वर्णपुर-कनकगिरिके जैन हेलाचार्यकी साप्ताहिक पूजाके लिए प्रति रविवारको पार्श्वनाथ तथा ज्वालामालिनीकी मूर्तियाँ नीलगिरिपर्वतपर ले जाते हैं। यहींके अन्य लेखमें पार्श्वनाथकी स्तुतिमें कुछ मन्त्र लिखे हैं।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१६-१८ पृ० ४०]

मूललेख

१ स्वस्ति श्री शालिवाहनशकाब्द १६५५ कल्यब्द. ४८३४ क्कु मेळ् चेल्ला निण्रा प्रभवादि ग (श) काब्द वरुष ४६ क्कु प्रमादिच वरुषं वैगाशिमाद १७ (उ) एलुदिय शासनमावदु (।) स्वस्ति श्रीस्व (र्ण) पु (र) कनकगिरि आदीश्वरस्वामिचैत्यालय सम्बन्दमान वायुमूलैयिलि–

२ रक्कुं नीलगिरि हेलाचार्यपादपूज्ञ आदिवारत्तन् तोलम् मेर्पाडि आळयत्तिन् श्रीपार्श्वनाथस्वामियु ज्वालामा (लि) नियम्मणैयु मेर्पाडि स्वर्गपुरजैननोल् एडुत्तुकोण्डु पोय् पूजिप्पद्दु (।) इन्द शासनमनन्तमेनदेव (नाळे) लुप्पद्दु (॥)

[ए० इ० २९ पृ० २०२]

५१९

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १६६९ = सन् १७४८, तमिल

[यह लेख ज्येष्ठ शु० ५, शुक्रवार, शक १६६९ को लिखा गया था। मुनिगिरि स्थित कुन्थुनाथस्वामीके मन्दिरके गोपुरका जीर्णोद्धार अगस्तियप्प नायिनार्ने किया ऐसा इसमें कहा गया है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३६]

५२०

मूडबिद्रे (मैसूर)

शक १६७९ = सन् १७५७, कन्नड

[विद्यानगर (विजयनगर) के राजा विजय सदाशिव महारायके अधीन नोंदे प्रदेशके शासक अरसप्पोडेयके पुत्र इम्मडि अरसप्पोडेयने वेण्णेगावे ग्रामकी कुछ जमीन अपने गुरु चारुकीर्ति पण्डितदेवको अर्पित की ऐसा इन ताम्रपत्रमें उल्लेख है। तिथि-मार्गशिर शु १ शक १६७९, राक्षस संवत्सर।]

[रि मा ए १९४०-४१ पृ २४ क्र ए ६]

५२१

बालूर (धारवाड, मैसूर)

शक १(६) ८७ = सन् १७६३, कन्नड

[जैन मन्दिरके सन्मुख दीपमाला स्तम्भपर यह लेख है। देवण्ण और उसके पुत्रोंका इसमें उल्लेख है। तिथि कार्तिक शु. १०, सोमवार, विक्रम, शक १६८५ ऐसी दी है।]

[रि इ ए १९४५–४६ क्र २१३]

५२२

तिलिवल्लि (धारवाड, मैसूर)

१८वीं सदी, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें वैशाख शु ५ सोमवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिन पुजारी पेवय्यके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि इ. ए. १९४५–४६ क्र. २५३]

५२३

काकन (जि० मोघीर, विहार)

संवत् १८२२ = सन् १७६६, संस्कृत – नागरी

जैन मन्दिरमें चरणपादुकाओंके चारों ओर

[इस लेखमें काकन्दीके जैन संघ-द्वारा संवत् १८२२ वैशाख शु० ६ को जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा सुविधिनाथके चरणोंकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५०–५१ क्र० ३]

५२४

मैसूर

कन्नड

शान्तीश्वर बसतिमें दीपस्तम्भोंपर

[इस लेखमें चामराजकी रानी देवीरम्मण्णि-द्वारा उक्त दीपस्तम्भ शान्तीश्वर वसतिको अर्पित किये जानेका उल्लेख है। ये चामराज मैसूरके राजा चामराज वोडेयर (नवम) (सन् १७७६–९६) होगे।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२५

मैसूर

कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें चार कलशोंपर

[इस लेखमें उपर्युक्त रानी देवीरम्मण्णि-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेक-के लिए इन चार कलशोके दानका निर्देश है।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२६–५२७

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

सन् १७७८–७९, कन्नड

[यहांके दो लेख सन् १७७८ तथा १७७९ के है। पहलेमें वियग वरमैयके पुत्र नागप्प-जो काम्बोदि वैश्य था तथा निर्घडेवृक्षसघका था –

द्वारा एक मण्डपकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें इसी व्यक्ति-द्वारा मूर्तिका पादपीठ अर्पित करनेका उल्लेख है। रविवारव्रतकी समाप्तिपर यह दान दिये गये थे।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

५२८
मैसूर
शक १७३६=सन् १८१४, कन्नड

शान्तीश्वर वसति—गर्भगृहके द्वारके पीतलके आवरणपर

[इस लेखमें दनिकार पर्यंयके पुत्र नागैय-द्वारा ३९½ (सेर) वजनके इस पीतलके गन्धकुटी (द्वार) के आवरण दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान आश्विन शु० १, शक १७३६, भाव संवत्सरके दिन दिया गया था।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२९
मैसूर
(शक १७३६=सन् १८१४) संस्कृत-कन्नड

शान्तीश्वर वसति-सुखनासि द्वारके आवरणपर

श्रीमच्छांतिजिनेन्द्रस्य पचकल्याणसपद ।
श्रिया मेरुगिरिागारं हसतश्चैक्यवेश्मन ॥१॥
पराध्यंरचनोपेत कवाटमिदमद्भुतं ।
कारयामास सद्भक्त्या श्रावको जैनमार्गतः ॥२॥
नागनामा पितु स्वस्य मरिनागाह्वयस्य च ।
धनिकारपदाढ्यस्य स्वर्मोक्षसुखलब्धये ॥३॥

[इस लेखमें निर्देश किया है कि प्रस्तुत द्वारका निर्माण धनिकार मरिनागके पुत्र नाग-द्वारा किया गया। इस लेखमें समयनिर्देश नहीं है किन्तु पिछले लेखका ही समय इसका भी होगा ऐसा अनुमान होता है।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०३]

५३०

मैसूर

शक १७७४=सन् १८३२, संस्कृत-कन्नड

अनन्ततीर्थंकरकी मूर्ति – शान्तीश्वर वसति

१ श्रीमत्कश्यपगोत्रजो जिनपद्मांभोजे लसत् षट्पद क्षात्रीयोत्तम-देवराजनृपतिः सद्धर्म-
२ पत्न्या सह (।) केंपम्मण्यभिधानया व्रतयुजा स्वर्गापवर्गप्रदं कृत्वानतव्रतं तदा-
३ रचितवान् बिंब सुदृक्तच्छुभ ॥ अब्धुवींद्रियशैलेंदु-प्रमितेस्मिन् शकाब्दके।
४ नन्दने वत्सरे भाद्रमासे शुक्लाष्टमीतिथौ। अनतनाथबिंबस्य प्रतिष्ठां जग-
५ दुत्तरां (।) कारयामास पूर्वोक्तदेवराजनृपोत्तमः ॥

[इस लेखमें कश्यप गोत्रके उत्तम क्षत्रिय राजा देवराज तथा उनकी धर्मपत्नी केंपम्मणि-द्वारा अनन्तव्रतकी पूर्णताका उल्लेख है। उक्त दम्पतिने इस अवसरपर भाद्र शुक्ल अष्टमी, शक १७५४, नन्दन सवत्सर,के दिन अनन्तनाथकी यह मूर्ति स्थापित की। इस समय मैसूरमें कृष्णराज वडेयर (तृतीय) का राज्य चल रहा था। अत लेखोक्त देवराज नृपति मैसूरकी अरसु जातिके प्रमुखोंमें-से एक थे ऐसा अनुमान होता है।]

(ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०१)

५३१

हले हुब्बलि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १७८४ = सन् १८६२, कन्नड

[यह लेख शक १७८४ का है। कहा गया है कि इस वर्ष एक नया जगट बनवाया गया। यह उस पुराने जगटमे बनवाया था जो यहांके अनन्तनाथवसदिमे पिछले ११०० वर्षोंमे था।]

[रि० मा० ए० १९४१-४२ ई० ३५ पृ० २५७]

५३२

चित्तामूर (द० अर्काट, मद्रास)

शक १७८७ = सन् १८६५, संस्कृत-ग्रन्थ

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके गोपुरकी दीवालपर है। इस गोपुरका निर्माण अभिनव आदिसेन भट्टारकने सार्वजनिक सहायतासे किया ऐसा उल्लेख है। तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, शुक्रवार, शक १७८७ क्रोधन संवत्सर ऐसी दी है। इसी दीवालपर एक अन्य लेखमें जिनालयनिर्माणसे प्राप्त पुण्यकी प्राप्त पुण्यकी प्रशंसाके कुछ श्लोक है।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५१९-२० पृ० ५८]

५३३

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

शान्तीश्वर बसतिमें सर्वाण्ह यक्षकी मूर्तिके पादपीठपर

इस लेखमें मरिलागैय नामक व्यक्ति-द्वारा महिसूरके शान्तीश्वर बसतिमे सर्वाण्हयक्षकी मूर्तिके पादपीठपर पीतलका आवरण लगानेका

उल्लेख किया है। मरिनागैय दनिकार पद्मैयका पुत्र था। लिपि १९वी सदीकी है।

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मैं० १९३६ पृ० १००]

५३४

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

उपर्युक्त वसतिमें घण्टापर

[इस लेखमे शिरसैयके छोटे भाई पुट्टैय-द्वारा इस घण्टेके दानका उल्लेख है। लिपि १९वी सदीकी है।

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[उपर्युक्त पृ० १००]

५३५

मत्तावार (मैसूर)

१९ वीं सदी, कन्नड

मत्तवूर बस्ति पार्श्वनाथस्वामिचैत्यालयक्के

ऐवर अवणनुव

[यह लेख एक घण्टेपर खुदा है। ऐवर अवण-द्वारा यह घण्टा मत्तवूरके पार्श्वनाथस्वामी चैत्यालयमें अर्पण किया गया था। लिपि १९वी सदीकी है।]

[ए० रि० मैं० १९३२ पृ० १७५]

५३६

कन्नुपर्तिपाडु (नेलोर, आन्ध्र)

तमिल

[इस लेखमें करिकालचोल जिनमन्दिरके लिए मतिसागरदेवके उपदेशसे प्रमलदेवी-द्वारा सीढ़ियाँ बनवानेका निर्देश है। यह लेख सम्राट् राजराजदेवके ३७वें वर्षका है।

नोट—चोल राजराज नामक किसी भी राजाका राज्य ३७ वर्षकी दीर्घ सीमा तक नहीं पाया जाता। अत इस लेखकी तिथि गलत प्रतीत होती है।]

(इ० म० नेलोर ५०२)

५३७

तिरुनिडुंकोण्डै (मद्रास)

तमिल

[यह लेख पल्लव राजा सकल भुवनचक्रवर्ति पेरुंजिंगदेवके तीसरे राज्यवर्षका है। इसमें इस देव-मन्दिरकी प्रदक्षिणामालिकाका निर्माण पालैयूर निवासी शिगन्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। लेख चन्द्रनाथ-मन्दिरके प्राकारके पश्चिमी दीवारपर खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९–४० क्र० ३१४ पृ० ६६]

५३८

गेरसोप्पे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ वनशोकवलीमज्ञुळंगीगणकलितकीर्तिमुनिसूनो (।) श्रीदेव-
चन्द्रसूरेरुपदेशान्नेमिजिनबिम्बं ॥

२ श्लोकः ॥ ओजणश्रेष्ठिपुत्रोसौ कल्लपश्रेष्ठिपुंगव (।) अकारयत् सुतो यस्य मावाम्बागर्भजोजण. ॥

[यह नेमिनाथ मूर्ति ओजणश्रेष्ठिके प्रपौत्र तथा कल्लपश्रेष्ठि एव मावाम्बाके पुत्र अजणश्रेष्ठिने देशीगण-पनसोकवलीके आचार्य ललितकीर्तिके शिष्य देवचन्द्रसूरिके उपदेशसे स्थापित की ।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५]

५३६

गेरसोप्पे (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाछनं (।) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (॥)

२ श्रीजिनराजराजितपदाम्बुजराजमराल नगिरिय राजशिरो-

३ मणि प्रचुरकीर्तिदिशावलयप्रकाशनु तेजभुजप्रतापरिपुराजमुखा-

४ बुजं इस्तवीरनुं भूजनवन्द्य होन्ननृपनर्थिजनावन कल्पवृक्षनु होन्-

५ नमहीशनात्मजेयु मालियब्बरसिगे कामराजगं सत्सुतमूर्ति होन्ननृपनात्मसम्भवान्-

६ धव मगराजनु मन्मथरूप हरिहरनृपाकसनातन पुत्र हैवणरसगं मन प्रियान्-

७ गनेयु मान्तलदेवि ममाधिमाच्चदोलु भक्तेय गुरुगलु लोकख्यातियनान्तिद् अनन्-

८ तवीर्यरु रतिसंकाशसौभगेनिसि सन्दिर्दा कान्तेगे हैवणरस वल्लमनाद । स्मररूप

९ सूतकगी पुरदोलु कीर्तिवेत्त बोम्मणसेट्टिय वरवनिते बोम्मकगवरसुगु-

देवनन्दिव्रतिगलु ३ गुणसागरभटारकरु ४ कीर्तिसागरभटाररु ५ अजितसेन-भटारकरु ६ प्रभाचन्द्रदेवरु ७ विमलगुणव्रतिगलु ८ अजितसेनभटाररु ९ शुभचन्द्ररु ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ५१]

५५७

कनकरायनगुड्ड (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीकोण्डव्यसेट्टियर् २ मूलस्थानबसदिय स्था-

३ नक्के * कन्तियर मगल् ४ विजयक्कं कोट्ट मण्णु

५ मू-

[इस लेखमें कोण्डव्य सेट्टि-द्वारा निर्मित मूलस्थान जिनालयके लिए विजयक्का-द्वारा कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ३८]

५५८

हुलदेनहल्लि (मैसूर)

कन्नड

१ परमेश्वर पृथ्वीराज्य--

२ रम्पारपुर वूरवेल्लिय--

३ योलुकट्टि किलगणकेरे--

४ नन्दियडिगल् पडेवरातार--

५ रु साक्षि सिडिलवड्डु तोरेन्डे--

६ पालु अलगोल केरेय केलग--

७ ण देसे एलु मने तार इदकं सा--

८ वत्तरु तेकलूनाड एलूपत्तारु ड--

[इस लेखका ऊपरका और दाहिना भाग टूटा है। नेन्दियडिगल् आचार्यको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ८३]

५५६

तोललु (मैसूर)

कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
२ मोघलाछन जीयात् त्रैलोक्यना-
३ यस्य शासनं जिनशासन । स्वस्ति यमनि-
४ यमस्वाध्यायगुणसम्पन्नरप्प अभयच-
५ न्द्रदेवरु सर्गगामिगळाद परोक्ष-
६ यममागल् पद्मावतियक्क माडिसिद सास-
७ न ॥ अरेवेसनागिरद वसदिय माडि-
८ सिदरु देवर मनेय परिसूत्रद गट्टु कट्टि-
९ यिसिवरु मनेय आडि नडुम्मरनुमं नट-
१० रु इनिसनरु यिक्कि पूजिसिद गद्याण ७०प्प-
११ तु । इन्तप्पुदक्के साक्षि मुद्दगवुण्डनु मास-
१२ गवुण्डनु तम्मडिय रंरु । विट्टियणनुं ने-
१३ मणनु ईस्तानकोडेयरु ।

[इस लेखमे कहा है कि आचार्य अभयचन्द्रकी मृत्यु होनेपर उनकी शिष्या पद्मावतियक्काने एक अधूरे जिनमन्दिरको पूर्ण किया। इस कार्यमें ७० गद्याण खर्च हुए। इस मन्दिरके व्यवस्थापक विट्टियण तथा नेमण थे। मुद्दगवुण्ड तथा मासगवुण्ड इसके साक्षी थे।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४२]

५६०-५६१

यलवट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यहाँ दो लेख है। एकमे मूलसघ-देशीयगणके सकलचन्द्रदेवके गृहस्थ शिष्य सेनबोव केतय्यकी मृत्युका उल्लेख है। इसकी तिथि मार्गशिर शु० ८ शुक्रवार, आनन्द सवत्सर ऐसी दी है।

दूसरे लेखमे मूलसघ-देशीगण-पोस्तक गच्छ – कोण्डकुन्दान्वयके देवकीर्ति भट्टारकके एक शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है। इसकी तिथि श्रावण कृ० ९ रविवार, साधारण सवत्सर ऐसी है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ६०-६१)

५६२

शावल (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देशीयगणके बालचन्द्र त्रैविद्यदेवके एक गृहस्थ शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है। मार्गशिर कृ० ३, व्यय सवत्सर ऐसी तिथि दी है।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ५४)

५६३

दानवुलपाडु (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें कनककीर्तिदेवके शिष्यकी – जो पेनुगोण्डका एक व्यापारी था – निसिधिका उल्लेख है।]

(इ० म० कडप्पा १४९)

५६४

मुल्कि (दक्षिण कनडा, मैसूर)

कन्नड

[जैन वसदिके आगे मानस्तम्भकी दक्षिण बाजूपर। इसमें तीर्थंकरोंकी प्रशसामें पाँच श्लोक लिखे गये है।]

(इ० म० दक्षिण कनडा १३)

५६५

मद्रास (म्यूजियम)

कन्नड

[यह लेख शान्तिनाथकी मूर्तिके पादपीठपर है। महाप्रधान ब्रह्देवण-द्वारा स्थापित किये हुए येरग जिनालयमे यह मूर्ति थी। मूलसघ, कुण्डकुन्दान्वय, काणूरगण, तिन्त्रिणि गच्छके महामण्डलाचार्य सकलभद्र भट्टारक ब्रह्देवणके गुरु थे।]

(इ० म० मद्रास ३२४)

५६६

मद्रास (म्युजियम)

कन्नड व संस्कृत

[इस लेखमें साहित्यप्रिय साल्व-राजा द्वारा शास्त्रोक्त रीतिसे शान्तिनाथकी मूर्तिके निर्माणका तथा स्थापनाका निर्देश है।]

(इ० म० मद्रास ३२५)

५६७

कोगलि (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

जैन मन्दिरमें एक मूर्तिके पादपीठपर

[चैत्र शु० १८, रविवार, परिधावि संवत्सरमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओंवेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इस लेखमें निर्देश है।]

(इ० म० बेल्लारी १९०)

५६८

कीलक्कुडि (मदुरा, मद्रास)

तमिळ

[गुहामें जैन मूर्तिके पादपीठपर।

गुणसेनदेवके शिष्य वर्धमानव पण्डितके शिष्य गुणसेनपेरियडिगल-द्वारा यह मूर्ति खुदवायी गयी ऐसा इस लेखमें निर्देश है। यहाँकी अन्य दो मूर्तियोंके लेखोंमें भी गुणसेनदेवका उल्लेख है।]

[इ० म० मदुरा ३९]

५६९

कुण्डघाट (जि० मोंघीर, बिहार)

संस्कृत-गौडीय

जैन मन्दिरमें महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें वीरेश्वरक-द्वारा इस मूर्तिके दिये जानेका निर्देश है।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ९]

५७०

पेनुकोण्ड (जि० अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

पार्श्वनाथमन्दिरके समीप एक कुँएके पास शिलापर

[यह जिनभूषणभट्टारकदेवके शिष्य नागय्यका समाधि लेख है ।]

[इ० म० अनन्तपुर १६७]

५७१

कायाम्पट्टि (मद्रास)

तमिल

[यह लेख शमणर् तिडल् नामक भग्न जिनमन्दिरके पास है। जयवीर पेरिलमैयान्-द्वारा तिरुवेणायिल् स्थित ऐन्नूरुवपेरुम्पल्लि (जिन-मन्दिर) के आगे फर्श बनवानेका इसमें उल्लेख है ।]

[इ० पु० क्र० १०८३ पृ० १५१]

५७२-५७३

मलैयकोविल् (मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें जैन आचार्य गुणसेनका नाम दिया है । साथमें परवादिमिदा यह उपाधि है । स्थानीय गुहामन्दिरके पास पाषाणपर यह लेख उत्कीर्ण है । ऐसा ही लेख तिरुमय्यम्के सत्यगिरीश्वरमन्दिरके एक पाषाण-पर भी है ।]

[इ० पु० क्र० ४-५ पृ० १]

५७४

तेणिमलै (मद्रास)

तमिल

[यह लेख एक पाषाणपर उत्कीर्ण जिनमूर्तिके नीचे है। यह मूर्ति (तिरुमेणि) श्रिवल्ल वदग नेरवोट्टि-द्वारा उत्कीर्ण थी ऐसा लेखमें कहा है।]

[इ० पु० क्र० १० पृ० १]

५७५

पुण्डि (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

तमिल

पोन्निनाथ जैन मन्दिरके पश्चिमी दीवालपर

[इस लेखमें शम्बुवरायका उल्लेख है। वीरवीरजिनालय नामक मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे एक गाँव दान देनेका उल्लेख इस लेखमें है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २१०]

५७६

मूडविद्रे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्रके तीन भाग हैं। पहला भाग वृषभ २२, गुरुवार, तारण संवत्सरके दिनका है। इसमें चन्द्रकीर्तिदेव-द्वारा २४ तीर्थकरोंकी पूजाके लिए २०० होन्नु अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह रकम विष्णु कलुम्बरको कर्ज दी गयी थी। उसने अपनी कुछ जमीन गिरवी रखकर इस रकमके ब्याजके रूपमें १८ मन चावल देना स्वीकार किया था। दूसरा भाग कर्क ९, बुधवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिनका है। इसमें श्रीधर पण्डि-

कोदि-द्वारा जमीन गिरवी रखकर २१०० वीररायफण कर्ज प्राप्त करनेका उल्लेख है। इसके व्याजके रूपमें २८ मुडे चावल देना स्वीकार किया था। इसका उपयोग गेरुसोप्पेकी ललितादेवी-द्वारा स्थापित वसदिमें पूजाके लिए होना था। तीसरा भाग मेष १, रविवार, नन्दन संवत्सरके दिनका है। इसमें तीन बन्धुओं-द्वारा पार्श्वनाथवस्तिसे कुछ कर्ज लेनेका तथा उस-पर कुछ निश्चित रकम व्याज देनेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ९]

५७७

मूडबिद्रे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्र-लेखमें चारुकीर्ति पण्डितदेव-द्वारा निर्मित चण्डोग्र पार्श्वनाथवसदिके लिए कर्वरवलिके वर्मनन्द तथा उनके बन्धु कुगिय वर्मिसेट्टि-द्वारा ७०१ गद्याण दान दिये जानेका निर्देश है। लेखकी तिथि वृषभ १५, रविवार, दुर्मुखि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०–४१ क्र० ए ७]

५७८

निट्टूर (मैसूर)

कन्नड

१ चित्रभानु २ संवत्सर ३ द फाल्गुण
४ द शुद्द ८ ५ यु सोम ६ वार बोम्मण्ण
७ गलु स्वर्गस्त ८ राद निषिधि

[इस निषिधिलेखमें फाल्गुन शु० ८, चित्रभानु संवत्सरके दिन बोम्मणके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० २५७]

५७९

तललूर (मैसूर)

कन्नड

१ भावसंवत्सरद श्राव-
२ ण शुद्ध त्रयोदसि आ-
३ दिवारदंदु स्वस्ति
४ श्रीमद् अजितेश्व-
५ रदेवर महाजनं ··
६ ··वागि ··
७ ·· केशवदेवर वम्म-
८ ब्वे तोटदिं
९ ····वागि ग्कम२··
१० कोण्डु
११ · येनुल्क

[यह लेख काफी अस्पष्ट हुआ है। श्रावण शु० १३, रविवार, भावसंवत्सरके दिन किसी ग्रामके महाजनो द्वारा अजितेश्वर देवके मन्दिरके लिए कुछ भूमि दान दी गयी ऐसा इसमें उल्लेख है। केशवदेवकी कन्या वम्मब्वेके उद्यानके समीपकी २ कम्म जमीन भी इस दानमें सम्मिलित थी।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० ११३]

५८०

अंवले (मैसूर)

कन्नड

१ जिनचंद्रदेवर
२ · मुडि(पि) ··

[इस छोटे-से लेखमे जिनचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मैं० १९३० पृ० १३३]

५८१-५८४

हैदराबाद (म्युजियम) (आन्ध्र)

संस्कृत-कन्नड

[ये चार मूर्तिलेख हैं जो घिसनेसे अस्पष्ट हुए हैं। एकमें मूलसघके किसी व्यक्तिका उल्लेख है। दूसरेमें एक मूर्तिकी स्थापना फाल्गुन शु० १५, बुधवार, शर्वरी सवत्सरके दिन किये जानेका उल्लेख है। तीसरेमें पण्डित मल्लिसेनका उल्लेख है। चौथेमें नेमिचन्द्रदेवके शिष्य कुमार मायिदेव महामण्डलेश्वर-द्वारा पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इन लेखोका समय निश्चित नही है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १४९, १५०, १५२, १५४]

५८५

भोसे (सातारा, महाराष्ट्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसघ-काणूरगणके वामनन्दि व्रतीश्वरका उल्लेख है। लेख बहुत घिस गया है। समय निश्चित नही है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २४३]

५८६

बेलगामे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ गणप्राच्यमहीमृदकेः श्री-

२ भव्याब्धिवर्धिष्णुशशाकमूर्तिः

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है और इसका आधा भाग अस्पष्ट हो जानेसे अधूरा हुआ है। इसमें किसी गणके एक आचार्यका उल्लेख रहा है ।]

[ए० रि० मैं० १९२९ पृ० १२६]

५८७

कारकल (मैसूर)

संस्कृत

[यह लेख गोम्मट मूर्तिके सम्मुख ब्रह्मस्तम्भके समीप उत्कीर्ण पादुकाओंके पास है। लिपि आधुनिक है –
(मूल-) श्रीगणधरपादम् ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३८ पृ० ५२]

५८८

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें चावय्य-द्वारा जटासिंगनन्दि आचार्यकी पादुकाओंकी स्थापनाका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६१ पृ० ४१]

५८९

बादंगट्टि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख बोम्मिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६९ पृ० २२]

५९०

बालेहल्लि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मार्गशिर व० १०, शुक्रवार, शुभकृत् संवत्सरके दिन माघवचन्द्रदेवके शिष्य नागगौडकी पत्नी सायिगवुडिके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १९१ पृ० २३]

५९१

गुडुगुडि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख सरस्त (सूरस्त) गणके किसी आचार्यकी शिष्या नागवेके समाधिमरणका स्मारक है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०० पृ० २४]

५९२

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख टूटा है । हरिकेसरिदेव, हरिकान्तदेव तथा तोयिमरस द्वारा विभिन्न वसदियोको दिये गये भूमिदानोका इसमें उल्लेख है । इनमें बंकापुरकी उम्पटाय्चण वसदि तथा कोन्तिमहादेविय वसदिका भी समावेश है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०८ पृ० २५]

५९३

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन - ? - बड्डवार, सर्वधारि संवत्सरके दिन सूरस्तगणके सहस्रकीर्तिदेवके शिष्य तथा मल्लिगुण्डके महाप्रभु बिठगौडके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २१० पृ० २५]

५९४

येलवर्गि (रायचूर, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें मूलसंघ, सूरस्तगण तथा कन्निसेट्टिका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० २२५ पृ० ३९]

५९५

तिरुप्परंकुण्डम् (मदुरै, मद्रास)

तमिल (?) - ब्राह्मी

[यहाँ पहाड़ीपर दो गुफाओंमें निम्न पंक्तियाँ खुदी हैं । ये गुहाएँ जैन श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं -

(१) न य (२) मा ता ये व

(३) अ न तु वा ण को टु पि ता वा ण]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १४०-४२ पृ० २२]

५९६

देवत्तूर (मदुरा, मद्रास)

वट्टेलुत्तु

[यह लेख बहुत अस्पष्ट है। इसमें किसी पल्लि (जैन वसति) तथा तुग पल्लवरैयन्का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० ५९ पृ० १२]

५९७

अक्कूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख वीरभद्र मन्दिरकी एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। इसमें शान्तिनाथ, सोमदेव तथा वसुधाकरदेवकी स्तुति की है। सातोज-रामोज-द्वारा इस वसदिके निर्माणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ७ पृ० ९२]

५९८

हावेरी (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मादरस-द्वारा जिनमन्दिरका सीढियाँ बनवाये जानेका उल्लेख है। इस समय यह लेख वीरभद्र मन्दिरमें लगा है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ९६ पृ० १०१]

५९९-६०२

इगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[ये चार समाधिलेख हैं। पहलेकी तिथि तारण, अमावास्या, शुक्रवार यह है। यह सत्यण्णकी समाधि है। दूसरा लेख अग्गलसेट्टिके पुत्र शान्ति-

चेट्टिकी समाधिपर है। तिथि आगिर संवत्सर, चैत्र १, सोमवार यह है। तीसरी समाधि शान्तिदेव मुनिकी है। तिथि प्रमादि संवत्सर, ' 'मास व ६, शुक्रवार यह है। चौथी समाधि माघनन्दि मुनिपकी है। तिथि श्रावण शु० ११, शुक्रवार, युव संवत्सर है।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १५-१८ पृ० ८५]

६०३

कागिनोल्लि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है। इसमें दानविनोद वैरिनारायण लेक-मनण आदित्यवर्माकी स्तुति की है तथा उसके द्वारा काणूरगण, मेषपाषाण-गच्छकी बसदिमें एक स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २८ पृ० १२१]

६०४

माकनूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें खर संवत्सर, कार्तिक शु० (?), शुक्रवारके दिन मूल संघ-सूरस्थगणके नन्दिभट्टारकके शिष्य बोम्मगौडके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५० पृ० १५१]

६०५

लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक भग्न जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना त्रैविद्य नरेन्द्रसेनके शिष्य वैश्य जेम्मिसेट्टिकी कन्या राजव्वेने की थी।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ९५ पृ० १५४]

६०६

देवूर (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-देसिगण-इंगलेश्वर बलिके नेमिदेव आचार्यके शिष्य सिंगिसेट्टि, देविसेट्टि, पदुमव्वे तथा सिंगेयके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई २२ पृ० १८३]

६०७

शिरूर (जमखंडी, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें यापनीय संघ-वृक्षमूलगणके कुसुमजिनालयमें कालिसेट्टि-द्वारा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है ।]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ई ९८ पृ० २१९]

६०८

इडैयालम् (द० अर्काट, मद्रास)

तमिल

[यहाँ जैन मन्दिरके समीप पाषाणोपर चरणपादुकाएँ उत्कीर्ण हैं तथा निम्न नाम खुदे हैं —

(१) मल्लिषेणमुनीश्वर (२) विमलजिनदेव
(३) अम्पाण्डार् नायिनार् (४) इडैयालम्के जिनदेवर्]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ३११-१४ पृ० ४२]

६०९

तोरनगल्लु (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख अकलकदेवके शिष्य वयिचिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२२-२३ क्र० ७२९ पृ० ५१]

६१०

लोकिकेरे (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख श्री रत्नभूषण भट्टारकके प्रिय शिष्य लोकेयकेरे निवासी मरगोण्डके समाधिमरणका स्मारक है।]

[रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० २९९ पृ० ४९]

६११-६१२

गरग (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख यापनीय सघ-कुमुदिगणके शान्तिवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है। तिथि श्रावण व० ४, गुरुवार, विकृति सवत्सर ऐसी दी है। यहींके एक अन्य लेखमें भी यापनीय संघ-कुमुदिगणका उल्लेख है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४१-४४२ पृ० ७६]

६१३

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[स्थानीय जैन बसदिमें पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर यह लेख है। मूलसंघ, सूरस्तगण, चित्रकूट गच्छके मुकुन्ददेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना की गयी थी।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३७ पृ० २७]

६१४

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें पुष्य शु० (?) क्रोधन संवत्सरके दिन क्राणूरगणके गजिय मलधारिदेवकी शिष्या कचलदेवीके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके पतिका नाम त्रिभुवनवीर था तथा कदम्ब राजाओंकी उपाधियाँ उसे दी गयी है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४२ पृ० २८]

६१५

रायद्रुग (बेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यहाँके निसिधि लेखोंमें निम्न व्यक्तियोके नाम है — मूलसंघके चन्द्रभूति, यापनीय संघके चन्द्रेन्द्र, बादय्य तथा तम्मण्ण। एक लेखपर माघ शु० १ सोमवार, प्रमाथि संवत्सर यह तिथि दी है।]

['रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १०९ पृ० १२]

६१६-६१७

कोगलि (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओडेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यहांके एक स्तम्भपर जिनमूर्तियोंके अभिषेकके लिए कई व्यक्तियों-द्वारा दिये गये दानोंका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि चैत्र शु० १४ रविवार, परिधावि सवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९१४-१५ क्र० ५२०-२१ पृ० ५३]

६१८

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देसिगण-हनसोगे अन्वयके ललितकीर्ति भट्टारकके शिष्य सहस्रकीर्तिकी मृत्युका उल्लेख है। मुस्लिमों-द्वारा पार्श्वनाथबसदिपर आक्रमणके समय उनकी मृत्यु हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९२ पृ० ८]

६१९

कलकेरि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगण-तिंत्रिणी गच्छके भानुकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य हलिगावुण्ड-द्वारा कलिकेरेके अकलंकचन्द्रभट्टारकके लिए एक वसदिके निर्माण तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ५१ पृ० २४]

६२०
कम्मरचोडु (बेल्लारी, मैसूर)
कन्नड

[इस लेखमें पद्मप्रभमलधारिदेवके प्रियशिष्य महावड्डव्यवहारि रायरसेट्टिकी पत्नी चन्दव्वे-द्वारा इस जिनमूर्तिके जीर्णोद्धारका वर्णन है। इस समय यह मूर्ति हिन्दू देवताके रूपमें पूजी जाती है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६० पृ० ५५]

६२१-६२२
कोट्टशीवरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)
कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है। काणूर गणके पुष्पनन्दि मलधारिदेवके शिष्य दावणन्दि आचार्य-द्वारा एक वसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है। यहींके एक अन्य लेखमें काणूरगणके (?) आचार्यकी शिष्या इरुगोल राजाकी रानी आलपदेवी-द्वारा इस वसदिकी रक्षाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० २०-२१ पृ० ७२]

६२३-६२९
अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)
कन्नड

[यहाँके निसिधिलेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम है—(१) प्रभाचन्द्रदेवके शिष्य कोम्मसेट्टि (२) पोतोज तथा उसका पुत्र सयवि मारय (३) मूलसंघ-देसियगणके बालेन्दु मलधारिदेवके शिष्य बिट्टपय तथा मारय (४) मूलसंघ-सेनगणके प्रसिद्ध वादि माधसेन त्रैविद्यचक्रवर्ति (५) इगलेश्वरके प्रभाचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोम्मिसेट्टियर चाचय्य (६) बैरिसेट्टिके पुत्र सम्बिसेट्टि। यहाँके एक अन्य लेखमें इगलेश्वरके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य देशियगणके बालेन्दु मलधारिदेव-द्वारा एक वसदिके निर्माणका उल्लेख है।] [रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४१-४७ पृ० ७४]

६३०

तम्मदहल्लि (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-देसियगणके चारुकीर्ति भट्टारकके शिष्य चन्द्राक भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४८ पृ० ७४]

६३१

रामपुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-देसियगणके देवचन्द्रदेवके शिष्य बेट्टिसेट्टिके पुत्र कृष्णसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ७१४ पृ० ७४]

६३२

रामतीर्थम् (विजगापटम्, आन्ध्र)

तेलुगु

[यह लेख एक भग्नजिनमूर्तिके पादपीठपर है। ओगेरुमार्गस्थित चनुद (ब्रो) लु निवासी प्र (मि) सेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ८३२ पृ० ८५]

६३३

वेलूर (द० अर्काट, मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें जयसेन-द्वारा इस जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। लिपि उत्तरकालीन है।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० १२४ पृ०५९]

६३४
निडुगल (मैसूर)
कन्नड

[इस लेखमें बेल्लुम्बट्टेके भव्यों-द्वारा—जो मूलसघदेसिगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य थे—पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

६३५-६३६
नेल्लिकर (द० कनडा, मैसूर)
संस्कृत-कन्नड

[यह लेख स्थानीय अनन्तनाथबसदिमें है। इसके मण्डपका निर्माण भजण कोलभूप-द्वारा किया गया ऐसा कहा है। यहींके दूसरे लेखमें इस मन्दिरका निर्माण ललितकीर्ति भट्टारकदेवके शिष्य कल्याणकीर्तिदेवकी सम्पत्तिसे देवचन्द्र-द्वारा किये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२०-५२१ पृ० ४८-४९]

६३७
मुत्तुगोडु (गुण्टूर, आन्ध्र)
तेलुगु

[इस लेखमें विल्लम नायक-द्वारा पृथिवीतिलकबसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १९ पृ० ६]

६३८-६३९
लक्ष्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)
कन्नड

[ये दो लेख हैं। एकमें मूलसंघ—देवगणके सामदेव-द्वारा एक जिन-

मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें बमुवैकवान्ववजिनालयके त्रिभुवन-तिलक शान्तिनाथदेवके लिए एक दानशालाके समर्पणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ३१, ३४ पृ० ३]

६४०

जावूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें बीचिसेट्टि-द्वारा सकलचन्द्र भट्टारकको जावूर ग्रामके पुन दानका उल्लेख है। नविलगुन्दमें जयकीर्तिदेव-द्वारा निर्मित ज्वाला-मालिनीवसदिके लिए मल्लिदेवने पहले यह गाँव अर्पण किया था।]

[रि० सा० ए० १९२८–२९ क्र० ई २२८ पृ० ५५]

६४१

कोमरगोप (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें त्रिभुनतिलक जिनालयमें आहारदानादिके लिए बालचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य पेर्गडे वासियण्णकी पत्नी चामिकव्वे-द्वारा सुवर्णदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८–२९ क्र० ई २३० पृ० ५५]

६४२–६५०

गुण्डकेर्जिगि (विजापूर मैसूर)

कन्नड

[यहाँ भग्न मूर्ति-पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे हैं। (१) देशियगण-इंगलेश्वर (वलि) के चन्द्रकीर्तिदेव तथा जयकीर्तिदेव (२) अपराजिता देवी (३) वृषभयक्ष (४) पातालयक्ष (५) कुवेरयक्ष (६) महानमीयक्षी (७) अनन्तमती (८) चक्रेश्वरी (९) (शा) न्तनाथस्वामी]

[रि० सा० ए० १९२९–३० क्र० ई १६–१७ पृ० ६६]

६५१
हुलूर (विजापूर)
कन्नड

[इस लेखमें कण्डूर गणकी एक बसदिके लिए पुलुवरणिके महाजनो-द्वारा भूमिदानका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९–३० पृ० ६७ क्र० ई २१]

६५२
तम्मदड्डि (विजापूर, मैसूर)
कन्नड

[इस निसिधि लेखमें इगलेश्वरतीर्थकी बसदिके आचार्य देवचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोगगावुण्डके समाधिमरणका उल्लेख है।

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ७० पृ० ६९]

६५३
तुम्बिगि (विजापूर, मैसूर)
कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० १०, सोमवार, ईश्वरसवत्सर, राज्यवर्ष ८ का है। राजाका नाम लुप्त हुआ है। इस समय बोचुवनायककी निसिधिकी स्थापना की गयी थी तथा तदर्थ पार्श्वदेवको कुछ भूमि अर्पित की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई० ७४ पृ० ६९]

६५४
हूविन हिप्पर्गि (विजापूर, मैसूर)
कन्नड

[इस लेखमें हवु रेमरस तथा रेचरस द्वारा ऋषियोंके आहारदानके लिए देवचन्द्र भट्टारकको कुछ भूमि दान देनेका उल्लेख है। इगलेश्वरके देवकीर्ति भट्टारकका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ९१ पृ० ७१]

परिशिष्ट १

श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना

[पहले संग्रहको पद्धतिके अनुसार हम यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदायसे सम्बद्ध लेखोंकी सूचना दे रहे हैं। इस सूचीमें सरकारी प्रकाशनोंमें प्रकाशित लेखोंका अन्तर्भाव है। श्री० पूरणचन्द नाहरका प्राचीन जैनलेखसंग्रह, श्री० अगरचन्द नाहटाका बीकानेर जैन-लेखसंग्रह, आदि ग्रन्थोंमें प्राय श्वेताम्बर सम्प्रदायके ही लेख हैं। इन लेखोंकी सख्या ३५००से ऊपर है। इनका प्रस्तुत सूचीमें उल्लेख आवश्यक नहीं समझा गया।]

१ अकोटा (बडोदा, गुजरात) – ८वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० १६–१९

२ अकोटा – ९ वीं–१०वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० २०–३५ तथा ३९–४८

३ बडोदा (गुजरात)–सं०१०९३=सन् १०३७

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० १६९–७१

४ भरतपुर (राजस्थान)–सं० ११०९=सन् १०५२

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३८८, ३९४

५ आबू (राजस्थान)–सं० १११९=सन् १०६२

ए० इ० ९ पृ० १४८

६ सिरोही (राजस्थान) सं० ११३५=सन् १०७९

रि० आ० स० १९२१–२२ पृ० ११९

७ भाडोल (गुजरात) –सं० ११४०=सन् १०८४

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ए २

८ लाडोल—सं० ११५६ = सन् ११००

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ए ३

९ उदयपुर (राजस्थान)—सं० ११७६ = सन् ११२०

रि० आ० स० १९३०–३४ पृ० २३७

१० नाडोल (राजस्थान)—सं० १२१३ = सन् ११५७

इ० ए० ४१ पृ० २०२

११ लखनऊ (उत्तरप्रदेश)—सं० १२१६ = सन् ११६०

रि० आ० स० १९१३–१४ पृ० २९

१२ जालोर (राजस्थान)—सं० १२२१ = सन् ११६५

ए० इ० ११ पृ० ५४

१३ मथुरा (उत्तरप्रदेश) सं० १२३४ = सन् ११७८

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ५२६

१४ मद्रेशर (गुजरात)—सं० १३१५ = सन् १२५९

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १६९

१५ मद्रेशर—सं० १३२३ = सन् १२६७

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १७०

१६ जालोर (राजस्थान)—सं० १३३१ = सन् १२७५

ए० इ० ३३ पृ० ४६

१७ आमरण (राद- ान)—सं० १३३३ = सन् १२७७

पूना ओरिएण्टलिस्ट ३ पृ० २५

१८ चितोड (राजस्थान)—सं० १३३४ = सन् १२७८

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २३२–२३३

१९ उदयपुर (राजस्थान)—सं० १३३५ = सन् १२७९

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ४८५

२० बम्बई—सं० १३५६ = सन् १३००

रि० इ० ए० १९५३–५४ क्र० २०१–३

२१ उदयपुर—१३वीं सदी

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ५०७

२२ खंभात (गुजरात)–सं० १२१०से सं० १२६८=सन् ११५४से सन् १२१२

रि० इ० ए० १९५५–५६ क्र० १५९–१९५

२३ आंतरी (राजस्थान) स० १२६८=सन् १२१२

रि० आ० स० १९२९–३० पृ० १८७

२४ मेडता (राजस्थान)–सं० १५०७से १६८७

=सन् १४५१से १६३१

रि० आ० स० १९०९–१० पृ० १३३

२५ ब्रिटिश म्यूजियम–सं०१५१७से १५८३

=सन्१४६१से सन् १५२७

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ५३०–५३८

२६ सिरोही (राजस्थान)–सं० १५२४=सन् १४६८

रि० आ० स० १९२१–२२ पृ० ११९

२७ बम्बई—सं० १५२५=सन् १४६९

रि० आ० स० १९३०–३४ पृ० २४९

२८ उदयपुर—सं० १५५६=सन् १५००

रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० ४८६

२९ मौगामा (राजस्थान)–सं० १५७१=सन् १५१५

रि० आ० स० १९२९–३० पृ० १८८

३० अलवर (राजस्थान)–सं० १५७३=सन् १५१७

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३८६

३१ अलवर—सं० १६०६=सन् १५५०

रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३७८

३२ वैराट (राजस्थान)-शक १५०४ = सन् १५८२
रि० आ० स० १९०९–१० पृ० १३२

३३ अलवर—सं० १६४५ = सन् १५८९
रि० इ० ए० १९५२–५३ क्र० ३७६

३४ लखनऊ—सं० १६५२ = सन् १५९६
रि० आ० स० १९१३–१४ पृ० २९

३५ मढ़ेशर (गुजरात)-सं० १६५९ = सन् १६०३
रि० इ० ए० १९५४–५५ क्र० १७०

३६ उदयपुर—सं० १६६२ = सन् १६०६
रि० आ० स० १९३०–३४ पृ० २३७

३७ मढ़ेशर—सं० १९०५–१९३४ = सन् १८४८–१८७८
रि० इ० ए० १९५४–५५ पृ० ४२

■

परिशिष्ट २

जैनेतर लेखोंमें जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख।

(१) वेलगामे

कन्नड

सन् १२९४

[इस लेखमें यादव राजा रामचन्द्रके समय वल्लिगावेके भेरुण्डस्वामी-मन्दिरका उल्लेख है। इस मन्दिरके हेग्गडे पदपर वैद्य दासण्णकी स्थापना कर उसे कुछ भूमि अर्पित की गयी थी। इस भूमिमें प्रथमसेनवसदि (जिनमन्दिर) की कुछ भूमि भी शामिल कर दी गयी थी।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२४]

(२–६) देवगेरी तथा कोल्लूर (जि० धारवाड, मैसूर)
(११वीं–१३वीं सदी)–कन्नड

पहला लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल (सोमेश्वर प्रथम) के राज्यकालका है। इनके अधीन बामवूर १४० प्रदेशमें जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ कलियम्मरम शासन कर रहा था। इसे सम्यक्त्व-चूडामणि तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं। इसने कोल्लूरके कलिदेवेश्वरके मन्दिरमें दीपदानके लिए कुछ दान दिया था। इस दानकी तिथि पौष शु० ५, शक ९६७, उत्तरायण संक्रान्ति थी।

दूसरे लेखकी तिथि शक ९९७, पौष शु० १४, उत्तरायण संक्रान्ति थी। इस समय चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर द्वितीयका राज्य चल रहा था। इसमें भी कलियम्मरनके शासनका उल्लेख है तथा देवगेरी-के कांकलेश्वर मन्दिरके लिए दण्डनायक वण्णमय्य द्वारा कुछ दान दिये

जानेका निर्देश है। इसी लेखके दूसरे भागमे उसी कुलके एक दूसरे कलियम्मरसका उल्लेख है जो चालुक्य सम्राट् भूलोकमल्ल सोमेश्वर तृतीय-का सामन्त था। इसने सम्राट्के राज्यके ९वें वर्ष अर्थात् शक १०५६ में उक्त मन्दिरको कुछ दान दिया था। इस कलियम्मरसने माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

तीसरे लेखमें उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का उल्लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके दसवें वर्ष (सन् १०८५) में किया है जब उसने कोलूरमें कुछ धार्मिक दान दिया था।

चौथा लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४६वें वर्ष (स० ११२१) का है। इसका सामन्त हेर्माडियरस था जो उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का पुत्र था। इसने कोलूरमें त्रिभुवनेश्वर तथा भैरवके मन्दिरो-को कुछ दान दिया था। तथा माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

पांचवां लेख यादव राजा सिंघण (तेरहवी सदीका पूर्वार्ध) के राज्यकालका है। इसका सामन्त मल्लिदेवरस था जो उक्त जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ था। इसने कोल्लूरके क्षेत्रपाल मन्दिरको कुछ दान दिया था।

यहाँ द्रष्टव्य है कि कलियम्मरस (द्वितीय), हेर्माडियरस तथा मल्लि-देवरस शैव थे फिर भी उन्हें पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह पुराना विशेषण दिया है।

छठा लेख विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४थे वर्ष (सन् १०७९) का है। इसके अधीन नोलम्बवाडि तथा सान्तलिगे प्रदेशपर त्रैलोक्यमल्ल (जयसिंह तृतीय) शासन कर रहा था तथा बनवासि प्रदेशपर बलदेवय्य-का शासन था। बलदेवय्यको जिनचरणकमलभृंग यह विशेषण दिया है। इसके अधीन कुछ करोंका उत्पन्न कोलूरके ग्रामेश्वर मन्दिरके लिए किसी कन्नडाचार्यको दान दिया था।]

[ए० इ० १९ पृ० १७९-१९७]

(७) शिवमन्दिर, नीडूर (जि० तजोर, मद्रास)

तमिल – सन् १११६

[यह लेख कुलोत्तुग चोलके राज्यके ४६वे वर्षमें लिखा गया था। इसमें कण्डन् माधवन्-द्वारा शोण्णवाररिवार (गणपति) देवका मन्दिर बनवानेका निर्देश है। यह माधवन् कुलत्तूर स्थानका शासक था जहाँ अमिदसागर (अमृतसागर) मुनिने कारिगै (याप्परुगलक्कारिगै) नामक छन्द शास्त्र तमिल भाषामे लिखा था। इस रचनाके लिए जिनने प्रेरणा की वे सज्जन माधवन्के चाचा (अथवा ससुर) थे।

इस छन्द.शास्त्रमे ४४ कारिकाएँ हैं तथा उरुप्पियल्, शेय्युलियल् एव ओलिवियल् ये तीन प्रकरण है। इसपर गुणसागरने टीका लिखी है।]

[ए० इ० १८ पृ० ६४]

(८) कमलापुर और हंपीके बीच

कृष्णमन्दिरके समीप एक मण्डपमे

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[यह लेख मधुर नामक जैन कविने लिखा है जो वाजि कुलमें उत्पन्न हुआ था। लेखमें देवरायके मन्त्री लक्ष्मीधर-द्वारा महागणनाथ (शिव) की स्थापनाका वर्णन है। मधुरने धर्मनाथपुराण तथा गुम्मटाष्टक लिखा है। यह हरिहररायके मन्त्री मुद्दण्डेश्वरका आश्रित था। इस लेखमें लक्ष्मीधर-द्वारा मधुरको हाथी, घोडे, रत्न, जमीन आदि दान देनेका उल्लेख है।]

[इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७७]

(९) गोकर्ण (उत्तर कनडा)

१५वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमे महाबलेश्वर मन्दिरमें अन्नसत्र तथा अन्यपूजाके लिए कुछ

दान दिये जानेका उल्लेख है। दानकी रक्षाके लिए कहे गये शापात्मक वर्णनमें गेरसोप्पेकी हिरियवस्तिके चण्डोग्र पार्श्वनाथका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० १०८ पृ० २३७]

(१०) वीराम्बुधि ताम्रपत्र (मैसूर)

शक १४८९ = सन् १५६७, कन्नड

[जिनशासनकी प्रशंसासे इस ताम्रपत्रका प्रारम्भ होता है। कुलोत्तुंग विक्रमरायके पुत्र चगालराय-द्वारा भारद्वाजगोत्रके ब्राह्मण नरसीभट्टको वीराम्बुधि नामक ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। दानकी तिथि माघ शु० १०, शक १४८९, सर्वजित् संवत्सर ऐसी दी है।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० १३]

परिशिष्ट ३

नागपुर-प्रतिमा लेखसंग्रह

इस परिशिष्टमें हम नागपुरके समस्त प्रतिमालेखोका सकलन दे रहे हैं। इन लेखोका सग्रह श्री शान्तिकुमारजी ठवली (वर्तमान निवास—देवलगांव राजा, जि० बुलडाणा, महाराष्ट्र) ने कोई २७ वर्ष पहले सन् १९३५ में किया था। आपने यह सग्रह नागपुरके लोकप्रिय जैन श्रीमान् स्व० सवाई सिंगई श्री० नेमलालजी पासूसावजोकी स्मृतिमे अर्पित किया था। इस सग्रहके लिए स्व० पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजोने भूमिका लिखी थी जा इस प्रकार थी — "जैनधर्मके इतिहासके निर्माणके लिए इस बातकी परम आवश्यकता है कि सर्व जैन स्मारकोंके लेख सग्रहीत किये जावें — इन स्मारकोंमें प्रतिमाओंके लेख, यन्त्रोके लेख, अन्य शिलालेख तथा शास्त्रोंकी प्रशस्तियाँ आवश्यक है — श्री शान्तिकुमार ठवली नागपुरने नागपुरके सर्व दिगम्बर जैन मन्दिर व चैत्यालयोके लेखोको लिखकर पुस्तकाकार सम्पादन करनेमें जो परिश्रम उठाया है वह सराहनीय है। अच्छा हो यदि इन मूर्तियोके लेखोंके साथ यत्रोंके लेख और शास्त्रकी प्रशस्तियोका विवरण प्रकट किया जावे। एक सक्षिप्त तालिका ऐसी दी जावे कि लेख-रहित प्रतिमाएँ इतनी व अमुक सवत्‌की इतनी — जिससे पाठकको प्राचीनता व अर्वाचीनताका पता तुरत लग जावे। ऐसी पुस्तकोंसे भविष्यमें बहुत काम निकलेगा — आशा है ठवली महोदय मध्यप्रान्त व बरारके सर्व स्थानोके लेखोके सग्रहका प्रयत्न करेंगे। अन्य उत्साही युवकोको अपने-अपने प्रान्तो-के लेखोको प्रकट करना चाहिए जिससे किसी समय भारतीय दि० जैन लेख सग्रह पुस्तक निर्माण हो सके।

ब्र० सीतल

९–३–१९३६ नागपुर"

इस पुस्तिकाका प्रकाशन अन्यान्य कारणोसे अबतक नही हो सका था। अत हमने इस परिशिष्टमे इसका पुन सपादन किया है। सग्राहकने मूल लेख मन्दिरोके क्रमसे अलग-अलग सग्रहीत किये थे तथा यन्त्रोंके लेखोंके परिशिष्ट अन्तमे दिये थे। हमने मन्दिरो तथा मूर्तियोका विवरण अलग दिया है तथा लेख समयक्रमसे अलग दिये है। इन लेखोंके विशेष नामोका समावेश सूचीमे कर दिया है तथा वहाँ लेखाकके साथ (ना०) यह सकेत दिया है।

नागपुर नगरका अस्तित्व यद्यपि राष्ट्रकूट साम्राज्यके समयसे ज्ञात होता है तथापि इसे भोसला राजा रघूजी१ के समयसे – सन् १७३४ से प्रधान स्थान प्राप्त हुआ है। तबसे १९५६ तक यह मध्यप्रदेशकी राजधानी रही है। नागपुरके सभी मन्दिर प्राय भोसला राजाओके राज्यमें ही बने है किन्तु इनमे कई प्रतिमाएँ अन्य स्थानोसे भी लायी गयी है। इस नगरमें कुल ९ मन्दिर है। विदर्भकी रीतिके अनुसार यहाँके प्रमुख जैन व्यक्तियोके घरोमें भी छोटे छोटे चैत्यालय हैं। ऐसे गृहचैत्यालयोकी सख्या ३७ है। इन सब स्थानोमे कुल मिलाकर ६४६ मूर्तियाँ आदि है जिनमें धातुकी ४४० तथा पाषाणकी २०६ है। इन मूर्तियो आदिके ४१ प्रकार है जिनकी सख्या इस प्रकार है – (१) आदिनाथ ४२ (२) अजितनाथ १३ (३) सम्भवनाथ १ (४) सुमतिनाथ २ (५) पद्मप्रभ ७ (६) सुपार्श्वनाथ १२ (७) चन्द्रप्रभ ४३ (८) पुष्पदन्त ३ (९) शीतलनाथ ५ (१०) श्रेयास ३ (११) वासुपूज्य ६ (१२) अनन्तनाथ २ (१३) धर्मनाथ ३ (१४) शान्तिनाथ १० (१५) अरनाथ ६ (१६) मुनिसुव्रत १३ (१७) नेमिनाथ १४ (१८) पार्श्वनाथ १३३ (१९) महावीर १० (२०) चौबीसी ३४ (२१) पचमेरु ९ (२२) नन्दीश्वर ७ (२३) सिद्ध ४ (२४) बाहुबली ६ (२५) रत्नत्रयमूर्ति ३ (२६) पचपरमेष्ठि १ (२७) यक्षिणी २७ (२८) सरस्वती ३ (२९) क्षेत्रपाल १ (३०) सप्त ऋषि १ (३१) चौसठ ऋषि १ (३२) गुरुपादुका २ (३३) रत्नत्रय यन्त्र ५ (३४) सम्यग्दर्शन यन्त्र ४ (३५) सम्यक्चारित्र

यन्त्र ६ (३६) दशलक्षण यन्त्र ६ (३७) षोडशकारण यन्त्र २ (३८) कलि-कुण्ड यन्त्र १ (३९) सिद्ध यन्त्र १ (४०) नवग्रह यन्त्र १ (४१) जलयात्रा यन्त्र १। इन मूर्तियो आदिमें ५२९ के पादपीठो अथवा किनारोंपर लेख हैं। ऐसे लेखोंकी सख्या ३२४ है (जहाँ दो अथवा अधिक मूर्तियोंपर एक ही लेख हैं वहाँ हमने उस लेखको एक लेखके रूपमें ही गिना है।)

समयकी दृष्टिसे ये लेख आठ सदियोंमे इस प्रकार विभक्त हैं – विक्रम तेरहवी सदी ४, पन्द्रहवी सदी ३, सोलहवी सदी २२, सत्रहवी सदी ५१, अठारहवी सदी ७२, उन्नीसवी सदी ६९ तथा बीसवी सदा १००।

इन सब लेखोंकी भाषा अशुद्ध सस्कृत है। कुछ लेखोंमें नागपुरकी स्थानीय भाषाओं–हिन्दी तथा मराठीका अशत. प्रयोग हुआ है (लेख क्र० २०६,२६३,२६७,२६९,२७८,२८५) किन्तु शुद्ध हिन्दी या मराठीमें कोई लेख नही हैं। एक लेख (क्र० ७३) कन्नडमे तथा एक (क्र० ३१९) उर्दूमें है किन्तु इनका वाचन प्राप्त नहीं हो सका।

मूर्तिप्रतिष्ठाके स्थानाके सोलह नाम उल्लिखित है – नागपुर (क्र० १५२,१९०-२,२१२ २१५,२१६,२२०-१,२२७,२२९ २३१,२३३, २३५, २४२,२४७,२४९,२५०,२५५-७,२५९,२६१,२७९,२८२,२९५) कारजा (क्र० ८१,१२५,१५७-८,२१०), सिरनग्राम (क्र० २०२,२०४), रामटेक (क्र० ७३,२५३) भीसी (क्र० १४३), तजेगाव (क्र० १०६) उमरावती (क्र० १९९), इंगोली (क्र० २३२), सजालपुर (क्र० ७०) बहादरपुर (क्र० ६५), अवडनगर (क्र० १३०) सिवनी (क्र० २८०) छपारा (क्र० २८४), कामठी (क्र० १५४), सावरगांव (क्र० २९३), सवाई जयनगर (क्र० १९३)।

प्रतिष्ठाकर्ता व्यक्तियोकी पन्द्रह जातियोका उल्लेख मिलता है – राइकवाल (क्र० ९), अगरवाल (क्र० ५३), गंगराडा (क्र० १०), गोलसिंघारा (क्र० ७३), पल्लीवाल (क्र० ५१), गुजरपल्लीवाल (क्र० २१), पद्मावती पल्लीवाल (क्र० ११४), उज्जेनीपल्लीवाल

(क्र० १०८,१२०,१४३), ओसवाल (क्र० ४९-५०) हुंवड (क्र० ८, २०,३०,३९,८६), गोलापूर्व (क्र० ६८,२९१), परवार (क्र० ६९,१८८, १९१-९२,२५०,२५४,२६३,२७२,२८५), खंडेलवाल (क्र० १०७,२८२) सैतवाल (क्र० ९५,२७९,२८६,२८७), बघेरवाल (क्र० १४, २९,३८, ४४,४६,५५-६,६६,८०-८२,८८-९०,९२,९४,९६,१२२, १२५, १३०-१, १३५,१५७,१८२,१९८,२०१,२०२,२०४,२२७)।

प्रतिष्ठापक आचार्य अधिकांश मूलसंघके सेनगण तथा बलात्कारगणके थे, काष्ठासंघके नन्दीतटगच्छके कुछ आचार्योंके उल्लेख भी हैं। इन उल्लेखोंका उपयोग हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में किया गया है। उससे इन भट्टारकोंके बारेमें अन्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

संवत् १५४८ के दो लेख (क्र० १८,१९) विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। इनमें पहला लेख कोई ७७ मूर्तियोंपर है। ये मूर्तियाँ मुडासा शहरमें शिवसिंहके राज्यकालमें सेठ जीवराज पापडीवालने प्रतिष्ठित करवायी थीं। इस समारोहके प्रमुख भट्टारक जिनचन्द्र थे। इस समारोहमें प्रतिष्ठित मूर्तियाँ प्रायः प्रत्येक दिगम्बर जैन मन्दिरमें पायी जाती हैं।

■

मूल लेख

१ संमत १२०१ वैसाख वदी तीन । (विवरण क्र० १४०)

२ सं० १२३४ म तु हा ले (?) (विवरण क्र० १६६)

३ समत १२६२ माल । (विवरण क्र० ११५)

४ समत १२६९ वर्ष आषाढ सुदी ३ । (विवरण क्र० ११४)

५ समत १४५७ वर्षे वैसाख सुदी ६ श्रीमूलसंघ भ० श्रीजिनदेव साहु माणिकचंद । (विवरण क्र० २३१,२३२)

६ मूलसंघ भ० धर्मभूषणोपदेशात् समत १४६५ वर्षे ।
(विवरण क्र० ३०२)

७ सवत १४८५... । (विवरण क्र० ४०)

८ संवत १५१० वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे ५ रवौ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मनंदि तत्पट्टे भ० श्रीसकलकीर्ति तत्शिष्य ब्र० जिनदास हुंबडज्ञातिय सा० तेजु भा० मलाई सुत हरिचंद्र भा० नागाई सुत गोविंद भा० बजाई । (विवरण क्र० १६७)

९ सं० १५२१ वर्षे वैसाख वदि २ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीविद्यानंदिगुरूपदेशात् श्रीराइकवालज्ञातिय भार्या अहिवदे सुत वेणा भार्या वनादे कारितं श्रीचंद्रप्रभचतुर्विंशति नित्यं प्रणमंति ॥ श्रीशुभं ॥ (विवरण क्र० १५७)

१० समत १५२४ मूलसंग सेनगणे माणिकसेनगुरु गगराडा मालसेटा भार्या तानाइ । (विवरण क्र० ८०)

११ समत १५३१ फागुण वदी ५ मू० । (विवरण क्र० १८८)

१२ संमत १५३५ श्रीमू० भ० भुवनकीर्तिस्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणस्तदुपदेशात् स० दि० समाज । (विवरण क्र० ११३)

१३ सं० १५३५ वर्षे पौस वदी ३ श्रीमूलसंघे भ० सकलकीर्तिस्त० भ० श्रीभुवनकीर्तिस्त० भ० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् चांगा भार्या भूसनदे वडासा भा० तानो जी वासपूज्य।
(विवरण क्र० १६०)

१४ [सक] १४०२ व० श्रीक ' श ज्ञात बघेरवाल ' गोत्र सं० पामधन स० जेनराज मातापुत्र प्रणमंति (विवरण क्र० ४१३)

१५ सं० १५४३ श्रीमूलसंग भ० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञान-भूषणगुरूपदेशात् ''डिवसी भा० गुणा सुत ''भा० नामकाई।
(विवरण क्र० ३८०)

१६ स. १५४३ ' पदमसी '' टन'''।(विवरण क्र० ४३३)

१७ समत १५४५ का ज्येष्ठ । (विवरण क्र० ३४३)

१८ सवत १५४८ वर्षे वैसाख सुदी ३ श्रीमूलसघे भट्टारक श्रीजिन-चन्द्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमंति शहर मुडासा राजा स्योसिंघ। (विवरण क्र० १-३,१०-२६,४६-४८,८७,९१-१०२,१४६-१५६,२३८-२६४,३६७-६९)

१९ समत १५४८ वरषे वैसाखसुदी ३ श्रीमूलसघे भट्टारकजी श्रीभानुचन्द्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमंति सहर मुडासा श्रीराजा सोसिंघ। (विवरण क्र० २१८,२१९)

२० ॐ नम सं० १५५२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे श्रीमूलसघे भ० भुवनकीर्तिस्त० भ० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् हु० श्रे० पर्वत भा० टेकू सु० राजा भा० शलू सुत कर्मसी प्रणमंति श्रीसुम-तिनाथ प्रणमंति। (विवरण क्र० १६५)

२१ सं १५२४ मूलसघे सेनगणे भ० माणिकसेन उपदेशात् गुजर-पल्लिवालज्ञाति संघवी नेमा'''। (विवरण क्र० १३७)

२२ स० १५६१ वर्षे वैसाख सुदि १० बुधो श्रीमूलसघे भ० श्री-ज्ञानभूषण त० भ० श्रीविजयकीर्तिगुरूपदेशात् ब० लाडण स०

क० राजा भा० माणिकी सु० कान्हा भा० रूपी भ्रा० गोईया भा० मरगदि भ्रा० श्रीरत्नत्रय नमति। (विवरण क्र० १६८)

२३ संमत १५६१ वर्ष फागुण सुदी ...। (विवरण क्र० ११७)

२४ स० १५७८ मू० भ० धर्मभूषण। (विवरण क्र० ३८३)

२५ संमत १५८२ ...। (विवरण क्र० ४८२)

२६ सं० १५८३ । (विवरण क्र० १२१)

२७ स० १५८३ तीं १३ । (विवरण क्र० ४५३)

२८ संमत १५८४ श्री मू. स भ विजयकीर्ति तत्पट्टे भ. शुभचन्द्रदेवोपदेशात् ब्रह्म श्रीशांता वेलीबाई-ति प्रणमति। (विवरण क्र २०५)

२९ संमत ६०० वर्षे फागुण वदी ५ शुक्रे श्रीमूलसंगे भट्टारक श्रीरामकीर्ति प्रतिष्ठित सेनगणे बघेरवाल ज्ञातिय चवरियागोत्रे सा. धाऊजी भार्या बोपाई सुत सा माणिक भार्या पद्माई भ्राता रतन भार्या पसाई पुत्र धाऊजी एते श्रीसुपार्श्वनाथं नित्यं प्रणमति। (विवरण क्र ३०९)

३० संवत १६०७ वर्षे वैसाख वदी ३ गुरु श्रीमूलसंवे भ श्रीशुभचन्द्रगुरूपदेशात् हूँ ससेस्वरा गोत्रे सा जीना भा भाली सु नाका भा नाकदे भ्रा जगा भा ललितादे भ्रा -गर एते सर्वे नित्यं प्रणमति। (विवरण क्र ४ ६)

३१ [सं.] १६०८ उपा-। (विवरण क्र. ४८४)

३२ समत १६०९ फालगुण २ दिन-। (विवरण क्र १३९)

३३ संवत १६११ ते रागविदे (?) प्रणमति। (विवरण क्र ४६०)

३४ समत १६१४ सेनगण धरमाई बापाई चांगामा। (विवरण क्र २००,३६६)

३५ सं० १६१५ मा० १३। (विवरण क्र ४६०)

३६ स० १६१६। (विवरण क्र ४६१)

३७ सके १४८५ मू० स-। (विवरण क्र २२५)

३८ सक १४८७ प्रजापतसवत्सरे श्रीमू. सरस्वती बलात्कार भ. धर्मचन्द्राणाम् उपदेशात ज्ञाति बघेरवाल भुरा गोत्रे सा रतन स भार्या पुतली लखमाई-प्रणमंति । (विवरण क्र ४३४)

३९ स. १६२५ आषाढ शुद्धि ५ श्रीमूलसंघे ब्रह्म श्रीहस ब्रह्म श्रीराजपालोपदेशात् हुवड ज्ञातौ सा. समराज भा- लोकोई स. आसजा भा बाकाई । (विवरण क्र २६८)

४० श्रीमूलसंघ संमत १६३१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे भ श्रीगुणकीर्तिगुरूपदेशात् स कर भार्या सहागदेई स वीरदास भा ताकमई श्रीअजितनाथ जिन प्रणमंति ।
(विवरण क्र. ३०७)

४१ समत १६३६ मरानोजी पु (?)। (विवरण क्र ३०६)

४२ सवत् १६३६ श्रीकाष्ठासंघे भ० विद्याभूषण प्रतिष्ठितं हुवड सा. जयवतभार्या तसमाद्दे सु-जीवराजसा धनराजसा प्रणपालसा नित्य प्रणमंति । (विवरण क्र ४०८)

४३ शक १५०१ मा तिथी ८ काष्टासघे भ. श्रीश्रीभूषणमदुपदेशात् प० जयवं त (विवरण क्र ४३६)

४४ सक १५०३ वृषा नाम सवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसंघ ब. भ धर्मभूषणोपदेशात् बघेरवालज्ञाति ठवलागोत्रे स पासुमा भार्या भ० रुपाई तयो पुत्रौ आपुसा भार्या लिंबाई रामासा भार्या वोपाई पुते प्रणमंति । (विवरण क्र ४२१)

४५ सके १५०६ माघ वदी १ गोत्र चवरिया गुणासा ।
(विवरण क्र ३९१)

४६ समत १६४५ वैसाख सुदी ७ सोमवार श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगणे पुष्करगच्छे भट्टारकश्रीप्रतापकीर्ति तस्य आम्नाये बघेर-

वालज्ञातिये वोरखंडियागोत्रे संगई पुजासा स० धवाई प्रणमति ।
(विवरण क्र० ४५०)

४७ संमत १६४६ वर्षे श्रीमूलसग भट्टारक श्री…वीर तत्पट्टे भ. श्री सेन तस्य शिष्य पडित श्रीगजा उपदेशात् साह बावजी भार्या दामाई तयो पुत्र गकुरमाह तस्य भार्या पेमाई तयो सुत तुवाजीसाह भार्या लखमाई तेषां नित्यं प्रणमति साव फागुण शुदी १० गरुवासरे श्रीचिंतामणी पार्श्वनाथचैत्यालये प्रतिष्ठित ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ जे पूजता ते भवतु ॥ जयस्तु ॥
(विवरण क्र० ३११)

४८ स. १६४९ फा शु १३ मू बलात्कार. भ पद्मकीर्ति उपदेशात् । (विवरण क्र० ४३०)

४९ [सं०] १६५२ वैसाख सुद १४ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे पद्मकीर्ति विद्याभूषण हेमकीर्ति सदुपदेशात् श्रीश्रीमाल'' ''
(विवरण क्र० २६६, २९९)

५० समत १६५३ वैसाख शुद्ध १४ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे भट्टारक हेमकीर्ति उपदेशात् श्री श्रीमालज्ञातौ महासा नित्य प्रणमतु
(विवरण क्र० २७५)

५१ शके १५१९ मन्मथनामसंवत्सरे वैसाख सुदि त्रयोदशीदिने घटापित श्रीमूलसघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीधर्मभूषणोपदेशात् पल्लीवालज्ञातीय स. वायासा तस्य भार्या गगाई तयो पुत्र स लखमसी तस्य भार्या द्वौ गोमाई लालाई तेषा पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र स मोतासा द्वितीय नेमा प्रणमति । (विवरण क्र० १२४)

५२ श्रीमूलसघे सेनगणे वृषभसेनगणधरान्वये श्रीसम्मंतभद्र लक्ष्मीसेनभट्टारकउपदेशात् सके १५२१ फागुण सुद पा रवौ सघवी सोमसेठी श्रीमंगल । (विवरण क्र० १२०)

५३ संवत् १६५८ वर्षे आषाढ वदी' 'अगरवालज्ञा० । (विवरण क्र० ४८३) ।

५४ शके १५२५ वर्षे शुभकृत् नाम संवत्सरे ज्येष्ठशुक्लपक्षे १३ तिथौ प्रतिष्ठिता । (विवरण क्र० २७१)

५५ संमत १६६० वर्षे फाल्गुण शुद्धि १० श्रीकाष्टासंघे लाडबागडगच्छे भ० श्रीप्रतापकीर्ति नंदिसंघे बघेरवालज्ञातिय-सा भारया वीरूना परिनवाई तयो पुत्र सा० नोगु भा परिहाई श्रीपद्मावति प्रणमति श्रीकाष्टासंघे नंदितटगच्छे भट्टारक श्री श्री श्रीभूषण प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ४१४)

५६ शक १५२५ वर्षे श्रीमूलसंघे सेनगणे श्रीमनवृषभसेनगणान्वये भ० श्रीलोमसेन तत्पट्टे भ० श्रीमाणिकसेन तत्पट्टे भ० श्रीगुणभद्र तत्पट्टे भ० श्रीगुणसेन उपदेशात् बघेरवालज्ञातीय खटवडगात्रे स० श्रीहरकसा मार्या गोजाई तयो सुत स० गणासा मार्या कढताई येते श्रीरत्नत्रयचतुर्विंशति प्रणमति । (विवरण क्र० १९०)

५७ समत १६६० वर्षे फाग सुद ॥ गु० श्री एतत्-वा- मुक्तावाई श्रीशीतलनाथबिंबका म०-। (विवरण क्र० २७८)

५८ सक १५२६ माहो सुद १३ भट्टारक हेमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्टित सितलसिंगवी-ताजी सवाल तुरासु (?) रूपा नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र० ४३९)

५९ सवत १६६२ वर्षे ''श्रीमूलसंघे भ० जगतकीर्ति सदुपदेशात्-श्वेरान्वये-प्रतिष्टित (विवरण क्र० ४८६)

६० समत १६६४ '''महाराजाधिराज श्रीचन्द्रकीर्ति-तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजी आम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुंदाचार्यान्वय प्रतिष्टितं । (विवरण क्र० २७)

६१ समत १६६९ चैत्रसुद १५ रवौ मूलसंघे कुं० भ० यशोकीर्ति

लावाई इति सिद्धयन्त्रं नित्य प्रणमंति। शुभं भूयात्।
(विवरण क्र० २७५)

८७ शक १५७८—सुखनाम मू० स० भ० श्रीधर्मभूषण उपदेशात् तिमासा भार्या वखाई तयो पुत्र भूतसा त० देवाई।
(विवरण क्र० १८४)

८८ शके १५८० माघ सुदी ५ सोमे कारंजानगरे काष्ठासंघे नंदितट-गच्छे भ० इन्द्रभूषण प्रतिष्ठित बघेरवालज्ञाति गोवलगोत्रे "भा० हुलणवाई"' प्रणमति। (विवरण क्र० १४१)

८९ संवत १७१५ वर्षे माघ सुदी ५ काष्टासंघे नंदितटगच्छे विद्या-गणे "बघेरवाल ज्ञातीय बोरखंडयागोत्रे स० खांमा भार्या पुतलाई तयो पुत्र स० धनजी भार्या पदाई येन सुपार्श्वनाथ प्रणमति। (विवरण क्र० १४२)

९० शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासंघे नंदितटगच्छे भट्टारक श्री इन्द्रभूषण प्रतिष्ठितं बघेरवालज्ञाती बोरखंडियागोत्रे तेऊजीसा भार्या जसाई तयो पुत्र पौत्र नाथुसा सा० चिंतामणसा एते अंबिका नित्य [प्रणमंति] (विवरण क्र० ४४७)

९१ संमत १७१५ माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासंघे नंदितटगच्छे विद्यागणे भट्टारक रामसेनान्वये राजकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक लक्ष्मी-सेन तत्पट्टे भ० इन्द्रभूषण प्रतिष्ठितं संघवी खांमा भार्या पुतलाई तयो पुत्र स० धनजी भार्या पदाई अंबिका प्रणमति काष्ठासंघे लोहाचार्यान्वये प्रतापकीर्ति संघवी खाभा भार्या पुतलाई स० धनजी। (विवरण क्र० ४४८)

९२ संवत १७५५ माघ सुदी ५ सोमे काष्टासंघे लाडवागटगच्छे भ० प्रतापकीर्ति तदाम्नाये बघेरवालज्ञातौ कात्री "।
(विवरण क्र० ५)

९३ शके १५८१ मौ० फा० व० ३ मू० स० भ० पद्मकीर्ति सा० ज्ञा० बुनमेट भाया भ्राता । (विवरण क्र० २०२)

९४ शा० १५८१ क० व० पद्म० भ० जे० का० ज्ञा० बघेरवाल लुगाई श पु ता सा मा वा मा त (?) ग गु ' ।
(विवरण क्र० ४०६, ४०९)

९५ सक १५८२ स्यार्वरी नाम सवत्सरं तीथ फाल्गुण सुद दसमी १०॥ श्रीशांतीनाथचैत्यालय श्रीबलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान् भट्टारक श्रीपद्मकीनि उपदेशात रामटेक नग्र ज्ञातीं महूतवाल ' रायाजी जाई । (विवरण क्र०२७३)

९६ मके १५८२ फालगुण शुद्ध ७ तिलक सेन भट्टारक श्रीजिनसेन बघेरवालज्ञातीं चवरियागोत्रे सा० ' भार्या ''नित्य प्रणमति ।
(विवरण क्र० ४४५)

९७ समत १७१८ । (विवरण क्र० १२३)

९८ शके १५८३ प्रभवनामसवत्सरं ज्येष्ठवदी प्रथम व० कु० भ० ' । (विवरण क्र० २२९)

९९ शके १५८६ वर्षे क्रोधनामसवत्सरं तिथी फागुण शुद ५ श्रीमूल-संघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भ० धर्मचंद्र तत्पट्टे भ० धर्म-भूषण ,महाराज प० नेमाजी भार्या राजाई पुत्र सोयराजी ता प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० २०८)

१०० शक १५८६ ' । (विवरण क्र० ३८८)

१०१ शके १५८९ । (विवरण क्र० ७)

१०२ शके १५९२ वैसाख मुलसघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वयं भट्टारक कुमुदचंद्र तत्पट्टे भ० अजितकीर्ति त० भ० विशालकीर्ति उपदेशात' सोनोपंडित रोडे ।
(विवरण क्र० १८०)

१०३ संमत १७३१ । (विवरण क्र० १२२)

१०४ सके १५९६ फा० शु ॥ ३ भ० "कीर्ति तत्पट्टे दयाभूषण श्रीमू० स० ब० । (विवरण क्र० २२१)

१०५ शके १५९७ मुलसघ बलात्कारगण भ० धर्मभूषण ॐ हरीसाव पुत्र फकीचद प्रणमति । (विवरण क्र० २२८)

१०६ श० १५९७ मू० सेनगणे भ० जि० तजेगामग्रामे गु० गनसेठ भा० सिशबाई पु० कुस्नाजी भा० मेगाई पु० जोगाजी प्रणमति । (विवरण क्र० ४५७)

१०७ संमत १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमूलसघे भट्टारक श्रीसुरेंद्रकीर्तिस्तदाम्नाये खडेरवालान्वये गृध्रवालगोत्रे सा देवसी पुत्र सगहान प्रतिष्ठा कारिता । (विवरण क्र० ३७७)

१०८ शाके १५९७ मू ॥ ब ॥ भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् ऊजानीपल्लीवालज्ञातीय माणिकसा तत्पुत्र नारसा सुत शतसा प्रणमति । (विवरण क्र० १५९)

१०९ [श०] १५६७ मु० जीनसेन उ० ऌखसेट माहोरकर प्रणमंति । (विवरण क्र० १६२)

११० शके १५९९पिंग्लू श्रीमू० । (विवरण क्र० ४९७)

१११ सक १६०१ समत १७३६ । (विवरण क्र० ३५९)

११२ सक १६०" ागशिर्ष । (विवरण क्र० २२०)

११३ १६०१ ० ीमू० । (विवरण क्र० ४९१)

११४ सके ६६-१ फाल्गुण सुदि ११ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे भट्टारकश्रीपद्मकीतसद्गुपदेशात्श्रीपद्मावतीपल्लीवालज्ञातौ अडनाव कुस्तानी पानसी भार्या मगनाई तयोपुत्र बाबुजी प्रणमति । (विवरण क्र० २७२)

११५ सातिनाथ सके १६०४ श्री । (विवरण क्र० ३७५)

११६ रा० अरजुनसा सके १६०७ क्रोधनामसवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी ५ श्रीमूलसघे खडारियागोत्रे स० पी० । (विवरण क्र० १२९)

११७ सातनाथ सके १६०७ ४ माघेर । (विवरण क्र० ४६२)

११८ सके १६०७ ‥। (विवरण क्र० ४७४)

११९ सके १७०७ समत १७४२ । (विवरण क्र० ४५२)

१२० शके १६०७ प्रभवनामसंवत्सरे फाल्गुण वदी १० म० धर्मचद्र उपदेशात् मु० नगरे ज्ञाते उज्जेनीपल्लीवार गोटसा मार्या मेमाई ब० साह ॰ मार्या नागाई प्रणमति । (विवरण क्र० १८७)

१२१ सके १६०८ फागण वदि १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविशालकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीपद्मकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्रीविद्याभूषण स्वकर्मक्षयार्थं । (विवरण क्र० २६७)

१२२ संवत १७४४ सके १६०९ फाल्गुण सुद १२ श्रीमत्काष्टासंघे लाडबागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे संघवी पदाजी मार्या तानाई तयो पुत्र संघवी जमनाजी मार्या हासुबाई तयो पुत्रा तुर्य स० पुतलावा मार्या गंगाई स० पुजाबा मा० देवकु स० शीतलावा मा० सकाई इ० पदाजी एते सह नित्य प्रणमति श्रीकाष्टासंघे नंदितटगच्छे भ० इंद्रभूषण भ० सुरेंद्रकीर्ति । (विवरण क्र० १७२, १७४, ४४६)

१२३ सके १६०९ फा० सु० १३ काष्ठासंघे लाडबागडगच्छे प्रतापकीर्त्याम्नाय भ० सुरेंद्रकीर्ति स० पदाजी मा० तानाई पु० राजवा मा० सोनाई पु० अनतोबा मा० पामाई जी प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० १७५)

१२४ सके १६०९ ॰ वलात्कार । (विवरण क्र० ४७८)

१२५ संवत १७४५ ज्येष्ठ सुदी २ सोमवार श्रीकारंजानगरे काष्टासंघे प्रतापकीर्तिआम्नाये बघेरवालज्ञातौ बोरखडियागोत्रे सा० मनासा मार्या शकाई तयो पुत्रा अव सा अर्जुन मा० रगाई शितलसा मार्या सायरा लक्ष्मणसा मा० जीवाई येसोबा पुतलोबा ॰ नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र० ५४९)

१२६ मिती वैसाख सुदी ३ संमत १७४५ ···। (विवरण क्र० ६६)

१२७ समत १७४६ । (विवरण क्र० ३२६)

१२८ शके १६११ श्री ··· । (विवरण क्र० २६१)

१२९ स० १७४६ । (विवरण क्र० ३८४)

१३० समत १७४७ सके १६१२ ज्येष्ठ वदी ७ भ० श्रीइंद्रभूषण त० भ० सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठित श्रीकाष्टासघे लाडवागडगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भ० श्रीनरेंद्रकीर्ति प० भ० श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालज्ञाति गोवालगोत्रे स० बापु पुत्र स० भोज सघवी पदाजी भार्या तानाई पुत्र स० बापु स० जमनाजी स० राजवा अथ सघवी जमनाजी भार्या हसाई समस्त कुटमपरिवार नित्य प्रणमंति दर्शनयन्त्र श्रीअबदनगर प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १७६)

१३१ शके १६१२ ज्येष्ठ वदि ७ श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे भ० श्रीकुदकुदाचार्यान्वय भ० धर्मभूषण त० भ० विद्यालकीर्ति त० भ० धर्मचंद्रोपदेशात् बघेरवालज्ञाति खडासो गोत्रे सा० राघुसा सुत कपुसा अंबिका नित्य प्रणमंति । (विवरण क्र० ४३२)

१३२ समत १७५० सवधारी नाम सवत्सरे आषाढ कृष्ण तिथ भार्या श्री ··· । (विवरण क्र० ७३)

१३३ शके १६१७ फा० ५ · । (विवरण क्र० २७८)

१३४ स० १७५२ माघ वदी ८ श्रीमूलसघ भ० श्रीहेमकीर्ति गु० त० न न जा सवजी (?) । विवरण क्र० ४११)

१३५ संवत १७५३ वर्षे वैसाख सुदि ६ सनौ श्रीकाष्टासघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति तदाम्नाये बघेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे संघवी भोज भार्या पदमाई तयोपुत्र अरजुन भार्या सकाई तासो पुत्र स० तवना भार्या

सिता पुत्र सं० मामा भार्या देगाई संघवी धर्मा भार्या फाकाई तयो पुत्र स० सितल भार्या देनकु भार्या हिराई तयो पुत्र भोज द्वितीयभार्या ' इत्यादि सपरिवारे नित्य प्रणमति । श्रीकाष्टासंघे नदीतटगच्छे भ० रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० इंद्रभूषण तत्पट्टे भ० सु (रेंद्रकीर्ति) । (विवरण क्र० १६९)

१३६ समत १७५३ वरषे मिती वैसाख सुदी ३ "पापडीवाल प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ५८,६३,६४,८८)

१३७ शके १६११ वै० सु० ३ श्रीमूलसंघ सेनगण । (विवरण क्र० १६४,२१६)

१३८ सवत १७५४ मूलसघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ० छत्रसेनोपदेशात्...। (विवरण क्र० ८)

१३९ [स०] १७५६ श्रीमु० बा० स० श्रीदेवेंद्रकीर्ति भ० प्रतिष्ठित मिती माघ सुद ५ । (विवरण क्र० २०४,४६९)

१४० सके १६२२" भ० श्री चंद्रगुरूपदेशात् । (विवरण क्र० ३३०)

१४१ शाके १६२४ विभवनामसंवत्सरे माघ ।

१४२ स० १६२६ भ० इंमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्ठित सी० स० । (विवरण क्र० ४१२)

१४३ शक १६२६ तारणनामसवत्सरे माहो सुद १३ शुक्रे मुलसंघ बलात्कारगणा कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ० विद्याभूषण त० भ० इंमकीर्ति उपदेशात् उज्जैनीपल्लीवालज्ञातीय सिंगवी लखमप्रसादजी भार्या गोमाई तस्य पुत्र नेमासिंगवी सितलसिगवी सिवलसिंगवीप्रतिष्ठित भोसीनगरे चंद्रनाथचैत्यालये गुमासा चितामणिसा नित्य प्रणमतु (विवरण क्र० २१०)

१४४ शक १६२६ तारण सवत्सरे माह सुद १३ मूलसघ ब० भ०

हेमकीर्ति उपदेशात् सितलसंगई प्रतिष्ठितं शुभं भूयात् । (विवरण क्र० १८६)

१४५ शके १६२८ विभवनामसवत्सरे माघ ° । (विवरण क्र० ३०५, ३३८,४०१)

१४६ सक १६३६ जय० फा० दताजी । (विवरण क्र० ४३५)

१४७ समत १७७२ श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंद (कुदाचार्यान्वये) । (विवरण क्र० ५७)

१४८ संमत १७७८ चैत्र सुदी ६ श्रीमू० स० । (विवरण क्र० २९)

१४९ स० १७८३ । (विवरण क्र० ४६३)

१५० समत १७९१ मूलसघ । (विवरण क्र० ११९)

१५१ समत १७९३ प्र० श्रीमू० स० ब० भ० श्रीधर्मचद्रना उपदेशात् ज्ञान चा० भोजसा भा नाथाई त० पु० फदश्रा (?) नित्य प्रणमति । (विवरण क्र० ४०५)

१५२ सवत १८०० वैसाख शु॥ ३ भौमवासरे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये नागपुरमे प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० ५१,५६)

१५३ समत १८०० वैसाख सुदी ३ । (विवरण क्र० ५६)

१५४ समत १८१० माघ सुद २ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये गोपाचलपट्टे भट्टारक श्रीचारुचद्रभूषण तदोपदेशात् नगरे प्रतिष्ठा करापिंता कामठी सदर "। (विवरण क्र० २०९)

१५५ शके १६७६ । (विवरण क्र० ३३५)

१५६ श्रीमूलसगे सके १६७६ । (विवरण क्र० ४४३)

१५७ शके १६७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे मुलसंघ पुष्करगच्छे सेनगणेम्नाये भट्टारकजी सोमसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनसेनगुरूपदेशात् कारंजाग्रामवास्तव्य बघेरवालज्ञात

सावलागोत्रे वीरासाह भार्या हिराई तयोपुत्र जिनासाह भार्या गोपाई तयो पुत्र द्वौ प्रथम पुत्र नवनासा भार्या अंबाई द्वितीयपुत्र जितलसाह भार्या पदाई नित्यं प्रणमति। (विवरण क्र० १७७)

१५८ शक १६७८ माघ सुद १४ मूलसंघ भ० शांतिसेनोपदेशात् प्रतिष्ठितं कारंजाग्रामवास्तव्येन बेवाजाति फु० गोत्र पु० चिंतामणसा नित्यं प्रणमंति। (विवरण क्र० २१२)

१५९ संवत १८१४ शके १६७९। (विवरण क्र० ४४४]

१६० शक १६८१ फा० व ॥ ६ मू० स० ब० कुं० भ० धर्मचंद्र पार्श्वनाथबिंब। (विवरण क्र० १३८)

१६१ शक १६८६ म० भ० ब्र० भ० धर्मचंद्र। (विवरण क्र० २०३)

१६२ शके १६८७ फा० ५ भ० । (विवरण क्र० ४३१)

१६३ सके १६८७ मन्मथ अजितकीर्तिउपदेशात् स० छ रे म टा कं (?) फा० सु० २। (विवरण क्र० ४७०)

१६४ संवत १८२३ चैत्र वदी ८। (विवरण क्र० ३१६)

१६५ संवत १८३७ सके १६९२ वैसाख सुदी १२' "उपदेशात् "।
(विवरण क्र० २९९)

१६६ सके १६९२ मिती चमाग वद ११ श्रीमूलसंघे स० ब० भ० धर्मचंद्र प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ६)

१६७ शके १६९५। (विवरण क्र० ४९७)

१६८ सके १६९५ मन्मथनामसंवत्सरे । (विवरण क्र० २३६)

१६९ सके १६९७ फा ॥ ५ भ० बाबजि। (विवरण क्र० ४५४)

१७० सके १६९७ म० भ० म०' 'भ० अजितकीर्ति' "। (विवरण क्र० ४६५)

१७१ सके १६९७ स० फा० सु० ५ भ० भ० मना। (विवरण क्र० ४७३)

१७२ सके १६९७ फा० ५ भ० अय ति०। विवरण क्र० ४७७)

१७३ (सके) १६६७ फा० ५ श्र० ज० ल० । (विवरण क्र० ४७६)

१७४ शके १६९७ मन्मथनामसंवत्सरे अजितकीर्ति उपदेशात् परवार हिरामन फाल० शु० द्वितीया २ । (विवरण क्र० ४८०)

१७५ सके १६६७ मनाजी सेठ भ० अ० । (विवरण क्र० ४२३)

१७६ शके १६९७ मि० फा० २ " नथु । (विवरण क्र० ३१५)

१७७ समत १८३२ मन्मथनामसंवत्सरे मू० व० स० कु० भ० पद्मकीर्ति भ० विद्याभूषण भ० हेमकीर्ति तत्पट्टे अजितकीर्ति फालगुण मासे शुद्ध २ पचपरमेष्टी । (विवरण क्र० २२७)

१७८ शक १६६७ नाम सवत्सरे भ० अजितकीर्ति उपदेशात् फा० सु० २ । (विवरण क्र० २०६)

१७९ शके १६९८ सु० (विवरण क्र० ३२४)

१८० श्रीमूलसघी सके १७०५ । (विवरण क्र ४४०)

१८१ सक १७०७ चैत्र वद १३ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण । (विवरण क्र० ७६)

१८२ समत १८४५ सके १७१० श्रीमत्काष्टासघे लाडबागड नदितटगच्छे भ० सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ० सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० लक्ष्मी सेनजी श्रीबघेलवालज्ञाति जुगिया गोत्रे…काष्टासघ गार्डी । (विवरण क्र० १३३)

१८३ सके १७१० श्री कीलनामसव"सरे मिती श्रावण सुद १२ श्रीमूलसघ चिमनाजी सरावणे तथ पुत्र मुरारजी । (विवरण क्र० १२८)

१८४ सा० १७१० काष्टासघी वर्बासा जोगी । (विवरण क्र० १७३)

१८५ समत १८४६ कार्तिक सुदी ४ काष्टासंघे नदितटगच्छे श्रीलक्ष्मासेनजी प्रतिष्ठित…। (विवरण क्र० १३२)

१८६ समत १८५२ भट्टारक…उपदेशात् रामलालेन प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ४६८)

१८७ सके १७१८ संवत १८५३ मार्गश्वर । (विवरण क्र० ४६२, ४६६)

१८८ ॐ नम. सिद्धेभ्य समत १८५७ शके १७२२ भादवा सुदी १० सोमवासरे कुदकुंडाचार्याम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० श्री श्री श्री अजितकीर्ति तस्य उपदेशात् गोहिल परवार ज्ञाते ' मगल भूयात् । (विवरण क्र० ३१)

१८९ शाक १७२३ मवत १८५८ फागवदी २ । (विवरण क्र० ४२५)

१९० संमत १८५९ शके १७२४ ला नागपूरमध्ये भ० रत्नकीर्ति उपदेशात् । (विवरण क्र० ३०, ४४, ४५)

१९१ समत १८५६ दुदुभिनामसंवत्सरे नागपूरनगरे रघुवरराज्ये भ० श्रीरत्नकीर्तिउपदेशात् श्रीपरवार वशे । (विवरण क्र० ३२)

१९२ समत १८५६ शके १७२४ श्री मूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भ० रत्नकीर्ति उपदेशात् नागपूरनगरे रघुवरराज्ये परवारान्वये सेतवागर गोहिल्लगोत्र' भार्या प्रतिष्ठा करापित । (विवरण क्र० ३३, ४३)

१९३ समत १८६१ वैसाख सुदी ५ सोमवासरे सवाईजयनगरे श्रीसुरेंद्रकीर्तिउपदेशात् हिरा ' प्रतिष्टा कारिता । (विवरण क्र० ३४६)

१९४ सवत १८६६ फाल्गुण कृष्ण ५ शुक्रवारे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ३७०, ३७२)

१९५ संमत १८६८ फागुण सुदी ७ बुध श्रीमूलसघ बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ११०)

१९६ शके १७४३ श्रीमूल '। (विवरण क्र० ४८३)

१९७ शके १७४४ श्रीमूलसंघ । (विवरण क्र० ९०, १७१)

१९८ संवत १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्टासघे भ०

सुरेंद्रकीर्ति तत्शिष्य भ० देवेंद्रकीर्ति गंगेसाव जाति बघेरवाल। (विवरण क्र० १७०)

१९९ संवत १८८१ मू० भ० ब० आचार्य श्रीरामकीर्ति उपदेशात्... प्रतिष्ठित श्रीदसमावर्णीनगरे। (विवरण क्र० १८०)

२०० संवत १८८९ श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा- चार्यान्वय भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति उपदेशात्...प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ५२)

२०१ संवत १८८० मार्गशिर्ष शुद्ध १० गुरुदिने श्रीमत्काष्ठासंघे लाड- बागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति आम्नाय नंदितटगच्छे भ० सुरेंद्रकीर्ति तस्य भ० देवेंद्रकीर्ति गंगेसाव जाति बघेरवाल गोत्र भोगंसा सा० गंगासा पु० पूनासा यंत्र प्रणाम्यति। (विवरण क्र० ३०२)

२०२ संवत १८८७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा- चार्याम्नाये श्रीमत्भट्टारक धर्मचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक देवेंद्र- कीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्ति- देवास्तदुपदेशात् बघेरवाल पामसा भरमा सरवग्रामसध्ये प्रतिष्ठा कारापितं। (विवरण क्र० ४४८)

२०३ संवत १८८७ शके १७५२ श्रावणमासे शुक्लपक्षे ती० ५ आदित्यवासरे बलात्कारगणे कारंजापुरपट्टाधिकारी श्रीमत भ० देवेंद्रकीर्तिस्तदाम्नाये मोठे बिंब प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ४०१)

२०४ श० १७५३ संवत १८८८ वैशाख सुदी ७ गुरुवार स्वस्ति श्री- मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० धर्मचंद्रदेवास्तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्तिदेवास्त० भ० पद्मनंदि- देवास्त कारंजापुरपट्टाधिकारी श्रीमत देवेंद्रकीर्तिउपदेशात् वेलमंडे शिरडग्रामे माणिकसा बघेरवाल तत्पुत्र पामा गोत्र घडर प्रतिष्ठा करवित। (विवरण क्र० १९१)

२०५ समत १८८७ का ज्येष्ठ सुदी ९ विंशतिनामसवत्सरे श्रीमू० स० ब० कु० भ० पद्मनदिदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्ति·· प्रतिष्ठा करान्वितं। (विवरण क्र० २८)

२०६ संवत् १८८८ वैसाख कृष्ण ५ रविवासरे श्रीमूलसघे ब० स० श्रीकु० इद प्रतिमा कारयेत् श्रीसकलपचकमेटिके स्वकर्मक्षयार्थं प्रतिमा प्रतिष्ठिनिये। (विवरण क्र० ५५)

२०७ संमत १८८८ ·। (विवरण क्र० १०६)

२०८ समत १८८६ वैसाख शुक्ल ११ गुरुवासर मलसघ ब० स० कुदकुदाचार्यान्वय। (विवरण क्र० ८५)

२०६ समत १८८९ वृपभायणे··। (विवरण क्र० १०३)

२१० संमत १८९१ शके १७५६ जयनामसवत्सरे श्रावणमासे कृष्णपक्षे पराठी मूलसंघे स० ब० कारंजानगरे इद पद्मादेवि श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठितम्। (विवरण क्र० २३७)

२११ समत १८९३ वर्षे माघ सुद १० बुधदिनी मुलसघ कुदकुदाचार्याम्नाय ब० स० भट्टारकपद्मनदिदेवात् तत्शिष्य भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् तत् उपदेशात् भार्या हिला पुत्र नेमुराम भ्राता दामूजी भार्या लाडव प्रतिष्ठितं प्रणमंति। (विवरण क्र० १८६)

२१२ स० १८९३ श्रीमू० नागपूर श्रीपाशू च०। (विवरण क्र० ३९६)

२१३ श्रीमूलसघ सक १७५९। (विवरण क्र० ४५४,४५८)

२१४ श्रीसंवत १८६४ साल आषाढ व॥ ६ श्रीमहावीर स्वामीजीका मुख। (विवरण क्र० ४६,५०)

२१५ समत १८९७ शके १७६२ भगवतिनामसवत्सरे वैसाख सुदी ३ बुधवासरे इद श्रीपाइर्वनाथस्वामी श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमद्देवेंद्रकीतिस्वामी

पुत्र भागचंदजी अजमेरा खंडेरवाल श्रावकेन प्रतिष्ठित गुरुवासरे नागपुर शुक्रवारीपेठ श्रीजिनचैत्यालय। (विवरण क्र० ६५,६६,७०,७५,७६)

२४३ संमत १९१६ मिती माघ सुदी १० गुरवार। (विवरण क्र० ६७,६८,८२)

२४४ समत १९१६ मिती माघ सुदी १० मरूपचद अजमेरा तेन प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० ७१)

२४५ संमत १९१६ माघ सुदी १० मूलसघे प्रतिष्ठित। (विवरण क्र० ७८)

२४६ समत १९१६ माघ सुदी १० गुरुवारे श्रीमू० स० ब० कु० नेमिनाथस्वामीजिन। (विवरण क्र० ८१,१६९)

२४७ समत १९१६ मिती माघ सुदी १० गुरुवासरे श्रीमू० स० ब० भट्टारकदेवेंद्रकीर्तिस्वामीजी हस्तेन प्रतिष्ठित नागपूरमध्ये। (विवरण क्र० ८४)

२४८ समत १९१६ मि० फा० सुदी ११ शनिवार श्रीमू० स० ब० कुद० अथ श्रीआदिनाथ श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीना प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २८७)

२४९ समत १९१६ मिती फागुण सुदी ११ शनिवासरे नागपूरनगरे श्रीमहावीरस्वामीचैत्यालये श्रीमूलसघे स० ब० कु० अथ श्रीपार्श्वनाथस्वामीजी श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी स्वहस्तेन प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २९१)

२५० समत १९१६ मिती फागुण सुदी ११ शनिवासरे श्रीमू० स० ब० कुं० नागपूरनगरे श्रीजिनचैत्यालये अयं श्रीआदिनाथस्वामी मूलनायक भ० श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् गकुरदास तत्पुत्र मनीलाल परवार वोछल मुर कोछल गोत्र ते प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० ३६६)

२५१ सवत १६१६ मिती माघ '। (विवरण क्र० ८६,४२७)

२५२ समत १९२५ मार्गशिर्ष सुदी ५ गुरु श्रीमू० भ० हेमकीर्ति तत्पट्टे भ० करा '''। (विवरण क्र० २८०)

२५३ संमत १९२५ का माघ सुदी ५ सोमवारे श्रीमूलसंघे बलात्कार-गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० हेम-कीर्ति उपदेशात् रामटेकमध्ये संघवी मनालालेन प्रतिष्ठित ।
(विवरण क्र० २८४)

२५४ संवत १९२५ श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वयं नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूपणजी तत्पट्टे भट्टारक श्रीहेम-कीर्तिजी तदाम्नाय' परवाडान्वये कोछलगोत्रे संघवी भुरसीदास तत्पुत्र मनालालेन प्रतिष्ठा कराल्वितं । (विवरण क्र० ४)

२५५ सवत १९२५ शके १७९० विभवनाम सवत्सरे शुक्लपक्षे तीथी ७ बुधवासर श्रीमूलसघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-चार्याम्नाये इदं प्रतिमा देवेंद्रकीर्ति स्वामीन हस्ते नागपूरमध्ये धोम्मालाल तस्य भार्या बोराबाई ने प्रतिष्ठा कराल्वित ।

२५६ श्रीजिनो जयति ॥ श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्रेभ्यो नम. । संमत १९२५ का शक १७९० का विभवनामसंवत्सरे सिमरस्तता मासाजमासोत्तममासे मार्गशिर्षमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ ५ पंचमी गुरुवासर उत्तराषाढ नक्षत्रे गजनामयोगे श्रीनागपुरवा-स्तव्यसे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंद्याम्नाय कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीनागौरपट्टे भट्टारकश्री हरषकीर्तिजी तत्पट्टे भ० श्रीविद्याभूपणजी तराडेण (?) ' इक्ष्वाकुवंशे धुरामौरा गोत्रे संघवी कृपारामजी तत्पुत्र कलुपाऊजी भार्या हीराबाई तत्पुत्र भूपपाल माधवजी छोटेलाल ' तेन सपरिवारेण संघवी कलुपाऊ श्रीप्रतिष्ठा करापित ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रेयामस्तु ॥ रक्षित-मस्तु ॥ (विवरण क्र० २८५)

२५७ श्रीसमत १६२५ शक १७९० विभवनामसंवत्सरे मिती वैसाखमासे शुक्लपक्षे तीथौ ७ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बालात्कारगणे श्रीसरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीचन्द्रप्रभस्वामीन प्रतिमाया श्रीमद् देवेंद्रकीर्तिस्वामीहस्ते श्रीनागपूरमध्ये प्यारेसावजी भार्या पुनाबाई परवार तेने प्रतिष्ठा करापित ।

(विवरण क्र० २९४)

२५८ समत १९२५ वै० शु ॥७ बु० कु० दे० नागपूरमध्ये गुमानसाव तस्य पुत्र चुडामणसा तस्य पुत्र भोजराज परवार तेन प्रतिष्ठा करान्वित । (विवरण क्र० २९६)

२५९ समत १९२५ वैसाख शुद्ध ७ बुध० श्रीमू० स० ब० कु० श्रीपार्श्वनाथस्वामीना देवेन्द्रकीर्तिस्वामीनहस्ते नागपूरमध्ये प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३१७-१८)

२६० समत १९२५ वैसाख सुदी ७ प्रतिष्ठितं मनबोध जिन मुंगाबाई । (विचरण क्र० ३२७)

२६१ समत १९२५ मिती श्रवण सुदी ५ प्रतिष्ठा नागपूरमध्ये आदिनाथजी । (विवरण क्र० ३३६)

२६२ समत १९२५ शक १७९० आदिनाथस्वामी ।

(विवरण क्र० ३४४)

२६३ समत १६२५ का मिती माघ सुदी ५ सोमवासरे श्री मूलसंघ ब० स० कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भ० हेमकीर्तिना तदाम्नायवर्ती पंडित सवाईरामोपदेशात् परवारान्वये कोछलगोत्रे सघई तुलसीदास तत्पुत्र स० लाल कुंजलाल बिहारीलालेन प्रतिष्ठा की । (विवरण क्र० ३५५)

२६४ समत १६२५ वैसाख सुदी ७ बुधवारे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये भट्टारकश्रीमद्देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३७१)

२६५ समत १९२५ माघ सुदी ५ सोमे प्रतिष्ठितं ।
(विवरण क्र० ३७३-४)

२६६ श्रीमूलसंघचे " समत १९२६ प्रभवनाम संवत्सरे श्रावण व ॥५॥
(विवरण क्र० ४५१)

२६७ समत १९२८ प्रभवनामसंवत्सरे* माघ शुक्ल द्वादशीतिथौ बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्य श्रीमत देवेंद्रकीर्तिभट्टारक प्रतिष्ठा करणार प्यारंसात्र मनाम्माय । (विवरण क्र० ३१३)

२६८ श्रीपारसनाथजी संमत १९२८ । (विवरण क्र० २१२)

२६९ सवत १९२८ प्रजापतिनामसंवत्सरे माघशुक्ले द्वादशीतिथौ बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत् देवेंद्रकीर्ति भट्टारक प्रतिष्ठा करविणार मनालाल सवाईंसघवी । (विवरण क्र० ४२)

२७० सवत १९२८ (विवरण क्र० ३८)

२७१ ॐ चंद्रनाथ येन समत १९३३ । (विवरण क्र० ७०)

२७२ समत १९३९ शके १८०४ " प्रतिष्ठाचार्य विशालकिर्ती भट्टारक प्रतिष्ठा करविणार सुनीथाबाई परवागीन । (विवरण क्र० २७९)

२७३ श्रीपारसनाथजी सं० १९४८ (विवरण क्र० २०४)

२७४ समत १९५२ वैसाख सुदि १३ सोमवासर प्रतिष्ठितं ।
(विवरण क्र० ८४)

२७५ सं० १९५८ व० सु० १२ पन्नालाल सोनासाव ।
(विवरण क्र० ४०२)

२७६ संवत १९५८ वैसाख शुद्ध १५ मूलसंघे कुंदकुंदाम्नाये भट्टारक देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २७६)

२७७ सा० शी० ७ श्री० रा० व० स्व० बा० श्री० अ० प्र० ना० सं० १९६१ । (विवरण क्र० ४१८)

---

* यह संवत्सर नाम गलत प्रतीत होता है।

२७८ संमत १९६१ मिती ज्येष्ठ शु ॥ १० श्रीवीरसेन स्वामी उपदेशात् चांगामाव गंगाबावजी चवरे याहानी प्रतिष्ठा करविली ।

(विवरण क्र० १९५)

२७९ नागपूर शेतवाल मन्दिर प० रवि० संमत १९६१ मार्गशिर्ष व ॥ सप्तम्यां पण्डितवर्य रामचन्द्र ब्रह्मचारिणां पञ्च शेतवाल अनुमत्या प्रतिष्ठित इद प्रतिमा । (विवरण क्र० १०७)

२८० संमत १९६६ कुं०म्नाय सिद्धसेनस्य प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ३२५)

२८१ वीरसंमत २४३६ सि० मा० शु ॥ ५ बु० वा० ग० प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ४३७)

२८२ संमत १९६८ ज्येष्ठ सुद ८ शुक्रवासरे मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कारंजापुरे पट्टाधिकारी भ० देवेन्द्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् शिखरजीकी पादुका खंडेलवालज्ञातिय पाटणीगोत्र हजारीलाल नंदलाल येन प्रतिष्ठा करापितं नागपूरनगरे ।

(विवरण क्र० १९७, २३३)

२८३ संमत १९७६ पण्डित रामभाऊना प्रतिष्ठित कन्हैयालालजी गरीबे यांचे आईचे नन्दिश्वर व्रतोद्यापनार्थ ।

(विवरण क्र० २२२)

२८४ स्वस्ति श्री २४५८ श्रीवीरसंवत्सरे १९८८ विक्रम माघमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये फणीन्द्रपुरनिवासी परवारज्ञातिय खेलासूर गोइल्लगोत्रोत्पन्न परमानंदात्मजात्मज परवारभूषण फत्तेचंद्रदिपचन्द्राभ्यां छपारानगरे प्रतिष्ठित ।

(विवरण क्र० ३२०-२२)

२८५ श्रीमहावीरनिर्वाणसंमत २४६० विक्रम संमत १९९० शाके १८५५ फालगुण शुद्ध १२ सोमवार श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छ

बलात्कारगण श्रीकुंदकुंदाचार्याम्नायांतील चालक गोत्रांतील परवारज्ञाति नागपूरनिवासी शेठ कनईलाल नेमिचंदजी यांनी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथ येथील श्री ब्र० जीवराज गौतमचद सोलापूर याचे प्रतिष्ठामध्ये श्रीमहावीर तीर्थंकराचे बिंब प्रतिष्ठित केले असे ॥ (विवरण क्र० ६२)

२८६ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान शांतिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज संस्थान तख्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नागपूरस्थ दि० जैन सैतवाल समाज वारसंवत २४६१ मिती मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कृतति शम् । (विवरण क्र० १०४-५)

२८७ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान आदिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज संस्थान तख्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात नागपूरस्थ दिगम्बर जैन सैतवाल समाज व श्री० राजाराम दुर्वासाव काटोलकरणप्रतिमा आणिता प्रतिष्ठाचार्य श्री० पंडितवर्य रामभाऊ महामहोपाध्याय पंडित श्री० अखिल सैतवाल जैन राजगुरुपीठ संस्थान तख्त लातूर गादी नागपूर वीरसंवत् २४६१ मिती मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कुर्वति शम् ।

(विवरण क्र० १०६)

२८८ स्वस्ति श्री १०८ श्रीभट्टारकविशालकीर्ति उपदेशात् सं० २४६१ मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कुर्वा प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ३८६-७, ३६६-४, ४१५ ७)

[अनिश्चित समयके लेख]

२८९ संवत १५४ – संघ र नी गा पुत्रा न र नी (?)

(विवरण क्र० ४१०)

२९० सं० १५ सुद १२ सकला पुत्र मनसुख भार्या महना ।
(विवरण क्र० ४२२)

२९१ सवत १५ – ६ वर्षे वैसाख सुदि ३ मगलदिने भट्टारकजिन-
चद्राम्नाये गोलापूर्व संघे इलाम । (विवरण क्र० १९३)

२९२ समत १–६१ वर्षे वैसाख सुदी को जीवराज ।
(विवरण क्र० ७४)

२९३ सके १–७९ शुभकृत नाम सवत्सरे कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा १
बुधवार सावरगावग्राम श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमहिचद्र
भट्टारकउपदेशात् तस्य श्रावक तिमाजी पलसापुरे तस्य भार्या
बचाई व गगाई तस्य पुत्र येकुजि कोनेरवा तस्य यत्र ।
(विवरणक्र० २७६-२७७)

२९४ ७८ वैसाख सुदी ३ पुत्र मोती भार्या म ।
(विवरण क्र० ३९७)

[अज्ञात समयके लेख]

२९५ सवत वैसाख मासे शुद्ध ३ भौमवासरे श्रीमूलसघे बलात्कारगणे
सरस्वतीगच्छे कुंदकुदाचार्याम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिष्ठितं
नागपूरमध्ये । (विवरण क्र० ५४)

२९६ भीकाजी । (विवरण क्र० ११६)

२९७ मूलसघ बलात्कारगण पितल्यागोत्रे रामासा भार्या नेमाई पुत्र
रतनसा भार्या पदमाई द्वितीय पुत्र हिरासा भार्या पुजाई तृतीय
पुत्र तवनासा चतुर्थ पुत्र पदाजी श्रीचद्रप्रभ प्रतिष्ठा
संवत । (विवरण क्र० १३१)

२९८ श्रीकाष्टासघ नदितटगच्छ भ० श्रीरामसेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मी-
सेनजी प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० १३६)

२९९ श्रीवासुपूज्य जिनवर । (विवरण क्र० १८२)

३०० ''' महाराजाधिराज'''' देवेंद्रकीर्ति बलात्कारगण सरस्वती [गच्छ]' '। (विवरण क्र० १९३)

३०१ भ० हेमकीर्ति उपदेशात् स० प्रतिष्ठितं। (विवरण क्र० २०७)

३०२ हेमराज तस्य पुत्र हसराज भार्या रमाबाई प्रतिष्ठा माघ सुदी '''। (विवरण क्र० २८१)

३०३ सातनाथ । (विवरण क्र० ३५३)

३०४ श्री आदिसर। (विवरण क्र० ३५८)

३०५ श्रीमू० स० भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् रामसेन। (विवरण क्र० ३७९)

३०६ श्रीमू० भ० जि० का प सेठ प्र (?) (विवरण क्र० ३८१)

३०७ श्रीमूलसंघे भ० श्रीभुवनकीर्ति । (विवरण क्र० ३९०-४१२)

३०८ श्रीमूलसग। (विवरण क्र० ३९८, ४०३, ४५६, ४८६)

३०९ श्रीमू० स० ब०। (विवरण क्र० ४००)

३१० श्रीधर्मचंद्रउपदेशात् कपरसेट। (विवरण क्र० ४०४)

३११ लखमनसा रूपा। (विवरण क्र० ४०७)

३१२ ब्र० प० नेमीचद्रजी। (विवरण क्र० ४२०)

३१३ सेनगण भ० श्रीलक्ष्मीसेन ब्रह्मचारिब्रमति सेवक देवांचे चंद्राइत्ये । (विवरण क्र० १६४)

३१४ मू० ब० भ० धर्मचंद्र हेमसेठ नित्यं ता।(विवरण क्र० ४४२)

३१५ मूलसघे भ० सुरेन्द्रकीर्ति प्र[ति]ष्ठितं। (विवरण क्र० ४५५)

३१६ मू० भ० जि० पार वा ग३ (?) (विवरण क्र० ४६४)

३१७ श्रीआदिनाथ सा० श्रीवंत। (विवरण क्र० ४६६)

३१८ मू० संघ तानसेट वमनोसा। (विवरण क्र० ४७२)

३१९ श्रीमूलसंघ ब्रह्म. मल्लिदास सा भार्या ससाई। (विवरण क्र० ४८८)

३२० श्रीमूलसंघ सक्राजी पुजारी ना। (विवरण क्र० १२५-६)

३२१ रखबम्मा ठवली। (विवरण क्र० १२७)

३२२ बाबाजी वडलकार। (विवरण क्र० ४६४)

३२३ मू० भ० जि० गडमेठ स्वहित। (विवरण क्र० ४६५)

३२४ श्रीमूलसंघे भ० श्रीमल्लिभूषण सा० लखा भार्या अजी सुता सोनाई। (विवरण क्र० १६१)

मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण

[१] अजितनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, केलीबाग, नागपुर।

१ अजितनाथ (सफेद पाषाण १½ फुट) लेख क्र० १८
२ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८
३ „ „ „ लेख क्र० १८
४ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २५४
५ चौवीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० ९२
६ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इ०) लेख क्र० १६६
७ धर्मनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० १०१
८ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० १३८

लेखरहित प्रतिमाएँ – शान्तिनाथ (धातु ७ इ०), चौवीसी (काला पाषाण १½ फुट), पार्श्वनाथ (धातु ३½ इ०), चन्द्रप्रभ (काला पाषाण ९ इ०) पार्श्वनाथ (काला-पाषाण ३ इं०)
पार्श्वनाथ (काला पाषाण ८ इ०) यक्षिणी (कृष्ण पाषाण १० इ०)।

[२] दिगम्बर जैन मन्दिर, मस्कासाथ, नागपुर

९ आदिनाथ (सफेद पाषाण २½ फु०) लेख क्र० १८
१० पद्मप्रभ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
११ आदिनाथ (सफेद पाषाण १० इ०) लेख क्र० १८
१२ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
१३ अजितनाथ (सफेद पाषाण १० इ०) लेख क्र० १८

१४ चन्द्रप्रभ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १९
१५ आदिनाथ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १९
१६ सुपार्श्वनाथ (,,) लेख क्र० १९
१७ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
१८ वासुपूज्य (सफेद पाषाण ११ इं०) लेख क्र० १८
१९ पार्श्वनाथ (काला पाषाण १ फु० २ इं०) लेख क्र० १९
२० पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १९
२१ चन्द्रप्रभ (सफेद पाषाण १० इं०) लेख क्र० १८
२२ अजितनाथ (,,) लेख क्र० १९
२३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १९
२४ आदिनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १९
२५ नेमिनाथ (सफेद पा० ८ इं०) लेख क्र० १९
२६ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १९
२७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० ६०
२८ पार्श्वनाथ (काला पा० ११ इं०) लेख क्र० २०५
२९ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० १४८
३० पार्श्वनाथ (धातु १ फु०) लेख क्र० १६०
३१ पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० १८८
३२ पार्श्वनाथ (धातु ९ इं०) लेख क्र० १९१
३३ पद्मप्रभ (धातु ११ इं०) लेख क्र० १०२
३४ चौबीसी (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३८
३५ चौबीसी (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३६
३६ चौबीसी (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३९
३७ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४०
३८ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २७०
३९ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २२५

४० मुनिसुव्रत (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० ७
४१ अजितनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
४२ धर्मनाथ (धातु ७ इ०) लेख क्र० २६६
४३ चौबीसी (धातु १० इ०) लेख क्र० १६२
४४ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० १९०
४५ यक्षिणी (धातु ७ इ०) लेख क्र० १९०। लेखरहित प्रतिमाएँ—
पार्श्वनाथ (धातु १ से ४ इ० की दस प्रतिमाएँ)

[३] दिगम्बर जैन मन्दिर, किराणा बाजार, नागपुर

४६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
४७ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १८
४८ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८
४९ महावीर (काला पा० ४½ फु०) लेख क्र० २१४
५० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु० ३ इ०) लेख क्र० २१४
५१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० १५२
५२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० २००
५३ चौबीसी (धातु ६ इ०) लेख क्र० २२८
५४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १½ फुट) लेख क्र० २९५
५५ पार्श्वनाथ (धातु १० इ०) लेख क्र० २०६
५६ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ? फु० २ प्रतिमाएँ) लेख १५२
५७ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १४७
५८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
५९ सुपार्श्व (पीला पा० ७ इ०) लेख क्र० १५३
६० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
६१ पार्श्वनाथ (पीला पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
६२ महावीर (धातु १ फु० ३ इ०) लेख क्र० २८५

६३ चन्द्रप्रभ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
६४ नेमिनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १३६

लेखरहित प्रतिमाएँ – पार्श्वनाथ (सफेद पा० १½ फु०), पार्श्वनाथ (धातु २ से ३ इ० ४ प्रतिमाएँ), चन्द्रप्रभ (काला पा० ११ इ० २ प्रतिमाएँ), अज्ञातचिह्न मूर्ति (स्फटिक, १½ इ०), यक्षिणी (धातु ४ इ०)

[४] दिगम्बर जैन मन्दिर, जुनी शुक्रवारी पेठ, नागपुर

६५ महावीर (धातु ८ इं०) लेख क्र० २४२
६६ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १२६
६७ सिद्ध (धातु ५½ इ०) लेख क्र० २४३
६८ नन्दीश्वर (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४३
६९ पंचमेरु (धातु १½ फु०) लेख क्र० २४२ (दो प्रतिमाएँ)
७० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० २७१
७१ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० २४४
७२ चौबीसी (धातु १ फु०) लेख क्र० २४२
७३ महावीर (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १३२
७४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० २६२
७५ शांतिनाथ (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४२
७६ आदिनाथ (धातु १ फुट २ इ०) लेख क्र० २४२
७७ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० २१६
७८ चन्द्रप्रभ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४५
७९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० १८१
८० पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० १०
८१ नेमिनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २४६
८२ आदिनाथ (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० २४३

१२९ सम्यग्दर्शन यंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ११६
लेखरहित प्रतिमाएँ – चन्द्रप्रभ (काला पा० ६ इं० दो मूर्तियाँ), चरणपादुका (धातु ३ इं०. दो पादुका) अजितनाथ (काला पा० ४ इं०), चौबीसी (धातु ५ इं० दो मूर्तियाँ) पार्श्वनाथ (धातु-छोटी छोटी ८ मूर्तियाँ) चरणपादुका (धातु ३ इं०. दो पादुका).

[६] दिगम्बर जैन सेनगण मन्दिर, लाडपुरा इतवारी, नागपुर

१३० पार्श्वनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० ५२
१३१ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० २६३
१३२ शान्तिनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८५
१३३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८२
१३४ शान्तिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० ७७
१३५ बाहुबली (धातु ११ इं०) लेख क्र० ८१ (दो मूर्तियाँ)
१३६ बाहुबली (धातु १० इं०) लेख क्र० २२८
१३७ अष्ट सिद्ध मूर्ति (धातु ९ इं०) लेख क्र० २१
१३८ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १६०
१३९ चौबीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३२
१४० पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १
१४१ पार्श्वनाथ (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० ८८
१४२ सुपार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०) लेख क्र० ८९
१४३ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० ६६
१४४ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ७२
१४५ आदिनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २३८
१४६ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८
१४७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १८

१४८ अरनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८
१४९ पद्मप्रभ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
१५० मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
१५१ अजितनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
१५२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
१५३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८
(दो मूर्तियाँ)
१५४ अरनाथ (सफेद पा० ८ इ०) लेख क्र० १८
१५५ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १८
१५६ आदिनाथ (४ इं० धातु) लेख क्र० १८
१५७ चौबीसी (धातु ६ इ०) लेख क्र० ९
१५८ धर्मनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० ६२
१५९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख १०८
१६० वासुपूज्य (धातु ५ इ०) लेख क्र० १२
१६१ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २२४
१६२ चिह्नरहित मूर्ति (धातु २ इ०) लेख क्र० १०६
१६३ पार्श्वनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २६१
१६४ श्रेयान्सनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २१२
१६५ सुमतिनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २०
१६६ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २
१६७ पंचपरमेष्ठी (धातु ५ इ०) लेख क्र० ८
१६८ रत्नत्रय मूर्ति (धातु ६ इ०) लेख क्र० २२
१६९ चौबीसी (धातु ११ इं०) लेख क्र० १३५
१७० सरस्वती (धातु ५ इं०) लेख क्र० १९८
१७१ यक्षिणी (धातु २ इं०) लेख क्र० १६७
१७२ रत्नत्रय यंत्र (धातु २ इं०) लेख क्र० १२२

१७३ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १८४
१७४ दशलक्षण यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२२
१७५ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १२३
१७६ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इं०) लेख क्र० १३०

लेखरहित प्रतिमाएँ – चौबीसी (काला पा० १ फुट), सिद्ध (धातु ६ इं०, दो मूर्तियाँ), नन्दीश्वर (धातु ५ इं०), पार्श्वनाथ (काला पा० ३½ फु० चौबीसी के मध्यस्थित), पद्मावती (सफेद पा० २ फु०), पद्मावती (धातु ७ इं०), पद्मावती (धातु ६ इं०), पद्मावती (धातु १० इं०),

[७] पार्श्वप्रभु दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, इतवारी, नागपुर

१७७ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० १५७
१७८ शांतिनाथ (धातु १ फु० २ इं०) लेख क्र० २२१
१७९ आदिनाथ (धातु १ फु० २ इं०) लेख क्र० २२१
१८० नन्दीश्वर (धातु ५ इं०) लेख क्र० १०२
१८१ पंचमेरु (धातु ११ इं०) लेख क्र० २२० (चार मूर्तियाँ)
१८२ वासुपूज्य (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६६
१८३ अनन्तनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३५
१८४ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ८७
१८५ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २३१
१८६ चौबीसी (धातु ८ इं०) लेख क्र० १४४
१८७ चौबीसी (धातु ९ इं०) लेख क्र० १२०
१८८ रत्नत्रय मूर्ति (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११
१८९ महावीर (धातु १० इं०) लेख क्र० २११
१९० चौबीसी (धातु ६ इं०) लेख क्र० ५६
१९१ क्षेत्रपाल (धातु ६ इं०) लेख क्र० २०४

१९२ सरस्वती (धातु ५ इं०) लेख क्र० १९९ (दो मूर्तियाँ)
१९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० ३००
१९४ यक्षिणी (धातु ४½ इं०) लेख क्र० १३७
१९५ पचमेरु (धातु २ फुट ९ इं०) लेख क्र० २३२
१९६ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० २३० (दो मूर्तियाँ)
१९७ आदिनाथ (धातु १० इं०) लेख क्र० २८२
१९८ बाहुबली (धातु ७ इं०) लेख क्र० २३६ (दो मूर्तियाँ)
१९९ आदिनाथ (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४६
२०० पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३४
२०१ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० ७०
२०२ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० ९३
२०३ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १६१
२०४ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० १३१
२०५ चन्द्रप्रभ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २८
२०६ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० १७८
२०७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०१
२०८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ९९
२०९ पचमेरु (धातु २ फु० ३ इं०) लेख क्र० १५४ (दो मूर्तियाँ)
२१० चौबीसी (धातु १० इं०) लेख क्र० १४३
२११ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० ७८
२१२ पार्श्वनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० १५८
२१३ चन्द्रप्रभ (धातु ४इं०) लेख क्र० ६१
२१४ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २१५
२१५ नन्दीश्वर (धातु १ फु०) लेख क्र० ६२
२१६ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १३७
२१७ नेमिनाथ (काला पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २२२

२१८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १६

२१९ पद्मप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ९६

२२० चौंसठ ऋद्धि (धातु ५ इं०) लेख क्र० ११२

२२१ पार्श्वनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १०४

२२२ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २८२

२२३ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० ६६

२२४ मुनिसुव्रत (काला पा० १ फु० ३ इं०) लेख क्र० २२७

२२५ पार्श्वनाथ (धातु ५½ इं०) लेख क्र० ३७

२२६ चौबीसी (धातु १० इं०) लेख क्र० २२४

२२७ शांतिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० १७७

२२८ श्रेयांस (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० १०५

२२९ चिन्ह रहित मूर्ति (काला पा० १० इं०) लेख क्र० ६८

२३० आदिनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० २२२

२३१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० २ फु० २ इं०) लेख क्र० ५

२३२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० २ इं०) लेख क्र० ५

२३३ गिरनारजी पादुका (सफेद पा० १½ फु०) लेख क्र० २८२

२३४ पद्मावती (धातु ११ इं०) लेख क्र० २२९

२३५ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० ७०

२३६ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १६८

२३७ पद्मावती (धातु ११ इं०) लेख क्र० २१०

२३८ आदिनाथ (सफेद पा० १फु० २इं०) लेख क्र० १८ (दोमूर्तियाँ)

२३९ आदिनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)

२४० शीतलनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८

२४१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)

२४२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)

२४३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४५ पद्मप्रभ (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १८
२४६ मुनिसुव्रत (साँवला पा० ८ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४७ चन्द्रप्रभ (साँवला पा० ६ इं०) लेख क्र० १८
२४८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२४९ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५० सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ६ इं०) लेख क्र० १८
२५१ सुमतिनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
२५२ अरनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५३ नेमिनाथ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५४ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० १८
२५५ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५६ श्रेयांसनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
२५७ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२५८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० ४ इं०) लेख क्र० १८
२५९ अजितनाथ (लाल पा० १० इं) लेख क्र० १८
२६० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२६१ नेमिनाथ (लाल पा० ११ इं०) लेख क्र० १८
२६२ पार्श्वनाथ (लाल पा० १० इं०) लेख क्र० १८
२६३ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
२६४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ इं०) लेख क्र० १८
२६५ सम्यक्चारित्रयंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० ६८
२६६ दशलक्षण यन्त्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ४६
२६७ सम्यक्चारित्र यंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० १२१
२६८ सम्यग्दर्शन यंत्र (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६

२६९ सम्यक्चारित्रयंत्र (धातु ५ इं०) लेख क्र० ४०
२७० ऋषियंत्र (धातु ८ इं०) लेख क्र० २१६
२७१ सम्यग्दर्शनयंत्र (धातु ५ इं०) लेख क्र० ४२
२७२ सम्यग्दर्शनयंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ११४
२७३ दशलक्षणयंत्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० ६५
२७४ कलिकुंडयंत्र (धातु ७ इं०) लेख क्र० ७३
२७५ सिद्धयंत्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० ८६
२७६ षोडशकारणयंत्र (धातु १२ इं०) लेख क्र० २६३
२७७ दशलक्षणयंत्र (धातु ११ इं०) लेख क्र० २०३
लेखरहित मूर्तियाँ – सप्तर्षि (धातु ५ से ८ इं०). पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु० २ इं०), आदिनाथ (पीला बालुकापाषाण २ फु० २ इं०)

[८] दिगम्बर जैन परवार मन्दिर, इतवारी, नागपुर

२७८ शीतलनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ५७
२७९ नेमिनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २७२
२८० पुष्पदन्त (धातु ५ इं०) लेख क्र० २७२
२८१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० ३०२
२८२ चन्द्रप्रभ (पीला पा० ६ इं०) लेख क्र० २२८
२८३ पार्श्वनाथ (काला पा० ६ इं०) लेख क्र० २२२
२८४ चौबीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २५३
२८५ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ५½ फु०) लेख क्र० २५६
२८६ पार्श्वनाथ (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २८१ (दो मूर्तियाँ)
२८७ आदिनाथ (धातु ६ इं) लेख क्र० २८८
२८८ वासुपूज्य (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २९१
२८९ महावीर (धातु ७ इं०) लेख क्र० २८१

२९० अजितनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
२९१ पार्श्वनाथ (धातु १½ फु०) लेख क्र० २४९
२९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २६८
२९३ चौबीसी (धातु ६½ इं०) लेख क्र० २४१
२९४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ फु०) लेख क्र० २५७
२९५ नेमिनाथ (सफेद पा० २ फु० २ इं०) लेख० क्र० २५७
२९६ नेमिनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २५८
२९७ पार्श्वनाथ (धातु ८½ इं०) लेख क्र० २५७
२९८ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ६५
२९९ अजितनाथ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० १६५
३०० चिह्नरहितमूर्ति (काला पा० ५ इं०) लेख क्र० २२२
३०१ आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २५७
३०२ चिह्नरहित मूर्ति (सफेद पा० १० इं०) लेख क्र० ६
३०३ चौबीसी (धातु ४½ इं०) लेख क्र० २४१
३०४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २७३
३०५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १४५
३०६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ४१
३०७ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ४०
३०८ अनन्तनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २४१
३०९ सुपार्श्वनाथ (काला पा० ११ इं०) लेख क्र० २९
३१० चिह्नरहितमूर्ति (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ८२
३११ मुनिसुव्रत (काला पा० ११ इं०) लेख क्र० ४७
३१२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इं०) लेख क्र० २५९
३१३ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० २५९
३१४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २०९
३१५ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० १७६

३१६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १६४
३१७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० ३ इ०) लेख क्र० २५७
३१८ पार्श्वनाथ (काला पा० २ फु० ४ इ०) लेख क्र० २५७
३१९ नन्दीश्वर (धातु ५ इ०) उर्दू लिपिमें लेख०
३२० आदिनाथ (धातु ६३ इ) लेख क्र० २८४
३२१ शीतलनाथ (लाल पा० १ फु० ४ इ०) लेख क्र० २८४
३२२ महावीर (धातु १ फु० ६ इं०) लेख क्र० २८४
३२३ पुष्पदन्त (धातु १ फु० ९ इं०) लेख क्र० २८४
३२४ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १७६
३२५ महावीर (धातु ४ इ०) लेख क्र० २८०
३२६ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० १२७
३२७ चौबीसी (धातु ५ इ०) लेख क्र० २६०
३२८ यक्षिणी (धातु ४ इ०) लेख क्र० २३९
३२९ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० २३९
३३० यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० १४०
३३१ यक्षिणी (धातु ८ इं) लेख क्र० २४१ (दो मूर्तियाँ)
३३२ चन्द्रप्रभ (धातु १ फु० २ इं) लेख क्र० २१७
३३३ चौबीसी (धातु ५ इं) लेख क्र० २४१
३३४ रत्नत्रयमूर्ति (धातु ५ इं) लेख क्र० २४१
३३५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १५५
३३६ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं) लेख क्र० ८४
३३७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं) लेख क्र० २४१
३३८ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १४५
३३९ आदिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २६१
३४० पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० २५७
३४१ चन्द्रप्रभ (काला पा० ८ इ०) लेख क्र० २५७

३४२ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० २२३ (तीन मूर्तियाँ)
३४३ नेमिनाथ (सफेद पा० ११ इं०) लेख क्र० १७
३४४ आदिनाथ (काला पा० ७ इं०) लेख क्र० २६२
३४५ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १½ फु०) लेख क्र० २५१
३४६ अरनाथ (काला पा० ३ इं०) लेख क्र० १६३
३४७ चन्द्रप्रभ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३४८ आदिनाथ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० २३०
३४९ शीतलनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
३५० आदिनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २४१
३५१ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
३५२ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३५३ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३०३
३५४ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३५५ चन्द्रप्रभ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६३
३५६ अजितनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० २६३
३५७ आदिनाथ (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४१
३५८ आदिनाथ (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ३०४
३५९ नन्दीश्वर (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १११
३६० सुपार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २४१
३६१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० १२८
३६२ महावीर (धातु ४ इं०) लेख क्र० २४१
३६३ आदिनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २६७
३६४ आदिनाथ (धातु ८ इं०) लेख क्र० २४१
३६५ महावीर (धातु ७½ इं०) लेख क्र० २४१
३६६ आदिनाथ (धातु १ फु०) लेख क्र० २५०
३६७ पुष्पदन्त (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८

३६८ अरनाथ (सफेद पा० ७ इं०) लेख क्र० १८
३६९ चन्द्रनाथ (सफेद पा० ८ इं०) लेख क्र० १८
लेखरहित मूर्तियाँ – वासुपूज्य (काला पा० ५ इं०), पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इं०), पार्श्वनाथ (काला पा० १० इं०), शान्तिनाथ (धातु ४ इं०), १५ मूर्तियाँ लेख तथा चिह्नके बिना छोटी-छोटी हैं।

[९] दिगम्बर जैन मन्दिर, सदर बाजार, नागपुर

३७० पार्श्वनाथ (काला पा० १½ फु०) लेख क्र० १६४
३७१ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २६४
३७२ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १०४
३७३ शान्तिनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० २६५
३७४ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २६५
३७५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ११५
३७६ चौबीसी (धातु ११ इं०) लेख क्र० २७८
३७७ दशलक्षण यन्त्र (धातु ६ इं०) लेख क्र० १०७
लेखरहित – पद्मप्रभ (सफेद पा० १ फु०)

[१०] गृहचैत्यालय–श्री० सुन्दरसा हिरासा जोहरापुरकर, इतवारी, नागपुर

३७८ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १२३
३७९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०५
३८० रत्नत्रय (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १५
३८१ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०६
३८२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ७४
३८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८

३८४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२९
लेखरहित – छोटी-छोटी धातुकी १० प्रतिमाएँ

[११] गृहचैत्यालय–श्री०अबादास गुलाबसा गहाणकरी, इतवारी

३८५ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २३१

३८६ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८

३८७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८

३८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १००

[१२] गृहचैत्यालय–श्री० माणिकसा चिन्तामणसा दर्यापुरकर, इतवारी

३८९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ८०

३९० पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०७

३९१ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ४५

३९२ नवग्रह यंत्र (धातु ४ इं०) लेख क्र० २०१

[१३] गृहचैत्यालय–श्री०रतनसा गणपतसा देवलसी, इतवारी

३९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ४ इं०) लेख क्र० २८८

३९४ आदिनाथ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० २८८

३९५ चन्द्रप्रभ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० २२४

३९६ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २१२

३९७ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २६४

३९८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०८
लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०), आदिनाथ (धातु २½ इं०)

[१४] गृहचैत्यालय–श्री० कन्हयालाल सुन्दरसा गरिबे, इतवारी

३९९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ३४
यक्षिणी (धातु ६ इ०)-लेखरहित

[१५] गृहचैत्यालय–श्री०मवाईसगई मोतीलाल गुलाबसा, इतवारी

४०० पार्श्वनाथ (धातु ७ इ०) लेख क्र० ३०९
४०१ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० १४५
लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०), चन्द्रप्रभ (स्फटिक, ३ इं०)

[१६] गृहचैत्यालय-श्री०हिरामा पदासा खोरणे, इतवारी

४०२ आदिनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० २७५
४०३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ३०८
४०४ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३१०
४०५ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० १५१

[१७] गृहचैत्यालय-श्री० दादा गुलाबसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४०६ चौबीसी (धातु २ इ०) लेख क्र० ९४

[१८] गृहचैत्यालय-श्री० रिगासा खेमासा जोहरापुरकर, इतवारी

४०७ पार्श्वनाथ (धातु ७ इ०) लेख क्र० ३११

[१९] गृहचैत्यालय-श्री जयकुमार प्रभुसा किल्लेदार, इतवारी

४०८ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ४७

[२०] गृहचैत्यालय-श्री तिलोकचद येमूसा खेडकर, इतवारी

४०९ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० ९४
४१० पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २८६
४११ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२४

४१२ चरणपादुका (धातु २ इं०) लेख क्र० १४२
लेखरहित – शान्तिनाथ (धातु २ इं०), पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

[२१] गृहचैत्यालय-श्री विष्णुकुमार हिरासा जोगी, इतवारी

४१३ यक्षिणी (धातु ६ इं०) लेख क्र० १४
४१४ यक्षिणी (धातु ५½ इं०) लेख क्र० ५५
लेखरहित – (चौवीसी धातु ३ इं०), महावीर (धातु २½ इं०)

[२२] गृहचैत्यालय-श्री नागोराव गुजावा श्रावणे, इतवारी

४१५ सिद्ध (धातु ४ इं०) लेख क्र० २८८
४१६ आदिनाथ (चाँदी ३ इं०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)
४१७ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)
४१८ पार्श्वनाथ (सोना २ इं०) लेख क्र० २७७
४१९ चौवीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० २३७
४२० चरणपादुका (चाँदी १ इं०) लेख क्र० ३१२
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) (दो मूर्तियाँ), बाहुबली (धातु ३ इं०), सरस्वती (धातु २ इं०)

[२३] गृहचैत्यालय-श्री गुलाबसा व्यकुसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४२१ चन्द्रप्रभ (धातु ३½ इं०) लेख क्र० ४४
४२२ पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०) लेख क्र० २९०
४२३ यक्षिणी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १७५
लेखरहित–पार्श्वनाथ (लाल पा० ३ इं०)

[२४] गृहचैत्यालय-श्री०हिरासा जिनदास चवड़े, इतवारी

४२४ सिद्ध (धातु ४ इं०) लेख क्र० २८८
४२५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १८६

४४१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ६४
४४२ पार्श्वनाथ (धातु २½ इ०) लेख क्र० ३१४
४४३ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० १५६

[३१] गृहचैत्यालय-श्री०वर्धासा सकुसा महाजन, इतवारी

४४४ चौबीसी (धातु ३½ इं०) लेख क्र० १५९
४४५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३६
४४६ षोडशकारण यंत्र (धातु ३ इ०) लेख क्र० १२२
४४७ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० ३०
४४८ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० ३१
४४९ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० १२५
४५० यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० ४६
लेखरहित–पार्श्वनाथ (धातु ५ इं०)

[३२] गृहचैत्यालय-श्री०नत्थुसा पैकाजी चवरे, इतवारी

४५१ सुपार्श्वनाथ (सफेद पा० ५ इं०) लेख क्र० २६६
४५२ चन्द्रप्रभ (धातु २ इं०) लेख क्र० ११९
४५३ पार्श्वनाथ (धातु २½ इ०) लेख क्र० २७
४५४ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २१३ (दो मूर्तियाँ)
४५५ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१५
४५६ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ३०८ (दो मूर्तियाँ)
४५७ यक्षिणी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १०६
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु २ इं०)

[३३] गृहचैत्यालय-श्री रुखबसा पिंजरकर, इतवारी

४५८ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० २१३

[३४] गृहचैत्यालय-श्री लक्ष्मणराव देवमनसा बोबडे, इतवारी

४५९ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १९९

४६० पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३५
४६१ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३६
४६२ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११७
४६३ चिह्नरहित मूर्ति (धातु २ इं०) लेख क्र० १४३
४६४ पार्श्वनाथ (काला पा० ३ इं०) लेख क्र० ३१६

[३५] गृहचैत्यालय-श्री बापुजी विश्रामजी गिल्लरकर, मस्कासाथ

४६५ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७०
४६६ आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१७
४६७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० १६७
४६८ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० १८६
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु १½ इं०)

[३६] गृहचैत्यालय-श्री गोविंदराव शिवराम नाकाडे, इतवारी

४६९ चौवीसी (धातु ५ इं०) लेख क्र० १३९
४७० चिह्नरहित मूर्ति (धातु ३ इं०) लेख क्र० १६३
४७१ पार्श्वनाथ (धातु ६ इं०) लेख क्र० २०३
४७२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१८
४७३ यक्षिणी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७१
४७४ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ११८
४७५ दशलक्षणयंत्र (धातु ४½ इं०) लेख क्र० ५०

[३७] गृहचैत्यालय-श्रीमती तानाबाई बापुजी गांधी, इतवारी

४७६ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ८५
४७७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७२
४७८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२४
४७९ चन्द्रप्रभ (धातु १½ इं०) लेख क्र० १७३
लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) यक्षिणी (धातु ६ इं०)

[३८] गृहचैत्यालय-श्री राजाबापू लच्छाबापू ठवली, इतवारी
४८० चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १७४
४८१ यक्षिणी (धातु ३ इं०) लेख क्र० १९६,
४८२ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २५

[३९] गृहचैत्यालय-श्री जयकृष्णपत सावलकर, इतवारी
४८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० ५३
४८४ यक्षिणी (धातु ७ इं०) लेख क्र० ३१

[४०] गृहचैत्यालय-श्री कृष्णाजी भागवतकर, इतवारी
४८५ सिद्ध (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८
४८६ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०८
लेखरहित – यक्षिणी (धातु ३ इं०)

[४१] गृहचैत्यालय-श्री राजाराम डुल्बीसाव काटोलकर, इतवारी
४८७ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० २४३
४८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३१९
लेखरहित – चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ४ इं०)

[४२] गृहचैत्यालय-श्री हिरासा नत्थुसा मुठमारे, इतवारी
४८९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ५६
४९० आदिनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३३
४९१ चौवीसी (धातु ३ इं०) लेख क्र० ११३
४९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १८७
४९३ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०७
लेखरहित – यक्षिणी (धातु ३ इं०)

[४३] गृहचैत्यालय-श्री रुखबसा विनायकसा, इतवारी
४९४ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २२२

[४४] गृहचैत्यालय-श्री पाण्डुरंग बापूजी उदापूरकर, इतवारी

४१५ पार्श्वनाथ (धातु २½ इं०) लेख क्र० ३२३

[४५] गृहचैत्यालय-श्री गणपतराव पल्नापुरे, इतवारी

४१६ पार्श्वनाथ (धातु ७ इं०) लेख क्र० १८७

[४६] गृहचैत्यालय-श्री सुरेन्द्र गंगासा जोहरापुरकर, इतवारी

४१७ चन्द्रप्रभ (धातु ७ इं०) लेख क्र० १९०

लेखरहित – पार्श्वनाथ (धातु ७ इं०)

नामसूची

उल्लिखित अंक पृष्ठों के हैं।

अकबर ३२८
अकलंक ५८, ६०, १७५, २००, २१४, २१६, ३३५, ३३८, ३३९, ३७७, ३७९
अकालवर्ष ३१, ४४, ५३
अकोटा ३८५
अक्कम्म ३१४
अक्कलकोट ११३
अक्कमालकामोज १६६
अक्कादेवी ८४,८५
अक्रूर ३७४
अगरवाल ३९५, ४०२
अगस्तियप्प ३४७
अगिल ४
अगोकेमोगे ४०
अगलदेव ९१, ९३, १०२
अगलमेट्टि ३७४
अगोति २७
अच्युतदेव ३१७
अजण ३५५
अजयमेरु १९१
अजितकीर्ति ३६०, ४०७, ४१३-४१५
अजितचंद्र २२१, २२३
अजितसेन ९२, ९३, १७५, २१४, २१६, २२७, ३६१
अज्न ३०४-५
अज्जणदि २१, २२, ४२
अज्जरय्य ५६
अणहिल्लपुर २२१-२
अण्णन् २५५
अण्णमय्य १६४
अण्णिगेरे २५ ८५, १०४, १०७, १०९, १११, २५९
अत्तिमब्बे १४९
अत्तियब्बे ७३
अथनी २३२
अदरगुंचि २६६
अनत्तवन् २२
अनमकोंड १४१, १४३, १४५
अनुपमकवि ६१-२
अनतकसेट्टिति २९७

अनंतकीर्ति २५०, २९६
अनंतवीर्य १७५, १७७, ३५५-६, ३६०, ३६५, ३७९
अपराजित ३५-६
अप्पण २३८-९, २४४
अप्पाण्डार २७९, ३५७, ३७६
अबडनगर ३९५, ४१०
अबेयमाचर २९२
अब्बक्कदेवी ३२७
अभयचन्द्र ९६, ३५९, ३६२
अभयनंदि १०५, ११०-१, २५८, २७१
अभिनदन २२
अमरकीर्ति २७८, २८८, ३११
अमरमुदलगुरु ४२
अमरसिंह ३४०
अमरापुरम् २६०, ३८०
अमिदसागर ३९१
अमृतपाल १६०
अमृतब्बे ५५-६
अमृतैव २६०
अमोघवर्ष ३३-४, ३६-७
अम्य ३०४-५
अम्बले ३६९
अम्बावती ३४३
अम्बाराय ३०३-५
अम्मरस ३८
अम्मराज ६४, ६५, ६८, ६९
अम्मिनभावि २२९
अय्यवल्लि १३४
अय्यप्प २६
अय्यवोले १६४
अय्वतोक्कलु २६३
अय्यसामि ७१
अरताल १४८
अरत्तुलान् देवन् ८३
अरमडमेगलु ४०
अरयन् उडैयान् ९९
अरसप्पोडेय ३४७, ३५६
अरसरवसदि ११२
अरसय्य १२०-१
अरसीबीडि ८३, १२१, १७३, १८३
अरिकुठार ३१४
अरिकेसरी १३९
अरिन्दमगलम् ५६
अरिमंडल २२
अरिवन् कोयिल् ३९
अरिविगोज ६२
अरिष्टनेमि १६, ५२
अरुगर् देवर् ९९
अरुमोलिदेव १६०

अरुमोलिदेवपुरम् १६७, १७६
अरुवन्दै आण्डाल् २८९
अरुवाहि १
अरुहणदि ११२, २५८
अरुगलान्वय १२८, २१४, २१६, २३३, २६७, २६९
अरेयब्बे ८८, ८९
अरैयगाविदि २२
अर्णोराज १८९
अर्हणंदि ७३, १३४, २५२-३, २७१
अलगरमले ४२
अलनावर ११४
अलवर ३८७-८
अलियमरभ ३८
अवनिपशेखर ३६
अवनिमहेन्द्र १८, २०
अविनीत १२, १७, २०
अष्टोपवासी २२, ७७, ९३, २५८, २७१
असवळवरसि १२२
असुण्डि ४४
अहिच्छत्र १८९
अक १५३
अकनाथपुर ७०-१, १३४
अकुलगे १३८, १४०
अकेगेड्ड ८९
आकलपे २५९
आकाशिका ९६
आकियमगिसेट्टि ३०८
आगुप्तायिक १५-१६
आचगौड १८६
आचण १८६
आचन चामुण्डर ६९
आचलदेवी १७१
आच्चन् २२
आद्कोण्डान् १६७
आणदेव २२८
आण्डारमडम् ५६
आदगे १३८
आदवनी ३१२, ३२६
आदित्यवर्मा ३७५
आदिनाथ १२०-१
आद्रिराज ३०३
आदिसेट्टि २९७, ३१६
आदिसेन ३५२
आनदमंगलम् २५१
आनेसेज्जवसदि ११३
आपिनहल्लि ३४५
आबू ३८५
आमरण ३८६
आम्वट १९१, १९६
आयतवर्मा ५६, ७७

आयृचगावुण्ड ७६
आयृचप्पय्य ११२
आयृचिमय्य ९८
आश्वोज-८८-९
आरम्बनदि १५८
आरान्दमगलम् ७५
आरियदेव २२७
आरुलगपेरुमान् ४१
आर्यणदि १५, १६, ४३
आर्यपंडित ११२
आर्यसघ ५७
आलपदेवी ३८०
आलप्पिरन्दान् मोगन् १६६, २७४
आलाक १३२
आलुप १५४
आगिका १९०
आशिरियन् ३९
आहड १९६
आहवमल्ल ७३, ७८, ८१, ८२
आतरी ३८७
इक्केरि ३३९
इट्टगे १०४, १०९
इडैयारन् १६७
इडैयालम् ३७६
इदम्पट्टव १२
इन्दप १२०-१
इन्दरपिट्टम्म ४०
इन्दौर १९७, २६१, २८४
इन्द्रकीर्ति ९४, १५८
इन्द्रणंद १५-१६
इन्द्रनदि ७३, १२६, २३४
इन्द्रराज ३१, ३४, ३६, ५५, ६१-६३
इन्द्रभूपाल ३३५
इन्द्रभूपण ४०६, ४०९-११
इम्मडि १७६
इम्मडि अरसप्पोदेय ३४७
इम्मडिदेवराय ३१५-६
इम्मडिबुक्क २८८
इम्मडिभैरवरस ३१५
इरुग २८८
इरुगोण २६०
इरुवुन्दूर ३०४-५
इरुगोल ३८०
इलपेरुमानडिगल् ७५
इलगोतमन् ३९
इंगणेश्वर-इगलेश्वर २१७, २२४, २३२, २६६-७, २७२, २७४, ३७४, ३७६, ३८०, ३८३-४
इंगरस ३०८
इगोली ३९५, ४१९
ईचवाडि ५८

ईश्वर १२०-१
उक्काल ७४
उक्किसेट्टि २७३
उगरगोल १४९
उगुरु २६३
उग्रवाहि १४४-५
उच्छंगि २०४, २६६
उज्जत ३२५
उज्जैनीपल्लीवाल ३९५, ४०८-९, ४११
उज्वल १९२, १९७
उडिपि ३०५
उडैयार १२७
उदय २३८, २४४
उदयगिरेन्द्र ४०३
उदयचन्द्र १०७, ११०, २५८, २७१
उदयपुर ७५, ३८६-८८
उदयादित्य १२७, १५४, २०२, २११, २१७, २२४
उद्दरि २९३
उद्योतकेसरी ५६-७
उमरावती ३९५, ४१६
उम्पटाव्वण वसदि ३७२
उम्बरवाणि २४६, २४९
उम्मत्तूर ७०, ३५८
उरिगपमिडि २०
ऊन १२७
ऊलक्काडु १७८
ऋषिदाम ६
ऋषिश्रृंगी १४९
एकव्वे २७३
एकसंधि १७५
एकमवि १८५
एक्कसम्बुगे १८६
एक्कोटिजिनालय २१९-२०
एचलदेवी २०२-३, २१२
एचिकव्वे १२०-१
एचिसेट्टि २०५
एटा २६१
एडेनाडु २८
एणक्कुनल्लनायकर् २५५
एरक ७६
एरणदि १६७
एरेकप ११७, १२०
एरेग ११६-७, १२०, १२४
एरेय ४३-४४
एरेयप ५८, ६०
एरेयमय्य ११६, १२०
एरेयग ५८, ६०, १२२-५, १५४, १७६, २०२, २११, २७०
एलवाचार्य २८, ३०

एलाचार्य ४४, ५४, २८८
ऐन्नुरुवपेरुम्पल्लि ३६६
ऐवर अंवण ३५३
ऐवरमलै ३७
ऐहोले १४५
ओखरिक ५, ६
ओजण ३५५
ओडेयमसेट्टि ३७९
ओड्डिपाणि ४०
ओवेयमसेट्टि ३६५
ओरकल्वायगर् १९, २०
ओगेरु २८१
कक्करगोंड १०५, ११०
कच्चिनायकर् २७४
कच्चिनायनार् १६६
कच्चियरायर् २७४
कच्छवेगंडे २३०-१
कछवाह ३४३
कडकोल २६१
कडलेहल्लि २१५-६
कडितले २६८
कणवियसेट्टि १०८
कणितमाणिकसेट्टि ८३
कण्डन् पोर्पट्टन् २२
कण्डन् माधवन् ३९१
कण्डूर, कण्डूर गण ११६, १२०, १५०, १५२, २७५, ३८४
कण्णम्मन् १८-२०
कण्णिमेट्टि २१४
कण्णूर १३४
कत्तम १८५
कदम्ब १३, १५, २६, ३८, ७१, ८२, ११४, १२३, १२४-५, १३६, १४८, १५७, १७१-२, २०८-९, २५०-१, ३१३, ३७८
कदलालयवसदि १४३, १४५
कनककीर्ति ३६३
कनकगिरि ३४६
कनकचन्द्र १४८, २५८, २७१
कनकचिन्नगिरि २७३
कनकनन्दि २२, ७७, ९५, १०२
कनकरायनगुड्ड ३६१
कनकवीर २२, ५६, १६७
कनकशक्ति ९५
कनकसेन ३९, ९२-३, १७५
कन्नडिगे १८२
कन्नडिवसदि ३०९
कन्नप १२०-१, १६४
कन्नर (कन्वर, कन्हर) देव ४५, १५१, २५६-७, २६३
कल्लिसेट्टि ३७३

कनुर्पानिनाडु ३५८
कमलदेव १२८, २९१
कमलभद्र ७०, २१४-५
कमलश्री १९३, १९७
कमलसेन २५०, २५४
कमलापुरम् ७३, ३९१
कम्बदहल्लि १५६, १६९
कम्मराज २८-३०
कम्मनहल्लि ३५९
कम्मरचोट्टु ३८०
कम्बिरम्पुल्लवर् ३३९
करगुदरि १७२
करडकल्ल १७९
करन्दै ९९, १४०, १७८, २८९, ३१३, ३३६, ३३९, ३४७
करन्दिदेव २५६
करिकालचोलजिनमंदिर ३५४
करिमानी ३६
करिविहि ७६, ८५
कर्कराज ३१, ३४-६
कर्णादेवी १६६
कर्म ३
कलकत्ता ४०, २३४, ३४०
कलकेरि २५४, २५६, २६३, ३७९
कलचुम्बुरु ६८
कलचुरि १५९, १७८
कलचुर्य १७९, १८२, १८६-७, १९८, २०१
कलशनगर २२५
कलनापुर २०१
कलिगब्बे ६९
कलिगावुण्ड २२६
कलिदेव ८१, १०९-१०, १२०-१, १४९, १८६
कलिमानम् ९८
कलियत्तिगंड ६८
कलियम्म २५, ३८९-९०
कलिविष्णुवर्धन ६४
कलिसेट्टि १०८, १७२
कलिंग २
कलकलेश्वर ८६
कल्लेलेदेव ४३-४, ५४
कल्याण ८५, ८६, २१४
कल्याणकीर्ति ७४, ३८२
कल्याणवर्मंत २४
कल्लप ३५५
कल्लब्बे ५४
कल्लरस ३०४-५
कल्लहल्लि ३६०
कल्लादम्पल्लि २७
कल्लविका ११७
कवडेगोल्ल १६३-५

कवडेमय्य २०४-५
कमपगावुण्ड २४१
कंचरस ९१-३
कंचलदेवी ३७८
कचिकब्बे ७६
कति २३४
कंदगल २५१
काकतीवंत १४२, १४५
काकन (कानन्दी) ३४८
कानुत्स्य १३
कागिनेल्लि ७७, ३७५
काटले १०६, ११०
काटिमय्य ११२
काडूरगण २६६
काणूर (क्राणूर) गण ५८-६०, १४८, १५५-८, १६३, २२४, २३३-४, २५५-६, २६८, २९६, ३२१, ३२३, ३२६, ३६४, ३००, ३७५, ३७८-८०
काण्डादन ९, १७
कादलूर ५४
कान्तराजपुर २१७
काप ३२१-३, ३२६
कामटी ३९५, ४१२
कामण्ग २८२, २८६
कामदेव ७७
कामनूराल २९७
कामराज ३५५-६
कामैन ३१४
काम्बोदि ३४९
कारन्य १९५
काराम्पट्टि ३६६
कारकल ३१९-२०, ३२९, ३९१
कारंजा ३९५, ४०५-६, ४०९, ४१२-३, ४१६-७, ४२५
कारिजे ३२०
कारेयगण १५३
कार्तवीर्य १२८, १८५-६, २३५-९ २४२-६, २४८-९
काल्डिय ७८, ८१
काल्ण १८६
कालहल्लि ३१९
कालिदास १३४, १७८
काल्मिय्य ९९
काल्मूर ९९
काल्लिट्टि ३७६
कावण्ग २६७
कावदेवरस २०८-९
कावनहल्लि १३३-४
कावय्य २५७
कावला गांव ४०५
काश्यिक ७-९

कालिदल्ल ७३
काटामर ३९६, ४००, ४०२-६, ४०९-११, ४१८-६, ४२९
कालिमदर १९८
कावन ९८
कालेब्बदेवी २१७
किन्निगलूरु ३३५
किरुनंगाडि १५३
किगुवल्लि २३०-१
किनुदोल्ल २५
कोन्दाकरम् ४२
कोनन्नूर ३१७
कीर्ति १५१-२
कीर्तिवर्मन् २५
कीर्तिसागर ३६१
कौलकुडि २२, ७२, २२७, ३६५
कुक्कुटासन १६७
कुन्चाणि २०७, ३२८
कुडलूर २६, ५४
कुडुगिनवल्लु ३२०
कुटनहोसहल्लि १७१
कुण्डकुन्दान्वय ११४, १५५-६
 २३३-४, ३६०, ३६४
कुप्पटवाट ३०३, ३६५
कुप्पमध्य ४०
कुम्पत्तूर ३०९
कुदेपयी २
कुन्तलनाडु ३०४-५
कुन्दकुन्दान्वय, कुन्दकुन्दाचार्यान्वय
 १२३, २७८, ३१७, ३९७,
 ४०१-४, ४०७, ४०९-१२,
 ४१५-२७
कुन्दकुन्द २२१-२, २२५
कुन्दनगालु २८८
कुन्दरगे ८५
कुन्दाणि १३९-४०
कुपण ३८
कुप्पटूर २२४
कुब्ज विष्णुवर्धन ६३, ६८
कुमठ २०८, २७८, ३७८
कुमरन् देवन् ४१
कुमरय्य १४७
कुमारकीर्ति १८६
कुमारनन्दि २८-३०
कुमारपर्वत ५७
कुमारबीडु १४६, २२३
कुमारसेन १७५, २९४-५
कुमिलिगण ४२
कुमुदचन्द्र २५८-९, २७१-२, ४०९
कुमुदिगण ८२, ३७७
कुम्बनूर १४५
कुरंजन १२७

कुन्द्रिगल १६
कुरण्डि २२, ६३
कुरुगोडु ३१९
कुरुवटिमिदि ३१८
कुलगाण १७
कुलचन्द्र ५७-८, १५७-८, २५७
कुलतूर ३९१
कुल्धोत्तर १५४
कुलोत्तुग १२१, १२५, १४०, १४५-६, १६६, २५१, २७३ ३९१-२
कुलोत्तुगचोळकाडवरायन् १६६
कुसुम ४
कुसुमजिनालय ३७६
कुकुमदवी २५
कुगियवर्मिसेट्टि ३६८
कूण्डि ७९, ८१, १२८, १३७, १५३, १६४, २३५, २४१, २४३, २४६, २८९
कूष्माण्डविषय १५
कृष्णदेव २७६
कृष्णदेवराय ३१३-४
कृष्णप्पराज ३४४-५
कृष्णराज ३१, ४४, ५३, १०९, १५२, २३६, ३५१
कृष्णवर्मा १७
कृष्णसेट्टि ३८१
केनगावुड १०७, २२७
केतम्य ३६३
केतिसेट्टि १०८, १८२, २०५
केतोज ८८-९
केम्पम्मणि ३५१
केरवसे २९९
केरेसन्ते १७९
केलगेरे २७०
केलडिवीरभद्र ३४१
केलडिवेंकटप्प ३३९
केळेयब्बरसि ९५, २०२
केल्लिपुसूर १८-२०
केशणदि २६६
केशव १९५, १९७, २६५ ३०२-५, ३६९
केशवदेवी २८३
केशवय्य १४६
केशवरस ' ६
केशवसूरि ५१-५२
केशवादित्य ८०, १५१
केशिराज ९१
केसरिसेट्टि २०७
केसिसेट्टि २२६
कैतडुप्पूर १४१
कोकलिपुर ९४

कोङ्किवाड ५४
कोक्कल १३६
कोङ्किकल्लि ६४
कोगलि २६५, ३६५, ३७९
कोच्छल गात्र ४२१-३
कोट्टगेरे १७४
कोट्टशीबरम् ३८०
कोट्टिय गण ६
कोडिहल्लि ७१
कोडुगूर १८, १९
कोणेग्न्मिकोण्डाम् २७, २५५
कोण्टकुन्दान्वय ५३, ९४, १२५, १३०, १३३-४, १५७-८, १६६, १७०, २०४, २०७, २४६, २४९, २५२-३, २५९, २६६, २७२, २८८, २९५-६ ३६३
कोण्डकुन्देग अन्वय २८, ३०
कोण्डकुन्देय तीर्थ ११४
कोण्डय्यसेट्टि ३६१
कोण्डेमले ३३७
कोनकोण्डल २०, ७२, ११४, २२६, २९३
कोनाट्टन् ८३
कोन्तकुलि १४८
कोन्तिमहादेविबसदि ३७२
कोन्न २१७, ३८२
कोप्पण (कोप्पल) ३८, ४५, ७४, १३०, २५०, ३२५-६, ३७१
कोमरगोप ३८३
कोम्मणार्य १४९
कोम्मसेट्टि ३८०
कोरग २९९
कोरमग १२, १४, १५
कोरवल्लि २४६, २४९
कोरिकुन्द ११
कोलारम ३४०
कोलूर २८९-९०
कोल्लापुर (कोल्हापुर) १३५, १६२, १६४-६, ३४४-५
कोल्वुगे ८५
कोवल ६२
कोविलगुलम् १४५
कोशिक २६
कोह नगोरी ३१५
कोहल्लि ८५
कोकण ८२, १३७, ३२७
कोगज १३६
कोगणिवर्मा ९, १७, २०, ५४
कोगणिवृद्धराज १७, २०
कोगण्यधिराज ११, १२
कोगरपुलियगुलम् २१

गुजरपल्लीवाल ३९५, ३९८
गुडुगुडि ३७२
गुड्डिगेरे २५
गुणकीर्ति ५६, ७६, १०४, १०९, ११०-१, ४००
गुणगविजयादित्य ६४
गुणचन्द्र ५३, ७३, १०५, ११०, १९७, २३४, २५८
गुणदबेडगि ८४-५, १८७
गुणनन्दि ५८, ६०
गुणनेरिमंगलम् ७५
गुणन्दागि १६
गुणपाल १६१
गुणभद्र ७२, १९५, १९७, २९४-५ ३३०-२, ३३४, ४३६, ४०२, ४२०
गुणमति २२
गुणवर्मा ६२
गुणवीर २७-८, ६३, २७४
गुणसागर ३६१, ३९१
गुणसेन २२, १७७, २६४, ३६५, ३६६, ४०२
गुत्त १८२
गुत्तवाति २८६
गुन्दुगाज १८९
गुम्मटदेव ३०९
गुम्मणसेट्टि ३१२
गुम्मिसेट्टि २२६, ३०८
गुम्मंगोल १०४, १०९
गुम्मंयसेट्टि ३३७
गुरुवयनकेरे ३०९, ३१४
गुर्जर १९७
गुलियपुर २६२
गुरुनन्दि ७-९
गूटी २८८,
गूत्रक १८९
गूवल १३६
गृध्रवाल गोत्र ४०८
गेरसोप्पे २७९, २८२, २८४, २८६-७, २९७-८, ३०१, ३१५, ३२७, ३३०-४, ३५४-५, ३६८, ३९२
गोआलभिटा ९
गोकवे २३३-४
गोकर्ण ३३५-६, ३९१
गोकाक १५, ८४-५
गोग्गि १८३-५
गोग्गियबसदि १५८
गोज्जिका ९१-३, १०२
गोट्टगडि १९८
गोणदबेडगि १२१
गोणिवीड ३५९

गोपनन्दि २०४, २०७
गोपरस २६६
गोपाचल ४१२
गोपेन्द्र १८९
गोप्पण्ण २७९
गोयिन्दस्य ४०
गोग्विसेट्टि १०८, १६४
गोरूर २२६, २२९
गोर्म १५१-२
गोल्लतक २६१
गोर्लसिघाग ३९५, ४०४
गोल्लिल्लि १५३
गोल्लाचार्य २३४
गोल्लापूर्व १५९, ३९६, ४०३, ४२७,
गोल्हणदेव १५९
गोव १८०
गोवर्धन २२७, २५०
गोवलदेव ११४
गोवा २८७
गोवान्नगोत्र ४०३, ४०६, ४०९-१०
गोपाटपुजक ७-९
गोहिल्लगोत्र ४०३, ४१५, ४२५
गोषय्य २७
गोकल १३६
गोडमघ ५३
ग्रहकुल ५७
ग्राम २२४
घटेयककार ७६
घण्टोडेय ३२०
घनविनीत १८
घनशोकवल्ली ३५४-५
चच्चिवग १८९
चञ्चुल १९१, १९६
चटवेगन्ति २९२
चट्टजिनालय ११४
चट्टप्पदेव ८२
चट्टरमि ८८-९
चण्डब्बे १०७
चण्डिगौडि २६१
चण्डियण ३९
चण्डिसेट्टि १०८
चतुर्थशांति १७२
चतुर्थमुनीश्वर ३२६
चतुर्मुख देव २०४, २०७
चतुर्मुखवसति ४१
चनुदबोलु ३८१
चन्तलदेवी १३३-४
चन्दन १८९
चन्दलदेवी २३७, २४४, ३१९-२०
चन्दब्बे ३८०
चन्दियब्बे ४५

चन्दिमेट्टि १०८
चन्द्र १३६, १८९
चन्द्रकवाचार्याम्नाय १५९
चन्द्रकवाट अन्वय ९२-३
चन्द्रकीर्ति २०८, ३६७, ३८३, ४०२, ४०३, ४०५
चन्द्रगिरि ३१३
चन्द्रनन्दि ४०, १०२, २२४
चन्द्रनाथ ३५६-८
चन्द्रपुर २८७
चन्द्रप्रभ ४४, ७२, २१७, ३१५-६
चन्द्रभूति ३७८
चन्द्रसेन १८-२०, ६७-८
चन्द्राक ३८१
चन्द्रिकावाट वन ९८
चन्द्रिकादेवी २३७
चन्द्रेन्द्र ३७८
चल्लविहल्ले २६१
चवुण्डिमेट्टि १०८
चवुण्ड २६३
चवरिया ३९९-४००, ४०७,
चवरे ४१६, ४१९, ४२५
चणाञ्गाय ३९२
चंगाल्व १२९
चाउण्डरस १७३
चान्दकवटे ९८
चान्द्रायणदेव १८०, २७१
चामरस्ते ७०, २८३
चामराज १४७, ३४९
चामराजनगर २९६, ३१४
चामुण्डराज १८९
चारुकीर्ति १२२, २२१, २२३, २९७-८, ३१२, ३२७, ३३३, ३३५, ३४१, ३४३, ३४७, ३६८, ३८१
चारुचन्द्रभूषण ४१२
चालुक्य २४-५, २७, ५३, ६३, ६६, ६८, ७३-८२, ८४-६, ८९, ९०, ९३-४, ९८-९, १०२-३, ११०, ११२-५, १२०-१, १२६, १३४, १३७, १३९, १४१-५ १४८-५०, १५२-३, १५७-८, १७०-३, १७८, २०८, ३८९-९०
चालुक्यभीम ६४, ६७-८
चावय्य ३७१
चावुण्ड ८२
चावुण्डरस १८७
चावुण्डराय ८८-९, २७७
चाहमान १५९-६०, १६९, १७१, १८९, १९६
चिकण्ण ३७

चिक्कमगलूर १२९, १३१
चिक्ककन्नेयनहल्लि २७१-२
चिक्कणव्य ३३३
चिक्कमल्लण्ण १७९-८०
चिक्कमालिगेनाडु ३२०
चिक्कराय ३४१
चिक्कवीरप्प ३३०-२, ३३४
चिक्कक्लमोगे ४३, १२९, ३३३
चिक्कहुन्निगोल २०१
चिक्किसेट्टि १०८
चिण्ण १२३-५
चितरल १६
चितलदुग ३०८-९
चित्तोड ३८६
चित्तापूर ३२८, ३५२
चित्तारि ८८-९
चित्रकूट २२१-२
चित्रकूटगच्छ १७२, ३७८
चित्रकूटान्वय १०२, ११२, १७२, २६९
चित्रभंडारदेव ३३९
चिप्पगिरि २६६, २९३, ३२६
चिचली २३५
चूलकम्म ३
चेकवा २५७
चेदि ६२
चेदिकुलमाणिक्कपेरुम्बल्लि १२२
चेन्न भैरादेवी ३२७
चेन्नराय ३३०-३
चेन्नवीरप्प ३३०-४
चैपल्लि ३२९
चोक्किसेट्टि ३११
चोल ५२, ५६, ६२, ७४-५, ७८, ८३, ९९, १०५-६, ११०, १२१, १२७, १४०-१, १४५-६, १५८, १६६-७, १७८-९, २०८, २५१, २६०, २७३, ३५४, ३९१
चोलपेरुम्पल्लि २७
चोलवाण्डिपुरम् ६२
चौटकुल ३२७, ३४१
चौलुक्य ९८, २२२
छतरपुर १७४
छत्रसेन ४११
छपारा ४९५, ४२५
छत्रि ९५
छीतर १९५
जकवेट्टि २९२
जकब्बे २३२, २५०
जक्कब्बरसि ३०२-३
जक्कय २५८
जक्कलदेवी ३०४-५

जक्कलि १३५
जक्कियब्बक १५५
जक्कियब्बे ४३, २७२
जक्किसेट्टि २०५
जगतकीर्ति ४०२
जगतापिवुत्ति ३२९
जगदेकमल्ल ७५-७, ८०-१, ९३, १७०-२
जगमणचारि १३२
जटासिंहनदि ३७१
जट्टिगौड ३२९
जनिग १३५-६
जननाथपुरम् १२२
जननाथमगलम् १६६
जबलपुर ३१०
जम्बूखण्डगण १५-१६
जयकीर्ति ९५, १२९, ३८३
जयकेशि ११२, १५३, १७२,२५१
जयदेव १८९, ३६०
जयन्ताचार्य ६८
जयराज १८९
जयवीरपेम्मिलर्मेयान् ३६६
जयसिंह ७४, ६३, ७६, ११५, १२०, १५१-२, ३४३, ३९०
जयसेन ६७, ६९, ३८१
जयगोण्डशोलमण्डलम् १७८
जयनन्दि ५७
जाकवे २६६
जाकिमब्बे ९८
जातियक्क १४६
जावालिपुर १९०
जालोर ३८६
जावूर ३८३
जासट १९१, १९६
जाह्नवेयकुल ९, १७
जिड्डुलिगे २७७
जिनकंचि ३४४-५
जिनगिरिपल्लि २५१
जिनगिरिमलै २५५
जिनचन्द्र १९५, १९७, २०४,२०७ २५८, २७५, २८७, ३१०, ३६९, ३९६, ३९८, ४०३, ४२७
जिनदत्त २२५
जिनदास ३९७
जिनदेव १५३, ३७६, ३९७
जिनभूषण ३६६
जिनवल्लभ ४०-१
जिनसेन २९४-५, ४०७-८, ४१२
जिनेन्द्र मगलम् ३१८
जिन्नण १८६
जीमूतवाहनान्वय १३७-८, १६२,

३८९-९०
जोयगौड ३६०
जीवराज ३९६, ३९८
जुगियागोत्र ४१४
जेवुलगेरि ७५
जैमपार्य १४६
जेमिसेट्टि ३७५
जोगीवडि ५६
जोम्रगिरि ८२
जोयिमय्यरस ११४
ज्ञानभूषण ३९७-८
टोडा रायसिंह ३४३
टोंक १३२, ३००
टवला गोत्र ४००
ठवन्नी, शान्तिकुमारजी ३९३
डम्बल ९४, २६३
ढिल्लिका १९०
तगडूर २६२, २९६
तगरपुर १३८, १६२
तगरे २६
तजेगाव ३९५, ४०८
तट्टिकेरे ५९-६०
तद्दागपत्तन १९१,१९६
तण्डपुरम १६७
तमिलप्पल्लवरैयन् २५५
तम्मण्ण ३७८
तम्मडहल्लि ३८१, ३८४
तम्मय्य ३३२-३
तम्मरस ३०४-५
तलकाड १४६, १५५, २०३
२१४, २११
तलक्कूडि ४१
तलप्रहारि १८३, १८५
तलडूर ३६९
तलवननगर २८-३०
तलवनि २१४
तवनन्दी २६९, २९१
तवनिधि २९०-१
तंगले ३६०
तंगलेदेवी ३०३-५
ताडकोड २६२
ताडपर्थी २१७
तायूर २६२
ताल्राज ६४
तिकणदेव २६५
तिमक ११७
तिन्त्रिणीगच्छ १५५-६,२२४,२५०,
३२१, ३२६, ३६४, ३७९
तिप्पगौड ९६
तिप्पय २६६
तिप्पिसेट्टि ११४
तिम्मगौड ३२९

तिम्मप्प ३२०
तिरक्कोल १६७
तिरुक्काट्टाम्पल्लि १४०
तिरुक्कामकोट्टपुरम् ९९
तिरुगोकर्णम् २७
तिरुच्छाणत्तुमलै १६
तिरुच्छोरत्तुरै २८९
तिरुनिडंकोण्डै ४१, ७८, १२७, १६०, १६६, २७३-४, २७९, ३३७, ३५४, ३७५
तिरुनरम्बूर १४०, १७३
तिरुप्परंकुण्डम् ३७३
तिरुप्परुत्तिकुण्डम् १४०-१, १८५
तिरुप्पानूमलै ५२
तिरुमणजेरि ७८
तिरुमय्यम् ३६६
तिरुमलरस ३१९, ३२२-३, ३२५
तिरुवगिरि ३७-८
तिरुनेणायिल् ३६६
तिलकरन २६०, ३०१
तिलिवल्लि ३४८
तिगकूर ८३
तीर्थवसदि १२९
तुंगलिकिलान् ९९
तुम्बदेवनहल्लि १२२
तुम्बिगि ३८४
तुलु (तुलुव) २८०, ३१४, ३२१-२, ३२७
तुलुअडि २६
तुंगपल्लवरैयन् ३७४
तेणिमलै ३६७
तेरकणांबि २९५
तेवारम् ६३
तँकबिणाडु २७
तैल ७३, १७१-२
तैलप १४८-९, १८५
तैलंगेरे २६१
तोगरकुंट १४८
तोयिमरस ३७२
तोरनगल्लु ३७७
तोरबगे १६४
तोललु ९५-६, १२६-७, ३६२
तोलहरवलि २९७
तोलग्राम २६
तोडमंडल ७४, २८०
तोडूर ७५
तोलव ३१५
त्रिकूटवसदि १४१
त्रिणयनकुल ६६, ६८
त्रिभुवनकीर्ति २६०, ३८०
त्रिभुवनचन्द्र १०६-७, ११०-१२
त्रिभुवनमल्ल ११४-५, १२०, १२२,

१२६-७, १३३, १४१, १४३,
१४५, १४८-५०, १५२-३,
२००, २०८
त्रिभुवनवीर ३७८
त्रैकीर्ति २७५
त्रैलोक्यमल्ल ८२, ८४-६, ८९,
९०, ९३-६, ९८-९, १००,
१०५, ११०, ११५, १२०,
१७३, १७८, ३८९-९०
दडग १५४
दडिगनकेरे १५५-६
दडिगसेट्टि ७०
दण्डब्रह्म १३७
दण्डिपल्लि ४४
दत्ता ५,६
दत्तकसूत्रवृत्ति १०
दन्तिदुर्ग ३१
दमित्र ५, ६
दयापाल २१४, २१६
दयाभूषण ४०८
दयावसन्त २४
दानप्प ३२८
दानवुलपाडु ५५, ६०, ३६३
दानिवास ३३१-४
दारिमेट्टि १०८
दावणदि १०२. ३८०
दामण्ण ३८९
दामत्रोव १८७
द्रादि १६१
दिनकर ११९,१२१
दिनकरजिनालय १६७
दिल्ली ३४४-५
दिवाकर २५०
दुग्गमार ३९, ४०
दुद्दमल्ल १३३-४
दुध्रक १९१, १९७
दुर्गभट्ट ३६
दुर्लभ (दुर्लभराज) ४६, ५?
१८९, १९२, १९७
दुर्विनीत १७, २०, ९४
दूडम ११९-१२१
दूमल्ल १८९
देकवे २०५
देज्जमहाराज १५-१६
देमलदेवी १७३
देमायप २३४
देल्हण १९६-७
देवकीर्ति ७६, २२३, २२६, ३६३,
३८४
देवगण ३८२
देवगीरी ३८९
देवचन्द्र २२५, २५८, २७१, ३२३,

३२६, ३५४-५, ३८१-२ ३८४

देवणय्य ११२

देवण्ण २६०, ३१६-७, ३४१, ३४८

देवत्तूर ३७४

देवदाम ३२८

देवधर १९२, १९७

देवनन्दि २७०, ३६१

देवपाल १६१

देवप्प ३०८

देवमाम्बे २९४

देवरदामय्य ७०

देवरस १४९

देवराज १९०, ३५१

देवराय ३००, ३०५-६, ३१४, ३९१

देवस्पर्श १९१, १९७

देवाद्रि १९२

देवागना १११

देवियव्वे ७०

देविसेट्टि १०८, २०५, २०७, ३१२, ३१६

देवीरम्मणि ३४९

देवूर ३७६

देवेन्द्र ६९, २०४, २०७

देवेन्द्रकीर्ति ३१४, ४०२, ४११, ४१६-२५, ४२८

देवेन्द्रसेन २९४-५

देशवल्लभजिनालय ४२

देशीय (देशी, देसि, देसिग) गण ४३, ५३, ७७, ९३-४, ११४, १२५-६, १२९, १३३-४, १४०, १४८, १५६, १५९, १६४-५, १६७, १७०, १७३, १७९, १८२, १९७, २०४, २०७, २२५, २३२, २४६, २४९, २५२-३, २५६, २६०, २६५-८, २७२, २७४, २७८, २९५, ३१५-६, ३३५, ३३८-९, ३४२, ३५४-५, ३५९, ३६०, ३६३, ३७६, ३७९-८३

देमल १९१, १९६-७

दोडणसेट्टि ३१२

दोण ११७-८, १२०-१

दोणि १२२

दोरसमुद्र २५३, २५६, २७०-१

दोहद ५

द्रमिल सघ २१४

द्रविल सघ १७९-८०, २३३, २६७ २६९, २९१

द्राविडसघ १२८

द्राविडान्वय २६४

द्रोहघरट्टाचारि १५६
द्वीपितटाक २९४
धन्यवसन्त २४
धरवृद्धि ६
धर्मकीर्ति ४०३-४
धर्मचन्द्र ३१७, ३४०, ४००, ४०४-५, ४०७-१०, ४१२-३, ४१६, ४२८
धर्मपुर ३०३
धर्मपुरी ३८-९
धर्मभूषण २८८, ३११, ३९७, ३९९-४०१, ४०५-८, ४१०
धर्मवोलल ९४, २६३
धर्मसेन २६९
धवल ४६, ४९, ५२
धारवाड ५३
धारावर्ष २८, ३०
धुरामोरो गोत्र ४२२
धृति २७
धोरजिनालय ४४, ९५, १८७
ध्रुव ३०, ३२
नकुलरस ८८-९
नगिरि २९७-८, ३०३, ३२७
नदिहरलहल्लि १८७, १९८
नदूलडागिका १६०, १६८-९, १७०-१, १९०
नन्दवर ४५
नन्दवाडिगे ८५
नन्दसेठि १
नन्दापुर ८५
नन्दिआम्नाय ४२२
नन्दिगण (सघ) १०४, १०९, १२८ २१४, २२१-२, २३३, २५८ २६७, २६९, २९१, ४०२
नन्दिवेवूरु ९३
नन्दिभट्टारक २५८-९, २९६, ३७५
नन्दिमुनि २३४
नन्दियड सघ ७२
नन्दियडिगल ३६१-२
नन्दीतटगच्छ ३९६, ४०२-३, ४०५-६, ४०९, ४११, ४१४, ४१६, ४२७
नन्नियगंग ५९, ६०
नमयर ५३
नम्बिसेट्टि २८२-३
नयकीर्ति १७३, २०७, २१९-२० २३१-२, २५६, २५८-९, २७१-२
नयसेन ९१-३, ११८, १२१
नरतोग १६७
नरवर १९१, १९७
नरवाहन ६६-८

नरसण्ण ३३२ ३
नरसिंगय्य ११४
नरसिंह १६९, १७६-७, १७६, १८०, २०३, २११-२, २५६, २५८-६०, २६२, २७०-२, ३१३
नरसिंहवग ३०९
नरसिंहराजपुर २६, ३१२, ३४९
नरसोगेरे ३९, ४०
नरसीभट्ट ३९२
नरेगल ५३
नरेन्द्रकीर्ति ४०४, ४१०
नरेन्द्रसेन ९२-३, ११८-२१, ३७५
नल १२९
नलगनम्गाडु २३
नल्लूर २७३
नविलगुन्द ३८३
नविलूर १२६-७, २२६
नविले ८५
नगलि १५५
नजेदेवरगुड्ड २१६
नाकण १४७, २६७
नाकिग ९५
नाकिमय्य ११२
नाकिया ४
नाकिराज १६६
नागकुमार ४३
नागगावुण्ड १९८, २६२
नागगौड ३७२
नागचन्द्र ९५, १२९, १७२, १८६, २७८
नागण्ण ३००
नागदेव ७३, १९२, १९७
नागनन्दि ३७, २९६
नागपुर २०९, ३९३-५, ४१२, ४१५, ४१८-२३, ४२५-२७
नागप्प ३४९
नागभूप ३४३
नागय्या ४४, २०९, ३५०, ३५७, ३६६
नागरखण्ड ४४, २५०, २७७, २८९
नागरस ३०१
नागरहाल १७६-७
नागराज २९४
नागलदेवी २६६
नागलपुर ३३०-१
नागवर्मा २६, ८८-९
नागवे १८१, २३३-४, २८६, ३७२
नागश्री १९२, १९७
नागशारिका ३५-६

नागमिर्ग्ग यब्बे २५१
नागसेट्टि २८९-९०
नागसेन ७२, ८४-५
नागहृद १९४
नागिसेट्टि १७१, २८६
नागुलपोलमब्बे २७
नागुलबसदि २७
नागेयिसेट्टि २६३
नागोज ३६०
नागोर ४२२-३
नाडलाई १५९, १६७, १६९, १७०
नाडलि १००-१
नाडोल ३८६
नाथनुर्ग ७-९
नाथसेन ६७-८
नादीवे ३५७
नानिग १९६
नाम्मिसेट्टि २७३
नारसिंम १३५, १३९-४०
नारायक १९१, १९६
नारायण ३६, ४०
नारियप्पाडि ४१
नालिसेट्टि १०८
नालपुर ३३४
नान्कुवागिलु ३२८
नाविकब्बे ११४
नाहर ३८५
नाहटा ३८५
निगमान्वय २७६
निगुम्बवंश १३९
निजिकब्बे २३०-१
निट्टूर २२५, ३६८
निडुगल (निडुगल्लु) २६०, ३८२
नित्वकल्याणदेव १६०
नित्यवर्ष ४४-५, ५५
नित्वगोहाली ७-९
निवियण्ण ३९
निम्बदेव १६३, १६५-६, २३९
निरुपम ३०
निर्वहेनूसत्तंघ ३४९
निलिम्पपुर २९८
नीडूर २९१
नीरलगि १७१
नीलगिरि ३४६-७
नीलत्तनहल्लि ३१८
नीलिकब्बे १७२
नूतिसेट्टि १०८
नूलवन्दिसेट्टि ३५७
नूलवागिसेट्टि ३५७
नेगलूर २५७
नेचटिनजायि १२९
नेमण ८१-२, २८६-७, ३६२

नेमसेन ४२०
नेमिचन्द्र ४२-३, १२६-७, १५३, १७३, २१९-२०, २२६, २३२, २४५, २४९, २५८, २६५, २७१, ३७०, ३८२, ४२८
नेमिदेव २२७, ३७६
नेमिसेट्टि १०८, ३१२
नेरिलगे १७१
नेल्लिकर ३१७, ३८२
नेवाजाति ४१३
नैगम १९५
नोम्पियबसदि २०८
नोलम्ब ३८-९, ७६, ९३, ११६, १३९-४०
नोलम्बवाडि (नोणम्बवाडि) ७६, १५५, २१४, ३९०
न्यायपरिपालपेक्ष्म्वल्लि २५५
पटना ३१७
पट्टिपोम्बुर्च ८६, ८९, १८३, १८५
पडियरकाटि ८८-९
पडेवल ७३
पडैश्रीट्टु ३१३
पण्डितय्य ३३३
पदमूलिक ४
पदार्थमार २५६
पदुमणसेट्टि ३१८
पदुमलदेवी ३२७
पदुमव्वे ३७६
पद्मकीर्ति ४०१, ४०७-९, ४११, ४१४
पद्मकुल ३४६
पद्मट १९१, १९६
पद्मणरस ३०४-५
पद्मनन्दि ४५, ५५-६, १४९, २१७, २५०, २५८, २७७, ३००, ३१०, ३९७, ४१६ ७
पद्मप्रभ २००, २०८, २६९, ३८०
पद्मव्वरसि ५३
पद्मलदेवी १७९, २४४
पद्मसेन २५४, २६१
पद्मावती २३६, ३६२
पद्मावतीपल्लीवाल ३९५, ४०८
पद्मय ३५०, ३५३
पनसोगे ४३, २०७, २२५
पयिट्टुण १४८
परकेसरिवर्मन् ५२, ७५, १४१, १५८, १६०, १६७, २५१
परमजिनदेवजीयर् ३५७
परमार ८६
परम्बूर ९९
परवार ३९६, ४०४, ४१५, ४२३-६

पगान्तक ५२
पग्गिय २६६
पर्नेयूरनाडु १७९
पर्वतमुनि २२४
पलसिगे ८२
पल्लव ११-२, ३८, ९३, ३५४
पल्लवपेर्मनिडि ११५, १२०
पल्लवरैयन् १६७
पल्लवादित्य २३
पल्लवेलरस १८, २०
पल्लिका १९०
पल्लिचन्दल् ३१७
पल्लीवाल ३९५, ४०१
पसिडिगग २६
पहाडपुर ६
पञ्चस्तूपनिकाय ७-९
पांटणी गोत्र ४२५
पाटशीवरम् २०८
पाण्ड्य २७, ३८-९, ७४, १०५,
२५३, २५५, २६१, २६४,
२९९
पाण्ड्यप्परस ३१९-२०
पाण्ड्यरस १८३, १८५
पानुगल १४८, २१४
पान्थिपुर १८६
पापड़ीवाल ३९६, ३९८, ४११
पायण्ण ३४३
पायिम्म ७८,८१
पायिसेट्टि २५४
पारिसदेव १७९
पारिससेट्टि २१९-२०
पार्श्व १२०-१
पार्श्वदेव ३८४
पार्श्वदेवी ३३६
पालियड ९६
पालैयूर ३५४
पाल्यकीर्ति २२७
पाल्हण १९६
पाम्कीर्ति ४०४
पिट्टुग १५१-२
पितल्यागोत्र ४२७
पिरियमोसगि ७६-७
पुगलोकरनाथनल्लूर २५५
पुट्टैय ३५३
पुणिस १४७
पुण्ड्रवर्धन ७, ९
पुत्तडिगल ६३
पुत्तिगे ३२७, ३४१
पुदुप्पट्टु १४१
पुन्नागवृक्षमूलगण ८०, ८१, १८६
पुन्नाद १७, १८, २८, ५४
पुरगूर ८५

पोन्नबुच ७६
प्रतापकीर्ति ४००, ४०२-३, ४०५-६ ४०९-१०, ४१६
प्रथमजिननन्दि ३८९
प्रभाकरदेव ३५४
प्रभाकरसेन २१४-५
प्रभाचन्द्र ५६, ५८, ६०, ७०, १३३-४, १४०, १५८, १५७-८, ३००, ३६१, ३८०
प्रभुदेवी ३५८
प्रतिसेट्टि ३८१
प्रवरकीर्ति २२२-३
प्राग्वाट १११, ११६
प्रौढ १४२-३, १८१
बघेरवाल ३०६, ३१८-४०३, ४०५-७, ४०९-१०, ४१२, ४१४, ४१६, ४१९
बङ्केरे १०८, ११०, १४८
बड़ोदा ३८५
बन्दुवाल ३१५
बनगुप्पे २८, ३०
बसनोर ३०३
बहेग ५३
बबनोरा ४२०
बनवासिके ३४३
बनवासि ८५, ११४, ११६, १२०, १२८, १४८, १५५, १६७, १६८, २०४, २१४, २७६, २८१, २८९-९०, ३१०
बन्दलिके ४४
बप्पनगर १८९
बम्मण ६९, २३२
बम्बई २०१, ३२३, ३८६-७
बम्मगवुड २६४
बम्मय २८३
बम्मव्वे ३६९
बम्माचारि २१०
बम्मिसेट्टि १०८, १५२, १६४, १७०, २०७, २२६
बयिचिसेट्टि ३७७
बम्मदेवरस १२१
बलनन्दि ३६८
बलगारगण १०४, १०९
बलगारवंश २१४-५
बलगेरि १७८
बलदेव ७१, ९१, ९३, १०२, १११, २३९, २४५, ३१०
बलभद्र ५०-२
बलात्कारगण १०७, ११२, १५३, २२२, २५८, २७०, २७२, २७८, २८८, २९१, ३०६, ३१०-१, ३१५, ३१६-७,

४००-५, ४०७-१२, ४१४-२३, ४२५-८
बलिकुल ६१-२
बलेयवट्टण १६४
बल्लरस १९९, २००
बल्लाल १३१, १३७, १५४, १९८, १९९, २००, २०२-४, २०७, २०९-१८, २२०, २४९-५०, २७०, २७३, २७६-७, ३३५
बल्लिग्रामे (गाँवे) २७६-७, ३८९
बसरूर ३०६
बसवदेव २८१-२
बसवपट्टण २६६
बसविसेट्टि १०८
बस्तिहल्लि १६७, २५६
बहादरपुर ३९५, ४०३
बकापुर ४४, ३७२
बकेयरस ४४
बागियूर ५४
बाचण्ण ३०९
बाचय्य ९४
बाचवे २३१
बाचिगावुण्ड १४९
बाचियेट्टि २७५
बाचेय २६०
बादय्य ३७८
बादंगट्टि ३७१
बान्धवनगर २५०
बावानगर १८२
बायिसेट्टि ३२९
बाग्कूद २९९,३२२, ३२६, ३४१
बारलो १
बालचन्द्र ५८, ६०, ७०, ८०-१, १३४, १४८, २०४-५, २०७, २१९-२०, २२७, २४२-३, २४८, २६०, २६३, ३६३, ३८०, ३८३
बालप्रसाद ४७, ५२
बालूर २४९, २५७, ३४८
बालेहल्लि १७०, २७९, ३७२
बासवे ७१
बाम्बुर १२५, ३८९
बासिसेट्टि १८१
बाहुबलि १२६, १९९, १५०, १५२, २१९-२०, २५२-३
बाहुबलिकूट १५५-६
बिजापुर ४५ २५५, २७६
बिजोलिया १८८
बिज्जण १३६, १८२, १८६-७
बिज्जल १५१-२, १७८-९
बिटिसेट्टि ३११
बिट्टय्य ४४

बिट्टरस १८७
बिट्टिदेव १५४, २११, २७०
बिट्टियण ३६२
बिडक्क ७१
बिण्डिगनवले ५५
बिदिरूर २६८, ३०९-१०
बिदुरे ३२०, ३३६-७, ३३९-४०
बिग्णंतर ३२६
बिल्लगौण्ड १२६-७
बिलपाणसेट्टि १६४
बिलिगि ३२०, ३३५
बिलिगिरि रंगनबेट्ट २०९
बिलिच्चाग्राम २५३
बिल्लमनायक ३८२
बीचगवुड ७४-५
बीचण (बीचिराज) २३८-९, २४३-६, २४८-९, २५४
बीचिमट्टि ३८३
बीरण १३९-४०
बीरय्य ९४
बीरम्म १८३, १८५
बुक्कराज २७८-९, २९०, २९५
बुवगुप्त ९
बुलिमेट्टि ३०१
बुल्लप ३५१
बुस्सेट्टि ३२९
बूचव्वे १२९
बून १२३, १२५
बूनय्य ५३
बूतुग ५८, ६०, १०४, १०९
बूपोज ३६०
बूवनहल्लि ७०
बेंगूर ४२
बेचारकबोमलापुर ७४
बेट्टकेरि ३४०
बेट्टिमेट्टि ३८१
बेन १४२-५
बेन्नेवुर ९८
बेरिसेट्टि ३८०
बेलगामि २१७, २७६, ३७०, ३८९
बेलगांव ४२, २३६, २४३, २४९
बेलगुल २२७, २६७, ३२५ ६
बेल्तंगडि ३१४
बेलप्प २७९
बेलूर १३०, १४७, १७५, २०७, ‑४४, ३४६
बेल्गलि ८५
बेल्देव ९१, ९३, १०२
बेल्मट्टि ५६
बेल्लुम्बट्टे ३८२
बेल्वत्ति १५२

बेल्वल ७९, १०४-६, १०९-१०, ११२, १७८, २१४
बेल्वोल ९०, ९३, १०३, १२०, १७२
बेहार २२८
बेंटूर ३७
बेंचण २९७-९
बेंचय २७८, २८८
बेंचिसेट्टि २८५-६, २९९
बेंन्दुरु ३०८
बेंराट ३८८
बेंरामक्षेत्र ४१६
बेंहुरु ९३
बोगगावुण्ड ३८४
बोगाडि १९८
बोचुवनायक ३८४
बोप्पगोड ३७५
बोप्पदेव १५६, २५०
बोप्पय २९६
बोप्पिसेट्टि १०८, १६४
बोप्पेयब्बे १८३
बोप्पेयवाड १३८, १४०
बोम्मक्क ३५६
बोम्मण्ण ३६८
बोम्मरस ३३७
बोम्मरसेट्टि ३१६
बोम्मब्बे २२९, २६६
बोम्मिसेट्टि २६०, २६६, २७७, २९९, ३१२, ३२८, ३७१, ३८०
बोयुगट्ट २७
बोरखड्यागोत्र ४०१, ४०३, ४०६, ४०९, ४१६
बोलगडि ७८, ८१
बोलयनाग २९३
बोमिसेट्टि १०८
ब्रमदेव २२६
ब्रह्मदेवण ३६४
ब्रह्म २५०, २९०-१
ब्रह्मकुल ११६
ब्रह्मजिनालय १५२, १५७
ब्रह्मविगाज ९३
ब्रिटिश म्यूजियम २७, ३८७
भटकल ३००, ३३५
भट्टाकलंक ३१६, ३३५, ३३८-९, ३४२
भट्टिदाम ६
भद्रबाहु ९६, १७५, २१४, २१६
भद्रायि १५७ ८
भद्रेश्वर ३८६, ३८८
भरत ७३, १५५-६, २७२
भरतपुर १७४, ३८५

भरतिमय्य १७०
भारतिसेट्टि २१४
भव्वर गोत्र ४०४
भागिणब्बे ७९, ८१
भागियब्बे ४०-१, ९५
भानुकीर्ति १२९, २५०, २७२,
३७९
भानुचन्द्र ३९८
भानुमतीश्वर ३२१, ३२६
भालेयाग्वन्दल ३३०-१
भावचन्द्र १९७
भावनगन्धवारण ८५
भावसेन ३८०
भासगवुण्ड ३६२
भास्करनन्दि ११३
भिल्लम १३७,२१३
भीम ६७
भीमदेव ९७ ८, २२१-२
भीसां ३९५, ४११
भुजबलमल्ल १८६
भुग गोत्र ४००
भुवनकीर्ति ३९७-८, ४२८
भुवनैकमल्ल १०२-३, ११०, ११२-
३, ३८९
भुवनैकनाथनल्लूर २६१
भूतबलि १७५, २१४, २१६
भूलोकमल्ल १५३, १५७-८,३९०
भैरम ३१३
भैरवदेव २६५
भैरवपुर ३१५
भैरादेवी ३००
भोगदेव २०८
भोगराज २७८
भोगवदि १९९-२००
भोगवे ११४
भोगादित्य ९८
भोज ८६, १३६-७
भोमले ३९४
भोसि ३७०
मगर कारगरम १५७
मणलकुल ११२
मणलिमनेआडेयोन् २६
मणलेर १७२
मणिचन्द्र ४२
मण्टूर २२९
मण्डलकर १९२, १९७
मण्डलागेरे ८५
मण्डलोई ३३८
मण्णे ६९
मतिवीर ३४०
मतिसेन ९९

मतिसागर ३५४
मलावार ९९, २९२, ३५३
मत्तिकट्टि ९९
मथुरा ५, ६, ७२, ३८६
मदनसेन २९४-५
मदनूर ६८
मदन्नणसेट्टि ३१८
मदविलगम् १३०
मदिरै ३९
मदिरैकोण्ड ५२, २५१
मदिसागर २५५
मद्दुवण १८६
मदुवरस ३०१
मद्दहेगडे ३२१-३, ३२५-६
मद्रास ३६४
मधुकण्ण २५६
मधुर ३९१
मनगुन्दि २५१
मनोली २२७
मनोविनोत १८
मन्तरवर्मण १२१
मन्तगि १८६, ३७२-३
मन्त्रचूडामणि ९५
मन्नेरमसलवाड २६५
मम्मट ४६, ५०-२
मयिलिसेट्टि १०८
मयूरवर्मा १५७
मरकत ३२७
मरगोड ३७७
मरवोलल ७६
मरसे २३३
मरिनाग ३५०-३
मरियाने १३१, १५५-६, १६९
मरुत्तुवक्कुटि १२१
मरुल्जिन २९२
मरुलयरस २८०
मगोल ७५
मलधारिदेव १३०, १७०, १८२,
२२८, २४५, २४९
मलयकुल ६३
मलयन ३३४
मलवसेट्टि २२६
मलेय २२५
मलेयालपाण्ड्य २५८
मलैयन् कोविल ३६६
मलैयन् मल्लन् १६०
मल्ल २५४
मल्लगावुण्ड १७१-२
मल्लप ६४, २८७
मल्लय्य १०७, ११०
मल्लवल्लि २६
मल्लवादि ३५-६

[illegible] १०८
[illegible] २६८
[illegible] २१३, २३६-८
[illegible] २३६, २३९, २४३-४, २४६, ३०८
[illegible] ३८३
[illegible] ३६०
[illegible] ३८३, ३९०
[illegible] ४०१
[illegible] १६८
[illegible] २२६
[illegible] १९८, २१३, २८६-८
[illegible] ३००
[illegible] ८२, १०८, १५३, २६०, २८९ ३१६
[illegible] ([illegible]) ६९, १२७, १२५, २१४, २१६, ३७०, ३८६
[illegible] ६३
[illegible] ८३
[illegible] २८८
[illegible] २५०-१
[illegible] ८१
[illegible] २२३
[illegible] ३३१
[illegible] १५१
[illegible] ४
[illegible] २
[illegible] २६१
महावीर ४२
[illegible] ४०८
[illegible] १६२, १६७
[illegible] ८६
महेन्द्र ३८-९, ४६, ५२-३
[illegible] ७१
महेश्वर ३२८
[illegible] ३०२-५, ३५५-६
[illegible] २१८
[illegible] १८२
[illegible] ३३२, ३२६, ३४१
[illegible] ६१
[illegible] २१४-५
[illegible] ३७५
[illegible] ७४
[illegible] २५०
[illegible] २२, ५८, ६०, ९८, १५०, १५२, १६६, २०४, २०७, २२१, २५८, २८१-२, २८४, २७८, ३७५
[illegible] १७६
[illegible] १२५

माचियण १७६-७
माचिराज १८३, १९८, २००
मार्चेर्ल २४
माणिकदेवी ३०५
माणिकसेट्टि १००-१, २८५-७
माणिकसेन २०९, ३९७-८, ४०२, ४२०
माणिक्यतीर्थ १५२
माणिक्यनन्दि १०४, ११०
माणिक्यभट्टारक १८२
माण्डू ३०६
माथुर संघ १९५,१९७
मादरम ३७४
मादलदेवी २६६
मादलंगडिकेरि ३४०
मादवे २५८, २६३
मादेय २६३
माधव २८७
माधवचन्द्र १५४, २३३-४, २४२-३, २६६, २६८, ३७२
माधवनन्दि १५९
माधवमहाधिराज १०, १२, १७, २०
माधववर्मा १०, १४४-५
माधवसेट्टि १०८
माध्यमिका १
मानलदेवी १६०
मानसेन २९९
मावलरसि ३०३, ३०५
माबाम्बा ३५५
मामटा १९२, १९७
मायण २९४-५
मायदेव २६३, ३७०
मायसेट्टि २९९
मार २९२
मारगौड १८५-६
मारदेवी २८३
मारब्बेकन्ति ६९
मारमब्य ७०
मारय ३८०
मारवर्मन् २५५, २६४
मारसिंह ५३, ५४, ५९, ८९, १०९, १३६
मारिसेट्टि १८१-२, २१४
मारुगोट्टेरर् १९, २०
मारुरु ३३६
मारेय २१९-२०
मार्तण्डय्य ८२
मालकोण्ड १
मालवे २२५
मालवेंगडे २७७
मालियब्बरसि ३५५-६

मालेयब्बे १३२

मावलि २३३

माविनकेरे २२५, २९७

मावीरन् १६७

मासवाडि ७३

मामाविवर्म १३१

मासेनन् ५२

मिरिजे १३८-९, १६४

मोचारमागाणे ३२७

मुकुन्ददेव ३७८

मुक्कुडेयार् १४५

मुगद (मुगुन्द) ८२

मुच्छण्डि २१५-६

मुडामा ३९६, ३९८

मुडिगोण्डम् १३३

मुत्तवहोसूर २८९, ३५८

मुत्तुप्पट्टि २२

मुत्तोक्कूरम् ३१८

मुद्गावुण्ड १००-१, ३६२

मुद्गौंड ९६, ३६०

मुद्दुदण्डेश्वर ३९१

मुद्दुमावन्त २५०

मुनिगिरि ३४७

मुनिचन्द्र (मुनीन्दु) ५१, ११५,
१२२, १८६, १९१, १९७,
२२७, २५०, ३२३-४, ३२६

मुनिभद्र १५५-६, ३३६

मुनिवल्लि २२७

मुनुगोडु २७, ३८२

मुम्मुडिचोल ६२

मुलगुन्द ८५, ९०-१, २६०, ३०१,
३४३, ३७९

मुल्कि ३६४

मुल्लभट्टारक १५३

मुष्कर १७, २०

मुंजराज ४६, ५२

मुंजार्य ५४

मूगूर २७२

मूडगेरि १०४, १०९

मूडबिद्रे ३१३, ३२०, ३२६-७,
३३९-४१, ३४७, ३६७-८

मूलपल्लि २९

मूलराज ४६, ५२, २२०

मूलवसतिका २२१, २२३

मूलसंघ ३५-६, ३९, ४३, ७२,
८४-५, ९२-३, ९६, ९८,
१०४, १०९, ११२, ११८,
१२०, १२६, १२९, १३३-४,
१४०, १४८-९, १५३, १५७-
८, १६४-५, १६७-१७१,
१७३, १७९, १८२, २०४,
२०७, २२४, २३५, २३७,

२२९, २३३-४, २४६, २४९-५३, २५६, २५८-६१, २६५-७०, २७२, २७६, २७८, २८८, २९५-६, ३००, ३०६, ३१०-१, ३१५, ३१७, ३२१, ३२६, ३३५-६, ३४०, ३५९-६०, ३६३-४, ३७०, ३७३, ३७५-६, ३७८-८२, ३९६-४२९
मूलिगतिप्पय २६६
मृगेश १३-१५
मेघचन्द्र ५८, ६०, ९६, १३३-४, १४०, १५५-६, २४९
मेघनन्दि २५०
मेडता ३८७, ४०३
मेण्डाम्बा ६६, ६८
मेलपराज ६६, ६८
मेलपाडि ५३
मेलरस १४४-५
मेलब्बे २६०
मेलाम्बा ६४
मेलुमान्तलिगे १८३, १८५
मेषपाषाणगच्छ १५७-८, ३७५
मैणदान्वय २६८
मैलम १४३, १४५
मैललदेवी ८५, १५१-३
मैलाप अन्वय १५३
मैलुगि १७८, १८२
मैसुनाड २१५-६, २८३
मैसूर ३४९-५३
मोटेवेन्नूर ४०, ९८, २७५
मोदलियहल्लि १७०
मोनभट्टारक ४२
मोरक कुल ७६
मोरब ९५
मोराझरी १९०, १९६
मोसल १९१, १९७
मोसलेयकुरुवु ३१६
मोसलेवाड २६५
मोहनदास ३४१, ३४३
मौगामा ३८७
मौनपाचार्य ३५७
मौनिदेव १५०, १५२
यलवट्टि ३६२
यश कीर्ति २२१, २२३, ४०२-३
यशोनन्दि ५७
यशोराज १८९
यशोवर्मन् ८६
याकमब्बे १४२-३, १४६
यादव २५१, २५४, २५६-९,

२६३, २६५, ३८९-९०
यापनीय संघ ४२, ८०, ८१, ९५, १२२, १५०, १५२, १५३, १८६, २२७, २६६, २७५, ३७६, ३७७-८
याप्यरुलवकारिगँ ३९१
यावनिक ११-२
यिवल्लिग्राम ३२९
योचलदाल ३३२-३
येचिसेट्टि १०८
येडेहल्लि ३३०-१, ३३३
येरगजिनालय ३६४
येलवर्गि ३७३
योजणसेट्टि २८२, २८४, २८६-७
रक्कसगंग ५९
रघु १३
रघुवर, रघूजी ३९४, ४१५
रट्टगुडि २४
रट्टजिनालय २४०, २४३, २४६, २४९
रट्टवंश १२८, १३२, १५३, १८५, २३५, २३७, २४३, २४५, २४९
रणकि १२३, १२५
रणपाकरस २६
रणावलोक २८, ३०
रत्नकीर्ति २६१, ३१०, ४०३-४, ४१५
रत्नगिरि २१, ३४४-५
रत्नचन्द्र १९७
रत्ननन्दि २०४, २०७
रत्नप्पोडेय ३१४
रत्नभूषण ३७७
रत्नापुरि २६७
रवि १३-१५
रविचन्द्र ५४, १२५, २५८, २७१
रविनन्दि ५४
रसिद्धुणगुट्ट २०, ७२, २२६, २९३
रगनवेट्ट २१०
रंगप्पराज ३४४-४५
रगरस २५६
राइकवाल ३९५, ३९७
राचमल्ल ५८, ६०, १०९
राचय ७१
राजकीर्ति ४०५-६
राजके रिवर्मन् ५६, ९९, १४०
राजग कुण्ड १००-१
राजदेव १६८-७१
राजदेवी १८९
राजपाल ४००
राजभीम ६४-५, ६८

राजमार्तण्ड ६४
राजराज ७४, १७८-९, २८०, ३५४
राजलदेवी २५४
राजव्वे १७६, ३७५
राजाधिराज ११०
राजि १२०-१
राजिमत्य ११९
राजेन्द्र ७५, ७८
राजेन्द्रचोलचेंदिराजन् १२७
राणिवेण्णूर ३७
रामकीर्ति ३९९, ४१६
रामक्क २८२, २८४-७
रामचन्द्र ८१-२, २६३, २६५, ३१५, ३८९, ४२५
रामटेक ३९५, ४०४, ४०७, ४२२
रामण १८६, २८२, २८६
रामतीर्थ ३८१
रामदेव २६५, ३३९
रामनाथ २६५
रामनायक ३१०
रामपुरम् ३८१
रामप्प ३१३
रामराज ३१९, ३२२, ३२६
रामव्वे २८६
रामसेट्टि २८५
रामसेनान्वय ४०५-६, ४११, ४२७-८
रामी ७-९
रामोज ३७४
रायगौड ३६०
रायदुर्ग २७८, ३७८
रायपाल १५९-६०, १६८-७१
रायबाग ७७, २३५, ३३६
रायरसेट्टि ३८०
रावदेवी १११
रावसेट्टि १६४
राष्ट्रकूट १५-६, २८, ३०-२, ३६-७, ४२, ४४, ५०-१, ५३-५, ६४, १०९, १५९, १७२, २४३, ३९४
रासलदेवी १८९
राहुक १९१, १९७
रुद्रपाल १६०
रुगि २३५
रूपनारायणबसदि १६४-५
रेचय्य ७१, २५०
रेचरस ३८४
रेचिदेव १०८, ११०
रेञ्चूर ९३

सोमय २६५, २७७
सोमल्लदेवी ७६, १८९
सोमवे २८५-६
सोमसेन ३३६, ४०२, ४०४, ४१२
सोमापुर ११३, २११, २१६
सोमिदेव २१७
सोमेय २५९-६०
सोमेश्वर ८१-२, ८५, ९०, ९३-४, १०२, ११०, ११२, १८२, १९०, १९६, २०८, २८२, ३८९, ३९०
सोग्टूर १०२
सोरव २९०-१
सोल्लण १८९
सोव २५९
सोवण १४६-७
सोवरस ८२, १७२
सोविदेव १९८, २०१
स्थिरविनीत १८
स्योमिष ३९८
स्वरटोर ३०१
स्वर्णपुर ३४६
हट्टण १३१
हडजण २८३
हस्तिमल्लूर २५८
हदिनाडु १३३
हनगल १८६
हनगुन्द ११२, १२६
हनुमन्तगुडि ३१८
हन्दिगुल २८६
हब्बुरेमरस ३८४
हम्पी २३४, २८८, ३९१
हम्मिकब्बे ७९, ८१, १२०-१
हरति ३४४-५
हरसिग १९५
हरिकान्त ३७२
हरिकेसरी ३७२
हरिचन्द्र २७४
हरिदत्त १४-५
हरिद्वार १८०
हरिनन्दि १७२
हरियनन्दन २९१
हरियनन्दि २५८, २७१
हरिवर्मा १०, ४६, ५०-१
हरिसेट्टि २८६
हरिसेन २९४-५
हरिहर २७८, २८७-८, ३५५-६, ३९१
हर्यकीर्ति ४२२
हल्लमनि १८७
हलसिगे २१४
ह... ४५

39. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra, Vol II See No 38 above Edited by Pt MAHENDRAKUMAR SHASTRI who has added an Introduction in Hindī dealing with the contents of the work and giving some details about the author. There is a Table of contents and twelve Appendices giving useful Indices Bombay 1941. Royal 8vo pp 20 + 94 + 403-930. Price Rs. 8/8/-.

40 **Varāngacaritam** of Jaṭā-Simhanandi A rare Sanskrit Kāvya brought to light and edited with an exhaustive critical Introduction and Notes in English by Prof. A. N. Upadhye, M A, Bombay 1938, Crown pp 16+56+392, Price Rs 3/-

41 **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol II (Saṁdhis 38-80): See No 37 above The Apabhraṁśa Text critically edited to the variant Readings and Glosses, along with an Introduction and five Appendices by Dr P L VAIDYA, M A, D Litt, Bombay 1940 Royal 8vo pp 24+570 Price Rs 10/-

42 **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol III (Saṁdhis 81-102) See No 37 and 40 above The Apabhraṁśas Text critically edited with variant Readings and Glosses by Dr P L VAIDYA, M. A, D Litt The Introduction covers a biography of Puṣpadanta, discussing all about his date, works, patrons and metropolis (Mānyakheṭa). Pt. PREMI's essay 'Mahākavi Puṣpadanta' in Hindī is included here Bombay 1941. Royal 8vo pp. 32+28+314. Price Rs. 6/-.